CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना ।

सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नसे संसारमें कठिन भी कार्य सुलभ हो जाते हैं, जिन कार्योंकी आदिमें 'यह पूरा होगा या नहीं, इस शंकासे हृदय कंपित हो निकलता है, जिसकी लोकोत्तर कठिनतासे यह बात हृदयमें जच जाती है कि यह पूरा न होगा' वह भी सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नसे पूरा हो जाता है। पाठक! आज जिस महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीको उन्नत मस्तक हो आपके कर कमलोंमें अर्पित करनेके लिये हम सन्नद्ध हुए हैं उसकी पूर्णतामें अनेक आपत्तियोंका संपात हुआ है। कभी कभी तो आपत्तियोंसे यहांतक चित्त घबडा गया कि इस कार्यको सर्वथा छोड दें परंतु सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नने वैसा न होने दिया। श्रीगोम्मटसारजीके प्रकाशनमें किन किन आपत्तियोंने अपना प्रबल जोर बांधा था हम उनका यहां दिग्दर्शन कराना आवश्यक समझते हैं।

दो संस्कृत टीका और स्वर्गीय श्रीमान् पं० टोडरमल्लजीकी भाषा टीका इन तीन टीकाओंके साथ श्रीगोम्मटसारजी शास्त्रका कितना परिमाण होता है यह बात श्रीगोम्मटसारजीके स्वाध्यायियोंसे छिपी नहीं है इसलिये एक तो इतना विशाल ग्रंथ, दूसरे युद्ध आदिके कारण कागजका अधिक तेजभाव, इसरूपसे बहुत खर्च साध्य यह कार्य दीख पडा। यदि उतना रुपया हो तो गोम्मटसारजीका प्रकाशन हो नहीं तो असाध्य ही सा था और मनमें गोम्मटसारजीके प्रकाशन की ठन ही गई थी इसलिये सबसे पहले तो गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें द्रव्यकी ओरसे आपत्ति आई परंतु जो कार्य जैसा होता है उसकेलिये कारण भी वैसे ही आकर जुट जाते हैं। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका विचार हृदयमें उदय ही हुआ था कि उसी समय संस्थाके संरक्षक हरीभाई देवकरण नामक प्रसिद्ध फार्मके मालिक दानवीर श्रीमान् सेठ हीराचंदजी रायचंदजीका शुभागमन कलकत्तेमें होगया और सतत परोपकाररत पंडित पन्नालालजी बाकलीवालके प्रस्तावसे श्रीमान सेठ साहबने गोम्मटसारजीके प्रकाशनार्थ १० हजारकी स्वीकारता देदी। बस फिर क्या था! गोम्मटसारजीको ५ खंडोंमें निकालनेकी भावनासे फी खंड पीछे दो हजार रूपया कागजकेलिये सेठ साहबसे लेना, छपाई आदिका खर्च संस्थासे करना यह निर्धारितकर श्रीगोम्मटसारके प्रकाशनका निश्चित विचार हो गया और द्रव्यकी ओरसे जो चिंता थी वह दूर हो गई।

इसप्रकार द्रव्यकी ओरसे जो आनेवाली आपत्ति थी वह जब दूर हो गई तो फिर हृदयमें यह चिंता हुई कि इतना रुपया लग जानेपर भी यदि गोम्मटसारजी खपे नहीं तो सब रकम अटक जायगी, फिर संस्थाका कार्य ही चौपट होजायगा। इसलिये गोम्मटसारजीके ग्राहक बनानेका उद्योग किया गया। संस्थाके संरक्षक श्रीमान् दानवीर सेठसाहबका भी यही मनशा था कि पहिले ४०० ग्राहक बना लेना तब गोम्मटसारजीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्य प्रारंभ करना इसलिये खूब उद्योग ग्राहकोंके बनानेका किया गया और सौभाग्यसे ४०० ग्राहक बन भी गये। इस प्रकार गोम्मटसारजी की जो खपतकी चिंता थी, ग्राहक बनजानेपर उससे भी मुक्त हो गये।

संस्थाके महामंत्री साहब पं० पन्नालालजीकी बडी प्रतिज्ञा थी कि और ग्रंथ तो लाचारीसे दूसरे प्रेसोंमे जैसे छपे ठीक ठाक हुआ परन्तु गोम्मटसारजी अव दूसरे अशुद्ध प्रेसोंमें न छपेंगे यह तो शुद्धतापूर्वक ही छपाना होगा, यह प्रतिज्ञा वडी टेढी आकर उपस्थित हो गई। जो वात अन्यत्र हो वह तो चाहें कितनी भी तकलीफ भोगनी पडे अपने यहां की जासकती है किंतु दुनियां भरमें जो चीज है ही नहीं वह कहांसे लाई जाय ? जहां जहां हिंदुस्थान या विलायतमें प्रेस हैं कोई भी शुद्ध नही, अच्छे अच्छे साइन्सकार भी प्रेसके शुद्ध होनेकी तरकीव वतलानेमें हैरान हैं, तव प्रेस शुद्ध कैसे किया जाय ? कुछ समझमें नहीं आया। प्रेसके शुद्ध होनेकी एकप्रकारसे असंभवता जान तो हृदयमें यही भावना उदित होने लगी कि अव गोम्मटसारका प्रकाशन न हो सकेगा क्योंकि प्रेस शुद्ध हो जाय उसके वाद गोम्मटसारजीका कार्य प्रारंभ किया जाय। प्रेसके शुद्ध होनेकी कोई तजवीज ध्यानमें भरती नहीं फिर गोम्मटसार कैसे प्रकाशित हो सकता है ?। पंडितजीको भी प्रेसके शुद्ध करनेकी वडी चिंता होगई। वे कई कलकत्तेके प्रसिद्ध २ तत्ववेत्ताओंसे मिले। प्रेसकी शुद्धताका कारण कोई भी पदार्थ निश्चित रूपसे वे भी न बता सके। संदिग्ध रूपसे जो उन्होंने बतलाया वह एक तो अशुद्ध निकला, तिसपर भी प्रयत्न करनेपर उससे कार्य नहीं चल सका। संस्थाका दूसरा कार्य होता रहा परन्तु प्रेसको शुद्ध न कर सकनेके कारण गोम्मटसारजीका कार्य करनेके लिये उत्साह न हो सका परन्तु प्रेसकी शुद्धताके लिये प्रयत्न वरावर जारी रहा आया।

प्रकृतिका यह सर्वमान्य नियम है कि शुभभावनासे जिस कार्यके करनेकेलिये कमर कसली जाती है उस कार्यको करनेकी प्रायः वुद्धि सूझही जाती है। हमलोगोंके पास 'शुद्ध प्रेस करही गोम्मटसारका प्रकाशन करेंगे नहीं तो न प्रेस करेंगे, और न गोम्मटसार छपायेंगे' इस प्रकार के विशुद्ध भावोंका अनुपम वल मोजूद था इसलिये हमें तरकीब सूझगई और संस्थाने निजका प्रेसकर गोम्मटसारके प्रकाशनका कार्य करना प्रारंभ करदिया।

प्रेसके अंदर वेलन अपवित्र पदार्थसे वनाने पडते हैं। हमने शुद्ध कपडेके वेलनोंकी तरकीव निकाल ली। अपवित्र पदार्थसे वेलनोंकी तयारीमें जो १) खर्च होता था उसकी जगह चार आने खर्च होते हैं। अपवित्र पदार्थोंसे वेलनकी तयारीमें दिनका दिन गायव होजाता है तिसपर भी वहुत क्लेश उठाना पडता है उसकी जगह कपड़ेसे बने वेलनमें सिर्फ १० मिनट खर्च होते हैं और किसीप्रकारका क्लेश नहीं सहना पडता। अपवित्र पदार्थसे बनाये गये रूलोंसे गरमीमें बडी तकलीफ सहनी पडती है। मारे गरमीके वे पिघल जाते हैं इसलिये कभी २ तो छपाईका कार्य भी रोकदेना पडता है किंतु कपडेसे बनाये गये वेलनोंमें यह कोई दिक्कत नहीं, शर्दी और गर्मीमें वरावर वे अपना काम देते रहते हैं सार यह है कि वेलनोंकी शुद्धताकी तरकीव निकल आनेसे एक बडी भारी कमीकी पूर्ति होगई और अहिंसात्मक धर्मके अंशको बहुत कुछ लाभ पहुंचा।

बहुतसे मनुष्योंका यह भी खयाल है कि स्याहीके अंदर अशुद्धता है परंतु यह उनका कोरा भ्रम ही है। स्याहीका नुस्का मंगाकर हमने खूब जांच करली है और सब लोगोंसे दरियाफ्त भी कर लिया है कि स्याहीके अंदर सब शुद्ध पदार्थोंका उपयोग होता है। हमें भी सुनासुनी बडा भ्रम होगया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था इसलिये घरमेंही स्याही बनानेका प्रबंध कर लिया था, बहुत दिन तक वह काममें ली थी, परंतु हमारे पास काफी जगह न होनेके कारण और उसके मिलानेकी कल न होनेके कारण बडी असुविधा हो गई इस लिये उसका कार्य स्थगित कर दिया। अब किसी जगहका प्रबंध होने पर स्याही पीसनेकी कल लेली जायगी और घरमें ही स्याही तयारकी जायगी। जब वेलन सरीखे प्रेसके अंश शुद्ध कर लिये गये तब अन्य कोई बातकी कठिनता नहीं मालूम पड सकती। अस्तु। भारतीयजैनसिद्धान्तप्रकाशनी संस्थाका पवित्र प्रेस खुल गया। उसमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जातिके कर्मचारियों की भी योजना करली एवं गोम्मटसारके प्रकाशनका कार्य करना प्रारम्भ कर दिया गया इसप्रकार गोम्मटसार के प्रकाशनमें प्रेसकी विशुद्धतारूपी जबर्दस्त आपत्ति जो आ अटकी थी, सच्ची भक्तिकी कृपासे वह भी दूर होगई।

गोम्मटसारजीके प्रकाशन की सामग्रीकी योजनाके समय कुछ लोगोंका मत विरुद्ध था। उन्होंने संस्थाके संरक्षक श्रीमान् सेठसाहबको भी सुझाया कि गोम्मटसारजीके प्रकाशनसे कोई लाभ न होगा। व्यर्थ रुपया अटक जायगा। दूसरे रूपमें गोम्मटसारजी छपगया है। संस्थासे प्रकाशित गोम्मटसारजीको कोई भी लेना स्वीकार न करेगा। इधर हमारे पास भी नहीं छपवानेकी सम्मतिके पत्र आये परंतु अब वे महाशय निष्पक्षभावसे विचारलें कि केवल मूलार्थ गोम्मटसारका महत्त्व था कि इन दो विशाल संस्कृतटीकाओंके साथ और स्वर्गीय श्रीमान् पं० टोडरमल्लजीकी भाषाटीकाके साथ प्रकाशित गोम्मटसारका महत्त्व है! संसार जब गणित शास्त्रका भक्त बना हुआ है और गोम्मटसारजीमें गणितशास्त्रके आधारपर पदार्थोंकी सिद्धिकी योजना की गई है तब केवल गाथा और उसके मामूली अर्थसे कभी ग्रंथका महत्त्व नहीं पड सकता। विशाल संस्कृतटीका और भाषाटीकाओंके साथही उसका महत्त्व पडसकता है, इसलिये गोम्मटसारजीका इसरूपमें प्रकाशित होना ही परमावश्यक था।

गोम्मटसारजीका विषय कितना कठिन है विद्वानोंसे यह बात छिपी नहीं है अन्य विषय तो कुछ कुछ समझमें जल्दी भी आजाता है परंतु अर्थ संदृष्टि और अंकसंदृष्टिके साथ गणितके आधारपर जिस पदार्थकी सिद्धि की गई है वह सर्वथा ही कठिन जान पडता है क्योंकि इससमय संदृष्टियोंका प्रचार प्रायः लुप्तसा होगया है। श्रीमान पं० टोडरमल्लजीके समय में संदृष्टियोंके परिज्ञानकी बहुत ही हीन अवस्था होचुकी थी तथापि यह उन्ही पवित्रात्माकी क्षयोपशम शक्तिमें सामर्थ्य थी कि इसप्रकार ग्रंथराज श्रीगोम्मटसारजीकी विशाल भाषाटीका उन्होने निर्माण करदी। इसलिये गोम्मटसारजीकी यह लोकोत्तर कठिनता देख एकदम चित्त दहल गया और चित्तमें पक्का श्रद्धान होगया कि गोम्मटसारजीका प्रकाशन करना अपनी शक्तिके बाहिर है। परन्तु "पूज्य आत्मा पंडित टोडरमल्लजीने कर्मकांड और जीवकांडकी अंक संदृष्टि तो जहां संस्कृत टीकामें थी वहीं भाषामें रखदी है परन्तु कठिनता जान अर्थ संदृष्टि संस्कृत टीकाके अनुसार न रखकर जुदी संदृष्टि अधिकारमें रक्खी है और अपनी ओर से खूब खुलासाकर विषय साफ करदिया है" हमने संदृष्टि अधिकारको देखा। उसमें संदृष्टियोंका स्वरूप देखकर और संस्कृतटीकासे उसे मिलान करनेपर बहुत कुछ विषय हमारी समझमें आने लगा। हमें विश्वास होगया कि अब हम गोम्मटसारजीका कुछ काम कर सकेंगे। बस! हमने संदृष्टि अधिकारोंका आलोडन करडाला और उसकी कृपासे गोम्मटसारजीके संपादनका कार्य करने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें अधिकव्यय और परिश्रमका भान पहिले ही होचुका था इसलिये अधिक प्रतियोंका जुटाना ही लाभदायक समझा गया था। प्रतियोंके संकलनमें बडा कष्ट हुआ तथापि कई प्रति भाषाकी और कई प्रति संस्कृतटीकाके आधारसे गोम्मटसारजीका प्रकाशन किया गया है। इसके सिवा हमलोगोंपर कई भयंकर विपत्तियोंकी वेदनासे कितनेही समय हमारे चित्तमें घबडाहट होगई परन्तु सच्ची भक्तिने हमें अपने कर्तव्यकार्यसे विचलित नहीं होने दिया अस्तु 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' इस नियमानुसार उत्तमकार्योंमें आपत्ति और विघ्नोंका आना स्वाभाविक बात है। परन्तु उत्तमकार्योंकी सच्चीभक्ति और श्रद्धासे विघ्नोंको निष्फल ही होना पड़ता है। महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके प्रकाशनका कार्य परमोत्तम कार्य था इसलिये उसकी सच्ची भक्तिसे विघ्नोंका संहार होगया और पाठकोंके कर कमलोंमें महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके समर्पणकेलिये आज हम उपस्थित हैं।

इस गंभीर ग्रंथके संपादनमें हमें बहुतसी बातोंका परिज्ञान नही हुआ। बहुतसे संदृष्टियोंके यंत्र हमें संदृष्टि अधिकारमें नहीं मिले इसलिये जो बात हमारी समझमें आगई उसमें तो यथासाध्य सावधानी रक्खी है और जो बात हमारी समझमें नहीं आई वह तीन किंवा चार प्रतियोंसे अच्छी तरह मिलाकर उनके पाठके अनुसार प्रकाशित की है और मिलानेमें दो दो बार मिलाकर पूर्ण सावधानी रक्खी गई है।

हमारा विचार था कि हम संक्षेपमें अर्थ संदृष्टियोंके चिन्होंका कुछ खुलासा करदें परन्तु संदृष्टिअधिकारमें पुण्यात्मा श्रीमान् टोडरमल्लजी ने संदृष्टियोंके चिह्न और स्वरूप भलेप्रकार समझा दिये हैं। इसलिये जो नवीन पाठक गोम्मटसारजीका अवलोकन करना चाहें वे सबसे पहिले संदृष्टि अधिकारका अवलोकन करलें पीछें गोम्मटसारजीका स्वाध्याय करना प्रारम्भ करें। अर्थ संदृष्टि अधिकारमें वर्णित संदृष्टियोंके स्वरूपके अवलोकनसे संस्कृत टीकामें वर्णित अर्थ संदृष्टियोंके स्वरूपका भलेप्रकार परिज्ञान होता चला जायगा।

महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके बडे बडे दो भाग हैं जीवकांड और कर्मकांड। जीवकांडकी पृष्ठसंख्या जुदी रक्खी गई है और उससे संबंध रखनेवाले अर्थ संदृष्टि अधिकार विषयसूची सूत्रसूची आदि भी जुदे जुदे रक्खे हैं। इसी प्रकार कर्मकांडकी भी पृष्ठ संख्या जुदी है और उससे संबंध रखनेवाले अर्थ संदृष्टि आदि अधिकार भी जुदे जुदे हैं। पाठकोंकी इच्छा है चाहें वे एक साथ सबको रक्खें चाहें जुदे जुदेकर दोनों कांड रक्खें।

यह श्रीगोम्मटसारजी महाशास्त्र दो संस्कृत टीका और एक भाषा टीका इसप्रकार तीन टीकाओंके साथ प्रकाशित है। पहिली टीकाका नाम जीवतत्त्वप्रदीपिका है और उसके निर्माता प्रखर विद्वान केशववर्णी हैं। दूसरी टीका मन्दप्रबोधिका है उसके निर्माता श्रीमान् अभयचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती हैं और तीसरी टीकाका नाम सम्यग्ज्ञान चंद्रिका है और उसके कर्ता श्रीमान् पं० टोडरमल्लजी हैं। इनमें जीवतत्त्वप्रदीपिका और सम्यग्ज्ञानचंद्रिका ये दोनों टीका पूरी हैं। मंद प्रबोधिका टीका अधूरी है, जीवकांड ३८३ गाथा ही तक है क्योंकि यह किसी कारणसे यहां पूरी हो गई है टीकाके अंतमें यह लिखा है कि "श्रीमदभयचन्द्रसैद्धांतचक्रवर्तिविहितव्याख्यानं विश्रांतमिति कर्णाटवृत्त्यनुरूपमयमनुवदति" अर्थात् श्रीमान् अभयचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्ति द्वारा रचा हुआ व्याख्यान समाप्त हुआ अब कर्णाटक वृत्तिके अनुसार लिखा जाता है। इसलिये मन्द प्रबोधिका टीका हमने वहीं समाप्त करदी है। यद्यपि हमारे पास जो प्रति है उसमें मन्द प्रबोधिका पूरी टीका है तथापि उसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय और जीवतत्वप्रबोधिकाका विषय देखनेपर कुछ भी विशेष नहीं दीख पडा। ठीक भी है—श्रीमच्चामुण्डरायकृत गोम्मटसारकी सर्वांग सुंदर एक कनडीमें टीका है। मन्द प्रबोधिका जिसने पूरी की है उसने यह प्रतिज्ञा की है कि अब कर्णाटक वृत्तिके अनुसार लिखा जाता है और जीवतत्वप्रदीपिकाके कर्ता श्रीमान् केशववर्णीका भी यह वचन है कि 'वक्ष्ये कर्णाटवृत्तितः' अर्थात् गोम्मटसारकी जो मैं टीका बनाऊंगा कर्णाटक वृत्तिके अनुसार बनाऊंगा इसलिये जब दोनोंही टीकाओंका विषय एक है कुछ भी फेर फार नहीं तब मन्दप्रबोधिकाका प्रकाशन करना अनुचित था। हां! जहां जहां हमें मन्दप्रबोधिकामें विशेष मालूम पडा है वहां वहां हमने टिप्पणीमें खुलासा रूपसे लिख दिया है। हमारे पास जो पूना डेकिन कालेजसे प्रति आई थी उसके अंत–भागमें जो पत्र थे वह कोई अन्य ही टीकाके थे पर उसका कुछ ही अंश था और जीवतत्वप्रदीपिकासे कुछ विशद न थी। पता नहीं, उस टीकाके निर्माता कौन विद्वान थे?

गोम्मटसारजीका जिस समय कार्य प्रारंभ हुआ था सबसे प्रथम गोम्मटसारजीकी मन्द प्रबोधिका टीका और जीवकांडका संदृष्टि अधिकार इसप्रकार दो प्रति हमें परम सज्जनोत्तम बाबू बद्रीदासजी बिजनोरकी कृपासे प्राप्त हुई थीं जो प्रायः शुद्ध थीं। उसके बाद संस्थाके संरक्षक श्रीमान् सेठ हीराचन्दजी रामचन्दजी गांधीकी कृपासे डेकिन कालेज पूनासे समस्त जीवतत्वप्रदीपिकाकी प्रति प्राप्त हुई थी जो अधिक अशुद्ध थी। उसके बाद जीवतत्वप्रदीपिकाकी पूरी प्रति मित्रवर पंडित इन्द्रलालजी शास्त्री जयपुरसे और एक प्रति जीवकांडतककी स्वर्गीय मित्रवर गणेशलालजी गोधा जयपुरसे प्राप्त हुई थी जो दोनों प्रति शुद्ध थीं। उसके बाद जीवकांडतक जीवतत्व प्रदीपिका संस्कृत टीकाकी १ प्रति कारन्जासे श्रीयुक्त पं० वंशीधरजी शास्त्री न्यायतीर्थ की कृपासे प्राप्त हुई थी जो प्राचीन और शुद्ध थी। उसके बाद एक प्रति भाषा टीकाकी लब्धिसार पर्यंत और एक प्रति मन्दप्रबोधिका संस्कृतटीकाकी संपूर्ण हमें जैनसिद्धांतभवन आराके श्रीमहोदय बाबू सुपार्श्वदासजी गुप्त बी० ए० की कृपासे प्राप्त हुई। संस्कृत प्रति तो अत्यंत प्राचीन और शुद्ध थी ही परन्तु भाषा प्रति बडी ही भव्य और दर्शनीय थी। उसके यंत्रोंकी रचना और अक्षरोंकी खुबसूरती बडी ही मनोहारिणी थी, विशेष कहांतक कहा जाय इस विशुद्ध प्रतिकी कृपासे श्रीगोम्मटसार बहुत अंशोमें शुद्ध प्रकाशित हुआ होगा। उसके बाद हमें प्रारंभसे लब्धिसार पर्यंत एक प्रति श्रीमान् सेठ रावजी सखाराम देशी मंत्री मा० दि० जैन परीक्षालय शोलापुरकी कृपासे प्राप्त हुई जो प्रायः शुद्ध थी। उसी समय एक भाषा प्रति जीवकांडतक मित्र गणेशलालजी गोधाकी कृपासे प्राप्त हुई थी। इतनी प्रतियोंके आधारसे श्रीगोम्मटसारजीका संपादन हुआ है। जिन उपर्युक्त महाशयोंने प्रतियोंके भेजनेमें कष्ट उठाकर श्रीगोम्मटसार सरीखे पवित्र और कठिन कार्यमें सहायता दी है और हमारे साथ सौजन्यका परिचय दिया है, हम उनके परम आभारी हैं।

सबसे प्रथम वृहद् गोम्मटसारजीके प्रकाशनका समाचार पाते ही परम सज्जनोत्तम श्री युक्त डा० गिरधरलालजी अहमदाबादने अत्यंत हर्ष प्रगट किया। उत्साहवर्धक बहुतसे हमारे यहां पत्र भेजे एवं गोम्मटसारकी ४०० ग्राहक संख्याकी पूर्तिकेलिये बलवान प्रयत्न चालु देख फौरन लिख दिया कि यदि ४०० ग्राहकोंकी पूर्तिमें कमी जान पडे तो ग्राहक श्रेणीमें २१ प्रतियोंका ग्राहक मुझे बना लेना इसलिये उक्त डाक्टर साहबकी इस अनुपम सहानुभूतिका संस्था विशेष आभार मानती है। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका शुभ संवाद सुन बिजनोर निवासी श्रीमान् बाबू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बद्रीप्रसादजीने भी परम हर्ष प्रगट किया। गोम्मटसारजीके जल्दी आरंभ कर देनेकी वार वार प्रेरणाकी। प्रतियां भी शीघ्र भेज दीं इसलिये उक्त बाबू साहबकी प्रेममय सहानुभूतिकी भी संस्था अधिक आभारी है। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका शुभ संवाद पाते ही धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने परम हर्ष प्रगट किया। ग्राहक संख्यापर ही गोम्मटसारजीका प्रकाशन समझ बडे विस्तारसे जैनमित्रमें नोट प्रकाशित किया और जल्दी ग्राहक होनेकी बडी उग्रतासे प्रेरणाकी जिससे ग्राहकोंकी पूर्ति बहुत ही शीघ्रतासे हुई तथा प्रथम खण्ड गोम्मटसारजीके प्रकाशित होते ही बडी बिस्तारसे समालोचना की। ब्रह्मचारीजीकी इस परमोपकारिणी सहानुभूतिकी संस्था अत्यंत आभारी है। और भी सज्जनोंने गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें सहायता रूपसे जो हमारे ऊपर कृपा की है और विघ्न उपस्थितकर गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें उग्रता पूर्वक जोश उत्पन्न किया है उनकी भी संस्था अत्यन्त आभारी है।

गोम्टसारके प्रकाशनमें यद्यपि हमने कई आपत्तियोंका उल्लेख किया है पर द्रव्यकी ओरसे आनेवाली आपत्तिसे बलवान आपत्ति कोई न थी फिर भी थोडी द्रव्य हो तो उसका आयोजन कहींसे न कहींसे करभी लिया जाय किंतु गोम्मटसारजीके प्रकाशनके लिये प्रचुर द्रव्य की आयोजना कहांसे की जाय? इसलिये सबसे अधिक धन्यवादके पात्र हरीभाई देवकरण नामक प्रसिद्ध फार्मके मालिक दानवीर श्रीमान् सेठ हीराचंद रामचंदजी हैं जिनकी कृपासे महाशास्त्र श्रीगोमटसारसरीखे दुःसाध्य कार्यका जीर्णोद्धार होगया। उन्हींकी कृपासे और विपुल सहायतासे आज भारतीय जैनसिद्धान्तप्रकाशनी संस्था सुलभ लागतपर उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रदान कर जैनधर्मका परम उपकार कर रही है और सदा करती जायगी। हमारी यह पवित्र कामना है कि इस प्रकार लोकोत्तर दान देनेवाले श्रीमान दानवीर सेठ साहब चिरंजीव रहें और इसप्रकार अपने कठिन परिश्रमसे उपार्जित लक्ष्मीका समीचीन दान देकर इस परम पावन जैन धर्मकी उन्नतिमें सहायी बने रहें। इन्हीं श्रीमान् सेठ साहबकी द्रव्यकी सहायतासे लब्धिसार व क्षपणासार नामक विशालग्रंथोंका कार्य बडे जोर से चल रहा है थोडेदिन बाद उनका भी पाठकोंको दर्शन होगा।

अंतमें हम यह निवेदन कर कि महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीका विषय परम गहन हैं। भगवान श्रुतकेवलिके समान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तीके वचनोंका तात्पर्य समझना तो दूर रहा उनके वचनोंके विशुद्धरूपसे उच्चारण करने में भी हम सर्वथा असमर्थ हैं। परम विद्वानी महात्मा टोडरमल्लजीकी भाषा समझनेका भी हमें ज्ञान नही तथापि इस महान शास्त्रके संपादन करनेकेलिये जो हमने साहस किया है वह हमारा दुस्साहस और धृष्टता ही है। यद्यपि प्रतियोंके अक्षरोंसे अक्षर मिलानेमें विशेष प्रमाद नहीं हुआ है तथापि अज्ञानजन्य प्रमाद तो अवश्य ही होना माना जायगा इसलिये संभव है इस विशाल किंतु गहन ग्रंथमें हजारों जगह त्रुटियां और अशुद्धियां रहगई होंगी इस लिये विद्वान पाठकोंसे सनत मस्तक हो णभ्यर्थना है कि वे अज्ञानसे होनेवाली अशुद्धियोंको शुद्ध कर पढें और पढावें एवं अज्ञान अन्य अशुद्धियोंके शुद्ध करनेमें असमर्थतासे लाचारी जान हमें क्षमा प्रदान करें। वस विद्वानोंसे इतनाही निवेदन करना पर्याप्त है।

विद्वानोंके अनुचर—

गजाधरलाल जैन,

श्रीलाल जैन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized.by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान् नेमिचंद्रसिद्धांतचक्रवर्ती और श्रीगोम्मटसारजी।

पाठक ! जो विशाल ग्रंथ आपके सामने विराजमान है उसके रचयिता प्रातः स्मरणीय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती हैं। ये पूज्यात्मा कब हुए ? यद्यपि इसबातका निर्णायक कोई भी पुष्ट प्रमाण नहीं है तथापि यहां वहां से देख दाखकर जो निश्चय किया है यहां हम उसका उल्लेख किये देते हैं।

श्रीचामुंडराय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती को अपना गुरु मानतेथे और उनके गुणोंके परम श्रद्धालु थे। भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीकी भी श्रीचामुंडराय पर अलौकिक कृपा थी– वे श्रीचामुण्डराय पर विशेष–धर्मात्मा होनेके कारण अत्यंत हित रखते थे इसलिये गोम्मटसारजीके अंतमें प्रशस्ति लिखते समय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीने श्रीचामुंडरायका कई गाथाओंमें अभिवादन किया है उनमें महत्वपूर्ण तीन गाथाओंका हम यहां उल्लेख किये देते हैं।

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ ॥ ९६८ ॥

अर्थात्—गोम्मटसार संग्रहसूत्र गोम्मट शिखरके ऊपर चामुंडराय राजाकरि वनवाये जिनमंदिरमें विराजमान एक हाथ प्रमाण इन्द्र नील मणिमय नेमिनाथनामा तीर्थंकर देवका प्रतिबिंब तथा उसी चामुंडराय करि निर्मापित लोकमें रूढिकरि प्रसिद्ध दक्षिण कुक्कुटनामा जिनका प्रतिबिंब जयवंत प्रवर्तो।

जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया सो रायो गोम्मटो जयउ ॥ ९७१ ॥

अर्थात् जिसने चैत्यालयमें खडे खंभोंके ऊपर स्थिर जो यक्षकी मूर्तियां हैं उनके मुकुटके आगेके भागकी किरणोंरूप जलसे सिद्ध परमेष्ठियोंके आत्मप्रदेशोंके आकार रूप शुद्ध चरण धोये हैं ऐसा चामुंडराय जयको पाओ।

गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरकालं णामेण य वीरमत्तंडी ॥ ९७२ ॥

अर्थात् गोम्मटसार ग्रंथके गाथासूत्र लिखनेके समय गोम्मटराय–चामुंडराय ने देशीभाषा अर्थात् कर्णाटकवृत्ती बनाई है वह वीर मार्तंड नामसे प्रसिद्ध चामुंडराय बहुतकालतक जयवंत प्रवर्तो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतना ही नहीं एक दंतकथासे यह भी प्रसिद्ध है कि गोम्मटसारजीका उदय भी श्रीचामुंडरायके ही निमित्तसे हुआ था इसलिये यह बात सर्वमान्य और निःशंकित है कि पूज्यात्मा भगवान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती और महापुरुष श्रीचामुंडराय दोनों ही समान कालीन थे।

बाहुबलिचरितमें श्रीचामुंडरायके विषयमें यह लिखा हुआ है—

कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे/मासि चैत्रे
पंचम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुंभलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटितभगणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुंडराजो वेल्गुलनगरे गोम्मटेशप्रतिष्ठां ॥ ५५ ॥

अर्थात् कल्की–शंक (?) संवत् ६०० में चैत्रशुक्ल ५ मी रविवारके दिन श्रीचामुंडरायने श्रीगोम्मटस्वामीकी प्रतिष्ठा की। जब यह बात सर्वमान्य और निश्चित है कि भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती और श्रीचामुण्डराय समकालीन हैं। तब जो संवत् श्रीचामुण्डरायका होगा वही श्रीमान् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तीका है, बाहुबलि चरितके अनुसार श्रीचामुण्डरायका समय शकसंवत् ६०० तदनुसार वि० सं० ७३५ है। वही भगवान नेमिचन्द्रका है। पं० जवाहरलालजी शास्त्रीनेभी भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शकसंवत् ६०० (वि० सं० ७३५) ही लिखा है।

यदि इस कथनकी तुलना हम दूसरे दूसरे प्रमाणोंके आधारसे करते हैं तो बलवान बाधा आकर उपस्थित हो जाती है क्योंकि संस्कृत छंदोबद्ध भुजबलि (बाहुबलि गोम्मट) चरित्रमें जो कथा लिखी है उससे श्रीअजितसेनाचार्य तथा श्रीचामुण्डरायकी समान कालीनता सिद्ध होती है जो श्रीनेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीके उपरि निर्धारित समयमें बाधा डालती है। वह कथा इस प्रकार है—

द्रविड देशमें एक मधुरा नामकी नगरी थी जो प्राचीन शास्त्रोंमें दक्षिण मथुरा और आजकलकी भूगोलके अनुसार मदुरा नामसे प्रसिद्ध है। वहां—

श्रीदेशीयगणाब्धिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनंदिव्रति-
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूडामणिः।
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्धनसुधासूतिर्महीमंडले
रेजे श्रीगुणभूषणो बुधनुतः श्रीराजमल्लो नृपः ॥ बाहुबलिचरित ॥

इस श्लोकके अनुसार देशीयगणके स्वामी श्री सिंहनंदी आचार्यके चरणकमलोंका सेवक गंगवंशतिलक श्रीराजमल्ल नामका राजा था उसका

तस्यामात्यशिखामणिः सकलवित्सम्यक्त्वचूडामणि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्यांभोजविबोधनोद्यतमतेर्भास्वत्समानत्विषः
शिष्यस्तस्य गुणाकरस्य सुधियः श्रीअजितसेनप्रभोः।
भव्यांभोजवियन्मणिः सुजनवंदिव्रातचूडामणिः।
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशुक्तिसुमणिः कीर्त्योघमुक्तामणिः।
पादन्यस्तमहीशमस्तकमणिश्चामुंडभूपोऽग्रणीः॥

इस श्लोकके अनुसार श्रीचामुंड नामका राजा महा अमात्य (बडामंत्री) था। एक दिन श्रीचामुंड मंत्रीके साथ महाराज राजमल्ल सभामें विराजमान थे कि एक सेठ सभामें आया और प्रणामपूर्वक महाराजसे उसने यह समाचार कहा—

उत्तर दिशामें एक पोदनपुर नगर है। वहां बाहुबलि स्वामीकी कायोत्सर्ग प्रतिबिम्ब है जो भरत चक्रवर्ती द्वारा स्थापित है और जिसकी प्रसिद्धि वर्तमानमें गोम्मट नामसे है। यह पवित्र वृत्तांत सुनते ही महाराज राजमल्ल और मंत्री श्रीचामुंडको परम आनंद हुआ। बाहुबली भगवानकी प्रतिबिम्बको भाव नमस्कार कर श्रीचामुंड अपने घर गये और अपनी माता कालिकासे सारा वृत्तांत कह सुनाया।

इस पवित्र वृत्तांतसे माता कालिकाको भी परमानंद हुआ। वह अपने पुत्र श्रीचामुंडके साथ जिन मंदिरमें गई। भगवान जिनेंद्रकी स्तुति की और पश्चात् अपने गुरु (अजितसेन) के गुरु श्रीसिंहनंदी आचार्यको नमस्कार किया। उसके बाद—

पश्चात्सोऽजितसेनपंडितमुनिं देशीगणाग्रेसरं स्वस्याधिप्यसुखाब्धिवर्धनशशिश्रीनंदिसंघाधिपं।
श्रीमद्भासुरसिंहनंदिमुनिपाङ्घ्रयम्भोजरोलम्बकं चानम्य व्यवदत्सुपौदनपुरीश्रीदोर्बलेर्वृत्तकं॥

इस प्रकार देशीयगणके प्रधान श्रीअजितसेन मुनिको नमस्कार कर श्रीचामुंडने श्रीबाहुबलिके प्रतिबिंबका वृत्तांत कहा। इत्यादि।

केवल इस कथाहीसे अजितसेन और श्रीनेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीकी समानकालीनता सिद्ध नहीं होती, स्वयं भगवान नेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीने भी श्रीअजितसेनका उल्लेख किया है और उन्हें चामुण्डरायका गुरु बतलाया है जैसा कि—

जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं।
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरू जयउ सो राओ॥ कर्म० गो० ९६६

अर्थात्— जिनमें बुद्ध्यादि ऋद्धिप्राप्त गणधर देवादि मुनियोंके गुण विश्राम पाकर ठहरे हुए हैं अर्थात् गणधरादिकोंके समान जिसमें गुण हैं ऐसा अजितसेन नामा मुनिनाथ जिसका व्रत (दीक्षा) देनेवाला गुरु है वह चामुंडराय सर्वोत्कृष्टपने जय पावो। और भी—

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारि अजियसेण गुरू।
भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयउ॥

अर्थात्— जिसके गुरु अजितसेन नाथमें ऋद्धिप्राप्त गणधर देवादिकोंके गुण पाये जाते हैं, आचार्य श्रीआर्यसेनके अनेक गुणोंके समूह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को धारण करनेवाले तथा तीन लोकके गुरु अजितसेन गुरु जिसके गुरु हैं वह श्री चामुंडराय राजा जयवन्त रहो। तथा यह भी निश्चय ही है कि बाहुबलि चरितमें जिन अजितसेनका उल्लेख है और गोम्मटसारमें जिनका उल्लेख है वे दोनों अजितसेन एक ही हैं। अस्तु।

ये अजितसेन कब हुए हैं ? इस बातका पता श्रवणबेलगोलाके एक शिलालेखके इन पद्योंसे मिलता है—

गुणाः कुंदस्पन्दोड्डमरसमरा वागमृतवाःप्लवप्रायः प्रेयः प्रसरसरसा कीर्तिरिव सा।
नखेंदुज्योत्स्नांघ्रेर्नृपचयचकोरप्रणयिनी न कासां श्लाघानां पदमजितसेनो व्रतिपतिः॥

यह शिला लेख करीब ग्यारहवीं शदीका खुदा हुआ है इससे मालूम होता है श्रीअजितसेन स्वामी ग्यारहवीं सदीके पूर्व हुए हैं और उसी समय श्रीचामुंडराय भी हुए हैं। इसलिये जब श्रीचामुंडरायका समय ग्यारहवी सदी निश्चित होता है तब उनके समकालीन भगवान नेमिचंद्रका भी समय यही निश्चित होना चाहिये इसलिये पहिले बाहुबलि चरितके अनुसार जो शक सं ६०० और वि० सं० ७३५ लिखा है उसमें संदेह आकर उपस्थित हो जाता है।

पं० नाथूरामजी प्रेमीने जो चन्द्रप्रभ चरितकी भूमिका लिखी है उसमें उन्होंने श्रीचामुंडरायके परिचयमें लिखा है कि 'कनडी भाषाके प्रसिद्ध कविरत्नने शक संवत् ९१५ में पुराण तिलक नामक ग्रंथकी रचना की है और उसमें अपनेको रकस गंगराजका आश्रित बतलाया है। श्रीचामुण्डरायकी भी अपने पर विशेष कृपा रखनेका वह जिक्र करता है' इससे पुराण तिलकके आधारसे यह जान पडता है कि शक संवत् ९१५ या विक्रम सं० १०५० के लगभग ही श्रीचामुंडराय और अजितसेन स्वामी हुए हैं।

गोम्मटसारकी श्रीचामुण्डरायकृत एक कर्णाटकवृत्ति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीके समक्ष ही बन चुकी थी। उसीके अनुसार श्रीकेशववर्णीकृत संस्कृत टीका भी है उसकी आदिमें यह लिखा है—

'श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासनगुहाभ्यंतरनिवासिप्रवादिसिंधुरसिंहायमान-सिंहनंदिनन्दितगंगवंशललाम-राजसर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेयभागधेय-श्रीमद्राजमल्लदेवमहीवल्लभमहामात्यपदविराजमान-रणरङ्गमल्लासहायपराक्रम- गुणरत्नभूषण-सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनामसमासादितकीर्तिकांत- श्रीमच्चामुंडरायप्रश्नावतीर्णचत्वारिंशत्पदनामसत्त्वप्ररूपणद्वारेणाशेषविनेयजननिकुरंबसंबोधनार्थं श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तिकचक्रवर्ती समस्तसैद्धान्तिकजनप्रख्यातविशदयशाः विशालमतिरसौ भगवान् गोम्मटसारपंचसंग्रहप्रपंचमारचयँस्तदादौ निर्विघ्नतः शास्त्रपरिसमाप्तिनिमित्तं देवताविशेषं नमस्करोति।

राज (च) मल्ल और रक्खस गंगराज ये दोनों ही भाई थे। उपर्युक्त गोम्मटसारकी पंक्तियोंसे स्पष्ट है कि राजमल्ल श्रीचामुंडराय तथा भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती तीनों ही समकालीन हैं। इसलिये राजमल्लका समय विक्रम की जब ग्यारहवीं शदी निश्चित की जाती है तब वही समय श्रीचामुंडराय और नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका भी होना चाहिये।

यहां पर विचारणीय बात यह उपस्थित होजाती है कि बाहुबलि चरितसे भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शक संवत् ६००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदनुसार वि० सं० ७३५ सिद्ध होता है और पुराण तिलकके आधारसे शक सं० ९१५ या वि० सं० १०५० सिद्ध होता है तब किसका लेख प्रमाण माना जाय ? यदि यह कहा जाय कि पुराण तिलकके आधारसे भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शक सं० ९१५ या वि० सं० १०५० सिद्ध होता है तथा अजितसेनाचार्यके समयका द्योतक श्रवणवेलगोलाके एक शिलालेखका ' गुणाः कुन्दस्पन्द० ' यह जो श्लोक उद्धृत किया गया है उससे श्रीअजितसेनके समकालीन श्रीचमुंडरायका समय ग्यारहवीं शदीसे पूर्व निश्चित होता है वही समय श्रीचामुंडरायके समकालीन भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीका सिद्ध होता है जो प्रायः पुराणतिलकमें उल्लिखित नेमिचंद्रजी के समयके साथ मिल जाता है इसलिये इन दोनों प्रमाणोंका प्रायः एक ही प्रमेय हो जानेसे नाथूरामजी प्रेमीने जो भगवान नेमिचन्द्रका समय शक सं० ६१५ वि० सं० १०५० लिखा है वह युक्त हो सकता है सो ठीक नही क्योंकि पं० जवाहरलालजी शास्त्रीने मलवार कार्टर्लीरिव्यूमें थामस सी राईस द्वारा लिखित ' कर्णाटकमें जैनियोंका निवास ' नाम लेखके आधारसे विल्लाल वंशके स्थापक श्रीचामुंडरायका राज्य सन् ७१४ ईस्वी लिखा है उन्हीं शास्त्रीजीने मराठी भाषाके ' तत्त्व प्रसारक ' नामक समाचार पत्रमें प्रकाशित ' श्रवणवेलगोलाका इतिहास ' नामक लेखके आधारसे श्रीचामुण्डरायका समय शकसंवत ७७७ लिखा है। चामुण्डराय और भगवान नेमिचन्द्र सि० च० जब समकालीन हैं तब भगवान नेमिचंद्रका भी यही समय सिद्ध हो जाता है। तथा प्रेमीजीने भी दिगम्बरजैन ग्रंथकर्ता और उनके ग्रंथ इस पुस्तकमें भगवान नेमिचन्द्रका समय वि० सं० ७९४ लिखा है इसलिये इन तीनों प्रमाणोंकी प्रायः समानता होजानेसे बाहुवलि चरितके लेखकी ही सत्यता जान पडती है। इन तीनोंके द्वारा जो भगवान नेमिचन्द्रका समय निश्चित है वह बाहुवलि चरितकी छायाके ही आधार पर ही निश्चित किया गया होगा यह भी बात कम अनुभवमें आती है। जो हो, भगवान नेमिचन्द्र सि० च० कब हुए ? यह बात सर्वथा निश्चित रूपसे नही कही जा सकती अस्तु। नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीने कई जगह वीरनंदी आचार्यका स्मरण किया है यथा—

" जस्स य पायपसाएणणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो। वीरिंदणंदिवच्छो णमामि तं अभयणंदिगुरुं ॥"

' णमिऊण अभयणंदिं सुदसागरपारगिंदणंदिगुरुं। वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं ॥ "

" णमह गुणरयणभूसणसिद्धंतामियमहब्धिभवभावं। वरवीरणंदिचंदं णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं ॥ "

इन्हीं वीरनंदीका स्मरण वादिराजसूरिने भी किया है—

चन्द्रप्रभाभिसंबद्धा रसपुष्टा मनःप्रियं।

कुमुद्वतीव नो धत्ते भारती वीरनंदिनः ॥ पार्श्वनाथचरित्र प्रथमसर्ग ३०

वादिराज सूरिने पार्श्वनाथ काव्यकी पूर्ति शक संवत् ९४७ में की है यह उसीकी अंतिम प्रशस्तिके इस पद्यसे मालूम होता है—

शाकाब्दे नगवारिरंध्रगणने संवत्सरे क्रोधने, मासे कार्तिकनाम्नि बुद्धिमहिते शुद्धे तृतीयादिने ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंहे पाति जयादिके वसुमती जैनीकथेयं मया, निष्पत्तिं गमिता सती भवतु वः कल्याणनिष्पत्तये ॥

अर्थात् शक संवत् ९४७ क्रोधन संवत्सरकी कार्तिक शुक्ला तृतीयाको पार्श्वनाथ काव्य पूरा किया। इससे यद्यपि यह जान पडता है कि शक संवत् ९४७ से पहिले वीरनंदी स्वामीका अस्तित्व था। तथा वीरनंदि आचार्यने अभयनंदीको गुरु स्वीकार किया है और भगवान नेमिचंद्र सि० च० भी उनका गुरुरूपसे स्मरण करते हैं इसलिये वीरनंदी और भगवान नेमिचंद्र सि० च० दोनोंही समकालीन सिद्ध होते हैं परन्तु यह नहीं कहा जासकता कि शक संवत् ९४७ से पहिले पुराणतिलकके लेखानुसार शक सम्वत् ९१५ में भगवान नेमिचन्द्रका अस्तित्व था वा बाहुबलि चरितके अनुसार शक संवत् ६०० में था? क्योंकि ये दोनोंही समय शक संवत् ९४७ से पहिलेके हैं।

गोम्मटसारकी गाथाओंका उल्लेख प्रमेयकमलमार्तंडमें भी मिलता है यथा—

विग्गहगदिमावण्णा केवलिणो समुहदो अजोगी य।
सिद्धाय अणाहारा सेसा आहारिणो जीवा ॥

श्रीप्रभाचंद्राचार्यने प्रमेयकमलमार्तंडकी रचना भोजराजके समयमें की है क्योंकि उसके अन्तमें यह लेख है—

श्रीभोजदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामार्जितामलपुण्यनिराकृतनिखिलमलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन निखिलप्रमाणप्रमेयस्वरूपोद्योतपरीक्षामुखपदमिदं विवृतमिति।

धारा नगरीके अधिपति भोजराजाका समय विक्रमकी ग्यारहवीं शदी निश्चित है इससे यही मालूम होता है कि भगवान नेमिचंद्रका समय ग्यारहमी शदीसे पहिलेका है परंतु वह क्या और क्यों है? यह बात संदिग्ध ही है। इसलिये यहां तक लिखनेसे यह बात सिद्ध हो चुकी कि भगवान नेमिचंद्रका समय न शकसंवत् ९१५ ही माना जा सकता है और न शक संवत् ६०० ही माना जा सकता है। दोनोंकी पुष्टि अन्य अन्य प्रमाणोंसे भी होती है इसलिये भगवान नेमिचंद्रका समय निश्चित रूपसे बतलानेके लिये हम सर्वथा असमर्थ हैं। आश्चर्यकी बात है कि आजकल लोग दो दो पैसेकी पुस्तकोंका संशोधनमात्र करदेने पर भी उनकी अपने किये कार्यमें गणना कर संवत् मिती आदिके साथ दुनियांमें बडेभारी लेखक और विद्वान कहानेके लिये परिपूर्ण प्रयत्न करते हैं और भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती सरीखे प्रखर विद्वान जिनके कि बनाये ग्रन्थोंके नामका भी अर्थ नहीं समझा जासकता उन्होंने अपने समयतकका उल्लेख नहीं किया। मालूम होता है उन्हें अपनी कीर्तिकी कोई आवश्यकता न थी उन्हें यह ख्याल था कि हमारी कृतिसे ही हमारी प्रामाणिकता होगी। ठीक है, विद्वत्ता इसीका नाम है।

भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीके बनाये हुए ग्रन्थ गोम्मटसार, त्रैलोक्यसार क्षपणासार लब्धिसार द्रव्यसंग्रह हैं। ये उनकी असाधारणता और सिद्धांतचक्रवर्तीपनेको बडी शानसे प्रगट कर रहे हैं। इन ग्रन्थोंमें प्रायः गणितके आधारसे बडी विद्वत्ताके साथ पदार्थोंकी सिद्धि की है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणितकी इस अप्रतिम विद्वत्तासे, नहीं मालूम पडता भगवान नेमिचन्द्र सि० च० का श्रुतज्ञान कितना बलवान न होगा। इन परिज्ञानमाकी गणितहीमें लोकोत्तर निष्णातता थी यही न समझलेना चाहिये किंतु सर्वविषयके ये अप्रतिम उद्भट विद्वान थे।

ऊपर जो हम यह लिख आये हैं कि एक दंत कथासे यह प्रसिद्ध है कि श्रीगोम्मटसारजीका उदय श्रीचामुंडरायके निमित्तसे हुआ है, वह दंत कथा इसप्रकार है– एकबार श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती धवलादि महासिद्धांत ग्रंथोंमेंसे किसी सिद्धांत ग्रंथका स्वध्याय कर रहे थे। उसीसमय गुरुका दर्शन करनेकेलिये श्रीचामुंडरायको आता देख श्रीनेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीने स्वाध्याय करना बन्द करदिया। जब चामुंडरायने यह बात देखी तो भगवान नेमिचन्द्रको नमस्कार कर पूछा–भगवन्! आपने मेरे आते ही स्वाध्याय करना क्यों बन्द कर दिया? उत्तरमें भगवान नेमिचन्द्र सि० च० ने कहा इन महासिद्धांत ग्रन्थोंके सुननेका श्रावकोंको अधिकार नहीं। श्रीचामुंडरायने फिरसे निवेदन किया। हम इन महासिद्धांत ग्रन्थोंका ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं? कृपया हमें भी ऐसा कोई उपाय बतला दीजिये कि हम भी इन महासिद्धांत ग्रन्थोंके महत्त्वका अनुभव करसकें। बस, इसीपर भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीने समस्त सिद्धांतोंका सार ग्रहणकर इस परमोपयोगी श्रीगोम्मटसारजी ग्रन्थकी रचना की थी।

इस ग्रन्थका दूसरा नाम पंचसंग्रह भी है क्योंकि इसमें महाकर्मप्राभृतकसिद्धांत संबंधी जीवस्थान क्षुद्रबंध बंधस्वामी वेदनाखंड वर्गणाखंड इन पांच विषयोंका वर्णन है। यद्यपि श्रीगोम्मटसार ग्रंथके कर्ता भगवान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ही हैं तथापि संस्कृतटीकामें दी गई उत्थानिकासे यह बात जानी जाती है कि कुछ गाथा माधवचंद्र त्रैविद्यदेवकी लिखी हुई भी इसमें संकलित हैं। तीन विद्याके अप्रतिम विद्वान होनेके कारण इनको त्रैविद्यदेवकी उपाधि थी ऐसा जानपडता है।

टीकायें।

पहिली चामुंडराय कृत कर्णाटकवृत्ति १ दूसरी उसीके आधार पर श्रीमान् केशववर्णीकृत जीवतत्त्वप्रदीपिका २ तीसरी आचार्य अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीकृत मंदप्रबोधिका चौथी स्वर्गीय पं० टोडरमल्लजी कृत सम्यग्ज्ञानचंद्रिका भाषा टीका इस प्रकार इस ग्रंथराज श्रीगोम्मटसार पर चार टीका हैं ऐसा पं० खूबचंद्रजी शास्त्रीने लिखा है परन्तु एक संस्कृत टीकाका समाचार हमे धर्मभूषण श्रीमान् ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके पत्रसे मालूम हुआ जो किसी भट्टारककी बनाई हुई (ठीक याद नहीं) उन्होंने लिखी थी और वह जीवतत्त्वप्रदीपिका और मंदप्रबोधिका नामक दोनों संस्कृत टीकाओंसे भिन्न है ऐसा सूचित किया था। हमारे पासमें जो डेकिन कालेजकी प्रति थी उसमें २०० पृष्ठ किसी अन्य ही संस्कृत टीकाके थे जो उक्त दोनों संस्कृत टीकाओंसे विलक्षण टीका थी। श्रीमान ब्रह्मचारीजीने जिस टीकाका उल्लेख किया था शायद यह वही टीका हो, यह भी निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। बस इनके सिवाय ग्रंथराज श्रीगोम्मटसारकी अन्य किसी टीकाका हमें पता नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केशववर्णी।

जीवतत्त्वप्रदीपिकाके कर्ता प्रखर विद्वान केशववर्णी हैं। भांडारकरकी रिपोर्टके आधार पर पं० नाथूरामजी प्रेमीने "दिगंबरजैनग्रंथकर्ता और उनके ग्रंथ" नामक पुस्तकमें लिखा है कि जीवतत्त्वप्रदीपिका टीका वि० सं० १२२७ ज्येष्ठ सुदी ५ आदित्यवारको पूर्णकी है। परन्तु श्री गोम्मटसारकी प्रशस्तिमें इस बातका कुछ भी उल्लेख नहीं इसलिये केशववर्णीका समय वि० सं० १२२७ ही समझना चाहिये। गोम्मटसारकी प्रशस्तिमें केशववर्णीने कोई अपना खुलासा परिचय नहीं दिया इसलिये हम इनके समय आदिके विचार करनेमें असमर्थ हैं। प्रारंभमें ही—

नेमिचन्द्रं जिनं नत्वा सिद्धं श्रीज्ञानभूषणं।
वृत्तिं गोम्मटसारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तितः॥

इस पद्यमें केशववर्णीने श्रीज्ञानभूषणका उल्लेख किया है और प्रशस्तिमें उनका गुरुत्वेन स्मरण किया है मालूम नहीं ये श्रीज्ञानभूषण कब हुए हैं? तत्त्वज्ञानतरंगिणी आदि ग्रंथोंके कर्ता वि० सं० १५७५ में जो ज्ञानभूषण भट्टारक हो गये हैं वे तो ये माने नहीं जा सकते क्योंकि केशववर्णीके समयमें और उनके समयमें शदियोंका अंतर है।

अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती।

मन्दप्रबोधिका टीकाके कर्ता श्री अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती हैं ये कहां और कब हुए कुछ भी नहीं पता चलता।

बा० नाथूरामजी प्रेमीने दिगं० उनके ग्रंथ इस पुस्तकमें लिखा है कि अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीने गोम्मटसार कर्मकांडकी टीका ७००० श्लोकोंमें और जीवकांडकी ८००० श्लोकोंमें बनाई है। यह बात ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि इनकी बनाई मंदप्रबोधिका टीकामें ३८३ वीं ज्ञान-मार्गणाकी गाथाकी टीकाके अंतमें लिखा हुआ है कि— "श्रीमदभयचन्द्रसैद्धांतचक्रवर्तिविहितव्याख्यानं विश्रांतमिति कर्णाटवृत्त्यनुरूपमय-मनुवदति' इसलिये अभयचन्द्र त्रैविद्य द्वारा यहीं तक टीका बनी हुई निश्चित होती है और आगे जो वह पूरी की है वह किसी नेमिचंद्र नामक ज्ञानभूषण भट्टारकके शिष्यने पूरी की है यह बात अभयचंद्रनामांकित टीकाके आधारपर प्रशस्तिकी टिप्पणीकी प्रशस्तिमें दी है। शायद नाथूरामजी प्रेमीने पूरी प्रति देखकर और उसकी प्रशस्ति न पढकर वैसा लिख दिया होगा।

पं० टोडरमल्लजी।

हमें इनके जीवन चरित्रका पता नहीं अपनी प्रशस्तिमें इन्होंने सिर्फ यह लिखा है कि मैं जयपुरका रहनेवाला हूं राजमल्ल साधर्मी जैन की कृपासे भाषाटीकाकी रचना की गई है और यह संवत् १८१८ में पूर्ण हुई है। इसलिये इनके विषयमें विशेष उल्लेख करनेकेलिये हम अक्षम हैं। इनकी फोटोका ब्लाक और जीवन चरित्रकी सामग्री प्राप्त हो सकती है इसलिये जिस समय वह सामान प्राप्त हो जायगा मय फोटोके-जीवन चरित्र पाठकोंकी सेवामें भेजदेंगे।

सम्पादक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीगोम्मटसारके जीवकांडीय अधिकारोंकी सूची।

	पृष्ठ संख्या।		
गुणस्थानाधिकार	१	कषायमार्गणाधिकार	६०६
जीवसमासाधिकार	१८४	ज्ञानमार्गणाधिकार	६५८
पर्याप्तिप्ररूपणाधिकार	२७६	संयममार्गणाप्ररूपणाधिकार	८७६
प्राणप्ररूपणाधिकार	३४१	दर्शनमार्गणाप्ररूपणाधिकार	८८८
संज्ञाप्ररूपणाधिकार	३४७	लेश्यामार्गणाप्ररूपणाधिकार	८९४
गतिमार्गणाप्ररूपणाधिकार	३५३	भव्यमार्गणाप्ररूपणाधिकार	९८७
इंद्रियमार्गणाप्ररूपणाधिकार	३८९	सम्यक्त्वमार्गणाप्ररूपणाधिकार	१००६
कायमार्गणाप्ररूपणाधिकार	४१४	संज्ञिमार्गणाप्ररूपणाधिकार	११०७
योगमार्गणाप्ररूपणाधिकार	४७३	आहारमार्गणाप्ररूपणाधिकार	१११०
वेदमार्गणाप्ररूपणाधिकार	५९१	उपयोगाधिकार	१११६
		आलापाधिकार	११४८

शुद्धि-अशुद्धिपत्र।

जीवकांड।

अशुद्धि	शुद्धि	पत्र	पंक्ति
९४२	३४२	३४२	३
८४३	३४३	३४३	३
वेणूव	घेणुव	६१३	६
देसावहिस्स	देसवहिस्स	८०२	४
पृथ्वी पर्यंत देखे हैं बहुरि	पृथ्वी पर्यंत देखे हैं, सनत्कुमार माहेंद्रवाले दूसरी पृथ्वीपर्यंत देखे हैं	८५२	७
धम्माधमादीयां	धम्माधम्मादीयां	१०१५	१
१-२-३-४	२३७, २३८, २३९, २४०	२३७ से २४०तक	३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ संदृष्टि अधिकारकी विषय सूची।

जीवकांड।

संदृष्टियोंकी सामान्य संज्ञाओंका निरूपण	५	१
गुणस्थानाधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूपनिरूपण	२६	२
जीवसमास अधिकारमें संदृष्टियोंका निरूपण	४६	७
पर्याप्ति अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	५६	४
गति मार्गणामें संदृष्टि	६४	१
इंद्रियमार्गणामें संदृष्टि	६६	८
कायमार्गणामें संदृष्टियोंका निरूपण	७२	१९
योगमार्गणामें संदृष्टियोंके स्वरूपका निरूपण	७९	४
वेदमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	११६	११
कषाय मार्गणाधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१२०	१
ज्ञान मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	१२५	४
संयम मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१५२	६
दर्शन मार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप	"	१४
लेश्यामार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	१५३	१२
भव्यमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१७४	१
सम्यक्त्वमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	"	१७
संज्ञी मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१६१	१४
आहार मार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप	१९२	२
उपयोगाधिकारमें संदृष्टियोंका निरूपण	"	२०

जीवकांडीय अर्थ संदृष्टि अधिकारके फुटकर यंत्रोंकी सूची।

समय समय प्रति परिणाम पुंज और उनके खंडोंकी संदृष्टियों का यंत्र	३८ (क)
एकेंद्रीसे लेकर पंचेंद्री पर्यंत जीवोंके उत्कृष्ट अवगाह की संदृष्टि	५० (क)
सामान्य राशि आदिके प्रमाणका यंत्र	७७ (क)
च्यारिपद वा तिन विषैं संख्या आदिका यंत्र	१२२
प्रक्षेपक आदिका यंत्र	१२७ (क)
श्रुतस्कन्ध यंत्र	१३५ (क)
उगणीस कांडकनिकी रचनाका यंत्र	१४०
तेईस वर्गणाओंकी संदृष्टि	१८४
मिथ्यात्वगुणस्थानविषै प्रमाणकी संदृष्टि	१८६ (क)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना ।

सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नसे संसारमें कठिन भी कार्य सुलभ हो जाते हैं, जिन कार्योंकी आदिमें 'यह पूरा होगा या नहीं, इस शंकासे हृदय कंपित हो निकलता है, जिसकी लोकोत्तर कठिनतासे यह बात हृदयमें जच जाती है कि यह पूरा न होगा' वह भी सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नसे पूरा हो जाता है। पाठक ! आज जिस महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीको सनत मस्तक हो आपके कर कमलोंमें अर्पित करनेके लिये हम सन्नद्ध हुए हैं उसकी पूर्णतामें अनेक आपत्तियोंका संपात हुआ है। कभी कभी तो आपत्तियोंसे यहांतक चित्त घबडा गया कि इस कार्यको सर्वथा छोड दें परंतु सच्ची भक्ति उत्साह और प्रयत्नने वैसा न होने दिया। श्रीगोम्मटसारजीके प्रकाशनमें किन किन आपत्तियोंने अपना प्रबल जोर बांधा था हम उनका यहां दिग्दर्शन कराना आवश्यक समझते हैं।

दो संस्कृत टीका और स्वर्गीय श्रीमान् पं० टोडरमल्लजीकी भाषा टीका इन तीन टीकाओंके साथ श्रीगोम्मटसारजी शास्त्रका कितना परिमाण होता है यह बात श्रीगोम्मटसारजीके स्वाध्यायियोंसे छिपी नहीं है इसलिये एक तो इतना विशाल ग्रंथ, दूसरे युद्ध आदिके कारण कागजका अधिक तेजभाव, इसरूपसे बहुत खर्च साध्य यह कार्य दीख पडा। यदि उतना रुपया हो तो गोम्मटसारजीका प्रकाशन हो नहीं तो असाध्य ही सा था और मनमें गोम्मटसारजीके प्रकाशन की ठन ही गई थी इसलिये सबसे पहले तो गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें द्रव्यकी ओरसे आपत्ति आई परंतु जो कार्य जैसा होता है उसकेलिये कारण भी वैसे ही आकर जुट जाते हैं। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका विचार हृदयमें उदय ही हुआ था कि उसी समय संस्थाके संरक्षक हरीभाई देवकरण नामक प्रसिद्ध फार्मके मालिक दानवीर श्रीमान् सेठ हीराचंदजी रामचंदजीका शुभागमन कलकत्तेमें होगया और सतत परोपकाररत पंडित पन्नालालजी वाकलीवालके प्रस्तावसे श्रीमान सेठ साहबने गोम्मटसारजीके प्रकाशनार्थ १० हजारकी स्वीकारता देदी। बस फिर क्या था ! गोम्मटसारजीको ५ खंडोंमें निकालनेकी भावनासे फी खंड पीछे दो हजार रुपया कागजकेलिये सेठ साहबसे लेना, छपाई आदिका खर्च संस्थासे करना यह निर्धारितकर श्रीगोम्मटसारके प्रकाशनका निश्चित विचार हो गया और द्रव्यकी ओरसे जो चिंता थी वह दूर हो गई।

इसप्रकार द्रव्यकी ओरसे जो आनेवाली आपत्ति थी वह जब दूर हो गई तो फिर हृदयमें यह चिंता हुई कि इतना रुपया लग जानेपर भी यदि गोम्मटसारजी खपे नहीं तो सब रकम अटक जायगी, फिर संस्थाका कार्य ही चौपट होजायगा। इसलिये गोम्मटसारजीके ग्राहक बनानेका उद्योग किया गया। संस्थाके संरक्षक श्रीमान् दानवीर सेठसाहबका भी यही मन्तव्य था कि पहिले ४०० ग्राहक बना लेना तब गोम्मटसारजीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्य प्रारंभ करना इसलिये खूब उद्योग ग्राहकोंके बनानेका किया गया और सौभाग्यसे ४०० ग्राहक बन भी गये। इस प्रकार गोम्मटसारजी की जो खपतकी चिंता थी, ग्राहक बनजानेपर उससे भी मुक्त हो गये।

संस्थाके महामंत्री साहब पं० पन्नालालजीकी बडी प्रतिज्ञा थी कि और ग्रंथ तो लाचारीसे दूसरे प्रेसोंमें जैसे छपे ठीक ठाक हुआ परन्तु गोम्मटसारजी अब दूसरे अशुद्ध प्रेसोंमें न छपेंगे यह तो शुद्धतापूर्वक ही छपाना होगा, यह प्रतिज्ञा बडी टेढी आकर उपस्थित हो गई। जो बात अन्यत्र हो वह तो चाहें कितनी भी तकलीफ भोगनी पडे अपने यहां की जासकती है किंतु दुनियां भरमें जो चीज है ही नहीं वह कहांसे लाई जाय? जहां जहां हिंदुस्थान या विलायतमें प्रेस हैं कोई भी शुद्ध नहीं, अच्छे अच्छे साइन्सकार भी प्रेसके शुद्ध होनेकी तरकीब बतलानेमें हैरान हैं, तब प्रेस शुद्ध कैसे किया जाय? कुछ समझमें नहीं आया। प्रेसके शुद्ध होनेकी एकप्रकारसे असंभवता जान तो हृदयमें यही भावना उदित होने लगी कि अब गोम्मटसारका प्रकाशन न हो सकेगा क्योंकि प्रेस शुद्ध हो जाय उसके बाद गोम्मटसारजीका कार्य प्रारंभ किया जाय। प्रेसके शुद्ध होनेकी कोई तजवीज ध्यानमें भरती नहीं फिर गोम्मटसार कैसे प्रकाशित हो सकता है? पंडितजीको भी प्रेसके शुद्ध करनेकी बडी चिंता होगई। वे कई कलकत्तेके प्रसिद्ध २ तत्त्ववेत्ताओंसे मिले। प्रेसकी शुद्धताका कारण कोई भी पदार्थ निश्चित रूपसे वे भी न बता सके। संदिग्ध रूपसे जो उन्होंने बतलाया वह एक तो अशुद्ध निकला, तिसपर भी प्रयत्न करनेपर उससे कार्य नहीं चल सका। संस्थाका दूसरा कार्य होता रहा परन्तु प्रेसको शुद्ध न कर सकनेके कारण गोम्मटसारजीका कार्य करनेके लिये उत्साह न हो सका परन्तु प्रेसकी शुद्धताके लिये प्रयत्न बराबर जारी रहा आया।

प्रकृतिका यह सर्वमान्य नियम है कि शुभभावनासे जिस कार्यके करनेकेलिये कमर कसली जाती है उस कार्यको करनेकी प्रायः बुद्धि सूझही जाती है। हमलोगोंके पास 'शुद्ध प्रेस करही गोम्मटसारका प्रकाशन करेंगे नहीं तो न प्रेस करेंगे, और न गोम्मटसार छपायेंगे' इस प्रकार के विशुद्ध भावोंका अनुपम बल मौजूद था इसलिये हमें तरकीब सूझगई और संस्थाने निजका प्रेसकर गोम्मटसारके प्रकाशनका कार्य करना प्रारंभ करदिया।

प्रेसके अंदर बेलन अपवित्र पदार्थसे बनाने पडते हैं। हमने शुद्ध कपडेके बेलनोंकी तरकीब निकाल ली। अपवित्र पदार्थसे बेलनोंकी तयारीमें जो १) खर्च होता था उसकी जगह चार आने खर्च होते हैं। अपवित्र पदार्थोंसे बेलनकी तयारीमें दिनका दिन गायब होजाता है तिसपर भी बहुत क्लेश उठाना पडता है उसकी जगह कपडेसे बने बेलनमें सिर्फ १० मिनट खर्च होते हैं और किसीप्रकारका क्लेश नहीं सहना पडता। अपवित्र पदार्थसे बनाये गये रूलोंसे गरमीमें बडी तकलीफ सहनी पडती है। भारे गरमीके वे पिघल जाते हैं इसलिये कभी २ तो छपाईका कार्य भी रोकदेना पडता है किंतु कपडेसे बनाये गये बेलनोंमें यह कोई दिक्कत नहीं, शर्दी और गर्मीमें बराबर वे अपना काम देते रहते हैं सार यह है कि बेलनोंकी शुद्धताकी तरकीब निकल आनेसे एक बडी भारी कमीकी पूर्ति होगई और अहिंसात्मक धर्मके अंशको बहुत कुछ लाभ पहुंचा।

बहुतसे मनुष्योंका यह भी खयाल है कि स्याहीके अंदर अशुद्धता है परंतु यह उनका कोरा भ्रम ही है। स्याहीका नुस्का मंगाकर हमने खूब जांच करली है और सब लोगोंसे दरियाफ्त भी कर लिया है कि स्याहीके अंदर सब शुद्ध पदार्थोंका उपयोग होता है। हमें भी सुनासुनी बडा भ्रम होगया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था इसलिये घरमेंही स्याही बनानेका प्रबंध कर लिया था, बहुत दिन तक वह काममें ली थी, परंतु हमारे पास काफी जगह न होनेके कारण और उसके मिलानेकी कल न होनेके कारण बड़ी असुविधा हो गई इस लिये उसका कार्य स्थगित कर दिया। अब किसी जगहका प्रबंध होने पर स्याही पीसनेकी कल लेली जायगी और घरमें ही स्याही तयारकी जायगी। जब वेलन सरीखे प्रेसके अंश शुद्ध कर लिये गये तब अन्य कोई बातकी कठिनता नहीं मालूम पड सकती। अस्तु। भारतीयजैनसिद्धान्तप्रकाशनी संस्थाका पवित्र प्रेस खुल गया। उसमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जातिके कर्मचारियों की भी योजना करली एवं गोम्मटसारके प्रकाशनका कार्य करना प्रारम्भ कर दिया गया इसप्रकार गोम्मटसार के प्रकाशनमें प्रेसकी विशुद्धतारूपी जबर्दस्त आपत्ति जो आ अटकी थी, सच्ची भक्तिकी कृपासे वह भी दूर होगई।

गोम्मटसारजीके प्रकाशन की सामग्रीकी योजनाके समय कुछ लोगोंका मत विरुद्ध था। उन्होंने संस्थाके संरक्षक श्रीमान् सेठसाहबको भी सुझाया कि गोम्मटसारजीके प्रकाशनसे कोई लाभ न होगा। व्यर्थ रुपया अटक जायगा। दूसरे रूपमें गोम्मटसारजी छपगया है। संस्थासे प्रकाशित गोम्मटसारजीको कोई भी लेना स्वीकार न करेगा। इधर हमारे पास भी नहीं छपवानेकी सम्मतिके पत्र आये परंतु अब वे महाशय निष्पक्षभावसे विचारलें कि केवल मूलार्थ गोम्मटसारका महत्त्व था कि इन दो विशाल संस्कृतटीकाओंके साथ और स्वर्गीय श्रीमान् पं० टोडरमल्लजीकी भाषाटीकाके साथ प्रकाशित गोम्मटसारका महत्त्व है! संसार जब गणित शास्त्रका भक्त बना हुआ है और गोम्मटसारजीमें गणितशास्त्रके आधारपर पदार्थोंकी सिद्धिकी योजना की गई है तब केवल गाथा और उसके मामूली अर्थसे कभी ग्रंथका महत्त्व नहीं पड सकता। विशाल संस्कृतटीका और भाषाटीकाओंके साथही उसका महत्त्व पडसकता है, इसलिये गोम्मटसारजीका इसरूपमें प्रकाशित होना ही परमावश्यक था।

गोम्मटसारजीका विषय कितना कठिन है विद्वानोंसे यह बात छिपी नहीं है अन्य विषय तो कुछ कुछ समझमें जल्दी भी आजाता है परंतु अर्थ संदृष्टि और अंकसंदृष्टिके साथ गणितके आधारपर जिस पदार्थकी सिद्धि की गई है वह सर्वथा ही कठिन जान पडता है क्योंकि इससमय संदृष्टियोंका प्रचार प्रायः लुप्तसा होगया है। श्रीमान पं० टोडरमल्लजीके समय में संदृष्टियोंके परिज्ञानकी बहुत ही हीन अवस्था होचुकी थी तथापि यह उन्ही पवित्रात्माकी क्षयोपशम शक्तिमें सामर्थ्य थी कि इसप्रकार ग्रंथराज श्रीगोम्मटसारजीकी विशाल भाषाटीका उन्होने निर्माण करदी। इसलिये गोम्मटसारजीकी यह लोकोत्तर कठिनता देख एकदम चित्त दहल गया और चित्तमें पक्का श्रद्धान होगया कि गोम्मटसारजीका प्रकाशन करना अपनी शक्तिके बाहिर है। परन्तु "पूज्य आत्मा पंडित टोडरमल्लजीने कर्मकांड और जीवकांडकी अंक संदृष्टि तो जहां संस्कृत टीकामें थी वहीं भाषामें रखदी है परन्तु कठिनता जान अर्थ संदृष्टि संस्कृतटीकाके अनुसार न रखकर जुदी संदृष्टि अधिकारमें रक्खी है और अपनी ओर से खूब खुलासाकर विषय साफ करदिया है" हमने संदृष्टि अधिकारको देखा। उसमें संदृष्टियोंका स्वरूप देखकर और संस्कृतटीकासे उसे मिलान करनेपर बहुत कुछ विषय हमारी समझमें आने लगा। हमें विश्वास होगया कि अब हम गोम्मटसारजीका कुछ काम कर सकेंगे। बस! हमने संदृष्टि अधिकारोंका आलोडन करडाला और उसकी कृपासे गोम्मटसारजीके संपादनका कार्य करने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें अधिकव्यय और परिश्रमका भान पहिले ही होचुका था इसलिये अधिक प्रतियोंका जुटाना ही लाभदायक समझा गया था। प्रतियोंके संकलनमें बडा कष्ट हुआ तथापि कई प्रति भाषाकी और कई प्रति संस्कृतटीकाके आधारसे गोम्मटसारजीका प्रकाशन किया गया है। इसके सिवा हमलोगोंपर कई भयंकर विपत्तियोंकी वेदनासे कितनेही समय हमारे चित्तमें घवडाहट होगई परन्तु सच्ची भक्तिने हमें अपने कर्तव्यकार्यसे विचलित नहीं होने दिया अस्तु 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' इस नियमानुसार उत्तमकार्योंमें आपत्ति और विघ्नोंका आना स्वाभाविक वात है। परन्तु उत्तमकार्योंकी सच्चीभक्ति और श्रद्धासे विघ्नोंको निष्फल ही होना पड़ता है। महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके प्रकाशनका कार्य परमोत्तम कार्य था इसलिये उसकी सच्ची भक्तिसे विघ्नोंका संहार होगया और पाठकोंके कर कमलोंमें महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके समर्पणकेलिये आज हम उपस्थित हैं।

इस गंभीर ग्रंथके संपादनमें हमें बहुतसी वातोंका परिज्ञान नही हुआ। बहुतसे संदृष्टियोंके यंत्र हमें संदृष्टि अधिकारमें नहीं मिले इसलिये जो वात हमारी समझमें आगई उसमें तो यथासाध्य सावधानी रक्खी है और जो वात हमारी समझमें नहीं आई वह तीन किंवा चार प्रतियोंसे अच्छी तरह मिलाकर उनके पाठके अनुसार प्रकाशित की है और मिलानेमें दो दो वार मिलाकर पूर्ण सावधानी रक्खी गई है।

हमारा विचार था कि हम संक्षेपमें अर्थ संदृष्टियोंके चिन्होंका कुछ खुलासा करदें परन्तु संदृष्टिअधिकारमें पूज्यात्मा श्रीमान् टोडरमल्लजी ने संदृष्टियोंके चिह्न और स्वरूप भलेप्रकार समझा दिये हैं। इसलिये जो नवीन पाठक गोम्मटसारजीका अवलोकन करना चाहें वे सबसे पहिले संदृष्टि अधिकारका अवलोकन करलें पीछें गोम्मटसारजीका स्वाध्याय करना प्रारम्भ करें। अर्थ संदृष्टि अधिकारमें वर्णित संदृष्टियोंके स्वरूपके अवलोकनसे संस्कृत टीकामें वर्णित अर्थ संदृष्टियोंके स्वरूपका भलेप्रकार परिज्ञान होता चला जायगा।

महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीके बडे बडे दो भाग हैं जीवकांड और कर्मकांड। जीवकांडकी पृष्ठसंख्या जुदी रक्खी गई है और उससे संबंध रखनेवाले अर्थ संदृष्टि अधिकार विषयसूची सूत्रसूची आदि भी जुदे जुदे रक्खे हैं। इसी प्रकार कर्मकांडकी भी पृष्ठ संख्या जुदी है और उससे संबंध रखनेवाले अर्थ संदृष्टि आदि अधिकार भी जुदे जुदे हैं। पाठकोंकी इच्छा है चाहें वे एक साथ सबको रक्खें चाहें जुदे जुदेकर दोनों कांड रक्खें।

यह श्रीगोम्मटसारजी महाशास्त्र दो संस्कृत टीका और एक भाषा टीका इसप्रकार तीन टीकाओंके साथ प्रकाशित है। पहिली टीकाका नाम जीवतत्त्वप्रदीपिका है और उसके निर्माता प्रखर विद्वान केशववर्णी हैं। दूसरी टीका मन्दप्रबोधिका है उसके निर्माता श्रीमान् अभयचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती हैं और तीसरी टीकाका नाम सम्यग्ज्ञान चंद्रिका है और उसके कर्ता श्रीमान् पं० टोडरमल्लजी हैं। इनमें जीवतत्त्वप्रदीपिका और सम्यग्ज्ञानचंद्रिका ये दोनों टीका पूरी हैं। मंद प्रबोधिका टीका अधूरी है, जीवकांड ३८३ गाथा ही तक है क्योंकि यह किसी कारणसे यहां पूरी हो गई है टीकाके अंतमें यह लिखा है कि "श्रीमदभयचन्द्रसैद्धांतचक्रवर्तिविहितव्याख्यानं विश्रांतमिति कर्णाटवृत्त्यनुरूपमयमनुवदति" अर्थात् श्रीमान् अभयचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्ति द्वारा रचा हुआ व्याख्यान समाप्त हुआ अब कर्णाटक वृत्तिके अनुसार लिखा जाता है। इसलिये मन्द प्रबोधिका टीका हमने वहीं समाप्त करदी है। यद्यपि हमारे पास जो प्रति है उसमें मन्द प्रबोधिका पूरी टीका है तथापि उसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय और जीवतत्त्वप्रबोधिकाका विषय देखनेपर कुछ भी विशेष नहीं दीख पडा। ठीक भी है—श्रीमच्चामुण्डरायकृत गोम्मटसारकी सर्वांग सुंदर एक कनडीमें टीका है। मन्द प्रबोधिका जिसने पूरी की है उसने यह प्रतिज्ञा की है कि अब कर्णाटक वृत्तिके अनुसार लिखा जाता है और जीवतत्त्वप्रदीपिकाके कर्ता श्रीमान् केशववर्णीका भी यह वचन है कि 'वक्ष्ये कर्णाटवृत्तितः' अर्थात् गोम्मटसारकी जो मैं टीका बनाऊंगा कर्णाटक वृत्तिके अनुसार बनाऊंगा इसलिये जब दोनोंही टीकाओंका विषय एक है कुछ भी फेर फार नहीं तब मन्दप्रबोधिकाका प्रकाशन करना अनुचित था। हां! जहां जहां हमें मन्दप्रबोधिकामें विशेष मालुम पडा है वहां वहां हमने टिप्पणीमें खुलासा रूपसे लिख दिया है। हमारे पास जो पूना डेकिन कालेजसे प्रति आई थी उसके अंत-भागमें जो पत्र थे वह कोई अन्य ही टीकाके थे पर उसका कुछ ही अंश था और जीवतत्त्वप्रदीपिकासे कुछ विशद न थी। पता नहीं, उस टीकाके निर्माता कौन विद्वान थे?

गोम्मटसारजीका जिस समय कार्य प्रारंभ हुआ था सबसे प्रथम गोम्मटसारजीकी मन्द प्रबोधिका टीका और जीवकांडका संदृष्टि अधिकार इसप्रकार दो प्रति हमें परम सज्जनोत्तम बाबू बद्रीदासजी बिजनोरकी कृपासे प्राप्त हुई थीं जो प्रायः शुद्ध थीं। उसके बाद संस्थाके संरक्षक श्रीमान् सेठ हीराचन्दजी रामचन्दजी गांधीकी कृपासे डेकिन कालेज पूनासे समस्त जीवतत्त्वप्रदीपिकाकी प्रति प्राप्त हुई थी जो अधिक अशुद्ध थी। उसके बाद जीवतत्त्वप्रदीपिकाकी पूरी प्रति मित्रवर पंडित इन्द्रलालजी शास्त्री जयपुरसे और एक प्रति जीवकांडतककी स्वर्गीय मित्रवर गणेशलालजी गोधा जयपुरसे प्राप्त हुई थी जो दोनों प्रति शुद्ध थीं। उसके बाद जीवकांडतक जीवतत्त्व प्रदीपिका संस्कृत टीकाकी १ प्रति कारन्जासे श्रीयुक्त पं० वंशीधरजी शास्त्री न्यायतीर्थ की कृपासे प्राप्त हुई थी जो प्राचीन और शुद्ध थी। उसके बाद एक प्रति भाषा टीकाकी लब्धिसार पर्यंत और एक प्रति मन्दप्रबोधिका संस्कृतटीकाकी संपूर्ण हमें जैनसिद्धांतभवन आराके श्रीमहोदय बाबू सुपार्श्वदासजी गुप्त बी० ए० की कृपासे प्राप्त हुई। संस्कृत प्रति तो अत्यंत प्राचीन और शुद्ध थी ही परन्तु भाषा प्रति बडी ही भव्य और दर्शनीय थी। उसके यंत्रोंकी रचना और अक्षरोंकी खुबसूरती बडी ही मनोहारिणी थी, विशेष कहांतक कहा जाय इस विशुद्ध प्रतिकी कृपासे श्रीगोम्मटसार बहुत अंशोमें शुद्ध प्रकाशित हुआ होगा। उसके बाद हमें प्रारंभसे लब्धिसार पर्यंत एक प्रति श्रीमान् सेठ रावजी सखाराम देशी मंत्री मा० दि० जैन परीक्षालय शोलापुरकी कृपासे प्राप्त हुई जो प्रायः शुद्ध थी। उसी समय एक भाषा प्रति जीवकांडतक मित्र गणेशलालजी गोधाकी कृपासे प्राप्त हुई थी। इतनी प्रतियोंके आधारसे श्रीगोम्मटसारजीका संपादन हुआ है। जिन उपर्युक्त महाशयोंने प्रतियोंके भेजनेमें कष्ट उठाकर श्रीगोम्मटसार सरीखे पवित्र और कठिन कार्यमें सहायता दी है और हमारे साथ सौजन्यका परिचय दिया है, हम उनके परम आभारी हैं।

सबसे प्रथम बृहद् गोम्मटसारजीके प्रकाशनका समाचार पाते ही परम सज्जनोत्तम श्री युक्त डा० गिरधरलालजी अहमदाबादने अत्यंत हर्ष प्रगट किया। उत्साहवर्धक बहुतसे हमारे यहां पत्र भेजे एवं गोम्मटसारकी ४०० ग्राहक संख्याकी पूर्तिकेलिये बलवान प्रयत्न चालु देख फौरन लिख दिया कि यदि ४०० ग्राहकोंकी पूर्तिमें कमी जान पडे तो ग्राहक श्रेणीमें २१ प्रतियोंका ग्राहक मुझे बना लेना इसलिये उक्त डाक्टर साहबकी इस अनुपम सहानुभूतिका संस्था विशेष आभार मानती है। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका शुभ संवाद सुन बिजनोर निवासी श्रीमान् बाबू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बद्रीप्रसादजीने भी परम हर्ष प्रगट किया। गोम्मटसारजीके जल्दी आरंभ कर देनेकी वार वार प्रेरणाकी। प्रतियां भी शीघ्र भेज दीं इसलिये उक्त बाबू साहबकी प्रेममय सहानुभूतिकी भी संस्था अधिक आभारी है। गोम्मटसारजीके प्रकाशनका शुभ संवाद पाते ही धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने परम हर्ष प्रगट किया। ग्राहक संख्यापर ही गोम्मटसारजीका प्रकाशन समझ बडे विस्तारसे जैनमित्रमें नोट प्रकाशित किया और जल्दी ग्राहक होनेकी बडी उग्रतासे प्रेरणाकी जिससे ग्राहकोंकी पूर्ति बहुत ही शीघ्रतासे हुई तथा प्रथम खण्ड गोम्मटसारजीके प्रकाशित होते ही वडी बिस्तारसे समालोचना की। ब्रह्मचारीजीकी इस परमोपकारिणी सहानुभूतिकी संस्था अत्यंत आभारी है। और भी सज्जनोंने गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें सहायता रूपसे जो हमारे ऊपर कृपा की है और विघ्न उपस्थितकर गोम्मटसारजीके प्रकाशनमें उग्रता पूर्वक जोश उत्पन्न किया है उनकी भी संस्था अत्यन्त आभारी है।

गोम्टसारके प्रकाशनमें यद्यपि हमने कई आपत्तियोंका उल्लेख किया है पर द्रव्यकी ओरसे आनेवाली आपत्तिसे बलवान आपत्ति कोई न थी फिर भी थोडी द्रव्य हो तो उसका आयोजन कहींसे न कहींसे करभी लिया जाय किंतु गोम्मटसारजीके प्रकाशनके लिये प्रचुर द्रव्य की आयोजना कहांसे की जाय ? इसलिये सबसे अधिक धन्यवादके पात्र हरीभाई देवकरण नामक प्रसिद्ध फार्मके मालिक दानवीर श्रीमान् सेठ हीराचंद रामचंदजी हैं जिनकी कृपासे महाशास्त्र श्रीगोमटसारसरीखे दुःसाध्य कार्यका जीर्णोद्धार होगया। उन्हींकी कृपासे और विपुल सहायतासे आज भारतीय जैनसिद्धान्तप्रकाशनी संस्था सुलभ लागतपर उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रदान कर जैनधर्मका परम उपकार कर रही है और सदा करती जायगी। हमारी यह पवित्र कामना है कि इस प्रकार लोकोत्तर दान देनेवाले श्रीमान दानवीर सेठ साहब चिरंजीव रहें और इसप्रकार अपने कठिन परिश्रमसे उपार्जित लक्ष्मीका समीचीन दान देकर इस परम पावन जैन धर्मकी उन्नतिमें सहायी बने रहें। इन्हीं श्रीमान् सेठ साहबकी द्रव्यकी सहायतासे लब्धिसार व क्षपणासार नामक विशालग्रंथोंका कार्य बडे जोर से चल रहा है थोडेदिन बाद उनका भी पाठकोंको दर्शन होगा।

अंतमें हम यह निवेदन करें कि महाशास्त्र श्रीगोम्मटसारजीका विषय परम गहन हैं। भगवान श्रुतकेवलिके समान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तीके वचनोंका तात्पर्य समझना तो दूर रहा उनके वचनोंके विशुद्धरूपसे उच्चारण करने में भी हम सर्वथा असमर्थ हैं। परम विज्ञानी महात्मा टोडरमल्लजीकी भाषा समझनेका भी हमें ज्ञान नहीं तथापि इस महान शास्त्रके संपादन करनेकेलिये जो हमने साहस किया है वह हमारा दुस्साहस और धृष्टता ही है। यद्यपि प्रतियोंके अक्षरोंसे अक्षर मिलानेमें विशेष प्रमाद नहीं हुआ है तथापि अज्ञानजन्य प्रमाद तो अवश्य ही होना माना जायगा इसलिये संभव है इस विशाल किंतु गहन ग्रंथमें हजारों जगह त्रुटियां और अशुद्धियां रहगई होंगी इस लिये विद्वान पाठकोंसे सनत मस्तक हो णभ्यर्थना है कि वे अज्ञानसे होनेवाली अशुद्धियोंको शुद्ध कर पढें और पढावें एवं अज्ञान अन्य अशुद्धियोंके शुद्ध करनेमें असमर्थतासे लाचारी जान हमें क्षमा प्रदान करें। बस विद्वानोंसे इतनाही निवेदन करना पर्याप्त है।

विद्वानोंके अनुचर—

गजाधरलाल जैन,

श्रीलाल जैन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान् नेमिचंद्रसिद्धांतचक्रवर्ती और श्रीगोम्मटसारजी।

पाठक ! जो विशाल ग्रंथ आपके सामने विराजमान है उसके रचयिता प्रातः स्मरणीय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती हैं। ये पूज्यात्मा कब हुए ? यद्यपि इसबातका निर्णायक कोई भी पुष्ट प्रमाण नहीं है तथापि यहां वहां से देख दाखकर जो निश्चय किया है यहां हम उसका उल्लेख किये देते हैं।

श्रीचामुंडराय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती को अपना गुरु मानतेथे और उनके गुणोंके परम श्रद्धालु थे। भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीकी भी श्रीचामुंडराय पर अलौकिक कृपा थी– वे श्रीचामुंडराय पर विशेष–धर्मात्मा होनेके कारण अत्यंत हित रखते थे इसलिये गोम्मटसारजीके अंतमें प्रशस्ति लिखते समय भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीने श्रीचामुंडरायका कई गाथाओंमें अभिवादन किया है उनमें महत्त्वपूर्ण तीन गाथाओंका हम यहां उल्लेख किये देते हैं।

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ ॥ ९६८ ॥

अर्थात्—गोम्मटसार संग्रहसूत्र गोम्मट शिखरके ऊपर चामुंडराय राजाकरि बनवाये जिनमंदिरमें विराजमान एक हाथ प्रमाण इन्द्र नील मणिमय नेमिनाथनामा तीर्थंकर देवका प्रतिबिंब तथा उसी चामुंडराय करि निर्मापित लोकमें रूढिकरि प्रसिद्ध दक्षिण कुक्कुटनामा जिनका प्रतिबिंब जयवंत प्रवर्तो।

जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया सो रायो गोम्मटो जयउ ॥ ९७१ ॥

अर्थात् जिसने चैत्यालयमें खडे खंभोंके ऊपर स्थिर जो यक्षकी मूर्तियां हैं उनके मुकुटके आगेके भागकी किरणोंरूप जलसे सिद्ध परमेष्ठियोंके आत्मप्रदेशोंके आकार रूप शुद्ध चरण धोये हैं ऐसा चामुंडराय जयको पाओ।

गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरकालं णामेण य वीरमत्तंडी ॥ ९७२ ॥

अर्थात् गोम्मटसार ग्रंथके गाथासूत्र लिखनेके समय गोम्मटराय–चामुंडराय ने देशीभाषा अर्थात् कर्णाटकवृत्ती बनाई है वह वीर मार्तंड नामसे प्रसिद्ध चामुंडराय बहुतकालतक जयवंत प्रवर्तो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतना ही नहीं एक दंतकथासे यह भी प्रसिद्ध है कि गोम्मटसारजीका उदय भी श्रीचामुंडरायके ही निमित्तसे हुआ था इसलिये यह बात सर्वमान्य और निःशंकित है कि पूज्यात्मा भगवान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती और महापुरुष श्रीचामुंडराय दोनों ही समान कालीन थे।

वाहुवलिचरितमें श्रीचामुंडरायके विषयमें यह लिखा हुआ है—

कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे। मासि चैत्रे
पंचम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुंभलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटितभगणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुंडराजो वेल्गुलनगरे गोम्मटेशप्रतिष्ठां ॥ ५५ ॥

अर्थात् कल्की–शंक (?) संवत् ६०० में चैत्रशुक्ल ५ मी रविवारके दिन श्रीचामुंडरायने श्रीगोम्मटस्वामीकी प्रतिष्ठा की। जब यह बात सर्वमान्य और निश्चित है कि भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती और श्रीचामुण्डराय समकालीन हैं। तब जो संवत् श्रीचामुण्डरायका होगा वही श्रीमान् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तीका है, वाहुवलि चरितके अनुसार श्रीचामुण्डरायका समय शकसंवत् ६०० तदनुसार वि० सं० ७३५ है। वही भगवान नेमिचन्द्रका है। पं० जवाहरलालजी शास्त्रीनेभी भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शकसंवत् ६०० (वि० सं० ७३५) ही लिखा है।

यदि इस कथनकी तुलना हम दूसरे दूसरे प्रमाणोंके आधारसे करते हैं तो बलवान बाधा आकर उपस्थित हो जाती है क्योंकि संस्कृत छंदोबद्ध भुजवलि (वाहुवलि गोम्मट) चरित्रमें जो कथा लिखी है उससे श्रीअजितसेनाचार्य तथा श्रीचामुण्डरायकी समान कालीनता सिद्ध होती है जो श्रीनेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीके उपरि निर्धारित समयमें बाधा डालती है। वह कथा इस प्रकार है—

द्रविड देशमें एक मधुरा नामकी नगरी थी जो प्राचीन शास्त्रोंमें दक्षिण मथुरा और आजकलकी भूगोलके अनुसार मदुरा नामसे प्रसिद्ध है। वहां—

श्रीदेशीयगणाग्रिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनंदिव्रति-
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूडामणिः।
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्धनसुधासूतिर्महीमंडले
रेजे श्रीगुणभूषणो भुवनुतः श्रीराजमल्लो नृपः ॥ वाहुवलिचरित ॥

इस श्लोकके अनुसार देशीयगणके स्वामी श्री सिंहनंदी आचार्यके चरणकमलोंका सेवक गंगवंशतिलक श्रीराजमल्ल नामका राजा था उसका

तस्यामात्यशिखामणिः सकलवित्सम्यक्त्वचूडामणिः—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्यांभोजविबोधनोद्यतमतिर्भास्वत्समानप्रभः
शिष्यांभोजविबन्धमणिः सुजनवंदिन्नातचूडामणिः ।
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशुक्तिसुमणिः कीर्त्योघमुक्तामणिः ।
पादन्यस्तमहीशमस्तकमणिश्चामुंडभूपोऽग्रणीः ॥

इस श्लोकके अनुसार श्रीचामुंड नामका राजा महा अमात्य (बडामंत्री) था । एक दिन श्रीचामुंड मंत्रीके साथ महाराज राजमल्ल सभामें विराजमान थे कि एक सेठ सभामें आया और प्रणामपूर्वक महाराजसे उसने यह समाचार कहा—

उत्तर दिशामें एक पोदनपुर नगर है । वहां बाहुबलि स्वामीकी कायोत्सर्ग प्रतिबिम्ब है जो भरत चक्रवर्ती द्वारा स्थापित है और जिसकी प्रसिद्धि वर्तमानमें गोम्मट नामसे है । यह पवित्र वृत्तांत सुनते ही महाराज राजमल्ल और मंत्री श्रीचामुंडको परम आनंद हुआ । बाहुबली भगवानकी प्रतिबिम्बको भाव नमस्कार कर श्रीचामुंड अपने घर गये और अपनी माता कालिकासे सारा वृत्तांत कह सुनाया ।

इस पवित्र वृत्तांतसे माता कालिकाको भी परमानंद हुआ । वह अपने पुत्र श्रीचामुंडके साथ जिन मंदिरमें गई । भगवान जिनेंद्रकी स्तुति की और पश्चात् अपने गुरु (अजितसेन) के गुरु श्रीसिंहनंदी आचार्यको नमस्कार किया । उसके बाद—

पश्चात्सोऽजितसेनपंडितमुनिं देशीगणाग्रेसरं स्वस्याधिप्यसुखाब्धिवर्धनशशिश्रीनंदिसंघाधिपं ।
श्रीमद्भासुरसिंहनंदिमुनिपाङ्घ्रयम्भोजरोलम्बकं चानम्य व्यवदत्सुपोदनपुरीश्रीदोर्वलेर्वृत्तकं ॥

इस प्रकार देशीयगणके प्रधान श्रीअजितसेन मुनिको नमस्कार कर श्रीचामुंडने श्रीबाहुबलिके प्रतिबिंबका वृत्तांत कहा । इत्यादि ।

केवल इस कथाहीसे अजितसेन और श्रीनेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीकी समानकालीनता सिद्ध नहीं होती, स्वयं भगवान नेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीने भी श्रीअजितसेनका उल्लेख किया है और उन्हें चामुण्डरायका गुरु बतलाया है जैसा कि—

जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं ।
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरू जयउ सो राओ ॥ कर्म० गो० ९६६

अर्थात्— जिनमें बुद्ध्यादि ऋद्धिप्राप्त गणधर देवादि मुनियोंके गुण विश्राम पाकर ठहरे हुए हैं अर्थात् गणधरादिकोंके समान जिसमें गुण हैं ऐसा अजितसेन नामा मुनिनाथ जिसका व्रत (दीक्षा) देनेवाला गुरु है वह चामुंडराय सर्वोत्कृष्टपने जय पावो । और भी—

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारि अजियसेण गुरू ।
भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयउ ॥

अर्थात्— जिसके गुरु अजितसेन नाथमें ऋद्धिप्राप्त गणधर देवादिकोंके गुण पाये जाते हैं, आचार्य श्रीआर्यसेनके अनेक गुणोंके समूह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को धारण करनेवाले तथा तीन लोकके गुरु अजितसेन गुरु जिसके गुरु हैं वह श्री चामुंडराय राजा जयवन्त रहो। तथा यह भी निश्चय ही है कि बाहुवलि चरितमें जिन अजितसेनका उल्लेख है और गोम्मटसारमें जिनका उल्लेख है वे दोनों अजितसेन एक ही हैं। अस्तु।

ये अजितसेन कब हुए हैं? इस बातका पता श्रवणबेलगोलाके एक शिलालेखके इन पद्योंसे मिलता है—

गुणाः कुंदस्पन्दोड्डमरसमरा वागमृतवाःप्लवप्रायः मेयः प्रसरसरसा कीर्तिरिव सा।
नखेंदुज्योत्स्नांघ्रेर्नृपचयचकोरप्रणयिनी न कासां श्लाघानां पदमजितसेनो व्रतिपतिः॥

यह शिला लेख करीव ग्यारहवीं शदीका खुदा हुआ है इससे मालूम होता है श्रीअजितसेन स्वामी ग्यारहवीं सदीके पूर्व हुए हैं और उसी समय श्रीचामुंडराय भी हुए हैं। इसलिये जब श्रीचामुंडरायका समय ग्यारहवी सदी निश्चित होता है तब उनके समकालीन भगवान नेमिचंद्रका भी समय यही निश्चित होना चाहिये इसलिये पहिले बाहुवलि चरितके अनुसार जो शक सं ६०० और वि० सं० ७३५ लिखा है उसमें संदेह आकर उपस्थित हो जाता है।

पं० नाथूरामजी प्रेमीने जो चन्द्रप्रभ चरितकी भूमिका लिखी है उसमें उन्होंने श्रीचामुंडरायके परिचयमें लिखा है कि 'कनडी भाषाके प्रसिद्ध कविरत्नने शक संवत् ९१५ में पुराण तिलक नामक ग्रंथकी रचना की है और उसमें अपनेको रक्कस गंगराजका आश्रित बतलाया है। श्रीचामुण्डरायकी भी अपने पर विशेष कृपा रखनेका वह जिक्र करता है' इससे पुराण तिलकके आधारसे यह जान पडता है कि शक संवत् ९१५ या विक्रम सं० १०५० के लगभग ही श्रीचामुंडराय और अजितसेन स्वामी हुए हैं।

गोम्मटसारकी श्रीचामुण्डरायकृत एक कर्णाटकवृत्ति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धांतचक्रवर्तीके समक्ष ही बन चुकी थी। उसीके अनुसार श्रीकेशववर्णीकृत संस्कृत टीका भी है उसकी आदिमें यह लिखा है—

'श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासनगुहाभ्यंतरनिवासिप्रवादिसिंधुरसिंहायमान-सिंहनंदिनन्दितगंगवंशललाम-राजसर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेयभागधेय-श्रीमद्राजमल्लदेवमहीवल्लभमहामात्यपदविराजमान-रणरङ्गमल्लासहायपराक्रम- गुणरत्नभूषण-सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनामसमासादितकीर्तिकांत- श्रीमच्चामुंडरायप्रश्नावतीर्णैकचत्वारिंशत्पदनामसत्त्वप्ररूपणद्वारेणाशेषविनेयजननिकुरंबसंबोधनार्थं श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तिकचक्रवर्ती समस्तसैद्धान्तिकजनप्रख्यातविशदयशाः विशालमतिरसौ भगवान् गोम्मटसारपंचसंग्रहप्रपंचमारचयँस्तदादौ निर्विघ्नतः शास्त्रपरिसमाप्तिनिमित्तं देवताविशेषं नमस्करोति।

राज (च) मल्ल और रक्कस गंगराज ये दोनों ही भाई थे। उपर्युक्त गोम्मटसारकी पंक्तियोंसे स्पष्ट है कि राजमल्ल श्रीचामुंडराय तथा भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती तीनों ही समकालीन हैं। इसलिये राजमल्लका समय विक्रम की जब ग्यारहवीं शदी निश्चित की जाती है तब वही समय श्रीचामुंडराय और नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका भी होना चाहिये।

यहां पर विचारणीय बात यह उपस्थित होजाती है कि बाहुवलि चरितसे भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शक संवत् ६००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदनुसार वि० सं० ७३५ सिद्ध होता है और पुराण तिलकके आधारसे शक सं० ९१५ या वि० सं० १०५० सिद्ध होता है तब किसका लेख प्रमाण माना जाय ? यदि यह कहा जाय कि पुराण तिलकके आधारसे भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीका समय शक सं० ९१५ या वि० सं० १०५० सिद्ध होता है तथा अजितसेनाचार्यके समयका द्योतक श्रवणवेलगोलाके एक शिलालेखका ' गुणाः कुन्दस्पन्द० ' यह जो श्लोक उद्धृत किया गया है उससे श्रीअजितसेनके समकालीन श्रीचमुंडरायका समय ग्यारहवीं शदीसे पूर्व निश्चित होता है वही समय श्रीचामुंडरायके समकालीन भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीका सिद्ध होता है जो प्रायः पुराणतिलकमें उल्लिखित नेमिचंद्रजी के समयके साथ मिल जाता है इसलिये इन दोनों प्रमाणोंका प्रायः एक ही प्रमेय हो जानेसे नाथूरामजी प्रेमीने जो भगवान नेमिचन्द्रका समय शक सं० ९१५ वि० सं० १०५० लिखा है वह युक्त हो सकता है सो ठीक नहीं क्योंकि पं० जवाहरलालजी शास्त्रीने मलवार कार्टलीरिव्यूमें थामस सी राईस द्वारा लिखित ' कर्णाटकमें जैनियोंका निवास ' नाम लेखके आधारसे विल्लाल वंशके स्थापक श्रीचामुंडरायका राज्य सन् ७१४ ईस्वी लिखा है उन्हीं शास्त्रीजीने मराठी भाषाके ' तत्त्व प्रसारक ' नामक समाचार पत्रमें प्रकाशित ' श्रवणवेलगोलाका इतिहास ' नामक लेखके आधारसे श्रीचामुण्डरायका समय शकसंवत् ७७७ लिखा है। चामुण्डराय और भगवान नेमिचन्द्र सि० च० जब समकालीन हैं तब भगवान नेमिचंद्रका भी यही समय सिद्ध हो जाता है। तथा प्रेमीजीने भी दिगम्बरजैन ग्रंथकर्ता और उनके ग्रंथ इस पुस्तकमें भगवान नेमिचन्द्रका समय वि० सं० ७६४ लिखा है इसलिये इन तीनों प्रमाणोंकी प्रायः समानता होजानेसे बाहुबलि चरितके लेखकी ही सत्यता जान पडती है। इन तीनोंके द्वारा जो भगवान नेमिचन्द्रका समय निश्चित है वह बाहुबलि चरितकी छायाके ही आधार पर ही निश्चित किया गया होगा यह भी बात कम अनुभवमें आती है। जो हो, भगवान नेमिचन्द्र सि० च० कब हुए ? यह बात सर्वथा निश्चित रूपसे नहीं कही जा सकती अस्तु। नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीने कई जगह वीरनंदी आचार्यका स्मरण किया है यथा—

" जस्स य पायपसायेणणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो । वीरिंदणंदिवच्छो णमामि तं अभयणंदिगुरुं ॥"

' णमिऊण अभयणंदिं सुदसागरपारगिंदणंदिगुरुं । वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं ॥ "

" णमह गुणरयणभूसणसिद्धंतामियमहद्धिभवभावं । वरवीरणंदिचंदं णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं ॥ "

इन्हीं वीरनंदीका स्मरण वादिराजसूरिने भी किया है—

चन्द्रप्रभाभिसंबद्धा रसपुष्टा मनःप्रियं ।
कुमुद्वतीव नो धत्ते भारती वीरनंदिनः ॥ पार्श्वनाथचरित्र प्रथमसर्ग ३०

वादिराज सूरिने पार्श्वनाथ काव्यकी पूर्ति शक संवत् ९४७ में की है यह उसीकी अंतिम प्रशस्तिके इस पद्यसे मालुम होता है—

शाकाब्दे नगवारिरंध्रगणने संवत्सरे क्रोधने, मासे कार्तिकनाम्नि बुद्धिमहिते शुद्धे तृतीयादिने ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंहे पाति जयादिके वसुमती जैनीकथेयं मया, निष्पत्तिं गमिता सती भवतु वः कल्याणनिष्पत्तये ॥

अर्थात् शक संवत् ९४७ कोधन संवत्सरकी कार्तिक शुक्ला तृतीयाको पार्श्वनाथ काव्य पूरा किया। इससे यद्यपि यह जान पडता है कि शक संवत् ९४७ से पहिले वीरनंदी स्वामीका अस्तित्व था। तथा वीरनंदि आचार्यने अभयनंदीको गुरु स्वीकार किया है और भगवान नेमिचंद्र सि० च० भी उनका गुरुरूपसे स्मरण करते हैं इसलिये वीरनंदी और भगवान नेमिचंद्र सि० च० दोनोंही समकालीन सिद्ध होते हैं परन्तु यह नहीं कहा जासकता कि शक संवत् ९४७ से पहिले पुराणतिलकके लेखानुसार शक सम्वत् ९१५ में भगवान नेमिचन्द्रका अस्तित्व था वा बाहुबलि चरितके अनुसार शक संवत् ६०० में था? क्योंकि ये दोनोंही समय शक संवत् ९४७ से पहिलेके हैं।

गोम्मटसारकी गाथाओंका उल्लेख प्रमेयकमलमार्तंडमें भी मिलता है यथा—

विग्गहगदिमावण्णा केवलिणो समुहदो अजोगी य।
सिद्धाय अणाहारा सेसा आहारिणो जीवा ॥

श्रीप्रभाचंदाचार्यने प्रमेयकमलमार्तंडकी रचना भोजराजके समयमें की है क्योंकि उसके अन्तमें यह लेख है—

श्रीभोजदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामार्जितामलपुण्यनिराकृतनिखिलमलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन निखिलप्रमाणप्रमेयस्वरूपोद्योतपरीक्षामुखपदमिदं विवृतमिति।

धारा नगरीके अधिपति भोजराजाका समय विक्रमकी ग्यारहवीं शदी निश्चित है इससे यही मालूम होता है कि भगवान नेमिचंद्रका समय ग्यारहमी शदीसे पहिलेका है परंतु वह क्या और क्यों है? यह बात संदिग्ध ही है। इसलिये यहां तक लिखनेसे यह बात सिद्ध हो चुकी कि भगवान नेमिचंद्रका समय न शकसंवत् ९१५ ही माना जा सकता है और न शक संवत् ६०० ही माना जा सकता है। दोनोंकी पुष्टि अन्य अन्य प्रमाणोंसे भी होती है इसलिये भगवान नेमिचंद्रका समय निश्चित रूपसे बतलानेके लिये हम सर्वथा असमर्थ हैं। आश्चर्यकी बात है कि आजकल लोग दो दो पैसेकी पुस्तकोंका संशोधनमात्र करदेने पर भी उनकी अपने किये कार्यमें गणना कर संवत् मिती आदिके साथ दुनियांमें बडेभारी लेखक और विद्वान कहानेके लिये परिपूर्ण प्रयत्न करते हैं और भगवान नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती सरीखे प्रखर विद्वान जिनके कि बनाये ग्रन्थोंके नामका भी अर्थ नहीं समझा जासकता उन्होंने अपने समयतकका उल्लेख नहीं किया। मालूम होता है उन्हें अपनी कीर्तिकी कोई आवश्यकता न थी उन्हे यह ख्याल था कि हमारी कृतिसे ही हमारी प्रामाणिकता होगी। ठीक है, विद्वत्ता इसीका नाम है।

भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीके बनाये हुए ग्रन्थ गोम्मटसार, त्रैलोक्यसार क्षपणासार लब्धिसार द्रव्यसंग्रह हैं। ये उनकी असाधारणता और सिद्धांतचक्रवर्तीपनेको बडी शानसे प्रगट कर रहे हैं। इन ग्रन्थोंमें प्रायः गणितके आधारसे बडी विद्वत्ताके साथ पदार्थोंकी सिद्धि की है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणितकी इस अप्रतिम विद्वत्तासे, नहीं मालूम पड़ता भगवान नेमिचन्द्र सि० च० का श्रुतज्ञान कितना बलवान न होगा। इन पवित्रात्माकी गणितहीमें लोकोत्तर निष्णातता थी यही न समझलेना चाहिये किंतु सर्वविषयके ये अप्रतिम उद्भट विद्वान थे।

ऊपर जो हम यह लिख आये हैं कि एक दंत कथासे यह प्रसिद्ध है कि श्रीगोम्मटसारजीका उदय श्रीचामुंडरायके निमित्तसे हुआ है, वह दंत कथा इसप्रकार है– एकबार श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती धवलादि महासिद्धांत ग्रंथोंमेंसे किसी सिद्धांत ग्रंथका स्वध्याय कर रहे थे। उसीसमय गुरुका दर्शन करनेकेलिये श्रीचामुंडरायको आता देख श्रीनेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्तीने स्वाध्याय करना बन्द करदिया। जब चामुंडरायने यह बात देखी तो भगवान नेमिचन्द्रको नमस्कार कर पूछा–भगवन्! आपने मेरे आते ही स्वाध्याय करना क्यों बन्द कर दिया? उत्तरमें भगवान नेमिचन्द्र सि० च० ने कहा इन महासिद्धांत ग्रन्थोंके सुननेका श्रावकोंको अधिकार नहीं। श्रीचामुंडरायने फिरसे निवेदन किया। हम इन महासिद्धांत ग्रन्थोंका ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं? कृपया हमें भी ऐसा कोई उपाय बतला दीजिये कि हम भी इन महासिद्धांत ग्रन्थोंके महत्त्वका अनुभव करसकें। बस, इसीपर भगवान नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्तीने समस्त सिद्धांतोंका सार ग्रहणकर इस परमोपयोगी श्रीगोम्मटसारजी ग्रन्थकी रचना की थी।

इस ग्रन्थका दूसरा नाम पंचसंग्रह भी है क्योंकि इसमें महाकर्मप्राभृतकसिद्धांत संबंधी जीवस्थान क्षुद्रबंध बंधस्वामी वेदनाखंड वर्गणाखंड इन पांच विषयोंका वर्णन है। यद्यपि श्रीगोम्मटसार ग्रंथके कर्ता भगवान श्रीनेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ही हैं तथापि संस्कृतटीकामें दी गई उत्थानिकासे यह बात जानी जाती है कि कुछ गाथा माधवचंद्र त्रैविद्यदेवकी लिखी हुई भी इसमें संकलित हैं। तीन विद्याके अप्रतिम विद्वान होनेके कारण इनको त्रैविद्यदेवकी उपाधि थी ऐसा जानपड़ता है।

टीकायें।

पहिली चामुंडराय कृत कर्णाटकवृत्ति १ दूसरी उसीके आधार पर श्रीमान् केशववर्णीकृत जीवतत्त्वप्रदीपिका २ तीसरी आचार्य अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीकृत मंदप्रबोधिका चौथी स्वर्गीय पं० टोडरमल्लजी कृत सम्यग्ज्ञानचंद्रिका भाषा टीका इस प्रकार इस ग्रंथराज श्रीगोम्मटसार पर चार टीका हैं ऐसा पं० खूबचंद्रजी शास्त्रीने लिखा है परन्तु एक संस्कृत टीकाका समाचार हमें धर्मभूषण श्रीमान् ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके पत्रसे मालूम हुआ जो किसी भट्टारककी बनाई हुई (ठीक याद नहीं) उन्होंने लिखी थी और वह जीवतत्त्वप्रदीपिका और मंदप्रबोधिका नामक दोनों संस्कृत टीकाओंसे भिन्न है ऐसा सूचित किया था। हमारे पासमें जो डेकिन कालेजकी प्रति थी उसमें २०० पृष्ठ किसी अन्य ही संस्कृत टीकाके थे जो उक्त दोनों संस्कृत टीकाओंसे विलक्षण टीका थी। श्रीमान ब्रह्मचारीजीने जिस टीकाका उल्लेख किया था शायद यह वही टीका हो, यह भी निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। बस इनके सिवाय ग्रंथराज श्रीगोम्मटसारकी अन्य किसी टीकाका हमें पता नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केशववर्णी।

जीवतत्त्वप्रदीपिकाके कर्ता प्रखर विद्वान केशववर्णी हैं। भांडारकरकी रिपोर्टके आधार पर पं० नाथूरामजी प्रेमीने "दिगंबरजैनग्रंथकर्ता और उनके ग्रंथ" नामक पुस्तकमें लिखा है कि जीवतत्त्वप्रदीपिका टीका वि० सं० १२२७ ज्येष्ठ सुदी ५ आदित्यवारको पूर्णकी है। परन्तु श्री गोम्मटसारकी प्रशस्तिमें इस बातका कुछ भी उल्लेख नहीं इसलिये केशववर्णीका समय वि० सं० १२२७ ही समझना चाहिये। गोम्मटसारकी प्रशस्तिमें केशववर्णीने कोई अपना खुलासा परिचय नहीं दिया इसलिये हम इनके समय आदिके विचार करनेमें असमर्थ हैं। प्रारंभमें ही—

नेमिचन्द्रं जिनं नत्वा सिद्धं श्रीज्ञानभूषणं।
वृत्तिं गोम्मटसारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तितः॥

इस पद्यमें केशववर्णीने श्रीज्ञानभूषणका उल्लेख किया है और प्रशस्तिमें उनका गुरुत्वेन स्मरण किया है मालूम नहीं ये श्रीज्ञानभूषण कब हुए हैं? तत्त्वज्ञानतरंगिणी आदि ग्रंथोंके कर्ता वि० सं० १५७५ में जो ज्ञानभूषण भट्टारक हो गये हैं वे तो ये माने नहीं जा सकते क्योंकि केशववर्णीके समयमें और उनके समयमें शदियोंका अंतर है।

अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती।

मन्दप्रबोधिका टीकाके कर्ता श्री अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती हैं ये कहां और कब हुए कुछ भी नहीं पता चलता।

बा० नाथूरामजी प्रेमीने दिगं० उनके ग्रंथ इस पुस्तकमें लिखा है कि अभयचंद्र सिद्धांतचक्रवर्तीने गोम्मटसार कर्मकांडकी टीका ७००० श्लोकोंमें और जीवकांडकी ८००० श्लोकोंमें बनाई है। यह बात ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि इनकी बनाई मंदप्रबोधिका टीकामें ३८३ वीं ज्ञानमार्गणाकी गाथाकी टीकाके अंतमें लिखा हुआ है कि— "श्रीमदभयचन्द्रसैद्धांतचक्रवर्तिविहितव्याख्यानं विश्रांतमिति कर्णाटवृत्त्यनुरूपमयमनुवदति' इसलिये अभयचन्द्र त्रैविद्य द्वारा यहीं तक टीका बनी हुई निश्चित होती है और आगे जो वह पूरी की है वह किसी नेमिचंद्र नामक ज्ञानभूषण भट्टारकके शिष्यने पूरी की है यह बात अभयचंद्रनामांकित टीकाके आधारपर प्रशस्तिकी टिप्पणीकी प्रशस्तिमें दी है। शायद नाथूरामजी प्रेमीने पूरी प्रति देखकर और उसकी प्रशस्ति न पढकर वैसा लिख दिया होगा।

पं० टोडरमल्लजी।

हमें इनके जीवन चरित्रका पता नहीं अपनी प्रशस्तिमें इन्होंने सिर्फ यह लिखा है कि मैं जयपुरका रहनेवाला हूं राजमल्ल साधर्मी जैनकी कृपासे भाषाटीकाकी रचना की गई है और यह संवत १८१८ में पूर्ण हुई है। इसलिये इनके विषयमें विशेष उल्लेख करनेकेलिये हम अक्षम हैं। इनकी फोटोका ब्लाक और जीवन चरित्रकी सामग्री प्राप्त हो सकती है इसलिये जिस समय वह सामान प्राप्त हो जायगा मय फोटोके जीवन चरित्र पाठकोंकी सेवामें भेजदेंगे।

सम्पादक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीगोम्मटसारके जीवकांडीय अधिकारोंकी सूची ।

	पृष्ठ संख्या ।		
गुणस्थानाधिकार	१	कषायमार्गणाधिकार	६०६
जीवसमासाधिकार	१८४	ज्ञानमार्गणाधिकार	६४८
पर्याप्तिप्ररूपणाधिकार	२७९	संयममार्गणाप्ररूपणाधिकार	८७६
प्राणप्ररूपणाधिकार	३४१	दर्शनमार्गणाप्ररूपणाधिकार	८८८
संज्ञाप्ररूपणाधिकार	३४७	लेश्यामार्गणाप्ररूपणाधिकार	८९४
गतिमार्गणाप्ररूपणाधिकार	३५३	भव्यमार्गणाप्ररूपणाधिकार	९८७
इंद्रियमार्गणाप्ररूपणाधिकार	३८९	सम्यक्त्वमार्गणाप्ररूपणाधिकार	१००६
कायमार्गणाप्ररूपणाधिकार	४१४	संज्ञिमार्गणाप्ररूपणाधिकार	११०७
योगमार्गणाप्ररूपणाधिकार	४७३	आहारमार्गणाप्ररूपणाधिकार	१११०
वेदमार्गणाप्ररूपणाधिकार	५९१	उपयोगाधिकार	१११६
		आलापाधिकार	११४८

शुद्धि–अशुद्धिपत्र ।

जीवकांड ।

अशुद्धि	शुद्धि	पत्र	पंक्ति
९४२	३४२	३४२	३
८४६	३४३	३४३	२
वेणूव	वेणुव	६१३	६
देसावहिस्स	देसवहिस्स	८०२	४
पृथ्वी पर्यंत देखे हैं बहुरि	पृथ्वी पर्यंत देखे हैं, सनत्कुमार माहेंद्रवाले दूसरी पृथ्वीपर्यंत देखे हैं	८५२	७
धम्माधमादीयां	धम्माधम्मादीयां	१०१५	१
१-२-३-४	२३७, २३८, २३९, २४०	२३७ से २४०तक	३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ संदृष्टि अधिकारकी विषय सूची ।

जीवकांड ।

संदृष्टियोंकी सामान्य संज्ञाओंका निरूपण	५	१
गुणस्थानाधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूपनिरूपण	२६	२
जीवसमास अधिकारमें संदृष्टियोंका निरूपण	४६	७
पर्याप्ति अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	५६	४
गति मार्गणामें संदृष्टि	६४	१
इंद्रियमार्गणामें संदृष्टि	६६	८
कायमार्गणामें संदृष्टियोंका निरूपण	७२	१९
योगमार्गणामें संदृष्टियोंके स्वरूपका निरूपण	७९	४
वेदमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	११६	११
कषाय मार्गणाधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१२०	१
ज्ञान मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	१२५	४
संयम मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१५२	६
दर्शन मार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप	,,	१४
लेश्यामार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप निरूपण	१५३	१२
भव्यमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१७४	१
सम्यक्त्वमार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	,,	१७
संज्ञी मार्गणा अधिकारमें संदृष्टियोंका स्वरूप	१९१	१४
आहार मार्गणामें संदृष्टियोंका स्वरूप	१९२	२
उपयोगाधिकारमें संदृष्टियोंका निरूपण	,,	२०

जीवकांडीय अर्थ संदृष्टि अधिकारके फुटकर यंत्रोंकी सूची ।

समय समय प्रति परिणाम पुंज और उनके खंडोंकी संदृष्टियों का यंत्र	३८ (क)
एकेंद्रीसे लेकर पंचेंद्री पर्यंत जीवोंके उत्कृष्ट अवगाह की संदृष्टि	५० (क)
सामान्य राशि आदिके प्रमाणका यंत्र	७७ (क)
च्यारिपद वा तिन विषैं संख्या आदिका यंत्र	१२२
प्रत्येक आदिका यंत्र	१२७ (क)
श्रुतस्कन्ध यंत्र	१३५ (क)
उगणीस कांडकनिकी रचनाका यंत्र	१४०
तेईस वर्गणाओंकी संदृष्टि	१८४
मिथ्यात्वगुणस्थानविषै प्रमाणकी संदृष्टि	१८६ (क)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ अर्थसंदृष्टि अधिकार ।

शुद्धात्मानमनेकांतं साधुमुत्तममंगलं । वंदे संदृष्टिसिद्ध्यर्थं संदृष्ट्यर्थप्रकाशकं ॥ १ ॥ (त्र्यर्थकमिदं)

पंचसंग्रहसद्वृत्तं त्रिलोकीसारदीपकं । माधवादिस्तुतं स्तौमि नेमिचंद्रगुणोज्ज्वलं ॥ २ ॥ (पंचार्थकमिदं)

ऐसैं मंगल करि अर्थ संदृष्टिनिका स्वरूप कहिए है—तहां विवक्षित द्रव्य क्षेत्र काल भावनिका जो प्रमाणादिक सो अर्थ है। अर्थकी जु संदृष्टि कहिए सहनानी सो अर्थ संदृष्टि जाननी। जातैं गोम्मटसारादि ग्रंथनिविषै संदृष्टिनिकरि जो अर्थ प्रकट किया है सो संदृष्टिनिका स्वरूप जानें विना जाननेमें न आवै तातैं मेरी मति अनुसारि किंचिन्मात्र अर्थ संदृष्टिनिका स्वरूप कहौं हौं तहां जो किछू चूक होइ सो मेरि मंद बुद्धिकी भूलि जानि बुद्धिवंत कृपा करि शुद्ध करियो। जातैं जैसैं प्रकट रूप अनुक्रम लिये संदृष्टिनिका स्वरूप मंदबुद्धि करि भी जाननेमैं आवै तैसैं गोम्मटसारादि प्रवर्त्तमान ग्रंथनिविषै लिख्या नाहीं, वा तिनके वतावनेवालेका निमित्त हुआ नाही, तिनि ग्रंथनितैं विधि मिलाय जहां जस्यो जैसैं मेरि मति विषै संभवता स्वरूप जान्या तैसे ठीक करि इहां वर्णन करिए है। अर मेरि मति हीन है तातैं चूक होइगी ताकै शुद्ध करनेके अर्थि विशेष विनती करौंहौं तहां कहीं पदार्थनिके नाम करि संख्याकी सहनानी हो है जहां जिस पदार्थका नाम लिख्या होइ तहां तिस पदार्थकी जितनी संख्या होइ तितनी तहां संख्या जाननी। जैसैं विधु शब्द करि एक जानना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जातैं दृश्यमान चंद्रमा एक है। बहुरि निधि शब्द करि नव जानना जातैं निधिका प्रमाण नव है। ऐसैं ही अन्य जानने। बहुरि कहीं अक्षरनिकौं अंकनिकी सहनानी करि संख्या कहिए है। ताका सूत्र—

कटपयपुरस्थवर्णैर्नवनवपंचाष्टकल्पितैः क्रमशः। स्वरञनशून्यं संख्यामात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यं॥

अर्थ— ककारादि नव, टकारादि नव, पकारादि पांच, यकारादि आठ, इन अक्षरनिके क्रमतैं एक आदि अंकनिकी सहनानी है। जैसैं ककार करि एकका अंक, खकार करि दोयका अंक इत्यादि अक्षरनि करि अंक जानने।

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	१	२	३	४	५	६	७	८

बहुरि अकारादि स्वर वा ञकार वा नकार करि बिंदी जाननी। वा अक्षरकी मात्रा वा कोई ऊपर अक्षर होइ ताका प्रयोजन किछू ग्रहण न करना। सो व्यवहार पल्यकी वा पर्याप्त मनुष्यनिकी वा श्रुतज्ञान विषै पदनिकी इत्यादि संख्या इस सूत्रानुसार टीका विषै कही है सो तहां जाननी।

बहुरि प्रभृतिकी सहनानी ऐसी = है सो आदिके अंक वा अक्षर लिखि तीहिं प्रभृति कहिये आदि दे करि अन्य अंक वा अक्षरानिके ग्रहणके निमित्त तिनके आगे = ऐसी सहनानी हो है। जैसे पैसठि हजार पांचसै छत्तीसकौं पणट्ठी कहिये तहां आदिके अंक छका पांचा लिखि आगे = ऐसी सहनानी कीये पणट्ठी की सहनानी ऐसी ६५= हो है। ऐसैं ही बादालकी सहनानी ४२= ऐसी इहां चौका दूवा आदि अंक जानि लेने। बहुरि एकट्ठीकी सहनानी १८= ऐसी। इहां एक आठ आदि अंक जानने। बहुरि अक्षरनिकरि जैसे जघन्यकी सहनानी ऐसी ज=, इहां जकार आदि अक्षर जानने ऐसैं ही अन्य जाननी। बहुरि जहां आदि अर अंतके भेद तो लिखिये अर मध्यके भेद बहुत जानि न लिखिये तहां आदि अंतके भेदनिके बीचि केती इक बिंदी लिखिये तिनि बिंदीनिकरि मध्यके भेद ग्रहण करने। जैसै अंकसंदृष्टि करि कर्म स्थिति रचना विषैं आदिका नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षेक पांचसै वाराका, अंतका निषेक नवका लिखि वीच विंदी लिखी होंइ तहां तिनि विंदीनिकरि मध्यके सर्व नि-षेक जानि लेने ९

०

०

०

५१२

बहुरि कहीं नामका आदि अक्षर है सो सर्व नामकी सहनानी जाननी। जैसै लक्षकी 'ल' ऐसी कोटिकी 'को' ऐसी, जघन्यकी 'ज' ऐसी इत्यादि। बहुरि जहां दोय आदि नाम ग्रहण करने होंइ तहां दोय आदि नामनिके आदि अक्षर जानने। जैसैं लक्ष कोटिकी सहनानी 'ल, को' जघन्य ज्ञानकी ऐसी 'ज, ज्ञा' बहुरि कहीं एक ही नाम दोइ बार आदि कहना तहां नामका आदि अक्षरके आगै दोय आदि अंक लिखने। जैसै कोटा-कोटी की सहनानी 'को२' ऐसी है। इत्यादि। बहुरि जहां दोय विशेषण ग्रहण करने होंइ तहां दोय सहनानी होइ। जैसैं द्वितीय मूलकी सहनानी ऐसी 'मू२' इत्यादि। बहुरि जहां तीनि विशेषण ग्रहण करने होंइ तहां तीनिकी सहनानी होइ। जैसैं अंतःकोटाकोटीकी सहनानी ऐसी 'अंको२' इत्यादि यथासंभव जानना। बहुरि कहीं विंदीकी सहनानी उपरि विंदी देना जानना। जैसैं पैंसठि हजारकी सहनानी ऐसी '६५ ३ इहां तीनके अंक उपरि विंदी देनेतैं पैंसठि आगै तीन विंदी जाननी। ऐसैं अन्य भी अनेक प्रकार सहनानी यथासंभव जाननी।

बहुरि अलौकिक गणित विषैं कहे जु संख्यामान अर उपमा मान तिनिकी संदृष्टि कहिए है— तहां सा-मान्यपनै संख्यातकी सहनानी ऐसी १ असंख्यातकी ऐसी a बहुरि अनंतकी 'ख' ऐसी है। बहुरि विशेषपनै जघन्य संख्यातकी सहनानी अपने प्रमाणरूप दोयका अंक २ है। बहुरि मध्य संख्यातकी सहनानी अनेक प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है जातैं मध्यके भेद बहुत हैं। बहुरि उत्कृष्ट संख्यातकी सहनानी पंद्रह का अंक '१५' है जातैं जघन्य परीतासंख्याततैं एक घाटि याका प्रमाण है। बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकी सहनानी सोलह का अंक है १६। बहुरि मध्य परीतासंख्यातकी सहनानी बहुत प्रकार है बहुरि उत्कृष्ट परीतासंख्यात की सहनानी १ ‿ ऐसी है। जातैं
२
जघन्य युक्तासंख्याततैं याका प्रमाण एक घाटि है सो एक घाटिकी उपरि सहनानी १ ‿ ऐसी जाननी। बहुरि जघन्य युक्तासंख्यातकी सहनानी दोयका अंक २ है। सोई आवलीकी सहनानी दोयका अंक २ है जातैं आवली के समय जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण हैं। बहुरि मध्यम युक्तासंख्यात की सहनानी अनेक प्रकार है। बहुरि उत्कृष्ट युक्तासंख्यात की सहनानी ऐसी १ ‿ जातैं जघन्य असंख्यातासंख्याततैं एक घाटि याका प्रमाण है
४
बहुरि जघन्य असंख्यातासंख्यातकी सहनानी च्यारिका अंक ४ है। सोई प्रतरावलीकी सहनानी च्यारिका अंक ४ है जातैं जघन्य युक्तासंख्यातका वर्गमात्र दोऊनिका प्रमाण है। बहुरि मध्य असंख्यातासंख्यातके भेदनिविषै घनावली की सहनानी आठका अंक ८ है जातैं आवलीका घन प्रमाण घनावली है। अन्य भेदनिकी अनेक प्रकार हैं। बहुरि उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी सहनानी ऐसी १ ‿ है। अथवा २५५ ऐसी है, जातैं जघन्यपरी-
२५६
तानंततैं याका एक घाटि प्रमाण है बहुरि जघन्य परीतानंतकी सहनानी दोयसै छप्पन का अंक २५६ है।
१ ‿
बहुरि मध्य परीतानंतकी बहुत प्रकार है बहुरि उत्कृष्ट परीतानंतकी ऐसी ज जु अ है। जातैं जघन्य युक्तानंततैं एक घाटि याका प्रमाण है। बहुरि जघन्य युक्तानंतकी सहनानी ज जु अ ऐसी है। इहां जघन्य अर प्राकृतविषै जुत अर अनंत इन तीनों विशेषणनिके आदि अक्षरनिकरि संदृष्टि जाननी। बहुरि मध्य युक्तानंतकी बहुत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकार है। बहुरि उत्कृष्ट युक्तानंतकी सहनानी ज जु अ व ऐसी है। जातैं जघन्य अनंतानंततैं एक घाटि याका प्रमाण है। बहुरि जघन्य अनंतानंत की सहनानी 'ज जु अ व' ऐसी है। जातैं जघन्य युक्तानंतका वर्गमात्र याका प्रमाण है सो इहां वर्ग की सहनानी आगै वकार जानना। बहुरि मध्य अनंतानंतके भेदनिविषै जीवराशि प्रमाणकी सहनानी सोलहका अंक १६ है। तहां भी संसारी जीवराशि प्रमाणकी तेरहका अंक १३ है सिद्धराशि प्रमाणकी तीनका अंक ३ है। बहुरि जीवराशितैं अनंत गुणा पुद्गल राशिकी संदृष्टि १६ ख ऐसी है। बहुरि यातैं अनंत गुणा काल समय राशिकी १६ ख ख ऐसी है। बहुरि यातैं अनंतगुणा आकाश प्रदेशराशिकी १६ ख ख ख ऐसी है। इन विषै अनंतका गुणकारकी सहनानी आगै ख ऐसी क्रमतैं जाननी। बहुरि केवल ज्ञानका प्रथम मूलकी संदृष्टि 'के मू १' ऐसी है। ताहीके द्वितीय मूलकी 'के मू २' ऐसी इत्यादि मध्य अनंतानंतकी संदृष्टि बहुत प्रकार है। बहुरि उत्कृष्ट अनंतानंत की संदृष्टि के ऐसी है जातैं केवल ज्ञान मात्र याका प्रमाण है। सो ताका आदि अक्षर की सहनानी जाननी। ऐसैं संख्यामान की संदृष्टि कही।

अब उपमामानकी संदृष्टि कहिये है। तहां पल्यकी संदृष्टि आदि अक्षर रूप 'प' ऐसी है। सागरकी आदि अक्षर रूप 'सा' ऐसी है। सूच्यंगुलकी दोयका अंक २ है। प्रतरांगुलकी च्यारिका अंक ४ है। घनांगुलकी छहका अंक ६ है। जगच्छ्रेणीकी ऐसी — है जगत्प्रतरकी ऐसी = है। घनलोककी ≡ ऐसी है। बहुरि जगच्छ्रेणी का सातवां भागमात्र रज्जू ताकी संदृष्टि $\frac{—}{७}$ ऐसी है। भागहारकी सहनानी नीचै सर्वत्र जाननी। बहुरि रज्जु प्रमाण प्रतर क्षेत्रकी $\frac{=}{४९}$ ऐसी है यहां जगत्प्रतरकौं ४९ का भाग जानना बहुरि रज्जु प्रमाण घन क्षेत्रकी $\frac{≡}{३४३}$ ऐसी है। इहां घनलोककौं तीनसै तियालीसका भाग जानना। बहुरि पल्यके अर्धच्छेद राशिकी छे ऐसी संदृष्टि है। बहुरि पल्यकी वर्गशलाका राशिकी व ऐसी है। बहुरि सागरके अर्धच्छेद राशिकी पृ छे ऐसी है जातैं पल्यके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्धच्छेदनितैं याके अर्धच्छेद संख्याते अधिक हैं सो संख्यात अधिककी संदृष्टि ऊपरि १ ऐसी जाननी । बहुरि सागरकी वर्गशलाका है नाही । बहुरि सूच्यंगुलकी अर्धछेदराशिकी संदृष्टि छे छे ऐसो है इहां पल्यके अर्धच्छेद-निकैं पल्यके अर्धछेदनिका गुणकारकी सहनानी जाननी बहुरि सूच्यंगुलका वर्गशलाका राशिकी व २ ऐसी है। जातैं पल्यकी वर्गशलाकातैं दूणा याका प्रमाण है। सो आगै दोयका गुणकारकी सहनानी जाननी बहुरि प्रतरांगुलके अर्धछेद राशिकी छे छे २ ऐसी है। जातैं सूच्यंगुलके अर्धछेदानितैं दूणा याका प्रमाण है तातैं आगै दोयका गुण-

१—

कार जानना । बहुरि प्रतरांगुलका वर्गशालका राशिकी संदृष्टि व २ ऐसी है जातैं सूच्यंगुलकी वर्गशलाकातैं एक अधिक है सो ऊपरि एक अधिककी सहनानी जाननी । बहुरि घनांगुलका अर्धच्छेद राशिकी संदृष्टि छे छे ३ ऐसी है । जातैं सूच्यंगुलके अर्धच्छेदराशितैं तिगुणा है। सो आगै तीनका गुणकारकी सहनानी जाननी। बहुरि घनांगुलकी वर्गशलाका राशि सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाके समान है। तातैं ताकी सोई संदृष्टि है व २ । जातैं द्विरूपवर्गधाराविषै जेते स्थान भए सूच्यंगुल हो है ते ते ही स्थान भएं द्विरूप घनधारा विषै घनांगुल हो है। बहुरि जगच्छ्रेणीका अर्द्धच्छेद राशिकी संदृष्टि छे छे छे ३ ऐसी है अथवा वि छे छे ३ ऐसी है। इहां

a

पल्यका अर्द्धच्छेद राशिका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि छे ऐसी, अथवा तीह प्रमाण जो विरलनराशि

a

ताकी संदृष्टि वि ऐसी, ताके आगै घनांगुलके अर्द्धच्छेद राशिका गुणकार जानना । बहुरि जगच्छ्रेणीका वर्ग शलाकाकी संदृष्टि व ऐसी, इहां पल्यकी वर्गशलाका ऐसी 'व' ताकौं दूणा जघन्य परीतासंख्यात

१६।२

व २

की १६।२ ऐसी, ताका भाग दीये जो प्रमाण होइ तीहि करि अधिक जो घनांगुलकी वर्गशलाका व २ ऐसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तांहिमात्र प्रमाण जानना। बहुरि जगत्प्रतरका अर्धच्छेद राशिका संदृष्टि छे छे छे ६ ऐसी अथवा 'वि छे छे६' ऐसी, जातैं जगच्छ्रेणीका अर्धच्छेद राशितैं यहु दूणा है तातैं तीनकी गुण कारकी जायगा छहका गुणकार जानना। बहुरि जगत्प्रतरका वर्गशलाका राशि की संदृष्टि व १— १६।२ ऐसी, जातैं जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकातैं एक अधिक है। सो इहां एक अधिक की ऊपर सहनानी जाननी। बहुरि घनलोकका अर्धच्छेद राशिकी संदृष्टि 'छे छे छे ९ ऐसी, अथवा 'वि छे छे ९ ऐसी, जातैं जगच्छ्रेणी का अर्धच्छेद राशि तैं यहु तिगुणा है तातैं तीनकी जायगा नवका गुणकार जानना। बहुरि घनलोक का वर्गशलाका राशि जगच्छ्रेणी की वर्ग शलाका राशिके समान ही है। ताकी संदृष्टि व १६।२ व २ ऐसी है। जातैं द्विरूप घन धारा विषै जेते स्थान भऐं जगच्छ्रेणी हो है ते ते ही स्थान द्विरूप घनधारा विषै भए घनलोक हो है। ऐसैं उपमा प्रमाण की संदृष्टि कहीं।

इहा प्रश्न—जो आवली आदि की अर सूच्यंगुल आदिकी संदृष्टि परस्पर समान हैं तिनका जुदा जुदा ज्ञान कैसैं होइ? ताका समाधान—जैसै सारंगादि एक शब्दके अनेक अनेक अर्थ हो हैं परंतु जैसा जैसा जहां संबंध होइ, तैसा तैसा ग्रहण होइ, तैसैं एक संदृष्टि अनेक अर्थनिकी हो है परंतु जैसा जहां संबंध होइ तैसा तहां ग्रहण करना। बहुरि कहीं विवक्षित संदृष्टि जाननी। जैसै कहीं संख्यातकी सहनानी ग्यारिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंक ४ है, कहीं पांचका अंक ५ है। कहीं असंख्यात की सहनानी नवका अंक ९ है। कहीं आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी नवका ९ अंक है इत्यादि यथा संभव संदृष्टि जाननी। ऐसैं मान की संदृष्टिका स्वरूप किंचिन्मात्र जानना।

अथ संकलनादिककी संदृष्टि कहिये है–तहां संकलन जो राशिविषै राशिका जोडना। तहां जेता राशि विषै राशिका जोडना होइ, तितना राशि कौं ऊपर लिखिए अथवा मूलराशिके ऊपर मिलावने योग्य धन राशि-

१

कौं लिखि तहां पूछडीकासा आकार करिए ऐसै संदृष्टि हो है। जैसै एक अधिक लक्षकी सहनानी ल ऐसी,

१–　　　　२–　　　　≡

अथवा ल ऐसी। दोय अधिक लोक की ऐसी ≡ बहुरि घन लोक करि अधिक अनंत की ऐसी ख इत्यादि यथासंभव जाननी। बहुरि जहां दोय राशि आदि मिलावने होंइ, तहां दोय राशी आदि ऊपर लिखिये। जैसै एक प्रमाण काल द्रव्य, अर धर्मादि तीन द्रव्य दोय राशी पुद्गल राशी विषैं मिलायें अजीव द्रव्यके परिमाण की संदृष्टि ३ ऐसी हो है। इत्यादि यथासंभव जाननी। बहुरि किंचित् अधिक की संदृष्टि ऊपर '।' ऐसी जा-

≡

१६। ख　　　　।

ननी। जैसैं किंचित् अधिक अनंतकी संदृष्टि ख ऐसी इत्यादि। बहुरि कहीं सामान्यपनै एक दोय आदि राशि मिलावना होइ, तहां एक दोय आदि ऊभी लीक की ऊपर संदृष्टि होइ। जैसैं संख्यातके ऊपरि कोई दोय राशि मिलावना होय तहां ॥ ऐसी संदृष्टि होइ है। इत्यादि जाननी। बहुरि व्यवकलन जो राशि विषैं घटा-

१

वना, ताकी संदृष्टि कहिए है–जितना घटावना होइ तितना राशिके ऊपर लिखि अथवा तींहिस्यों लगाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूछडीकासा आकार करि ऊपरि विंदी देनी । जैसें एक घाटि कोटिकी संदृष्टि ० ऐसी अथवा १ ⌒ ऐसी, एक
० १ को
१ ⌒ २ को
घाटि अनंतकी ख ऐसी, दोय घाटि घन लोककी ≡ ऐसी इत्यादि । बहुरि कहीं राशिके नीचैं विंदी देइ ताके नीचे जितना घटावना होइ तितना लिखिए ऐसैंभी संदृष्टि होए हैं जैसे एक घाटि लक्षकी ल ऐसी इत्यादि ।
०
१

बहुरि कहीं राशिके आगैं – ऐसैं लिखि ताके आगे जितना घटावना होइ तितना लिखें भी संदृष्टि हो है । जैसे दोय लक्षकी ल–२ ऐसी इत्यादि । बहुरि कहीं राशिके आगे ~ ऐसैं लिखि ताके आगे जितना घटावना होइ तितना लिखे भी संदृष्टि हो है । जैसे दोय घाटि कोटिकी को ~ २ ऐसी इत्यादि । बहुरि कहीं प्रमाण लिखि ताके ऊपरि विंदी दीयें ऋण राशिकी संदृष्टि हो है । जैसें कोटि विषै दोय ऋणकी संदृष्टि को ० ऐसी । बहुरि जहां
२

सामान्यपनै किंचित् घटावना होइ तहां राशिके आगै– ऐसी संदृष्टि जाननी । जैसें किंचित् ऊन अनंतकी संदृष्टि ख–ऐसी इत्यादि । बहुरि जहां राशिमैस्यों सामान्यपनैं दोय आदि राशि घटावने होंइ तहां दोयवार आदि तैसी संदृष्टि राशिके आगै जाननी । जैसें विकलेंद्री सकलेंद्री ए दोय राशि रहित संसारी जीव प्रमाण एकेंद्री जीवराशिकी संदृष्टि १३ = ऐसी इत्यादि । बहुरि कहीं राशिके आगै वा नीचै जितना घटावना होइ तितना लिखि करि तिस घटावने योग्य राशितैं लगाय धनराशि पर्यंत ऐसैं लिखि भी संदृष्टि हो है । जैसे पांच घाटि लक्षकी ल ⌣ ५ ऐसी, अथवा ल) ऐसी । बहुरि पल्यकी वर्गशलाकाका अर्धच्छेद करि
५

हीन पल्यका अर्धच्छेदराशिकी छे व छे ऐसी इत्यादि । बहुरि गुणकारकी संदृष्टि आगे लिखना है जाकों गुणि-
२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ए तिस गुण्यके आगे जाकरि गुणना होइ तिस गुणकारकौं लिखिए । जैसे पांचगुणा लाखकी संदृष्टि ल ५ ऐसी संख्यात गुणा पल्यकी प १ ऐसी असंख्यातगुणा पल्यकी प a ऐसी याकौं भी असंख्यात गुणा कीयें प a a ऐसी । बहुरि संख्यातगुणा आवली की २ १ ऐसी । सो ऐसी ही अंतर्मुहूर्त्त की संदृष्टि है । जातैं अंतर्मुहूर्तका प्रमाण संख्यात आवली मात्र है याकौं संख्यात गुणा कीयें २ ११ ऐसी. बहुरि संख्यातगुणा घनांगुलकी ६ १ ऐसी बहुरि असंख्यात गुणा लोककी ≡ a ऐसी याकौं असंख्यात लोक करि गुणै ≡ a ≡ a ऐसी । बहुरि असंख्यात गुणी जीवराशिकी १६ ख ऐसी इत्यादि यथासंभव जाननी । बहुरि भागहारकी संदृष्टि नीचै लिखना है । जाकौं भाग दीजिये ऐसा भाज्य राशिकौं ऊपरि लिखि जाका भाग देना होइ तिस भागहारकौं ताके नीचैं लिखिये । जैसे कोटिका पांचवां भागकी संदृष्टि $\frac{\text{को}}{५}$ ऐसी पल्यका संख्यातवां भागकी $\frac{\text{प}}{१}$ ऐसी, पल्यका असंख्यातवां भागकी $\frac{\text{प}}{a}$ ऐसी, सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकी $\frac{२}{a}$ ऐसी, आवलीका असंख्यातवां भागकी $\frac{२}{a}$ ऐसी सो यथाठिकाने जाननी । घनांगुलका असंख्यातवां भागकी $\frac{६}{a}$ ऐसी घन लोकके असंख्यातवां भागकी $\frac{\equiv}{a}$ ऐसी, जगच्छ्रेणीका संख्यातवां भागकी $\frac{-}{१}$ ऐसी, जीवराशिका अनंतवा भागकी $\frac{१६}{\text{ख}}$ ऐसी, केवल ज्ञानका अनंतवां भागकी $\frac{\text{के}}{\text{ख}}$ ऐसी इत्यादि जाननी । बहुरि जहां अंशनिका ग्रहण करना होइ, तहां भी ऐसैं ही संदृष्टि जाननी । अंशनिके नीचैं हारनिकौं लिखिये । जैसैं एकका तीसरा भाग की $\frac{१}{३}$ ऐसी, आधा की $\frac{१}{२}$ ऐसी, पौणकी $\frac{३}{४}$ ऐसी, यहां तीन चौथा भाग जानना । इत्यादि । बहुरि जहां रूप भी होइ अर अंश भी होइ, इन दोऊनिकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुदे जुदे लिखिए वा समच्छेद विधानकरि मिलाइकरि लिखिये। जैसे ड्योढकी संदृष्टि १।१ ऐसी तहां एक
२
जुदा लिख्या आधा जुदा लिख्या अथवा मिलाएं ३ ऐसी इहां तीनकौं दोयका भाग जानना। इत्यादि। बहुरि वर्ग-
२
की संदृष्टि दोयवार लिखनी है। जाका वर्ग करना होइ ताकौं बराबर दोय वार लिखिए। जैसे पांचका वर्गकी संदृष्टि ५।५ ऐसी बादालका वर्ग की ४२ = ४२ = ऐसी, अनंतका वर्गकी ख ख ऐसी, सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागका वर्गकी २।२ ऐसी। इत्यादि बहुरि घनकी संदृष्टि तीनवार लिखना है। जाका घन करना
a a
होइ ताकौं तीनवार बरोवर लिखिये। जैसें आठका घनकी संदृष्टि ८।८।८। ऐसी, पणट्ठीका घनकी ६५ = ६५ = ६५ = ऐसी, असंख्यातका घनकी a a a ऐसी, घनांगुलका संख्यातवां भागका घनकी ६।६।६ ऐसी इत्यादि। बहुरि वर्गमूलकी संदृष्टि मू ऐसी है। तहां प्रथम वर्गमूलकी मू १ ऐसी, द्वितीय
१ १ १
वर्गमूलकी मू २ ऐसी, इत्यादि जेथवां वर्गमूल होय तितनेका अंक आगें लिखे संदृष्टि हो है। कहीं एक दोय आदिका अंकही प्रथम द्वितीयादि मूलनिकी संदृष्टि हो है जैसें चतुर्थ मूलकी संदृष्टि ४ ऐसी। बहुरि घन-मूलकी संदृष्टि घ मू ऐसी। ऐसैं परिकर्माष्टककी संदृष्टि जाननी। अब संदृष्टिनिविषैं विशेष कहिये हैं—

जहां भाज्यराशि वा भागहार राशिकी किसी प्रमाण करि शुद्धता होइ भाज्यकौं वा भागहारकौं किसी समान प्रमाणका भाग दीएं यथायोग्य लब्धराशि पाइ निरवशेषता होइ तहां तिस प्रमाण करि अपवर्त्तन करना। जैसे जहां अट्ठाईस भाज्यकौं आठका भागहार २८ होइ, तहां च्यारि करि अपवर्त्तन करिए तब अट्ठाईसकौं
८
च्यारिका भाग दीयें सात पाये सो तौ अट्ठाईस की जायगा लिखिये अर आठकौं च्यारिका भाग दीये दोय पाये ११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो आठकी जायगा $\frac{७}{२}$ लिखिये इहां अट्ठाईसकौं आठका भागदीयें भी अर सातकौं दोयका भाग दीयें भी लब्ध राशि साढा तीन हो है। ऐसैंही अन्यत्र अपवर्तन जानना। बहुरि जहां भाज्य अर भागहार विषै समानता होइ, तहां दोऊनिका अभावकरि अपवर्तन करना। जैसैं चौगुणा असीकौं चौगुणा पांचका जहां भाग होइ, $\frac{८० \times ४}{५ \times ४}$ तहां चौगुणापनेकौं भाज्य भागहारविषै समान जानि अपवर्त्तन कीयें असीकौं पांचका भागहार हो है। $\frac{८०}{५}$। बहुरि कहीं महत्प्रमाणविषैं एक आदि हीन अधिक होतैं भी संदृष्टिविषैं अपवर्तन करिए है। जैसैं जीव राशिकौं एक अधिक अनंतका गुणकार अर अनंतका भागहार होइ तहां अपवर्तन कर जीव राशी मात्र १६ प्रमाण लिखिये। बहुरि जहां घटावने योग्य ऋण राशि होइ, अर तिस ऋण राशिका भी ऋण होइ, तहां ऋण राशिमेंस्यों अपना ऋण घटाइ अवशेष मूल राशिमैंस्यों घटाइए अथवा 'ऋणस्य ऋणं राशेर्धनं' इस वचन तैं तिस ऋण कौं मूलराशिविषै जोडि तामैं ऋण घटाइये। जैसैं दश घाटि सौ हजारमें घटावने होंइ तौ हजारमें निवै घटाइये। अथवा दश अधिक हजारमैंस्यों सौ घटाइये। दोऊनिका एक अर्थ है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि जहां संदृष्टिके अर्थि किसी प्रमाण करि राशिका भेदन करिये तहां तिस प्रमाणका राशिकौं भाग दीये जो पावैं सो तो राशिकी जायगा लिखिये ताके आगे तिस प्रमाण मात्र गुणकारकौं लिखिये। जैसैं पांचसै वाराकौं सोलह करि भेदिए, तहां पांचसै वाराकी जायगा बत्तीस लिखिये ताके आगे सोलहका गुणकार लिखिये। ऐसैं अन्यत्र जानना। बहुरि जहां भागहारके गुणकार होंइ, तहां तिन गुणकारनिकौं भागहारके आगैं लिखिए बहुरि तिस भागहारकौं तिस गुणकारानिकरि गुणै जो प्रमाण आवै तितनेका तहां भागहार जानना। जैसैं लक्षकौं नव अर तीन गुणा नवका भाग होइ, तहां ऐसैं $\frac{ल}{९।९।३}$ लिखिये इहां नव नव तीनकौं परस्पर गुणैं दोयसै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute; Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तियालीस हुआ ताका भागहार जानना। ऐसैं ही पांचवार संख्यातकरि गुण्या हुवा पणट्ठी प्रमाण प्रतरांगुलका भाग जहां जगत्प्रतरकौं होइ तहां ऐसैं लिखिये = अर्थ तैसैंही जानना।

४। ६५ = १। १। १। १। १

ऐसैं ही अन्यत्र जानने। बहुरि जहां भाज्यके गुणकार होंइ तहां तिन गुणकारनिकौं भाज्यके आगै लिखिये बहुरि भाज्यकौं तिन गुणकारनिकरि गुणैं जो प्रमाण होइ तितना तहां भाज्य जानना। जैसैं च्यारि पांच गुणा कोटिकौं लक्षका भाग होइ तहां को ४। ५ ऐसैं लिखिये। इहां कोटिकौं च्यारि अर पांच गुणां कीये वीस कोटि

ल

भए तिनकौं लक्षका भाग जानना। ऐसैं ही पल्य करि गुणित संख्यात घनांगुलकौं सूच्यंगुलका भाग होइ, तहां ६। १। प ऐसैं लिखना, अर्थ तैसैं ही जानना। ऐसैंही अन्यत्र जानना। बहुरि जहां कोई राशीके गुणकार

२

का भागहार होइ, तहां तिस भागहारकौं तिस गुणकारके नीचैं लिखिये। बहुरि तिस भागहारका तिस गुणकारकौं भाग दीएं जो प्रमाण आवै ताका तहां गुणकार जानना। जैसैं सौका चौथा भागकरि लक्षकौं गुणना। तहां ल १०० ऐसैं लिखिए इहां सौकौं च्यारिका भाग दीयें पचीस पाया ताका गुणकार जानना ऐसैंही पल्यका

४

असंख्यातवां भागकरि गुणा हूवा लोक ≡ प ऐसा ताका अर्थ जानना। बहुरि जहां भाज्य वा भागहारका

a

गुणकार भागहार सहित होइ, तहां भी अपने भागहारका भाग गुणकारकौं दियें जो पावैं तितनेका भाज्य वा भागहारका गुणकार जानना। जैसैं सौका चौथा भागकरि गुणा हुवा लक्षकौं पचास का भाग दीजिये तब ऐसा ल १०० कोटिकौं सौका चौथा भागकरि गुणित लक्षका भाग दीएं ऐसा को पल्यका असंख्यातवां भाग-

५०। ४ ल १००

४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि गुणित लोककौं घनांगुलका भाग दीएं ऐसा ≡ प घनांगुलका संख्यातवां भागकरि गुणित जगच्छ्रेणीका
६। ३
भाग जगत्प्रतरकौं दीएं ऐसा = ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि गुण्यविषैं वा गुणकारविषैं वा भाज्यविषैं वा भागहार
−६
१
विषैं किछू मिलावना होइ तो ताके ऊपरि संकलनकी संदृष्टि करनी अर घटावना होइ तो ऋणकी संदृष्टि करनी।
१−
जैसैं असंख्यातगुणा एक अधिक लोककी ऐसी ≡ ३ संदृष्टि है एक अधिक संख्यातगुणा सूच्यंगुलकी ऐसी
१−
१−
२ १ पल्यकरि भाजित एक अधिक लोककी ऐसी ≡ एक अधिक प्रतरांगुलकरि भाजित लोककी ऐसी
प
≡
१ −
१− इत्यादि। बहुरि अनंतकरि गुणित एक घाटि जीवराशिकी ऐसी १६ ख एक घाटि अनंतकरि गुणित
४ १ −
२ −
जीवराशिकी ऐसी १६ ख अनंतकरि भाजित दोय घाटि पुद्गलराशिकी ऐसी १६ ख दोय घाटि अनंतकरि
ख
भाजित पुद्गलराशिकी ऐसी १६ ख इत्यादि जाननी।
२ −
ख

बहुरि जहां भाज्य राशिकैं गुणकार होइ वा भागहार राशिकैं गुणकार होइ अर तिन गुणकारनिविषैं कोई गुणकार भागहार संयुक्त होइ वा किछू अधिक वा किछू हीन होइ तो तहां तिन भाज्यभागहारनिके आगै १४

Gañesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिनि गुणकारनिकौं लिखि जिस गुणकारका भागहार होइ सो तिसके नीचैं लिखना। अधिक वा हीन होइ सो ऊपरि संदृष्टि रूप लिखना। बहुरि भागहारका भाग दीएं अधिककौं मिलाएं हीनकौं घटाएं जो प्रमाण होइ सो तहां गुणकारका प्रमाण जानना। जैसैं लाखकौं तीन करि लाखका चौथा भाग करि एक अधिक हजार करि गुणिए इतना तौ भाज्य अर दशकौं लाखका पांचवां भाग अर एक घाटि सौ करि गुणि ताका भाग

१—
देना तहां ऐसैं लिखिए ल ३ ल १००० इहां यथोक्त करतैं सात लाख गुणसठि हजार दोयसै पचास कोडि
४ १ ‿
१० ल १००
५

तो भाज्य अर एक कोडि अठ्याणवै लाख भागहार जानना। बहुरि ऐसैं ही जहां घनांगुलकौं घनावलीका असंख्यातवां भागकरि वा एक अधिक संख्यात करि गुणिए इतना तौ भाज्य अर पल्यका असंख्यातवां भागकौं

१—
एक घाटि घनावलीका असंख्यातवां भाग करि गुणिए इतना भागहार होइ तहां ऐसैं लिखिए ६ । ८ । a
a १ ‿
प ८।
a a

बहुरि राशिके गुणकारनिके जे भागहार तिनकौं राशिके भागहारानिकौं लिखि तिनकरि गुणकार करिए जैसैं लक्षका पचासवां भागकौं सौका चौथा भागकरि गुणिए तहां ऐसा लिखिए ल १०० इहां सौगुणा
५० ४
लक्षकौं च्यारि गुणां पचासका भाग जानना। जातैं दोऊ प्रकारकरि प्रमाण समान हो है। ऐसैं ही अन्यत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जीवनिकी अवगाहनाका यंत्र।

सूक्ष्मनिगोदअपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना ६ ८ २२ / a १_ / प १९८९८ २२ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्तवायुकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १९८८८ २२ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्त तेजकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १९८७८ २२ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्त अपकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १९८६८ २२ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्त पृथ्वीकायकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १९८५८ २२ ॻ९ / a a a	बादरअपर्याप्तवायुकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १८८५८ २२ ॻ९ / a a a	बादरअपर्याप्त तेजकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १७८५८ २२ ॻ९ / a a a	बादरअपर्याप्त अपकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १६८५८ २२ ॻ९ / a a a
बादरअपर्याप्तपृथ्वीकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १५८५८ २२ ॻ९ / a a a	बादरअपर्याप्तनिगोदकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १४८५८ २२ ॻ९ / a a a	प्रतिष्ठित प्रत्येक अपर्याप्तकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १३८५८ २२ ॻ९ / a a a	अप्रतिष्ठित प्रत्येककी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १२८५८ २२ ॻ९ / a a a	बेंद्रियअपर्याप्तकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प ११८५८ २२ ॻ९ / a a a	तेंद्रियअपर्याप्तकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प १०८५८ २२ ॻ९ / a a a	चौंद्रियअपर्याप्तकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प ९८५८ २२ ॻ९ / a a a	पंचेंद्रियअपर्याप्तकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प ८८५८ २२ ॻ९ / a a a
सूक्ष्मपर्याप्तनिगोदकी जघन्य ६ ८ २२ / a १_ / प ८८४८ २२ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्तनिगोदकी उत्कृष्ट ६ ८ २१ / a १_ / प ८८४८ २१ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्तनिगोदकी जघन्य ६ ८ २० / a १_ / प ८८४८ २० ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्तवायुकी जघन्य ६ ८ २० / a १_ / प ८८३८ २० ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्तवायुकी उत्कृष्ट ६ ८ १९ / a १_ / प ८८३८ १९ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्तवायुकी उत्कृष्ट ६ ८ १८ / a १_ / प ८८३८ १८ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्त तेजकी जघन्य ६ ८ १८ / a १_ / प ८८२८ १८ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्त तेजकी उत्कृष्ट ६ ८ १७ / a १_ / प ८८२८ १७ ॻ९ / a a असंख्यात
सूक्ष्मपर्याप्ततेजकी उत्कृष्ट ६ ८ १६ / a १_ / प ८८२८ १६ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्तअपकी जघन्य ६ ८ १६ / a १_ / प ८८१८ १६ ॻ९ / a a ॻ	सूक्ष्मअपर्याप्त अपकी उत्कृष्ट ६ ८ १५ / a १_ / प ८८१८ १५ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मअपर्याप्त अपकी उत्कृष्ट ६ ८ १४ / a १_ / प ८८१८ १४ ॻ९ / a a a	सूक्ष्मपर्याप्त पृथ्वीकी जघन्य ६ ८ १४ / a १_ / प ८८ १४ ॻ९ / a a	सूक्ष्मअपर्याप्त पृथ्वीकी उत्कृष्ट ६ ८ १३ / a १_ / प ८८ १३ ॻ९ / a a	सूक्ष्मपर्याप्त पृथ्वीकी उत्कृष्ट ६ ८ १२ / a १_ / प ८८ १२ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्तवायुकी जघन्य ६ ८ १२ / असं १_ / प ७८ १२ ॻ९ / असं असं
बादरअपर्याप्तवायुकी उत्कृष्ट ६ ८ ११ / a १_ / प ७८ ११ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्तवायुकी उत्कृष्ट ६ ८ १० / a १_ / प ७८ १० ॻ९ / a a	बादरपर्याप्त तेजकी जघन्य ६ ८ १० / a १_ / प ६८ १० ॻ९ / a a	बादरपर्याप्ततेजकी उत्कृष्ट ६ ८ ९ / a १_ / प ६८ ९ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्ततेजकी उत्कृष्ट ६ ८ ८ / a १_ / प ६८ ८ ॻ९ / a a	बादरअपर्याप्त अपकी जघन्य ६ ८ ८ / a १_ / प ५८ ८ ॻ९ / a a	बादरअपर्याप्त अपकी उत्कृष्ट ६ ८ ७ / a १_ / प ५८ ७ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्त अपकी उत्कृष्ट ६ ८ ६ / असं १_ / प ५८ ६ ॻ९ / असं असं
बादरपर्याप्तपृथ्वीकी जघन्य ६ ८ ६ / a १_ / प ४८ ६ ॻ९ / a a	बादरअपर्याप्तपृथ्वीकी उत्कृष्ट ६ ८ ५ / a १_ / प ४८ ५ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्त पृथ्वीकी उत्कृष्ट ६ ८ ४ / a १_ / प ४८ ४ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्तनिगोदकी जघन्य ६ ८ ४ / a १_ / प ३८ ४ ॻ९ / a a	बादरअपर्याप्त निगोदकी उत्कृष्ट ६ ८ ३ / a १_ / प ३८ ३ ॻ९ / a a	बादरपर्याप्त निगोदकी उत्कृष्ट ६ ८ २ / a १_ / प ३८ २ ॻ९ / a a	पर्याप्तअप्रतिष्ठित प्रत्येककी जघन्य ६ ८ २ / a १_ / प २८ २ ॻ९ / a a	अपर्याप्तप्रतिष्ठित प्रत्येककी उत्कृष्ट ६ ८ १ / असं १_ / प २८ १ ॻ९ / असं असं
पर्याप्तप्रतिष्ठितप्रत्येककी उत्कृष्ट ६ / प २ ॻ९ / a	पर्याप्तअप्रतिष्ठित प्रत्येककी जघन्य ६ / प १ ॻ९ / a	पर्याप्त बेंद्रियकी जघन्य ६ / ॻ९	पर्याप्ततेंद्रियकी जघन्य ६ / ॻ८	पर्याप्तचौंद्रियकी जघन्य ६ / ॻ७	पर्याप्तपंचेंद्रियकी जघन्य ६ / ॻ६	अपर्याप्ततेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ / ॻ५	अपर्याप्तचौंद्रियकी उत्कृष्ट ६ / ॻ४
अपर्याप्तबेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ / ॻ३	अपर्याप्त अप्रतिष्ठित प्रत्येककी उत्कृष्ट ६ / ॻ२	अपर्याप्त पंचेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ / ॻ१	पर्याप्ततेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ॻ	पर्याप्तचौंद्रियकी उत्कृष्ट ६ॻॻ	पर्याप्तबेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ॻॻॻ	पर्याप्तअप्रतिष्ठित प्रत्येककी उत्कृष्ट ६ॻॻॻॻ	पर्याप्तपंचेंद्रियकी उत्कृष्ट ६ॻॻॻॻॻ

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानना। बहुरि जहां भागहार वा गुणकार दोय तीन आदि वार होइ तहां तिस गुणकारके आगें दोय तीन आदिका अंक लिखनेकी भी सहनानी जानना। जैसें लक्षकौं तीनवार च्यारिका भाग देना होइ तहां ऐसा लिखिए ल इहां तीनबार च्यारिकौं परस्पर गुणें चौंसाठि पाए सो चौसठिका भागहार जानना। ऐसें ही घनां-
४ ।३

गुलकौं उगणीस बार पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देना होइ तहां ऐसैं लिखिए ६ बहुरि च्यारिवार दोय
प १९
a

करि गुणित कोटिकौं ऐसैं लिखिए को २। ४ इहां च्यारि बार दोयकौं परस्पर गुणें सोलह भए सो सोलहका गुणकार जानना। ऐसैं ही जहां घनांगुलकौं बाईसबार घनावलीका असंख्यातवां भागकरि गुणना होइ तहां ऐसैं लिखिए ६। ८। २२ ऐसैं ही अन्यत्र संदृष्टि जाननी। बहुरि जहां भागहारका भागहार वा प्रतिभाग-
a

हार होइ तहां तिनकौं नीचैं नीचैं लिखिए। बहुरि नीचेतैं लगाय क्रमतैं ऊपरि ऊपरि भाग देतैं जो पावैं सो तहां प्रमाण जानना जैसैं जहां हजारकौं सौका भाग ताकौं वीसका भाग ताकौं पांचका भागदेना होइ तहां ऐसैं लिखिये १००० यहां यथोक्त करतैं चालीस प्रमाण आवै है। ऐसैं ही जगतप्रतरकौं प्रतरांगुलका भाग अर
१००
२०
५

ताकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीजिये तहां ऐसैं लिखिये = ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि
४
२
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हारस्य हारो गुणकोऽत्रराशेः, इसवचनतैं कहीं भागहारका भागहारकौं भाज्यराशिका गुणकार करना जैसैं हजारकौं वीसका पांचवां भागका भाग १००० जहांहोइ तहां हजारकौं पांच गुणाकरि वीसका भाग दीजिये १००० । ५ जातैं वी-
२०
५
२०

सकौं पांचका भागदीएं च्यारि पाए ताका भाग हजारकौं दीए भी दोयसै पचास पावैं अर पांचगुणा हजारकौं वीसका भाग दीएं भी तितनेही पावैं दोऊनिका एक अर्थ है ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि जहां धनराशि वा ऋणराशिके दोऊनिके गुणकार भागहारादि होंइ तहां जुदे जुदे गुणनादि कीएं जो धनराशि होइ तामैं जो ऋणराशि होइ ताकौं घटाएं जो प्रमाण होइ सो तहां ग्रहण करणा। जैसैं धनराशि दोयवार सोलह करि गुणित च्यारि प्रमाण ४।१६।१६। अर ऋणराशि दोयवार च्यारि करि गुणित दोय प्रमाण । २।४।४। जहां होइ तहां च्यारि सोलह सोलहकौं परस्पर गुणें एकहजार चौवीस भए तिनमें दोय च्यारि च्यारिकौं परस्पर गुणैं बत्तीस भए ते घटाइए ऐसैं अन्यत्र भी जानना ।

बहुरि जहां विवक्षित भागहारका भाग देइ तहां एकभाग छोडि बहु भागनिका ग्रहण करना होइ तहां एक घाटि भागहारका प्रमाण करि भाज्यकौं गुणिए अर संपूर्ण भागहारका भाग दीजिये जातैं समच्छेदकरि तहां मूलराशि ऋण राशिके गुण्यकौं समान देखि मूलराशिका गुणकारमैस्यौं एक घटाइए है जैसैं जहां लक्षकौं दशका भाग तहां एक भाग छोडि नव भागनिका ग्रहण करना होइ तहां लक्षकौं नवगुणा करि दशका भाग दीजिए ल ९
१०

ऐसैं नवभागनिके निवै हजार प्रमाण आया ऐसैंही पुद्गल राशिकौं अनंतका भाग देइ जहां बहुभाग ग्रहण करने
१ ‿
होंइ तहां भी ऐसैं ही जानने। ताकी संदृष्टि ऐसी १६ ख ख ऐसैंही अन्यत्र जानना ।
ख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जहां राशिकौं विवाक्षित भागहारका भाग देइ बहुभाग ग्रहण करि बहुरि एक भाग रह्या ताकौं तिसही भगहारका भाग देइ बहुभाग ग्रहण करना होइ। बहुरि ऐसैं ही एक भाग रहता जाइ ताकौं तिसही भागका भाग देइ देइ बहुभाग ग्रहण करने होंइ तहां राशिकौं एकवार एक घाटि गुणाकार करि गुणिए अर जेती वार बहुभागका ग्रहण करना होइ तेती वार संपूर्ण भागहारका भाग दीजिये । बहुरि अंतविषै जहां अवशेष रह्या एक भाग हीका ग्रहण होइ तहां तिस राशिकौं एककरि गुणिए । अर जेतीवार बहुभाग ग्रहण कीए थे तेतीवार संपूर्ण भागहारका भाग दीजिये जैसैं दशकरि भाजित लक्षकौं दशका भाग दीए बहुभाग ऐसा ल ९ / १०।१० इहां एकभागके दश हजार थे तिनकौं दशका भाग देइ नव भागनिकौं ग्रहे नव हजार आए सोई लाखकौं नव गुणाकरि दोयवार दशका भाग दीएं भी नव हजार आए। बहुरि ऐसैंही तिस अवशेष एक भागकौं दशका भाग देइ बहुभाग ग्रहण कीएं ऐसा ल ९ / १०।१०।१० इहां अवशेष एक भागके हजार थे तिनविषैं बहु भागके नवसै जानने। बहुरि अवशेष भाग एक ऐसा ल १ / १०।१०।१० इहां लक्षकौं एक गुणा कीए लक्षही भया ताकौं तीन वार दशका भाग दीएं सौ पाए सोई अवशेष एक भागका प्रमाण जानना। बहुरि ऐसैं ही घनलोककौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भागकौं छोडि बहुभाग ग्रहण करने होंइ तहां ऐसा ≡ १‿ / प ᑕ प ᑕ बहुरि अवशेष एकभागकौं तिसही भागहारका भाग देइ बहुभाग ग्रहण कीएं ऐसा ≡ १‿ / प ᑕ प ᑕ प ᑕ बहुरि अवशेष एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भागकौं तिसही भागहारका भाग देइ बहुभाग ग्रहण कीएं ऐसा $\equiv \frac{\text{प}\;(1-)}{\text{a}} \cdot \frac{\text{प}}{\text{a}}\;\frac{\text{प}}{\text{a}}\;\frac{\text{प}}{\text{a}}$ अवशेष एक भाग ऐसा $\equiv 1 \;\frac{\text{प}}{\text{a}}\;\frac{\text{प}}{\text{a}}\;\frac{\text{प}}{\text{a}}$ जानना। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि जहां विवक्षितराशिकौं विवाक्षित भागहारका भागदेइ एकभागकौं तिस विवाक्षित राशि विषैं मिलावना होइ तहां तिस राशिकौं एक अधिक भागहारके प्रमाणकरि गुणिए अर संपूर्ण भागहारका भाग दीजिए जातैं समच्छेद करि पीछैं दोऊ राशीके गुण्यकौं समान देखि गुणाकार विषैं एक अधिक करिए हैं। जैसैं कोटिविषै कोटिहीका दशवां भाग जहां मिलावना होइ तहां कोटिकौं ग्यारहकरि गुणि दशका भाग दीजिए को $\frac{११}{१०}$ यों करतैं लब्धराशि एक कोडि दश लाख आवै हैं। ऐसैं ही पुद्गलराशिमें पुद्गलराशिका अनंतवां भाग मिलावना होइ तहां पुद्गलराशिकौं एक अधिक अनंतकरि गुणिए अनंतका भाग दीजिए ताकी संदृष्टि ऐसी १६ $\frac{\text{ख}\;(१-)}{\text{ख}}$ ख बहुरि अंतर्मुहूर्तविषैं अंतर्मुहूर्तका संख्यातवां भाग मिलावना होइ तहां अंतर्मुहूर्तकौं एक अधिक संख्यातकरि गुणिए संख्यातका भाग दीजिये ताकी संदृष्टि ऐसी २ $\frac{१}{४}$ ५ इहां संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक जानना। ऐसैं ही अन्य जानने। बहुरि याका संख्यातवां भाग यामैं मिलावना होइ तहां ऐसी २ $\frac{१}{४}$। $\frac{५}{४}$। ५ संदृष्टि जाननी। ऐसैं ही अन्य जानने।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जहां कोई राशिं गुणकार संयुक्त होइ तिस विषैं तिस राशिके समान प्रमाण जोड़ना होइ तहां गुणकार विषैं एक अधिक करि दीजिए अर तातैं दूणा तिगुणा आदि प्रमाण मिलावना होइ तौ दोय तीन आदि अधिक कीजिए जैसें पांच गुणा लक्षविषैं लक्ष मिलावना होइ तहां एक अधिक पांचका गुणकार कीजिए ल ५ (१—) बहुरि अन्तर्मुहूर्त गुणकारकरि गुण्या हुवा लोकविषै लोकतैं दूणा प्रमाण मिलावना होइ तहां दोय अधिक अन्तर्मुहूर्तका गुणकार करिए ताकी संदृष्टि ऐसी ≡२ ३ (६—) बहुरि कोई राशि गुणकारकरि संयुक्त होइ तिसविषैं तिस राशि मात्र वा तातैं दूणां आदि प्रमाण घटावना होइ तहां तिस गुणकारविषैं एक दोयआदि घाटि कर दीजिए। जैसें पांच गुणा कोटिबिषैं कोटि घटावना होइ तहां एक घाटि पांचका गुणकार करिए को ५ (१—) ऐसैं ही असंख्यातगुणां पल्य विषैं पल्यतैं तिगुणा प्रमाण घटावना होइ तहां पल्यकौं तीन घाटि असंख्यात करि गुणिए ताकी संदृष्टि ऐसी प ३ (३—) ऐसैंही अन्य जानने। बहुरि जहां राशि दोय तीन आदि गुणकारनिकरि संयुक्त होइ अर तहां पूर्व गुण्य वा गुणकारकरि गुणें जेता प्रमाण होइ तितना घटावना वा बधावना होइ तौ तहां तिसतैं आगें गुणकारनिविषैं एक घटाइए वा बधाइए जैसें लक्ष पांच च्यारि तीन करि गुणित होइ ल ५।४।३ ताका प्रमाण साठि लाख तामैं लक्ष घटावने होंइ तो पांचके ऊपरितैं लगाय सर्व गुणकारनिके ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि करनी, ल ५।४।३ (१—) अर पांच घटावने होंइ तो च्यारिऊपरतैं लगाय करनी ल ५।४।३ (१—) अर बीस लाख घटावने होंइ तो तीनके ऊपरि एक घाटि की संदृष्टि करनी ल ५।४।३ (१—) ऐसैं ही संख्यात गु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णित असंख्यात लोकविषैं लोकमात्र घटावना होइ तौ असंख्यातके ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि ≡ a ९ (१ ⌒) कीजिए। अर असंख्यात लोकमात्र घटावनां होंइ तौ संख्यातके ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि कीजिए ≡ a ९ (१ ⌒) इत्यादि। बहुरि ऐसैं ही मिलावने विषैं अधिककी संदृष्टि जाननी अर तातैं दूणा आदि प्रमाण घटावना होइ तौ तहां दोय तीन आदि घटावनेकी संदृष्टि करनी। जैसैं तिस राशिमें तीन लाख घटावना होइ तौ पांचके ऊपरि तीन घाटिकी संदृष्टि करनी ल ५ (३ ⌒)। ४। ३ ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि जो राशिके बीचके कोई गुणकारतैं अगले पीछले गुण्य वा गुणकारकरि गुणैं जो प्रमाण होइ तितना घटावना बधावना होइ तौ तहां तिस बीचिके गुणकारविषैं एक घटाइए वा बधाइए। बहुरि तातैं दूणा तिगुणा आदि प्रमाण घटावना वा बधावना होइ तो दोय तीन आदि घटाइए वा बधाइए जैसैं तिस ही पांच च्यारि तीन गुणित लक्षविषैं बारह लाख घटावना होइ तौ पांच विषै एक घाटि करिए ल ५। ४ (१ ⌒)। ३ पंद्रह लाख घटावने होंइ तौ चारि ऊपरि एक घाटि करिए ल ५। ४ (१ ⌒)। ३ तीस लाख घटावने होंइ तो च्यारि ऊपर दोय घाटि करिए ल ५। ४ (२ ⌒)। ३ ऐसैं ही बधावनेविषैं अधिककी संदृष्टि जाननी। ऐसैं ही अन्यत्र जाननी।

बहुरि जो राशि गुणकार संयुक्त होइ अर तिसविषै गुणकार मात्र घटावना वा बधावना होइ वा तातैं दूणा आदि प्रमाण घटावना वा बधावना होइ तो तहां गुण्यके ऊपरि एक दोय आदि हीन अधिककी संदृष्टि करनी जैसैं च्यारि अर तीनगुणा लक्षविषैं बारह घटावना होइ तो लक्ष विषैं एक घाटि करना ल (१ ⌒)। ४। ३ ऐसैं ही असं- २१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यात गुणा लोकविषैं असंख्यात घटावना होइ तो लोक ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि करनी ≡ ३ इत्यादि। बहुरि ऐसैं ही मिलावने विषैं अधिककी संदृष्टि जाननी।

बहुरि जहां राशिका गुण्य वा गुणकारविषैं एक दोय आदि घटाया वा बधाया ताका प्रमाणकौं जुदा स्थापना होइ तहां तिस एक दोयआदिकौं तिस गुण्य वा गुणकारतैं अगले वा पिछले गुण्य वा गुणकारनिकरि गुणैं जेता होइ तेता जुदा स्थापिए जैसैं दोय अधिक पांच अर च्यारि अर तीन करि गुणित लक्षप्रमाण राशिविषैं दोय अधिक पांच विषैं दोइ घटाइ जुदा स्थापिए ताका प्रमाण लक्ष च्यारि तीन करि गुणित दोय जानना। २ ल ४। ३ ऐसैं ही घटावनेविषैं ऋणका प्रमाण जुदा स्थापना। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि ताकौं जुदा स्थापैं अवशेष गुण्य वा गुणकारका प्रमाण रहे सो तिस राशि विषैं लिखना। बहुरि जहां समच्छेद विधान विषैं अंशनिकौं वा हारनिकौं परस्पर हारनिकरि गुणना होइ तहां कहीं परस्पर दोऊ राशिनि के जे समान हार होंइ तिनकौं छाड़ि अधिक हारनिकरि ही समच्छेद करना जैसैं पांच च्यारिकरि भाजित लक्षविषैं पांच च्यारि तीन करि भाजित लक्ष जोड़ना होइ तहां दोऊ राशिनिविषैं पांच च्यारिके हार समान देखि तीनकरि ही समच्छेद करिए तब मूल राशि ऐसा ल। ३ / ५।४।३ धनराशि ल / ५।४।३ होइ इहां लक्ष गुण्यकौं समान देखि अगले तीनके गुणकारविषैं एक अधिक कीएं दोऊ राशिनिका जोड ऐसा हो है ल ४ / ५।४।३ ऐसैंही अन्यत्र जानना।

बहुरि जहां राशिका आधा करना होइ तहां दोयका भाग दीजिए जैसैं एक घाटि अंतर्मुहूर्तका आधाकी संदृष्टि ऐसी २ १ / २ याही प्रकार राशिका तीसरा चौथा आदि भागका ग्रहण विषै तीन च्यारि आदिका भाग जानना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जहां भागहार संयुक्त भाज्यराशिकौं अंश वा हारकरि गुणना होइ तहां अंशकौं भागहारके आगै अर हारकौं भागहारके आगै लिखना जैसैं घनरज्जूका ड्योढगुणां जहां करना तहां संदृष्टि ऐसी हो है ≡ ३
३४३। २

ऐसै हीं अन्यत्र जानना इत्यादि अनेकप्रकार यथासंभव संदृष्टिनिके विशेष जानने। इहां उदाहरण मात्र केतेक लिखे हैं। बहुरि अन्य केई संदृष्टि विशेष कहिए हैं—

कहीं षट्स्थानपतित वृद्धि वा हानिविषैं अनंतभागकी संदृष्टि ऊर्वंक उ असंख्यात भागकी च्यारिका अंक ४ संख्यात भागकी पांचका अंक ५ संख्यात गुणकी छहका अंक ६। असंख्यात गुणकी सातका अंक ७ अनन्तगुण की आठका अंक ८ संदृष्टि जाननी। पुद्गल परिवर्तन विषैं गृहीतकी एकका अंक १ अगृहीतकी बिंदी ० मिश्रकी हंसपद × संदृष्टि जाननी। बहुरि कहीं दोयबार लिखनेतैं बहुतबार जानना। जैसैं दोयबार ऊर्वंक लिखनेतैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र बार अनंतभागवृद्धि जाननी। बहुरि कहीं आलाप समान पाइए है तथापि अन्यकी अपेक्षा अल्प बहुत्व जनावनेकौं संदृष्टि करिए है जैसैं तीनों करणोंका काल आलापकरि अन्तर्मुहूर्त मात्र है तथापि तिनविषैं अनिवृत्ति करणका काल सबतैं स्तोक संख्यात आवली प्रमाण है ताकी संदृष्टि ऐसी २ ९ यातैं संख्यातगुणा अपूर्व करणका कालका ऐसी २ ९ ९ यातैं संख्यातगुणा अधःकरणका कालकी ऐसी २ ९ ९ ९ संदृष्टि हो है। बहुरि जैसैं कर्मस्थिति रचनाविषैं समय प्रबद्धकी संदृष्टि ऐसी स a इहां जघन्य समय प्रबद्धतैं उत्कृष्ट समय प्रबद्ध असंख्यातगुणा है तातैं जघन्य समयप्रबद्धकी संदृष्टि आदि अक्षर रूप ऐसी स ताके आगैं असंख्यातका गुणकार कीएं उत्कृष्ट समय प्रबद्धकी संदृष्टि ऐसी स a हो है। बहुरि कहीं अंक संदृष्टिही कौं अर्थ संदृष्टिविषैं भी लिखिए है जैसैं उत्कृष्ट समय प्रबद्धकी संदृष्टि ऐसी स ३२ इहां जघन्य समय प्रबद्धकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा बत्तीसका गुणकार जानना। बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धकी संदृष्टि ऐसी स a १२— इहां उत्कृष्ट समय प्रबद्ध ऐसा स a ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा ड्योढ गुणहानिका प्रमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारह ताके आगें किंचिदून करनेकों संदृष्टि ऐसी — ताका गुणकार जानना। ऐसैं ही अन्य भी यथायोग्य संदृष्टि जाननी। बहुरि कहीं आकाररूप संदृष्टि हो है।

जैसैं कर्मस्थितिका कथनविषै संदृष्टि ऐसी 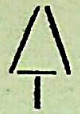 इहां नीचै ऊभी लकीर सो तो आबाधा कालकी संदृष्टि जाननी। अर ताके ऊपरि ऐसी संदृष्टि सो निषेकनिकी जाननी जातैं निषेकनिका प्रमाण क्रमतैं घटता २ है तातैं क्रमतैं हीनरूप संदृष्टि कीजिए है। बहुरि जहां निषेकनिही का ग्रहण होइ तहां संदृष्टि ऐसी ही जाननी बहुरि जहां स्थिति विषै अचलावली उदयावली उपरितन स्थिति उच्छिष्टावलीकी रचना होइ तहां संदृष्टि ऐसी 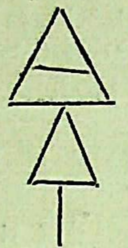 इहां नीचै ऊभी लकीर अचलावलीकी संदृष्टि है। ताके ऊपरि ऐसी उदयावलीकी संदृष्टि है ताके ऊपरि ऐसी संदृष्टि उपरितन स्थितिकी है। ताके ऊपरि ऐसी संदृष्टि उच्छिष्टावलीकी है। इहां उदयावली उपरितन स्थिति उच्छिष्टावलीके निषेक क्रमतैं हीन रूप है तातैं क्रमतैं हीन आकाररूप संदृष्टि जानना। बहुरि इनविषैं प्रकृतिबंध भए पीछें आवलीकालमात्र उदय उदीरणादिरूप होने योग्य नाहीं सो अचलावली है। बहुरि जो आवली कालविषै उदय आवने योग्य निषेक समूह सो उदयावली है ताके ऊपरके जे निषेक तिनका समूह सो उपरितन स्थिति है अंतके आवलीप्रमाण निषेक अवशेष रहैं सो उच्छिष्टावली है। ऐसैं जानना। बहुरि कर्मनिका अनुभागका कथनविषै संदृष्टि ऐसी 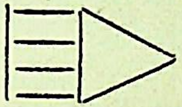 इहां अनुभागविषै अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाणकी समानता लीएं वर्ग एक एक वर्गणाविषै पाइए है तिनकी संदृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असी 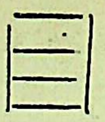 अर वर्गनिका प्रमाण वर्गणानिविषैं क्रमतैं हीन रूप है तातैं आगैं ऐसी 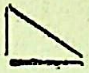 संदृष्टि जाननी इत्यादि। बहुरि अधःकरणका कथनविषै अंकुश रचना लांगल रचना हो है सो टीकाविषै लिखी ही है। बहुरि जहां क्षेत्रफल करना होइ तहां ऐसा आकार लिखिए 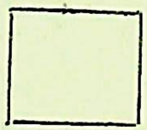 तहां ऊंचाईका प्रमाण वीचि लिखिए लंबाई चौडाईका प्रमाण नीचैं अर पार्श्वविषैं लिखिये तहां करणसूत्रनिकरि यथा संभव क्षेत्र फल होइ सो जानना। ऐसैं अन्य भी अनेकप्रकार संदृष्टि जाननी। इति सामान्य संदृष्टि स्वरूप वर्णनं समाप्तं।

बहुरि संस्कृतटीकाविषैं वा सूत्रनिकी यंत्र रचनाविषैं वा कहीं इस संदृष्टि अधिकारविषैं जो संदृष्टि रचना जिस अर्थकी होइ तिस रचनाकै अर तिस अर्थकै अपनी इच्छानुसारि जैसा तैसा आकाररूप सहनानी समान होइ अथवा अर्थतैं लगाय रचनापर्यंत लीक करि दीजिए तहां ऐसा जानिए जो इस अर्थकी यहु रचना है इत्यादि यथासंभव बुद्धिके बलतैं शास्त्रनिविषै अभिप्राय जानि यथार्थज्ञानी होइ परमज्ञानी होना। अथ श्रीमद्गोम्मटसार शास्त्रके यंत्रनिविषै वा संस्कृत टीकाविषैं जे अर्थ संदृष्टिनिकरि कहे तिनके प्रगट करनेके अर्थि वा कहे जु अर्थ तिनकी संदृष्टि रचना जाननेके अर्थि किछू वर्णन करिए है—

केती इक इहां अर्थ संदृष्टि कहिए है तिनकौं जानि अन्य भी अर्थ संदृष्टि अपनी बुद्धितैं यथासंभव जानि लेनी वा अन्य ग्रंथनितैं जानि लेना। बहुरि इहां जिनि अर्थनिकी संदृष्टि कहिए है तिनिविषैं जिनि अर्थनिका स्वरूप इहां सामान्य वर्णन करि नीकैं जाननेमें न आवे तिनका स्वरूप विशेषपनै टीकाविषैं अपने अपने अधिकारानिविषैं वर्णन किया है तहांतैं तिन अर्थानिका स्वरूप जानि ताके अनुसारि इहां संदृष्टिनिका स्वरूप जानना। बहुरि इहां जिस अर्थका वर्णनके आगें जो संदृष्टि लिखिए है सो संदृष्टि तिस अर्थकी जाननी। कहीं लिखनेविषैं आगै पीछे भी संदृष्टि लिखि जाय तो तहां अर्थ संबंधतैं संदृष्टि जानि लेनी। अथ श्रीमद्गोम्मटसारके

५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोय महा अधिकार हैं तिनविषैं प्रथम जीवकांडविषैं संदृष्टि कहिए है—

तहां प्रथम गुणस्थानाधिकार है तीहिं विषैं संदृष्टि कहिए है जहां तीन करणनिका स्वरूप वर्णन है तहां अधः प्रवृत्तकरणविषै अंकसंदृष्टिकरि सर्वधन तीन हजार बहत्तरि ३०७२ याकौं गच्छ सोलह १६ के वर्ग २५६ का अर संख्यात तीन ३ का भाग दीएं ३०७२ / २५६।३ च्यारि पाये सो चय है। बहुरि एक घाटि गच्छ १५ का आधा १५/२ कौं चय ४ करि गुणैं १५।४ / २। बहुरि गच्छ १६ करि गुणैं चयधन ४८० होइ याकौं सर्वधन ३०७२ मैंस्यौं घटाइ २५९२ गच्छ १६ का भाग दीएं २५९२ / १६ प्रथम समय संबंधी परिणाम संख्या १६२ होइ यातैं एक एक चय ४ बधाएं द्वितीयादि अंत समयपर्यंत संबंधी परिणाम संख्या होइ। ऐसैं ही अर्थसंदृष्टिकरि सर्व परिणाम धन असंख्यात लोकमात्र ऐसा ≡ a बहुरि अनिवृत्तिकरणका अंतर्मुहूर्तमात्र कालतैं दोयवार संख्यातगुणां अधःप्रवृत्तकरणका काल प्रमाण गच्छ ऐसा २ १ १ १ ताका वर्ग ऐसा २ १ १ १। २ १ १ १ अर संख्यात प्रमाण ऐसा १ इनिका भाग तिस सर्व धनकौं दीएं ऊर्ध्वचयका प्रमाण ऐसा जानना ≡ a / २ १ १ १। २ १ १ १। १ बहुरि एक घाटि गच्छ ऐसा २ १ १ १ ताका आधा ऐसा २ १ १ १ / २ याकरि चयकौं गुणैं ऐसा ≡ a। २ १ १ १ / २ १ १ १। २ १ १ १। १। २ प्रमाण होइ बहुरि याकौं गच्छ ऐसा २ १ १ १

१ यहां की संदृष्टियोंका स्वरूप पृष्ठ १०२ जीवकांड मैं देखना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताकरि गुणैं ऐसा होइ ≡ a । २ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २
इहां भाज्यविषैं वा भागहारविषै ऐसा २ ९ ९ ९
प्रमाण समान जानि अपवर्तन कीएं चयधनका प्रमाण होइ । ताकी संदृष्टि ऐसी हो है—

१ ^
≡ a । २ ९ ९ ९ याकौं सर्वधन ऐसा ≡ a तामैं घटावना सो भिन्न गणितविषै समच्छेदविधान है ताका
२ ९ ९ ९ । ९ । २

अनुसारितैं धनराशि ऐसा ≡ a ताकौं ऋणराशिका भागहारनिकरि गुणिए अर "कल्प्यो हरो रूपमहारराशेः" इस वचनतैं हार करि रहित धन राशिका एकहार कल्पि ताकौं ऋणराशिका भागहारनिकरि गुणिए तब धनराशि ऐसा ≡ a २ ९ ९ ९ । ९ । २ हो है । अर ऋणराशि चयधन मात्र ऐसा ≡ a । २ ९ ९ ९ सो धन राशि
२ ९ ९ ९ । ९ । २   २ ९ ९ ९ । ९ । २

मैंस्यों ऋणराशि घटावना तहां ऋणराशिका गुणकारविषैं जो एक घाटि कह्या था ताका प्रमाण इतना है—
≡ a जातैं सो गुणकार इतने प्रमाण गुण्यका है सो याकौं जुदा स्थापिए तब ऋणराशि ऐसा भया
२ ९ ९ ९ । ९ । २

≡ a । २ ९ ९ ९ सो इहां धनराशि वा ऋणराशि विषैं असंख्यात लोक अर तीनवार संख्यातकरि गुणित
२ ९ ९ ९ । ९ । २

आवली इनकौं समान जानि जो धनराशिविषैं संख्यात अर दोय गुणकार आगे था तामैं एक घटाया तब यहु सर्व ऋण राशि धनराशिविषैं घट गया जातैं सो गुणकार ऋण राशि प्रमाण गुण्यका है बहुरि जुदा राख्या था जो ऋण राशिका ऋण सो ऋणस्य ऋणं राशेर्धनं इस वचनतैं याकौं धनराशिविषैं जोडिए सो इस जुदा राख्या ऋणका ऋणकैं अर धनराशिकैं असंख्यात लोककी समानता देखि असंख्यातलोकके आगें जो गुणकार था ताके ऊपरि एक अधिक करिए जातैं यहु गुणकार तिस ऋण राशिका ऋण प्रमाण गुण्यका है । ऐसैं सर्वधनमैंस्यों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१———१ ᐢ
चयधन घटाएं आदिधन ऐसा ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ इहां असंख्यात लोकका गुणकारके ऊपरि एक अधिक
२ ९ ९ ९ । ९ २

की संदृष्टि तौ असंख्यात लोकके आगैं सर्व गुणकार थे तिनके ऊपरि जाननी। बहुरि संख्यात अर दोय इनि गुणकारनिके ऊपरि जो एक घाटिकी संदृष्टि सो इनहीके ऊपरि जाननी। ऐसैं ही आगैं भी समझना।

१———१ ᐢ
याकौं गच्छ ऐसा २ ९ ९ ९ ताका भाग दीएं प्रथमसमयसंबंधी परिणामपुंजकी संदृष्टि ऐसी ≡ ३ २ ९ ९ ९ । ९ २
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २

बहुरि याके ऊर्ध्व चयका प्रमाण ऐसा ≡ ३ ताकौं मिलाएं द्वितीय समय संबंधी परिणामपुंज
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९

होइ सो इहां समच्छेद विधान करि मिलाइए है सो दोऊ राशिनिके अन्य हार तौ सर्व समान हैं अर दोयका हार समान नाहीं तातैं दोयकरि समच्छेद कीएं मिलावने योग्य धन ऐसा ≡ ३ । २ भया
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २

तहां दोऊ राशिनिविषैं असंख्यातलोककी समानता देखि आगैं गुणकारविषैं जहां एककी अधिककी अधिकता थी तहां दोयका गुणकार इस धनका मिलाइ ऊपरि तीनकी अधिकता कीएं द्वितीय समय संबंधी परिणाम पुंजकी

३— १ ᐢ
संदृष्टि ऐसी ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ । ऐसैं हीं समय समय प्रति करना तहां एक घाटि गच्छकरि गुणित
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ २

चय प्रथमसमयसंबंधी परिणाम पुंजविषैं मिलैं अंतसमयसंबंधी परिणाम पुंज होइ सो एक घाटि गच्छ ऐसा

१ ᐢ १ ᐢ
२ ९ ९ ९ ताकरि गुणित चय ऐसा ≡ ३ । २ ९ ९ ९ अर प्रथम समय संबंधी परिणाम पुंज ऐसा
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१——— १‿
≡ a । २ १ १ १ । १ २ सो इनि दोऊनिके अन्य हार तौ समान हैं दोयका हार समान नाहीं तातैं दोयकरि सम-
२ १ १ १ । २ १ १ १ । १ । २

१‿
च्छेद कीएं मिलावने योग्य धनराशि ऐसा भया ≡ a २ १ १ १ । २ बहुरि इहां गुणकारविषैं एक घटाया है।
२ १ १ १ । २ १ १ १ । १ । २

अर ताके आगें दोयका गुणकार है तातैं इस ऋणरूप दोयका प्रमाण ऐसा ≡ a २
२ १ १ १ । २ १ १ १ । १ २

ताकौं जुदा स्थापैं अवशेष धन ऐसा ≡ a । २ १ १ १ । २ भया सो याकैं अर तिस प्रथम समय संबंधी
२ १ १ १ । २ १ १ १ । १ । २

१‿
परिणाम पुंजकै ऐसा ≡ a । २ १ १ १ समान है अर आगै १ २ ऐसा गुणकार समान नाही सो याके ऊपरि एक घाटि है। सो यहु ऐसे ≡ a । २ १ १ १ प्रमाण गुण्यके गुणकारविषैं हीन है अर धनराशिविषैं ऐसे ही प्रमाणका दोय गुणकार है तातैं तिस दोय गुणकारविषैं एक घटाइ तिस अगले ऐसे १ २ गुणकारविषैं अवशेष

१—
एककी अधिकता करनी १ २ बहुरि इहां जुदा स्थाप्या था ऋणराशि तहां धनस्य ऋणं राशेः ऋणं भवति इस न्यायकरि मिलावने योग्य राशिका ऋण अपने हार सहित असंख्यात लोकके आगें दोयका गुणकार रूप था ताकौं जो मूलराशिविषैं असंख्यात लोकके आगैं गुणकार थे तिनमें घटावने सो पूर्वे असंख्यात लोकके आगें गुणकारविषैं एक अधिक था ताकौं दूरि करना अर अवशेष एक और घटावना ऐसैं करतें अंत समय संबंधी

१‿——— १—
परिणाम पुंजकी संदृष्टि ऐसी ≡ a । २ १ १ १ । १ । २ यामैं दोयका समच्छेद करि एक चय ऐसा
२ १ १ १ । २ १ १ १ । १ । २

५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

≡ a । २
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ताकौं घटाएं असंख्यात लोकके आगें गुणकारके ऊपरि जहां एक घाटि था

तहां तीन घाटि कीएं उपांत समय संबंधी परिणाम पुंजकी संदृष्टि ऐसी जाननी ≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २

या प्रकार अधःप्रवृत्तकरणके समय समय संबंधी ऊर्ध्वरचनाविषैं संदृष्टि जाननी । अब अनुकृष्टि विषैं कहिए है— सो जैसैं आगें अनुकृष्टिका गच्छ ४ अंक संदृष्टिकरि है याका भाग ऊर्ध्व चय ४ कौं दिएं ४/४ अनुकृष्टि का चय १ होइ बहुरि एक घाटि गच्छ ३ का आधा ३/२ कौं चय १ करि अर गच्छ ४ करि गुणैं चय धन ३/२ । ४ । १ होइ याकौं प्रथमादि समय संबंधी परिणाम पुजविषैं घटाएं अवशेषकौं गच्छका भाग दीएं प्रथमखंडका प्रमाण होइ । एक एक चय बधाएं द्वितीयादि खंडका प्रमाण होइ ऐसैं ही अर्थसंदृष्टिकरि इहां अधः प्रवृत्त करण कालके संख्यातवें भाग मात्र अनुकृष्टि गच्छ है सो संख्यातका अपवर्तन कीएं दोय वार संख्यात गुणित आवली प्रमाण ऐसा है २ ९ ९ । बहुरि याका भाग ऊर्ध्व चय ऐसा ≡ a / २ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ ताकौं दीएं अनुकृष्टिचय ऐसा ≡ a / २ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ बहुरि एक घाटि गच्छका आधा ऐसा २ ९ ९ / २ याकौं चय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक् भाग ३१

करि अर गच्छकरि गुणैं चय धन ऐसा हो है ≡a।२ १ १।२ १ १ इहां दोयवार संख्यात गुणित आवलीकौं
२ १ १ १।२ १ १ १।१।२ १ १।२

भाज्य वा भागहार विषैं समान देखि अपवर्तन कीएं ऐसा भया ≡a।२ १ १ याकौं प्रथम समय संबंधी परि-
२ १ १ १।२ १ १ १।१।२

णाम पुंज ऐसा ≡a।२ १ १ १।१ २ तामैं घटाइए सो इहां ऋणराशिका गुणकार ऊपरि एक घाटिरूप
२ १ १ १।२ १ १ १।१ २

ऋणका ऋण ऐसा ≡a ताकौं जुदा राखि अवशेष ऋण ऐसा ≡a।२ १ १
२ १ १ १।२ १ १ १।१ २ २ १ १ १।२ १ १ १।१।२

सो धनराशि अर याके विषैं ऐसा ≡a २ १ १ गुण्य समान देखि धनराशिविषै ताके आगे ऐसा १ १ २ गुण-
कारके ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि कीएं ताका घटावना हो है। बहुरि 'ऋणस्य ऋणं राशेर्धनं' इस वचनतैं जो
जुदा राख्या था ऋणका ऋण ताकैं अर इस राशिकैं असंख्यात लोककी समानता देखि असंख्यात लोकके आगें
गुणकारके ऊपरि जहां एकका अधिकपना था तहां दोय अधिक करने ऐसैं करते चय धनकरि हीन सर्व धन ऐसा

≡a।२ १ १ १।१ २ भया याकौं अनुकृष्टि गच्छ ऐसा २ १ १ ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी प्रथम ३१
२ १ १ १।२ १ १ १।१ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२— १ १
खंडका प्रमाण ऐसा हो है ≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ २ बहुरि यामैं अनुकृष्टि चय मिलावना सो अन्य भागहार
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २
समान जानि दोय करि समच्छेदन किया हुआ अनुकृष्टि चय ऐसा भया ≡ a । २ सो दोऊनिके भागहार
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । २
सहित असंख्यात लोककैं समानता देखि अगले गुणकारनिविषै जोडने तातैं जहां दोय अधिककी संदृष्टि थी तहां
४ — १ १
च्यारि अधिककी संदृष्टि कीएं द्वितीय खंडका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी ≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ऐसै ही आगैं भी
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २
असंख्यात लोकके आगे गुणकारके ऊपरि दोय दोय अधिककी संदृष्टि कीएं एक एक चय अधिक हो है सो एक
एक चय अधिक भएं तृतीयादि खंड हो तैं प्रथमखंडविषैं एक घाटि गच्छमात्र चय मिलैं अंतका खंड हो है सो एक घाटि
१
गच्छ करि गुणित अनुकृष्टि चय ऐसा ≡ a । २ ९ ९ सो प्रथम खंडकै अर याकैं अन्य हार समान हैं तातैं
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९
१
असमान हार दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा हो है ≡ a । २ ९ ९ । २ याकौं प्रथम खंडका प्रमाण ऐसा
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २
२— १ १
≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २ तामैं मिलावना सो मिलावने योग्य धनराशि विषैं असंख्यात लोकके आगें गुणकार
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ ३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै एक घाटि है अर आगें दोयका गुणकार है सो अपने भागहार सहित असंख्यात लोक दूणां प्रमाण यहु ऋण भया अर मूल राशि विषै असंख्यात लोकके आगैं गुणकार ऊपरि दोय अधिक थे सो इन दोऊनिका समान प्रमाण देखि अपवर्तन कीया तब धनराशि ऐसा भया ≡ a । २ ९ ९ । २ अर मूलराशि ऐसा भया ताकी संदृष्टि

२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

१ ^ १ ^

≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २ इन दोऊनि विषैं असंख्यात लोक अर दोय वार संख्यात गुणित आवलीकी समानता

२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

देखि आगैं धनराशि विषै जो दोयका गुणकार था तामैं मूलराशि विषैं जो आगें गुणकारनिके ऊपरि एक घाटि था सो दूरिकरि अवशेष एककौं तिन गुणकारनिके ऊपरि अधिक कीएं अंत खंडके प्रमाणकी संदृष्टि

१— १ ^

ऐसी हो है ≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २

२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

यामैं दोयकरि समच्छेद कीया हुवा अनुकृष्टि चय घटावनां सो असंख्यात लोकके आगैं गुणकारनिके ऊपरि दोय

२—^—

१—

१ ^

घाटिकी संदृष्टि कीएं उपांत खंड की संदृष्टि ऐसी ≡ a । २ ९ ९ ९ । ९ । २ हो है।

२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

बहुरि जो प्रथम समय संबंधी द्वितीय खंडकी संदृष्टि सोई द्वितीय समय संबंधी प्रथम अनुकृष्टि खंडकी ३३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संदृष्टि ऐसी जाननी ≡ a । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ जातैं द्वितीयसमयसंबंधी परिणामपुंज ऐसा ≡ a । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २
२ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ ꠰ ꠰ । २ — २ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २

तामैं चय धन ऐसा ≡ a । २ ꠰ ꠰ घटाएं तहां ऋणका ऋणकौं धन कीएं अवशेष प्रमाण ऐसा भया
२ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २

≡ a । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ ताकौं अनुकृष्टि गच्छ ऐसा २ ꠰ ꠰ ताका भाग दीएं प्रथम खंड हो है। बहुरि यामैं दोय
२ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ २

करि समच्छेद कीया हुवा अनुकृष्टि चय मिलावना सो असंख्यात लोकके आगै गुणकारनिके ऊपरि ल्यारिकी

जायगा छह की अधिकता कीएं द्वितीय खंडकी संदृष्टि ऐसी ≡ a । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ ऐसैंही एक एक खंड
२ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ । २ ꠰ ꠰

विषैं एक एक चय बधावतैं अन्तविषैं एक घाटि गच्छ प्रमाण चय मिलैं द्वितीय समय संबंधी अन्त खण्ड ऐसा

≡ a । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ इहां प्रथम समय संबंधी अन्तका खण्ड दोय करि समच्छेद कीया हुवा एक चय मिला- ३४
२ ꠰ ꠰ ꠰ । २ ꠰ ꠰ ꠰ । ꠰ । २ ꠰ ꠰ । २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनेकौं असंख्यात लोकके आगें गुणकारके ऊपरि दोय अधिककी संदृष्टि जाननी। बहुरि यामैं एक चय घटाएं प्रथम समय संबंधी अंतका खंडकी संदृष्टिके समान द्वितीय समय संबंधी उपांत खंडकी संदृष्टि ऐसी जाननी।

१ १

≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ऐसैंही समय समय प्रति खंडानिकी रचना होतैं अन्त समय विषैं समस्त परिणामपुंज
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

१ १

ऐसा जानना ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ यामैं अपवर्तन कीया हुवा अनुकृष्टि चय धन ऐसा
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २

१ –

≡ ३ । २ ९ ९ घटावना सो ऋणका ऋणकौं राशिका धन करि राशिविषैं असंख्यात लोकके आगें गुणकार
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २

ऊपरि एक घाटि था ताकौं दूरि करना अवशेष ऐसा ≡ ३ २ ९ ९ प्रमाण दोऊ जायगा समान देखि राशिविषैं

१ –

याके आगैं गुणकार ऐसा ९ ९ । २ ताके ऊपरि एक घाटि कीएं अन्त समय संबंधी प्रथम खण्ड ऐसा जानना

१ १

≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ यामैं दोय करि समच्छेद किया हुवा अनुकृष्टि चय मिलावनेकौं असंख्यात लोकके
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगैं गुणकारके ऊपरि दोय अधिककी संदृष्टि कीएं ताके दूसरे खंडका प्रमाण ऐसा हो है—

२——— १ ^ १—

≡ a । २ ७ ७ ७ । ७ । २ ऐसैंही क्रम होतैं दोय करि समच्छेद कीया हुवा एक घाटि गच्छ प्रमाण अनुकृष्टि चय ऐसा
२ ७ ७ ७ । २ ७ ७ ७ । ७ । २ ७ ७ । २

१ ^

≡ a । २ ७ ७ । २ ताकौं प्रथम खण्ड विषैं मिलावना सो इहां धन राशिका ऋण ऐसा ≡ a । २ ताकौं
२ ७ ७ ७ । २ ७ ७ ७ । ७ । २ ७ ७ । २ ——— २ ७ ७ ७ । २ ७ ७ ७ । ७ । २ ७ ७

जुदा राखें अवशेष ऐसा ≡ a २ ७ ७ । २ तीहि विषैं ऐसा ≡ a २ ७ ७ कौं दोऊ जायगा समान देखि याके आगैं राशि विषैं गुणकारके ऊपरि जहां एक का घाटिपना था तहां धन राशिका दोय मिलाइ एकका अधिकपना करना अर ऋण-रूप दोय जुदे राखे थे तिनकौं घटावनेकौं असंख्यात लोकके आगैं गुणकारनिके ऊपरि दोय घाटिकी संदृष्टि करनी

२——^—— १—— १—

ऐसैं करतैं अन्त समय संबंधी अंत खंडका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी ≡ a । २ ७ ७ ७ । ७ । २ बहुरि यामें दोय
२ ७ ७ ७ । २ ७ ७ ७ । ७ । २ । २ ७ ७

करि समच्छेद कीया हुवा एक चय घटावनेकौं असंख्यात लोकके आगैं गुणकार ऊपरि जहां दोय घाटिकी संदृ-

४——^—— १—— १—

ष्टि थी तहां चारि घाटिकी संदृष्टि कीएं अंतसमयसंबंधी उपांत खंडकी संदृष्टि ऐसी हो है ≡ a । २ ७ ७ ७ । ७ । २
२ ७ ७ ७ । २ ७ ७ ७ । ७ । २ ७ ७ । २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि अन्त समयका प्रथम खंडकी संदृष्टि विषैं दोय करि समच्छेद कीया हुवा एक अनुकृष्टि चय घटावनेकौं असंख्यात लोकके आगे गुणकारके ऊपरि दोय घाटिकी संदृष्टि कीएं उपांत समय संबंधी प्रथम खंडकी संदृष्टि

२———^———
१—^——
१—

ऐसी हो है ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ बहुरि यामैं दोय करि समच्छेद कीया हुवा अनुकृष्टि चय मिलावनेकौं
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ । २ ९ ९

असंख्यात लोकके आगें गुणकारके ऊपरि दोय हीन कीया था सो न कीएं उपांत समयका द्वितीय खंडकी सं-

१—^—
१—

दृष्टि ऐसी हो है ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ऐसैं खण्ड खण्ड प्रति करतैं दोय करि समच्छेद कीए हुए एक
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ । २ ९ ९

घाटि गच्छ प्रमाण चय प्रथम खण्ड विषैं जोडें अन्त खंडकी संदृष्टि अन्त समय संबंधी उपांत खंडकी संदृष्टि

४—— —^——
१——
१—

के समान हो है ≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ यामैं दोय करि समच्छेद कीया हुवा एक चय घटावनेकौं असंख्यात
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ । २ ९ ९

लोकके आगे गुणकार ऊपरि चारिकी जायगा छह घटाएं उपांत समय संबंधी उपांत खंडकी ऐसी हो है——

६———१——
१—

≡ ३ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ या प्रकार समय समय संबंधी परिणाम पुंजकी वा तिनके खंडानिकी संदृष्टि अधः
२ ९ ९ ९ । २ ९ ९ ९ । ९ । २ ९ ९ । २

करणविषैं जाननी । इनका यंत्र——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इनविषैं प्रथमसमय संबंधी जघन्य अनुकृष्टि खंडके परिणाम ऐसे ≡ a। २ ९ ९ ९। ९ २
२ ९ ९ ९। २ ९ ९ ९। ९। २। २ ९ ९

इनिका अपवर्तन कीएं संख्यातप्रतरांगुल ऐसा ४ ९ ताकरि भाजित असंख्यात लोकमात्र हो है तिनकी संदृष्टि ऐसी ≡ a / ४ ९ बहुरि एक अधिक सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग ऐसा २ / a ताकौं तीनवार माडें याका घन होइ अर दोयवार माडें वर्ग होइ ऐसैं घन अर वर्गकौं परस्पर गुणन अर्थि पांच वार आगे आगे लिखिए

२ / a २ / a २ / a २ / a २ / a सो इतने स्थानविषैं एकवार षट्स्थान होइ तौ इतने ≡ a / ४ ९ परिणामनिविषैं केती वार
≡ a।

होइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धराशि ऐसा ४ ९ २ / a २ / a २ / a २ / a २ / a हो है ऐसैं ही अन्य खंडनिविषैं जानना। ऐसैं अधः करणविषै संदृष्टि कही।

बहुरि अपूर्वकरणविषै अंकसंदृष्टिकरि समस्त परिणाम धन च्यारि हजार छिनवे ४०९६ कालप्रमाण गच्छ आठ ८ संख्यातसंदृष्टि ४ जानि गच्छ आठ ८ का वर्ग ८×८ = ६४ अर संख्यात ४ का भाग सर्वद्रव्यकौं दीएं ४०९६ / ८। ८। ४ लब्ध राशिमात्र चय १६ होइ बहुरि एक घाटि गच्छका आधा ८ / २ कौं चय १६ अर गच्छ ८ करि गुणै ८ / २। १६। ८ चयधन ४४८ होइ याकौं सर्व द्रव्य ४०९६ मैं घटाइ अवशेषकौं गच्छका भाग दीएं ३६४८ लब्धराशिमात्र प्रथम समयसंबंधी संख्या होइ यामैं एक एक चय मिलैं द्वितीयादि समय सं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधी होइ ऐसैं एक घाटि गच्छमात्र चय १६।८ मिलैं अंत समय संबंधी संबंधी संख्या हो है ऐसैं अर्थसंदृष्टिकरि समस्तपरिणाम धन असंख्यात लोक करि गुण्या हूवा असंख्यात लोकमात्र ऐसा ≡a≡a बहुरि गच्छ दो-यबार संख्यातकरि गुणित आवली प्रमाण अपूर्व करणका काल मात्र ऐसा २ १ १ बहुरि संख्यात ऐसा १ सो गच्छ २ १ १ के वर्ग २ १ १।२ १ १ अर संख्यात १ का सर्व द्रव्यकौं ≡ a ≡ a भाग दीएं चय ऐसा

≡ a ≡ a / २ १ १।२ १ १।१ बहुरि एक घाटि गच्छका आधा २ १ १ / २ [१ – above] कौं चय ≡ a ≡ a / २ १ १।२ १ १।१ करि गच्छ २ १ १ करि गुणें चय

[१ – above] धन ऐसा ≡ a ≡ a २ १ १।२ १ १ / २ १ १।२ १ १।१।२ इहां दोयबार संख्यात गुणित आवलीकौं भाज्य भागहार विषैं समान

[१ – above] देखि अपवर्तन कीएं ऐसा ≡ a ≡ २ १ १ / २ १ १।१।२ हो है। याकौं सर्वधन द्रव्यमें ≡ a ≡ a घटावना सो समच्छेद

विधान करि मूल राशि ऐसा ≡ a ≡ a २ १ १।१।२ / २ १ १।१।२ अर ऋण राशि ऐसा ≡ a ≡ a २ १ १ [१ – above] / २ १ १।१।२ सो ऋण राशिका गुणकार विषैं एक घाटि है ताका प्रमाण ऐसा ≡ a ≡ a / २ १ १।१।२ याकौं जुदा राखि अवशेष ऐसा

≡ a ≡ a २ १ १ / २ १ १।१।२ कौं मूल राशि विषैं समान देखि मूलराशि विषैं यातैं आगें गुणकार ऐसा १।२ ताके ऊपरि एक घटावनेकी संदृष्टि करनी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जो वह ऋणका ऋण जुदा राख्या था सो राशिका धन होइ सो असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोककौं समान देखि ताके आगैं मूल राशिके गुणकारनिके ऊपरि एक अधिकको संदृष्टि करनी ऐसैं चय धन रहित सर्व धन ऐसा हो है—

१— १ ‿

≡ a ≡ a । २ ९ ९ । ९ । २ याकौं गच्छ ऐसा २ ९ ९ ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी परिणाम संख्याकी सं-
२ ९ ९ । ९ । २ १– १ ‿

दृष्टि ऐसी ≡ a ≡ a । २ ९ ९ । ९ २ बहुरि यामैं चय मिलावना सो चयकैं अर याकैं अन्य हार समान देखि
२ ९ ९ । २ ९ ९ । ९ । २

दोय करि समच्छेद कीएं ऐसा हो है ≡ a ≡ a । २ सो इहां असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोककौं समान
२ ९ ९ । २ ९ ९ । ९ । २

देखि अगले गुणकारनिके ऊपरि एक अधिककी जायगा तीन अधिककी संदृष्टि कीएं द्वितीय समय संबंधी परि-

३— १ ‿

णाम संख्याकी संदृष्टि ऐसी हो है ≡ a ≡ a २ ९ ९ । ९ । २ ऐसैं एक एक चय मिलावतैं एक घाटि गच्छ
२ ९ ९ । २ ९ ९ । ९ । २

१ ‿

मात्र चय ऐसा ≡ a ≡ a । २ ९ ९ याकौं प्रथमसमयसंबंधी विषैं मिलाएं अन्त समय संबंधी होइ सो इहां
२ ९ ९ । २ ९ ९ । ९

१ ‿

अन्य हारनिकी समानता देखि दोय करि समच्छेद कीया हुवा ऐसा भया ≡ a ≡ a । २ ९ ९ । २ इहां गुण-
२ ९ ९ । २ ९ ९ । ९ । २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार ऊपरि ऋण है ताका प्रमाण ऐसा ≡ ə ≡ ə।२ सो याकौं जुदा राखि अवशेष ऐसा रह्या
२ ११।२ ११।१।२

≡ ə ≡ ə।२ ११।२ तहां असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोक अर दोय बार संख्यात गुणित आवली
२ ११।२ ११।१।२

कौं समान देखि आगिला दोय रहे सो मूल राशिके आगला गुणकारमैं अधिक करना सो मूल राशि जो प्रथम समय संबंधी परिणाम पुंज तीहि विषैं ऐसे १।२ गुणकार ऊपरि जहां एक घाटि था तहां एक अधिक करना। बहुरि जुदा राख्या था ऋण ताका असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोककौं समान देखि आगैं जो दोय रहे सो मूल राशिके तिसतैं अगले ऐसा २ ११।१ २ गुणकार तिस विषैं घटावने सो इनिके ऊपरि जहां अधिककी संदृष्टि थी तहां एक घाटिकी संदृष्टि करनी ऐसैं करतैं अन्त समय संबंधी परिणाम संख्याकी संदृष्टि ऐसी हो है

≡ ə ≡ ə।२ ११।१।२ बहुरि यामैं दोय करि समच्छेद कीया हुवा एक चय घटावनेकौं असंख्यात लोक
२ ११।२ ११।१।२

गुणित असंख्यात लोकके आगैं गुणकारनिके ऊपरि जहां एक घाटिकी संदृष्टि थी तहां तीन घाटिकी संदृष्टि कीएं उपांत समय संबंधी परिणाम पुंजकी ऐसी ≡ ə ≡ ə।२ ११।१।२ हो है ऐसैं अपूर्व करणविषैं संदृष्टि कहीं इहां अनुकृष्टि रचना है नाही।
२ ११।२ ११।१।२

बहुरि अनिवृत्तिकरणविषैं परिणाम विशेषके अभावतैं विशेष संदृष्टि है नाही ताका काल संख्यात आवली मात्र है ताकी संदृष्टि ऐसी २ १ जाननी। ऐसैं करणनिविषैं संदृष्टि जाननी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि सूक्ष्मसांपरायका वर्णन विषैं पूर्वस्पर्धक आदिकी संदृष्टि विषैं जघन्य वर्गणाकी संदृष्टि व ऐसी एक गुणहानिविषैं जेते स्पर्धक पाइए तिनके प्रमाणकी ऐसी ९ नाना गुणहानिके प्रमाणकी ना ऐसी अनंतकी ऐसी ख, स्पर्धक शलाकाकौं असंख्यातगुणां अपकर्षण भागहारका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताकी ऐसी ९ एक स्पर्धक विषै वर्गणानिका जेता प्रमाण ताकी संदृष्टि ऐसी ४ ऐसैं जानि तहां अविभाग प्रति-

उ। ८

च्छेदानिकी अपेक्षा नानागुणहानि अर स्पर्धक शलाका करि गुणित जघन्य वर्गमात्र उत्कृष्ट पूर्वस्पर्धकके वर्गकी संदृष्टि ऐसी व ९ ना जघन्य वर्गमात्र जघन्य पूर्वस्पर्धकके वर्गकी ऐसी व याकौं अनंतका भाग दीएं उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धकके की ऐसी व याकौ असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारकरि भाजित स्पर्धक शलाकाका भाग

ख

दीएं जघन्य अपूर्व स्पर्धकके की ऐसी व याकौं अनंतका भाग दीएं उत्कृष्ट वादर कृष्टिके की ऐसी व

ख ९   ख ९ ख

उ ८   उ ८

याकौं वर्गणा शलाकाका अनंतवां भागका भाग दीएं जघन्य वादर कृष्टिकेकी ऐसी व . याकौं अनंत-

ख ९ ख ४

उ ८ ख

का भाग दीएं उत्कृष्ट सूक्ष्मकृष्टिकेकी ऐसी व याकौं वर्गणा शलाकाका अनंतवा भागका भाग

ख ९ ख ४ ख

उ ८ ख

दीएं जघन्य सूक्ष्म कृष्टिके वर्गकी संदृष्टि ऐसी ही है व बहुरि इसही गुणस्थानाधिकारविषै

ख ९ ख ४ ख ४

उ ८ ख ख

गुण श्रेणी निर्जराका कथन विषैं संदृष्टि कहिये है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्धप्रमाण कर्म परमाणू समूहरूप द्रव्य ऐसा स ३ १२ — सो यहु आयु विना सात कर्मनिका है तातैं याकौं सातका भाग दीएं ज्ञानावरणका द्रव्य ऐसा स ३ १२ — /७ याकौं अनंतका भाग देइ एकभाग ऐसा स ३ १२ — /७ ख सर्वघाती केवल ज्ञानावरणकौं देइ अवशेष बहुभाग ऐसा

स ३। १२—। ख १ /७ ख इहां बहु भागविषैं एकघाटि भागहारकरि गुणि संपूर्ण भागहारका भाग दीजिए है। बहुरि इहां गुणकार विषैं एकघाटि था ताकौं महत् प्रमाणविषै न गिण्या अर भाज्य भागहारविषैं अनंतका अपवर्तन कीया तब स ३ १२— /७ ऐसा भया याकौं मति श्रुत अवधि मनःपर्यय ज्ञानावरणके भाग करनेकौं च्यारिका भाग दीएं मतिज्ञानावरणका द्रव्य ऐसा स ३। १२— /७।४ भया याकौं अपकर्षण भागहारकी संदृष्टि प्राकृत नामका आदि अक्षरकरि ऐसी उ, ताका भाग दीएं बहुभाग ऐसा स ३ १२—उ १ /७।४ उ हो है सो जैसे थे तैसैं ही तिष्ठै हैं अवशेष एक भाग ऐसा स ३। १२—१ /७।४ उ याकौं पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प/३ ताका भाग देइ बहुभाग ऐसा

स ३ १२—प १ /७।४।उ प ३ /३ सो उपारितन स्थितिविषैं देना। बहुरि अवशेष एक भाग ऐसा स ३ १२—१ /७।४।उ प /३ ताकौं असंख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोक ऐसा ≡ a ताका भाग देइ बहुभाग ऐसा स a १२–≡ a (१^) / ७ ४ ३।प≡a / a गुणश्रेण्यायाम विषैं देना अवशेष एक भाग ऐसा स a १२–१ / ७ ४ ३ प ≡ a / a उदयावली विषैं देना बहुरि जो यहु उदयावलीविषैं द्रव्य दीया ताकौं इहां आवलीकी संदृष्टि च्यारिका अंक ताका भाग दीएं मध्यधन ऐसा स a १२– / ७ ४ ३ प ≡ a।४ / a बहुरि एक घाटि आवलीका आधा ऐसा ४ (१^) / २ तीहि करि हीन दो गुणहानिका प्रमाण ऐसा १६–४ (१^) / २ इहां गुणहानि आठतैं दूणां दोगुणहानिका प्रमाणकी संदृष्टि सोलह ताके आगैं घाटिकी संदृष्टि जाननी। दो गुणहानिका ही नाम निषेकहार है सो एक घाटि आवलीका आधाकरि हीन दो गुण हानिका भाग तिस मध्य धनकौं दीएं चयका प्रमाण ऐसा–

स a १२– / ७।४।३।प ≡ a।४।१६–४ (१^) / a २ याकौं दोगुणहानि ऐसी १६ ताकरि गुणें प्रथम निषेकका प्रमाण ऐसा

स a १२–१६ / ७।४।३ प≡a।४।१६–४ (१^) / a २ यामैं एक चय घटाएं द्वितीय निषेक ऐसा स a।१२–१६–१ / ७।४ ३ प ≡ a।४।१६–४ (१^) / a २

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां चयकैं अर प्रथम निषेककैं अन्य समानता देखि आगैं गुणकार दो गुणहानि विषैं एक घटावनेकी ऐसी –१ संदृष्टि कीनी हैं ऐसैं ही एक एक चय घटावतैं एक घाटि आवली प्रमाण चय प्रथम निषेकविषैं घटाएं अंत निषेककी संदृष्टि ऐसी

$$\frac{स\ a\ १२-१६-४^{१\frown}}{७।४उप\frac{\equiv a}{a}।४।१६-\frac{४^{१\frown}}{२}}$$

इहां गुणकार दोगुणहानिविषैं एक घाटि आवली प्रमाण घटावनेकी आगैं ऐसी $-४^{१\frown}$ संदृष्टि जाननी । अब गुणश्रेण्यायाम अंतर्मुहूर्तमात्र तीहिविषैं दीया हुआ द्रव्य ऐसा $\frac{स\ a\ १२-\ \equiv\ a^{१\frown}}{७।४।उ।प\frac{\equiv a}{a}}$ ताकौं समय २ असंख्यात गुणाकरि निषेक रचना दिखाइये है सो इहां असंख्यातकी सहनानी च्यारि कीएं पहिले समय शलाका एक १ दूजे समय च्यारि ४ तीजे समय सोला १६ अंत समय चौंसठि ६४ सबकौं जोडैं अंक संदृष्टि ऐसी ८५ ताका भाग गुण श्रेणी द्रव्यकौं दीएं ऐसी $\frac{स\ a\ १२-\ \equiv\ a^{१\frown}}{७\ ४\ उ\ प\frac{\equiv a}{a}\ ८५}$

याकौं अपनी अपनी एक च्यारि सोलह चौंसठि शलाकाकरि गुणें प्रथमादि निषेकनिका प्रमाण ऐसा हो है।

प्रथम निषेक।	द्वितीय निषेक।	तृतीय निषेक।	अंतिम निषेक।
$\frac{स\ a\ १२-\equiv a^{१\frown}}{७।४\ उ\ प\frac{\equiv a}{a}\ ८५}।१$	$\frac{स\ a\ १२-\equiv a^{१\frown}}{७\ ४\ उ\ प\frac{\equiv a}{a}\ ८५}।४$	$\frac{स\ a\ १२-\equiv a^{१\frown}}{७\ ४\ उ\ प\frac{\equiv a}{a}\ ८५}।१६$	$\frac{स\ a\ १२-\equiv a^{१\frown}}{७\ ४\ उ\ प\frac{\equiv a}{a}।८५}।६४$

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां अंतर्मुहूर्तके भेदनिविषैं जघन्य अंतर्मुहूर्त संख्यात आवलीमात्र ऐसा २ ๆ यातैं संख्यात गुणां उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त ऐसा २ ๆ ๆ सो उत्कृष्टमेंस्यों जघन्य घटावनेकौं संख्यात गुणित आवलीकौं समान देखि आगिला

१ —   १ —
१ —
संख्यातविषैं एक घटाएं ऐसा २ ๆ ๆ याके ऊपरि एक जोडें सर्व अंतर्मुहूर्तके भेदनिका प्रमाण ऐसा २ ๆ ๆ हो है। आगें जीव समासाधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है।

पृथ्वी आदिकी प्राकृत नामका आदि अक्षर रूप संदृष्टि लिखि ताके नीचैं पर्याप्त अपर्याप्त वा निर्वृत्ति अपर्याप्त लब्धि अपर्याप्तपनेका यथासंभवपनेतैं दोय वा तीनका अंक लिखें जीव समासनिकी संदृष्टि हो है जैसैं चौदह जीव समासनिकी ऐसी—

सू० ए०	बा० ए०	बि	ति	च	अ पं	सं पं
२	२	२	२	२	२	२

ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि जीवनिकी अवगाहनाविषैं सबतैं जघन्य अवगाहनाकी संदृष्टि ऐसी ६।८।२२

a   १ —
प १९। ८। ६। ८। २२। ๆ। ९
a   a   a

याका अर्थ आगें लिखेंगे। बहुरि उत्कृष्ट अवगाहनाविषै एकेंद्री कमलकैं व्यास एक योजन १ तातैं तिगुणी १।३ परिधिकौं व्यासकी चौथाईका भाग १/४ करि अर वेध हजार योजनकरि गुणें क्षेत्रफल इतना ७५० हो है।

वेंद्री संखकैं व्यास बारह योजन १२ कौं तितने ही करि गुणि १४४ तामैं मुख व्यारि योजन ४ का आधा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२ घटाइ १४२ मुखके आधा का वर्ग ४ जोडि १४६ ताकौं दूणा करि १९२ च्यारिका भाग दीएं ७३ पांच गुणा कीएं ३६५ क्षेत्रफल हो है। तेंद्री रक्तवीछूकैं भुज तीन योजनका चौथा भाग कोटि याका आठवां भाग वेध याका भी आधा इनकौं परस्पर गुणें $\frac{३}{४} । \frac{३}{३२} । \frac{३}{६४}$ क्षेत्रफल $\frac{२७}{८१९२}$ हो है चौंद्री भ्रमरकैं एक योजन भुज पौण योजन कोटि आध योजन वेधकौं परस्पर गुणें $\frac{१}{१} । \frac{३}{४} । \frac{१}{२}$ क्षेत्रफल $\frac{३}{८}$ हो है। पंचेंद्री मच्छकैं भुज हजार योजन कोटि पांचसै योजन वेध अढाईसै योजन इनकौं परस्पर गुणें १००० । ५०० । २५० क्षेत्रफल १२५०००००० हो है ऐसैं अवगाहनाका प्रदेश प्रमाणकरि एकेंद्री वेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्रीकी उत्कृष्ट अवगाहना क्रमतैं च्यारि तीन एक दोय पांचवार संख्यात गुणित घनांगुल प्रमाण ऐसी

ए ६११११ । वि ६१११ । ति ६१ । च ६११ । पं ६११११

बहुरि जघन्य अवगाहना पर्याप्त वेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्री विषै क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकवार संख्यातकरि भाजित घनांगुल प्रमाण ऐसी जाननी।

द्वि $\frac{६}{१११११}$ । त्रि $\frac{६}{१११}$ । च $\frac{६}{११}$ प $\frac{६}{१}$

बहुरि जीवनिकै अवगाहनाके चौंसठि स्थाननिविषैं प्रथम सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना ऐसी हो है–

$\frac{६ । ८ । २२}{a}$ इहां घनांगुलकी संदृष्टि ऐसी ६ ताके आगें गुणकार रूप घन आवलीका असंख्यातवां भाग

१—

$\frac{प}{a}$ $\frac{१९}{a}$ । $\frac{८}{a}$ । ९ । ८ । २२ । १ । १

बाईस बारकी ऐसी $\frac{८}{a}$ । २२ अर ताके नीचैं भागहार रूप पल्यका असंख्यातवां भाग उगणीसवारकी ऐसी

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प ११ घनावलीका असंख्यातवां भाग नव बारकी ऐसी ८ । ९ एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भाग बा-
a a

१—
ईसबारकी ऐसी ८ । २२ संख्यात नव बारकी ऐसी १ृ । ९ संदृष्टि जाननी । याकौं आवलीका असंख्यातवां
a

भाग ऐसा ८ ताकरि गुणैं सूक्ष्म अपर्याप्त वात कायिककी जघन्य अवगाहना होइ सो इस गुणकारका अर भा-
a

गहारविषैं एक बार आवलीका असंख्यातवां भागका अपवर्तन कीएं भागहारकेविषैं नव बारकी जायगा आठ बार आवलीका असंख्यातवां भाग लिखैं सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकायिककी जघन्य अवगाहनाकी संदृष्टि ऐसी हो है । ६ । ८ । २२
e

१—
प १९ । ८ । ८ । ८ । २२ । १ृ । ९
a a a

ऐसैं ही सूक्ष्म अपर्याप्त तेज अप पृथ्वीविषैं ऐसा ही गुणकार करि अपवर्तन कीएं भागहार विषैं आवलीका असंख्यातवां भागकौं सात छह पांच बार लिखैं तिनकी संदृष्टि हो है । बहुरि यातैं बादर अपर्याप्त वात तेज अप पृथ्वी निगोद अर प्रतिष्ठित वनस्पाति अप्रतिष्ठित वनस्पती बेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्रीकी जघन्य अवगाहनाविषैं क्रमतैं पल्यका असंख्यातवां भागका गुणकार है । ताकरि उगणीसबार पल्यका असंख्यातवां भागमात्र गुणकार विषैं एक एक बार अपवर्तन कीएं उगणीस की जायगा एक एक घाटि करि पंचेंद्री विषैं आठ बार पल्य का असंख्यातवां भागका भागहार हो है । बहुरि यातैं सूक्ष्म निगोद पर्याप्तका जघन्य अवगाहना आवलीका असंख्यातवां भागगुणा है । सो इहां भी ऐसा भागहारकरि अपवर्तन करना बहुरि यातैं सूक्ष्म निगोदअपर्याप्तका उत्कृष्ट अवगाह ४८

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष अधिक है सो विशेषका प्रमाण पूर्व स्थानकौं आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र है सो इहां पूर्व स्थानकौं एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भागका भाग करि गुणें आवलीका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागका मिलावना होइ सो इनकरि पूर्वै एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भागका बाईस बार भागहार अर आवलीका असंख्यातवां भागका बाईस बार गुणकार था तिनमें एक बार अपवर्तन कीएं इकईसबार करना। ऐसैं ही आगें भी पूर्वस्थान जिस जिस गुणकार करि गुणित होइ तिस तिस गुणकार करि तिस तिस प्रमाण भागहार विषैं एक एक बार घटावना अर विशेष अधिक होइ तहां आवलीका असंख्यातवां भागका गुणकार विषैं अर एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भागका भागहार विषैं एक एक बार घटावना। घटावतैं जेती बार था तेती बार पूर्ण भएं सो भागहार वा गुणकार न लिखना सो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तका उत्कृष्ट अवगाहतैं सूक्ष्म निगोद पर्याप्तका उत्कृष्ट अवगाह विशेष अधिक है। यातैं सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तका जघन्य अवगाह आवलीका असंख्यातवां भाग गुणा है। यातैं सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तका उत्कृष्ट विशेष अधिक है। यातैं सूक्ष्म वायु पर्याप्तका अवगाह विशेष अधिक है। ऐसैं ही तेज अप पृथ्वी इन पर्याप्तके एक एक जघन्य अवगाह पूर्व स्थानतैं आवलीके असंख्यातवां भाग गुणे अर इनके अपर्याप्त वा पर्याप्तके दोइ दोइ उत्कृष्ट अवगाह विशेष अधिक जानने। ऐसैं आठ स्थान भएं सूक्ष्म पृथ्वीका उत्कृष्ट अवगाहतैं बादर पर्याप्त वायुका जघन्य अवगाह पल्यका असंख्यातवां भाग गुणा है। यातैं बादर अपर्याप्त वायुका उत्कृष्ट अवगाह विशेष अधिक है। यातैं बादर पर्याप्त वायुका उत्कृष्ट अवगाह विशेष अधिक है ऐसैं हीं बादर तेज अप पृथ्वी निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येक इनका पर्याप्तका जघन्यका एक स्थान पल्यका असंख्यातवां भाग गुणा अर इनके पर्याप्त अपर्याप्तके उत्कृष्ट दोय दोय स्थान विशेष अधिक जानने। बहुरि तातैं पर्याप्त अप्रतिष्ठित प्रत्येक बेंद्री इन दोऊनिका जघन्य अवगाह क्रमतैं पल्यके असंख्यातवे भाग गुणें हैं। बहुरि तातैं पर्याप्त तेंद्री चौंद्री पंचेंद्री पर्याप्तनिके जघन्य अवगाह अर तेंद्री चौंद्री बेंद्री अप्रतिष्ठित प्रत्येक पंचेंद्री अपर्याप्तनिके उत्कृष्ट अवगाह क्रमतैं संख्यात गुणे हैं बहुरि यातैं तेंद्री पर्याप्तका उत्कृष्ट अवगाह संख्यात गुणा है सो गुणकारका प्रमाण यहां भागहारतैं बहुत है। तातैं संख्यातघनांगुल प्रमाण जानना। बहुरि तातैं चौंद्री बेंद्री अप्रतिष्ठित प्रत्येक पंचेंद्री इनके उत्कृष्ट अवगाह क्रमतैं संख्यातगुणे जानने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तका जघन्य अवगाह स्थानतैं एक एक प्रदेश वृद्धिका अनुक्रम करि सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तका जघन्य अवगाह स्थान पर्यंत चतुःस्थानपतित वृद्धि संभवै है तहां संदृष्टि कहिए है— तहां असंख्यात भाग वृद्धि विषैं सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तका जघन्य अवगाह ऐसा ६।८।२२ ताकी

प ११।८।९।८।२२।७।९
(२ २ २; १—)

लघु संदृष्टि कीजिए तब जघन्यका आदि अक्षर रूप संदृष्टि ऐसी ज यामैं एक जोडें संदृष्टि ऐसी ज (१—) इहां एक आधिककी संदृष्टि ऊपरि जाननी। ऐसैं ही दोय आदि आधिककी ऐसी ज ज ज ज (२—३—४—५) इत्यादि मध्य भेदीनके ग्रहण निमित्त बीचि बिंदी लिखि अन्तविषैं तिस जघन्यकौं जघन्य परीतासंख्यातकी संदृष्टि ऐसी १६ ताका भाग दीएं ऐसा ज/१६ याकौं जघन्यके ऊपरि अधिक कीएं ऐसा हो है ज १६/ज बहुरि इहां आदि ऐसा ज अन्त ऐसा ज १६/ज अंत विषैं आदि घटाएं ऐसा ज/१६ याकौं वृद्धि प्रमाण एकका भाग दीएं ऐसा ज/१६।१ यामैं एक जोडें ऐसा ज/१६।१ (१—) सर्व असंख्यात भाग वृद्धिके स्थाननिका प्रमाण हो है। बहुरि असंख्यात भाग वृद्धिका अन्त स्थानविषैं एक जोडें अवक्तव्य भाग वृद्धिका आदि स्थान ऐसा ज १६/ज (१——) बहुरि एक एक प्रदेश वृद्धि करि उत्कृष्ट संख्यातकी संदृष्टि ऐसी १५ ताका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जघन्यकौं देइ एक घटाएं ऐसा $\overset{१\frown}{\underset{१५}{ज}}$ ताकौं जघन्यविषैं जोडें अन्त स्थान ऐसा $\overset{१\frown}{\underset{\underset{ज}{१५}}{ज}}$ तहां समच्छेदविधानकरि वा

ऋणका धनकौं राशिका ऋण करि अन्तविषैं आदि घटाएं ऐसा $\overset{२\frown}{\underset{१६।१५}{ज}}$ इहां आदि अर अन्त विषैं जघन्यकी समा-

नता देखि दूर कीएं अवशेष अधिक दोऊ राशि ऐसैं $\overset{१—}{\underset{१६}{ज}}$ $\overset{१\frown}{\underset{१५}{ज}}$ इनके ऊपरि अधिक वा हीन है। तिनकौं जुदे

राखि दोऊनिका समच्छेद कीएं दोऊ राशि ऐसैं $\frac{ज।१५}{१६।१५}$ $\frac{ज।१६}{१६।१५}$ इहां दोऊनिकैं अन्य समानता देखि धन राशि

का सोलहका गुणकारविषैं ऋण राशिका पंद्रहका गुणकार घटाएं ऐसा $\frac{ज\ १}{१६।१५}$ बहुरि याके ऊपरि एक तौ ऋणका

धन अर एक धन राशिका ऋण ए दोय घटाएं ऐसी $\overset{१\frown}{\underset{१६।१५}{ज}}$ संदृष्टि सिद्ध हो है। यामैं एक जोडें अवक्तव्य भाग

वृद्धिके सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा हो है $\overset{१\frown}{\underset{१६\ १५}{ज}}$ बहुरि अवक्तव्यभागवृद्धिका अन्त स्थानविषैं एक जोडें संख्यात

भाग वृद्धिका आदि स्थान ऐसा $\underset{\underset{ज}{१५}}{ज}$ अर जघन्यका आधा ऐसा $\frac{ज}{२}$ ताकौं जघन्य विषैं जोडें अन्त स्थान ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

$\frac{ज}{२\,ज}$ तहां पूर्वोक्तप्रकार समच्छेद करि अन्तविषै आदि घटाएं ऐसा $\frac{ज\,१५\times२}{२\,१५}$ इहां उत्कृष्ट संख्यातकी संदृष्टि पंद्रहके आगें दोय घाटिकी संदृष्टि ऐसी जाननी × २ । याकौं एकका भाग देइ तामें एक जोड़ें संख्यातभाग वृद्धिके सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा $\frac{ज\,\overline{१५+२}^{१}}{२।१५}$ हो है बहुरि संख्यातभागवृद्धिका अंतस्थानविषै एक जोडें अवक्तव्यभागवृद्धिका आदिस्थान ऐसा $\frac{ज^{१-}}{२\,ज}$ बहुरि एक घाटि जघन्य अवगाहना प्रमाण ऐसा $ज^{१\frown}$ ताकौं जघन्यविषै जोडें अंतस्थान ऐसा $\frac{ज^{१\frown}}{ज}$ इहां पूर्वोक्त प्रकार समच्छेद विधानकरि वा ऋणका धनकौं राशिका ऋणकरि अंतविषै आदि घटाइए अर तामें एक जोडिए तब सर्व अवक्तव्य भागवृद्धिके स्थान ऐसे $\frac{ज^{१\frown}}{२}$ हो हैं । बहुरि अवक्तव्य भाग वृद्धिका अंत स्थानविषै एक जोडें संख्यात गुणवृद्धिका आदि स्थान ऐसा ज २ इहां जघन्यकौं दोयका गुणकार जानना । बहुरि प्रदेश वृद्धिका क्रमकरि उत्कृष्ट असंख्यात ऐसा १५ ताकरि जघन्यकौं गुणें अंतस्थान ऐसा ज १५ इहां अंतविषै आदि घटावनेकौं दोऊ जायगा जघन्यका समानपना देखि पंद्रहके आगें दोय घाटिकी संदृष्टि करनी ज १५ × २ यामें एक जोडें सर्व संख्यात गुण वृद्धिस्थाननिका प्रमाण ऐसा ज $\overline{१५\times२}^{१}$ हो है । बहुरि संख्यात गुण वृद्धिका अंत स्थानविषै एक जोडें अवक्तव्य गुणवृद्धिका आदि स्थान ऐसा ज $१५^{१-}$ अर एक एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रदेश वृद्धिका क्रमकरि जघन्य परीतासंख्यात ऐसा १६ ताकरि जघन्यकौं गुणि एक घटाएं अंतस्थान ऐसा ज १६ इहां अंतविषैं आदि घटाइ एक मिलाएं अवक्तव्य भाग वृद्धिके सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा ज हो है बहुरि अवक्तव्य भाग वृद्धिका अंतस्थानविषैं एक जोडें असंख्यात गुण वृद्धिका आदि स्थान ऐसा ज १६ बहुरि प्रदेश वृद्धिका क्रमकरि आवलीका असंख्यातवां भागकरि जघन्यकौं गुणें अंत स्थान ऐसा ज ८ अंत विषैं आदि घटाइ एक मिलाएं असंख्यात गुणवृद्धिके सर्वस्थाननिका प्रमाण ऐसा हो है ज ८–१६ इहां जघन्यका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग तीहिविषैं आगैं जघन्य परीता संख्यात घटावनेकी संदृष्टि जाननी ऐसैं आवलीका असंख्यातवां भागकरि सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तका जघन्य स्थानकौं गुणें सूक्ष्म लब्धि अपर्याप्त वायुका जघन्य अवगाह स्थान ऐसा ६ ८ २२ ८ हो है। बहुरि इहां तिस जघन्य स्थानकौं

प१९।८।९।८।२२।७।६

इस उत्कृष्ट स्थानमैंस्यों घटावना सो अन्य सर्व समान देखि आगे लिखा जु आवलीका असंख्यातवां भागका गुणकार तामैं एक घटाईए बहुरि जो भया तामैं ऊपरि एक जोडिए तब जघन्य सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तका जघन्य स्थानतैं लगाय सूक्ष्म वायु अपर्याप्तका जघन्य स्थानपर्यंत सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ ——————
६ ८ २२ ८ (१ —) ... ऐसैं ही अन्यविषैं जानने। बहुरि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तका जघन्यस्थानतैं लगाय

प । ११ । ८ । १ । ८ । २२ । ७। । ९

उत्कृष्ट स्थान पर्यंत केते स्थान पाइए तिनकी संख्या ल्यावनेकौं जघन्य स्थान ऐसा ६ ८ २२

प ११ । ८ । ९ । ८ । २२ । ७। । ९

याकौं आवलीका असंख्यातवां भाग च्यारि वार ८ । ४ अर पल्यका असंख्यातवां भाग ग्यारह वार प ११

अर आवलीका असंख्यातवां भाग अर एक अधिक आवलीका असंख्यातवा भाग इन करि गुणें अर आवली-का असंख्यातवां भागका भाग देइ अपवर्तन कीएं ताका उत्कृष्ट स्थान ऐसा

६ ८ २२ ८ ४ प ११ ८ ८ (१ —) बहुरि इस उत्कृष्ट स्थानमैं जघन्य स्थान घटावना सो दोऊनिके अन्य हार

प ११ ८ १ ८ २२ ७। ९ ८

तौ समान है तातैं आवलीका असंख्यातवां भाग करि समच्छेद कीएं घटावने योग्य ऋण राशि ऐसा हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ ८ २२ ८ अर घनराशिविषैं आवलीका असंख्यातवां भागका गुणकार आगैं था ताकौं बाईसके
a a

१—
प ११ ८ १ ८। २२। ७ ९ ८
a a a a

१—
आगें लिखें धन राशि ऐसा भया ६ ८ २२ ८ ८ ४ प ११ ८ इहां धन राशि अर ऋणराशिविषैं
a a a a a

१
प ११ ८ १ ८ २२ ७ ९ ८
a a a a

१—
ऐसा ६ ८ २२ ८ समान देखि आवलीका असंख्यातवां भाग च्यारि वार आदि अगले ऐसे ८ ४ प ११ ८।
a a a a a

गुणकारनिके ऊपरि एक घटावनेकी संदृष्टि कीएं आदि विषै अंत घटावना भया तामैं एक जोडें सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकी अवगाहनाके सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा हो है।—

१———————————
१———————
१—
६ ८ २२ ८ ८ ४ प ११ ८ इन विषै दोय घटाएं सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकी मध्य अवगाहनाके भेदनिका
a a a a a

१—
प १९ ८ ९ ८ २२ ७ ९ ८
a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण हो है १ ८ २२ ८ ८ ४ प ११ ८ a a a a a १ प १९ ८ १ ८ २२ ७ १ ८ a a a a इहां दोय घटावनेकौं एक अधिककी जायगा एक घाटिकी संदृष्टि जाननी ऐसैं ही अन्यत्र जाननी । अथ पर्याप्ति अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है—

तहां प्रथम लौकिक गणितका कथन है। तहां संदृष्टि सामान्य वर्णन विषैं पूर्वें जैसैं कहीं तैंसै जाननी। तहां संख्या प्रमाण विषैं जघन्य संख्यातादिककी संदृष्टि सामान्योक्त जाननी। बहुरि एकनव आदि अंक प्रमाण अनवस्था आदि कुंडनिविषैं रोम भरिए है तिनकी संदृष्टि ऐसी १९ = बहुरि जघन्य असंख्यात प्रमाण शलाका विरलन देय राशि करिए है तहां संदृष्टि ऐसी श ४ वि ४ दे ४ शलाका राशिविषैं एक घटाएं ऐसी ४–१ दोय घटाएं ऐसी ४–२ इत्यादि। बहुरि दूसरी बार शलाका विरलन देय राशि करिए है ताकी संदृष्टि ऐसी श a वि a दे a शलाका राशिविषैं एक घटाएं ऐसी a –१ दोय घटाएं ऐसी a–२ इत्यादि। बहुरि तीसरीबार शलाकादिककी भी ऐसैं ही संदृष्टि जाननी। ऐसैं करि तहां छह राशि मिलाइए तिनकी संदृष्टि धर्म अधर्म एक जीव लोकाकाशके प्रदेश लोक प्रमाण तिनकी जुदी जुदी संदृष्टि ऐसी ≡ इनतैं असंख्यात गुणे अप्रतिष्ठित प्रत्येकनिकी ऐसी ≡ a इनतैं असंख्यात लोक गुणे प्रतिष्ठित प्रत्येकनिकी ऐसी ≡ a ≡ a बहुरि शलाकात्रय निष्ठापन करि बहुरि चारि राशि मिलाइए है तहां संख्यात पल्य प्रमाण कल्प प्रमाण कल्प कालकी ऐसी प ७ असंख्यात लोक मात्र स्थितिबंध प्रत्ययनिकी ऐसी ≡ a इनतैं असंख्यात लोक गुणे अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थानानिकी ऐसी ≡ a ≡ a इनतैं असंख्यात लोक गुणे योगनिके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेदनिकी ऐसी जाननी ≡ a ≡ a ≡ a।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि अनन्तका कथनविषैं पहली बार मिलाईं छह राशि तिनविषैं सिद्ध राशिकी ऐसी ३ निगोद राशिकी ऐसी १३ ≡ इहां पृथ्वी आदि अर प्रत्येक वनस्पती अर त्रस इनके घटावनेकी संसारी राशिके आगें ≡ ऐसी संदृष्टि जाननी। वनस्पति राशिकी ऐसी १३ = इहां पृथ्वी आदि अर त्रस इन दोय राशि घटावनेकी ही संदृष्टि जाननी। पुद्गल राशिकी ऐसी १६ ख काल समय राशिकी ऐसी १६ ख ख आकाश प्रदेश राशिकी ऐसी १६ ख ख ख बहुरि दूसरी बार मिलाएं धर्म अधर्मके अगुरुलघुके अविभाग प्रतिच्छेद तिनकी ऐसी ख ख संदृष्टि जाननी।

बहुरि द्विरूप वर्गधारा आदि तीन धारानिका कथन विषैं संदृष्टि स्थाननिकी सामान्य कथनोक्त जाननी। मध्यके स्थाननिके अर्थ बीचि बिंदीकी संदृष्टि जाननी। आगिला स्थान रूप जो राशि ताकी वर्ग शलाकाकी संदृष्टि ऐसी व जाननी अर्धच्छेद राशिकी ऐसी छे जाननी प्रथम मूलकी ऐसी मू १ जाननी घनकी संदृष्टि तीन बार लिखनेतैं जाननी।

द्विरूप वर्गधाराके स्थाननिकी संदृष्टि ॥

२	४	१६	२५६	६५=	४२=	१८=	०	व	०	मू १	जघन्यपरीता संख्यात ॥ १६ ॥	०	आवली ॥ २ ॥	प्रतरावली ॥ ४ ॥	०	व	०	छे
०	मू १	पल्य प	०	सूच्यंगुल ॥ २ ॥	प्रतरांगुल ॥ ४ ॥	०	जगच्छ्रेणी घनमूल	०	व	०	छे	०	मू १	जघन्यपरीतानंत २५६	०	जघन्ययुक्तानंत जु जु अ		
जघन्य अनंतानंत जु जु अ व	०	व	०	छे	०	मू १	जीवराशि १६	०	पुद्गलराशि १६ । ख	०	कालराशि १६ । ख ख	०	श्रेणी आकाश १६ । ख ख ख	प्रतराकाश १६ । ख ख ख				
०	धर्म अधर्मके अगुरुलघु अविभाग प्रतिच्छेद । ख ख	०	एक जीवके अगुरुलघु अविभाग प्रतिच्छेद । ख ख ख	०	जघन्यज्ञान ख ख ख ख	०	जघन्यक्षायिकलब्धि ख ख ख ख ख											
०	व	०	छे	०	केवलज्ञानके अष्टममूलादि मू ॥ ८ ॥ मू ॥ ७ ॥ मू ॥ ६ ॥ मू ॥ ५ ॥ मू ॥ ४ ॥ मू ॥ ३ ॥ मू ॥ २ ॥ म ॥ १ ॥	केवलज्ञान												

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्विरूपघनधाराके स्थाननिकी संदृष्टि॥

॥८॥	॥६४॥	॥४०९६॥	२५६ = ॥ ६५ = ॥	॥ ६५ = ॥ ४२ = ॥	॥ ४२ = ॥ १८ = ॥	आवलीघन ॥ ८ ॥	प्रतरावलीघन ॥ ६४ ॥	०				
व व व	०	छे छे छे	०	मू १ मू १ मू १	पल्यघन प प प	०	घनांगुल	०	जगच्छ्रेणि	जगत्प्रतर =	०	व व व
०	छे छे छे	मू १ मू १ मू १	जीवराशि घन १६ । १६ । १६ ।	व व व	०	छे छे छे	०	मू १ मू १ मू १	सर्वआकाश	०	केवलज्ञानके द्वितीयमूलघन मू । २ । मू । २ । मू । २ ।	

द्विरूपघनाघन धाराविषै स्थाननिकी संदृष्टि।

।८।८।८।	०	लोकाकाश ≡	०	अग्निकायिक गुणकार शलाका	०	व	०	छे	०	मू १ ।	अग्निकायिक राशि ।	०	व	०	छे	
०	मू १ ।	अग्निकायिक स्थिति ।	०	व	०	छे	०	मू १ ।	अवधि विषय उत्कृष्ट क्षेत्र ।	०	व	०	छे	०	मू १ ।	स्थितिबंधाध्यवसाय स्थान ।
०	व	०	छे	०	मू १ ।	अनुभागबंधाध्यवसाय स्थान ।	०	व	०	छे	०	मू १ ।	निगोद शरीर उत्कृष्ट संख्या एतावत् ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a			
०	व	०	छे	०	मू १ ।	निगोदकाय स्थिति ।	०	व	०	छे	०	मू १ ।	उत्कृष्टयोगस्थान अविभाग प्रतिछेद	०	केवलज्ञान चतुर्थमूल घनाघन मू ४६	

बहुरि उपमा प्रमाणविषैं गर्तविषैं च्यारि एक आदि अंक प्रमाण राम भरें तिनकी संदृष्टि ऐसी ४१ = बहुरि दोय वार संख्यातगुणित आवलीमात्र व्यवहारपल्यकी ऐसी २ ७ ७ बहुरि उद्धार पल्यकी संदृष्टि ऐसी ३ वि छे छे ३ १ ३ । २५ को २ कैसें सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेणिके अर्ध च्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी वि छे छे ३। याके ऊपरि तीन घाटिकी संदृष्टि कीएं रज्जुके अर्धच्छेदानि की संदृष्टि ऐसी वि छे छे ३ यामैं संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद घटावनेकौं इहां विरलनराशि गुण्यके आगै सूच्यंगुलके अर्धच्छेदानितैं तिगुणा गुणकार देखि अपनयन त्रैराशिक करि गुण्य विरलन राशिविषैं साधिक तीसरा भाग घटाएं समस्त द्वीप समुद्रानिकी संख्याकी संदृष्टि ऐसी वि छे छे ३ इहां विरलन राशितैं लगाय एकका १/३) तीसरा भाग पर्यंत घटावनेकी ऐसी) संदृष्टि जानना बहुरि याकौं पचीस कोडाकोडी २५ को २ का भाग दीएं उद्धार पल्यकी संदृष्टि ऐसी वि छे छे ३ सिद्ध हो है। बहुरि अद्धापल्य आदिकी तथा तिनके वर्ग शलाका वा अ १/३) २५ को २ र्धच्छेद राशिकी संदृष्टि सामान्योक्त जाननी।

नाम	पल्य	सागर	सूच्यंगुल	प्रतरांगुल	घनांगुल	जगच्छ्रेणि	जगत्प्रतर	लोक
प्रमाणकी	प	सा	२	४	६	—	=	≡
अर्द्धछेदकी	छे	? छे	छे छे	छे छे २	छे छे । ३	छे छे छे । ३	वि छे छे । ६	वि छे छे । ९
वर्गशलाकाकी	व	०	व २	१— व २	व २	व १६ । २ व २	१— व १६ । २ व २	व १६ । २ व २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां जगच्छ्रेणीकी वर्ग शलाकाका प्रमाण विषै इतना विशेष जानना जो अद्धा पल्यका अर्धच्छेद राशिके वर्ग मूल दूणा जघन्य परीतासंख्यातका अर्धच्छेद प्रमाण क्रमतैं करने तहां पल्यका अर्धच्छेद राशिके अर्धच्छेद पल्य की वर्गशलाका मात्र तिनकी संदृष्टि ऐसी छे व बहुरि पल्यका अर्धच्छेद राशिका प्रथम मूलके अर्धच्छेद पल्यकी वर्गशलाकातैं आधे ताकी संदृष्टि ऐसी मू १ व/२ ऐसैं आधे आधे होतैं उपांत वर्गमूलके अर्धच्छेद पल्यकी वर्ग शलाकाकौं जघन्य परीतासंख्यातका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितने जानने। अंत मूलके अर्धच्छेद इनतैं आधे जानने।

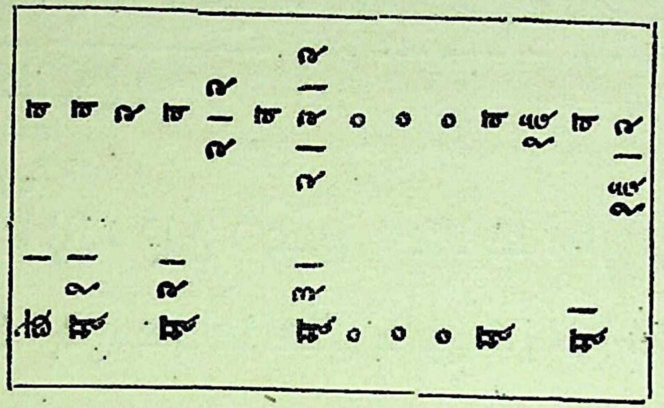

सो अंतमूलके अर्धच्छेद प्रमाण दूवानिकौं परस्पर गुणें जो पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भागमात्र प्रमाण होइ सोई जगच्छ्रेणि विषैं विरलन राशि है। इस विरलन राशिके अर्धच्छेद दूणा जघन्य परीतासंख्यात करि भाजित पल्यकी वर्ग शलाकामात्र तिनकौं देय राशि घनांगुल ताकी वर्गशलाकाविषैं जोडें जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका हो है तातैं जगच्छ्रेणिकी वर्गशलाकाकी संदृष्टि पूर्वोक्त जाननी। अन्य भी मानका कथन विषैं यथा संभव संदृष्टि जाननी। बहुरि पर्याप्ति प्ररूपणविषैं तिनका काल ऐसा जानना।

आहार पर्याप्तिका काल स्तोक अन्तर्मुहूर्त ऐसा २ ७ याकौं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंकका भाग दीएं एक ९०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग ऐसा $\frac{२\ ७}{४}$ इनि दोऊनिकौं २ ७ । $\frac{२\ ७}{४}$ मिलाएं शरीर पर्याप्तिका काल ऐसा $\frac{२\ ७ । ५}{४}$ इहां समच्छेदकरि एक अधिक भागहारका प्रमाणकरि गुणैं सम्पूर्ण भागहारका भाग दीएं एक भागका मिलावना जानना बहुरि तिस एक भागका संख्यातवां भाग ऐसा $\frac{२\ ७}{४ । ४}$ अर पूर्वें दोय ऐसा $\frac{२\ ७}{४}$ । २ ७ इन तीनोंकौं समच्छेदकरि जोडें इंद्रिय पर्याप्तिका काल ऐसा $\frac{२\ ७\ ५ । ५}{४ । ४}$ ऐसैं ही मनःपर्याप्ति पर्यंत जानना। तिनिका यन्त्र—

					जोड २ ७ ५ ५ ५ ५ ५ / ४।४।४।४।४
				जोड २ ७ ५ ५ ५ ५ / ४।४।४।४	२ ७ / ४।४।४।४
			जोड २ ७ ५ ५ ५ / ४।४।४	२ ७ / ४।४।४।४	२ ७ / ४।४।४।४
		जोड २ ७ ५।५ / ४।४	२ ७ / ४।४।४	२ ७ / ४।४।४	२ ७ / ४।४।४
	जोड २ ७ ५ / ४	२ ७ / ४।४	२ ७ / ४।४	२ ७ / ४।४	२ ७ / ४।४
जोड २ ७	२ ७ / ४	२ ७ / ४	२ ७ / ४	२ ७ / ४	२ ७ / ४
२ ७	२ ७	२ ७	२ ७	२ ७	२ ७
आहार	शरीर	इंद्रिय	उच्छ्वास	भाषा	मन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि त्रैराशिकका कथन विषैं प्रमाण फल इच्छाकी संदृष्टि सर्वत्र आदि अक्षर रूप जाननी। प्र। फ। इ। लब्ध। तिनका जैसा जहां प्रमाण होइ तैसा तहां जानना। बहुरि प्राण अधिकार विषैं विशेष संदृष्टि है नाहीं। बहुरि संज्ञा अधिकार विषैं विशेष संदृष्टि है नाहीं। बहुरि मार्गणा महाअधिकारका गति अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है—

जहां जीवनिकी संख्याका वर्णन है तहां सामान्य सर्व नारकीनिके प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी – २ मू इहां जगच्छ्रेणिकी संदृष्टि ऐसी – ताके आगै घनांगुलका द्वितीय वर्गमूलके गुणकारकी संदृष्टि ऐसी २ मू जाननी।

बहुरि तहां द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं नारकीनिके प्रमाणकी संख्या क्रमतैं ऐसी १२̄। १०̄। ८̄। ६̄। ३̄। २̄ इहां जगच्छ्रेणीकी संदृष्टि ऐसी—ताके नीचैं इस जगच्छ्रेणिहीका बारहवां दसवां आठवां छठा तीसरा दूसरा वर्ग मूल का भागहारकी संदृष्टि जाननी। बहुरि इन छहोनिका जोड़की संदृष्टि ऐसी – | १/१२ इहां जगच्छ्रेणि – कौं एक करि गुणि याका ही बारह्वां वर्ग मूलका भागहार – १/१२ देइ औरनिके मिलावनेकौं ताके ऊपरि साधिककी ऐसी । संदृष्टि जाननी। बहुरि याकौं सामान्य नारकीनिका प्रमाणमैं घटाएं घर्मा नारकीनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी –२– ० | १/१२ इहां सामान्य नारकीनिका प्रमाण ऐसा –२ ताके आगैं गुणकार विषैं घाटिकी संदृष्टि संयुक्त छहौ नारकीनिका प्रमाणकी संदृष्टि जाननी। बहुरि इहां अपनयन त्रैराशिकविषैं प्रमाण राशि जगच्छ्रेणि प्र – फलराशि १ इच्छा राशी छहौ पृथ्वीका जोड़ – | १/१२ लब्धराशि साधिक बारह्वां वर्ग मूल मात्र जगच्छ्रेणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का भाग १/१२ गुणकार ऐसे २ विषैं घाटि जानना। बहुरि तिर्यंच गति विषैं सामान्य तिर्यंचनिकी संदृष्टि ऐसी १३ ≡ इहां संसारी राशि १३ के आगैं नारक मनुष्य देव इन तीन राशि घटावनेकी ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी। बहुरि पंचेंद्रिय तिर्यंच राशिकी संदृष्टि ऐसी = ५८३६ / ४।४।६५६१ a≡ इहां आगै इंद्रियमार्गणाविषैं पंचेंद्रिय जीवनिका प्रमाणकी संदृष्टि कहैंगे तामैं तीन गतिके जीव घटावनेकी आगैं ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी। बहुरि पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच राशिकी संदृष्टि ऐसी = ५८६४ / ४।४।६५६१ ५≡ इहां भी आगैं पर्याप्त पंचेंद्रिय राशिकी संदृष्टि लिखेंगे तामैं तीन गतिके जीव घटावनेकी ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी बहुरि योनिमत् तिर्यंच राशिकी संदृष्टि ऐसी = / ४।६५ =।८१।४।१० इहां छसै योजनका वर्ग ताका प्रतरांगुल कीएं पण्णट्ठीकौं इक्यासी वा च्यारि करि गुणें आगैं दश विंदी दीजिए इतना हो है। ताका भाग जगत्प्रतरकौं जानना। इहां ऊपरि जगत्प्रतरकी संदृष्टि ऐसी = ताके नीचैं प्रतरांगुलकी ऐसी ४ पण्णट्ठीकी ऐसी ६५ = आगैं इक्यासी वा चारिका गुणकारकी ऐसी ८१। ४ आगैं दश विंदिनिकी ऐसी संदृष्टि १० जाननी। बहुरि अपर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच राशिकी संदृष्टि ऐसी ० इहां भी आगैं पर्याप्त पंचेंद्रियकी संदृष्टि लिखेंगे तामैं ऋण राशि वा धनराशिविषैं तीन गतिके जीव घ-

५८६४।५ –
= ५८३६ a≡
४।४।६५६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टावनेकी ऐसी = संदृष्टि जाननी। बहुरि मनुष्य गति विषै सामान्य मनुष्य राशिकी संदृष्टि ऐसी १।३ इहां जगच्छ्रेणि – के नीचैं सूच्यंगुलका प्रथम तृतीय वर्ग मूल ऐसा १।३ ताका भाग जानना अर ऊपरि लब्धराशि विषैं एक घाटि १ – जानना। बहुरि पर्याप्त मनुष्य राशिकी संदृष्टि ऐसी ४२ = ४२ = ४२ = यहु बादालका घन जानना। बहुरि याकौं तीनकरि गुणि चारिका भाग दीएं योनिमत् मनुष्यराशिकी संदृष्टि ऐसी ४२ = ४२ = ४२ = ३ बहुरि अपर्याप्त मनुष्य राशिकी संदृष्टि ऐसी १।३–१ इहां सामन्य मनुष्यराशि ४ के आगें संख्यात पर्याप्त मनुष्य घटावनेकी ऐसी –१ संदृष्टि जाननी।

बहुरि देवगतिविषै व्यंतर राशिकी संदृष्टि ऐसी = ४।६५=८१।१० इहां जगत्प्रतरकौं = तीनसै योजनका वर्गकी भई जे इक्यासी गुणित ८१ पण्णट्ठी ६५ = के आगें दश बिंदी १० दीएं जो प्रमाण होइ तितनी प्रतरांगुल ४ ताका भाग जानना बहुरि ज्योतिष्क राशिकी संदृष्टि ऐसी ४।६५ = इहां जगत्प्रतरकौं पण्णट्ठी ६५ = प्रमाण प्रतरांगुल ४ का भाग जानना। बहुरि भवनवासी राशिकी संदृष्टि ऐसी – १ इहां जगच्छ्रेणिकौं – घनांगुलका प्रथम मूल १ का गुणकार जानना। बहुरि सौधर्म युगलविषैं देवराशिकी संदृष्टि ऐसी –३ इहां जगच्छ्रेणि – कौं घनांगुलका तृतीय वर्गमूल ३ का गुणकार जानना बहुरि सनत्कुमार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माहेंद्र युगल आदि पांच युगलविषैं देवराशिकी क्रमतैं संदृष्टि ऐसी ११।९।७।५।४ इहां जगच्छ्रेणि—कौं क्रमतैं इस ही जगच्छ्रेणिका ग्यारहवां नवमां सातवां पांचमां चौथा वर्गमूलका भाग जानना। बहुरि आनतादि दोय युगल अर अधस्तन मध्यम उपरिम ग्रैवेयिक अर अनुदिश विमान अनुत्तर विमान इन सात स्थाननिविषैं प्रत्येक पल्यके असंख्यातवे भाग मात्र देव हैं तिनकी संदृष्टि ऐसी $\frac{प}{a}$ इहां कल्पवासीनिके प्रमाणकी रचना ऐसी जाननी

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	। ११	। ९	। ७	। ५	। ४	३ ।
५	४	३	३	३	$\frac{२}{२}$	$\frac{२}{२}$	$\frac{०}{२}$	$\frac{०}{२}$	$\frac{०}{२}$	$\frac{०}{२}$	$\frac{२}{२}$	$\frac{२}{२}$

इहां पहिला दूसरा सातवां आठवां युगलविषैं दोय दोय इंद्र संबंधी देवनिका प्रमाण है तहां दोय एकानिकी संदृष्टि तीसरा चौथा पांचवां युगलविषैं एक एक इंद्र है तहां एक एका एक विंदीकी संदृष्टि जाननी। बहुरि तीन तीन अधः मध्य उपरि ग्रैवेयिकनिविषैं ऐसी ३ नव अनुदिशनिविषैं ऐसी ९ पंच अनुत्तरविषैं ऐसी ५ संदृष्टि जाननी। बहुरि सर्वार्थ सिद्धिके देव राशिकी संदृष्टि ऐसी ४२=४२=४२=३।३ वा। ७ ४ हो है। इहां मनुष्यणीका प्रमाणके आगें तीनका अथवा सातका गुणकार जानना। बहुरि सर्व देव राशिकी संदृष्टि ऐसी = $\frac{॥ \; १ \; ७}{४।६५=१ \; १०}$ इहां ज्योतिष्क राशि ऐसा $\frac{=}{४।६५^{=}}$ अर याका संख्यातवां भाग प्रमाण व्यंतर ६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राशि है ताकौं मिलावनेकौं ज्योतिष्क राशिके आगै एकका संख्यातवां भागकरि अधिक एक ऐसा १/७/१ ताका गुणकार कीएं व्यंतरराशि सहित ज्योतिष राशी ऐसा हो है = १/७/१ (४।६५) याके ऊपरि भवनवासी अर कल्पवासी ए दोय राशि मिलावनेकौं ऊपरि दोय ऊभी लीककी ऐसी ॥ संदृष्टि कीएं देवराशिकी संदृष्टि हो है।

अथ इंद्रिय मार्गणाविषै संदृष्टि कहिए है—तहां निर्वृत्तिरूप द्रव्येंद्रियानिका अवगाह विषैं चक्षु इंद्रियका अवगाह ऐसा ६ प/a इहां घनांगुल ६ कौं पल्यका असंख्यातवां भाग प/a का तौ गुणकार जानना बहुरि पल्यका असं-

प/a ७ ७ प/a १—

ख्यातवां भाग प/a अर संख्यात ७ अर संख्यात ७ अर एक अधिक पल्यका असंख्यातवां भाग प/a १— का भागहार जानना।

बहुरि यातैं संख्यात गुणा श्रोत्र इंद्रियका अवगाह तहां संख्यातका गुणकार अर भागहारका अपवर्तन कीएं ऐसी संदृष्टि हो है ६ प/a बहुरि यातैं याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग करि अधिक घ्राण

प/a ७ प/a १—

इंद्रियका अवगाह है। तहां पल्यका असंख्यातवां भागका भागहार अर यातैं एक अधिकका गुणकार भया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताका अपवर्तन कीएं ऐसी ६ संदृष्टि हो है। बहुरि यातैं पल्यका असंख्यातवां भागगुणा जिह्वा इंद्रियका अवगाह है
प ७
a

सो अपवर्तन कीएं घनांगुलका संख्यातवां भाग मात्र ऐसा ६ हो है बहुरि स्पर्शन इंद्रियका जघन्य अवगाह ऐसा
७

६।८।२२ अर उत्कृष्ट अवगाह ऐसा जानना ६ ७ ७ ७ ७ ७ इहां जीव समास अधिकारविषैं शरीरका जघन्य
a १–

प १९।८।९।८।२२।७।९
a a a

उत्कृष्ट अवगाहका जो प्रमाण कह्या था सोई जानना। बहुरि जीवनिकी संख्याविषै एकेंद्रिय राशिकी संदृष्टि ऐसी १३–इहां संसारी राशिके आगैं त्रस राशी घटावनेकी ऐसी–संदृष्टि जाननी बहुरि याकौं संख्यातकी सहनानी इहां पांचका अंक ताका भाग देइ बहु भागप्रमाण पर्याप्त राशिकी संदृष्टि ऐसी १३–४ बहुभागका
५

ग्रहण विषै भागहारका भाग देइ एक घाटि भागहारके प्रमाणका गुणकार जानना। बहुरि एक भाग मात्र अपर्याप्त राशिकी ऐसी १३–१ बहुरि एकेंद्रिय सामान्य राशिकौं असंख्यात लोककी संदृष्टि इहां नवका अंक ताका
५

भाग देइ एक भाग मात्र बादर एकेंद्रिय राशिकी संदृष्टि ऐसी १३–१ बहु भाग मात्र सूक्ष्म राशिकी ऐसी १३–८
९ ९

बहुरि बादर एकेंद्रिय राशिकौं असंख्यात लोककी संदृष्टि इहां सातका अंक ताका भाग देइ बहु भाग मात्र अप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्याप्त राशिकी संदृष्टि ऐसी १३—६ एक भाग मात्र पर्याप्त राशिकी ऐसी १३—१ बहुरि सूक्ष्म एकेंद्रिय राशिकौं इहां
९।७ ९।७
संख्यातकी सहनानी पांचका अंक ताका भाग देइ बहु भाग मात्र पर्याप्त राशिकी ऐसी १३—८।४ एक भाग मात्र
६।५
अपर्याप्त राशिकी ऐसी १३—८ संदृष्टि जाननी।
६।५

<table>
<tr><td>पर्याप्त।
१३-४।
५</td><td colspan="2">पंचेंद्रिय।
१३—।</td><td>अपर्याप्त।
१३-१।
५</td></tr>
<tr><td colspan="2">बादर
१३-६</td><td colspan="2">सूक्ष्म
१३-।८।
६</td></tr>
<tr><td>पर्याप्त
१३-
६।७</td><td>अपर्याप्त
१३-६।
६।७</td><td>पर्याप्त
१३-।८।४।
६ ।५।</td><td>अपर्याप्त
१३—।८।
६ ।५।</td></tr>
</table>

बहुरि सामान्य त्रस राशिकी संदृष्टि ऐसी = इहां प्रतरांगुलका असंख्यातवां भागका भाग जगत्प्रतरकौं
४
a
जानना। बहुरि याकौं आवलीका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि इहां नवका अंक ताका भाग देइ बहुभाग
ऐसा = ८ ताकौं च्यारिका भाग दीएं ऐसा = ८ एक एक समान भाग बेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्रीकौं देना।
४।६ ४।९।४
a a
बहुरि अवशेष एकभाग रह्या ऐसा = ताकौं आवलीका असंख्यातवां भागमात्र प्रतिभाग ऐसा ९ ताका ६८
४।६
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग देइ बहुभाग ऐसा = ८ / ४।६।६ / a बेंद्रियकौं देना अवशेष एक भाग ऐसा = / ४।६।६ / a ताकौं तिसही प्रति-
भागका भाग देइ बहुभाग ऐसा = ८ / ४।६।६।६ / a तेंद्रियकौं देना। बहुरि अवशेष एक भाग ऐसा = / ४।६।६।६ / a
ताकौं तिसही प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग ऐसा = ८ / ४।९।९।९।९ / a चौंद्रीकौं देना। अवशेष एक भाग ऐसा
= १ / ४ ६ ६ ६ ९ / a पंचेंद्रियकौं देना ऐसैं बहुभागके समान भागका ऊपरि स्थापने। पीछै दीए देय भागते नीचैं स्थापने।

नाम	बेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	पचेंद्रिय
समभाग	= ८।६।६।६। ४।४।६।६।६।६। a।	= ८।६।६।६। ४।४।६।६।६।६। a।	= ८।६।६।६। ४।४।६।६।६।६। a।	= ८।६।६।६। ४।४।६।६।६।६। a।
देयभाग	= ८।४।६।६। ४।४।६।६।६।६। a।	= ८।४।६। ४।४।६।६।६।६। a।	= ८।४। ४।४।६।६।६।६ a।	= १।४। ४।४।६।६।६।६। a।

बहुरि इहां अंकनिका परस्पर समच्छेद कीएं समभाग देय भाग ऐसा हो है। कैसैं सो कहिए है—

नाम	बेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	पंचेंद्रिय
समभाग	= ।८ ४ ।६।४। a।	= ।८। ४ ।६।४। a।	= ।८। ४ ।६।४। a।	= ।८। ४ ।६।४। a।
देयभाग	= ।८। ४ ।६।६। a।	= ।८। ४ ।६।६।६। a।	= ।८। ४ ।६।६।६।६। a।	= ४।६।६।६।६। a।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सर्वतैं अधिक देय भागका भागहार विषैं च्यारि बार नवके अंक हैं। अर समभागका भागहारविषैं एक वार नवका अंक है तातैं सर्वत्र भागहारविषैं च्यारिबार नवका अंक करनेकौं समभाग विषैं तीन बार नवका अंकका गुणकार वा भागहार लिख्या । बहुरि देय राशिका भागहारनि विषैं च्यारिका अंक है नाहीं अर समभागका भागहारविषैं चारिका अंक है तातैं समच्छेद करनेकौं सर्वत्र देयराशि विषैं चारिका गुणकार वा भागहार कथिा । बहुरि सर्वत्र चारि बार नवका अंकका भागहार करना अर वेंद्रियका देय राशि विषैं दोयबार नवका अंकका भागहार है तातैं तहां दोयबार नवका अंकका गुणकार वा भागहार कीया । बहुरि तेंद्रियका देय राशि विषैं तीनबार नवका अंकका भागहार है तातैं तहां एकबार नवका अंकका गुणकार वा भागहार कीया। चौंद्रिय पंचेंद्रियका देयराशि विषैं चारि बार नवका भागहार है ही तातैं तहां गुणकार भागहार न कीया ऐसैं यहु समच्छेद जानना । बहुरि समभागका गुणकार आठ अर तीनबार नव ८ ९ ९ ९ इनकौं परस्पर गुणें अठावनसै बत्तीस हो हैं अर देय राशिका गुणकार विषैं वेंद्रियके आठ चारि नव नवकौं परस्पर गुणें पचीससै बाणवै हो हैं । तेंद्रियके आठ चारि नवकौं परस्पर गुणें दोयसै अठ्यासी हो हैं। चौंद्रियके आठ चारिकौं परस्पर गुणें बतीस हो हैं। पंचेंद्रियके चारि ही हैं। बहुरि भागहार विषैं सर्वत्र चारिका गुणकारकौं जुदा राखि चारि बार नवके अंकनिकौं परस्पर गुणैं पैंसठिसै इकसठि हो है ऐसैं करतैं समभाग देयभाग ऐसा भया ।

नाम	वेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	पचेंद्रिय
समभाग	= ५८३२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ५८३२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ५८३२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ५८३२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।
देयभाग	= २५९२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= २८८ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ३२ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ४ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन समभाग देयभागनिकौं जोड़ें वेंद्रिय आदि जीवनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी हो है—

नाम	वेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	पचेंद्रिय
प्रमाण	= ८४२४ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ६१२० । ४ । ४ । ६५६१ । a ।	= ५८६४ । ४ । ४ ६५६१ । a ।	= ५८३६ । ४ । ४ । ६५६१ । a ।

बहुरि पर्याप्त त्रस जीवनिका प्रमाण ऐसा = इहां संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताकरि भाजित प्रत-
४
५
रांगुलका भाग जगत्प्रतरकौं जानना । तहां पूर्वोक्त प्रकार प्रतिभागका भाग देइ बहु भागविषैं चारि समान भाग करि तेंद्रिय बेंद्री पंचेंद्रिय चौंद्रियकौं देना अर एक भागके बहुभाग मात्र क्रमतैं तेंद्रिय वेंद्रिय पंचेंद्रियकौं देना एक भाग चौंद्रियकौं देना । तिनकी संदृष्टि ऐसी हो है—

नाम	तेंद्रिय	वेंद्रिय	पंचेंद्रिय	चौंद्रिय
समभाग	= ८ ४ ६ ४ ५	= ८ ४ ६ ४ ५	= ८ ४ ६ ४ ५	= ८ ४ ६ ४ ५
देय भाग	= ८ ४ ६ ६ ५	= ८ ४ ६ ६ ६ ५	= ८ ४ ६ ६ ६ ६ ५	= १ ४ ६ ६ ६ ६ ५

इनकौं पूर्वोक्त प्रकार समच्छेदकरि मिलाएं पर्याप्त जीवनिके प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नाम	तेंद्रिय = ८४२४	वेंद्रिय = ६१२०	पंचेंद्रिय = ५८६४	चौंद्रिय = ५८३६
प्रमाण	४।४।६५६१ ५	४।४ ६५६१ ५	४।४ ६५६१ ५	४।४ ६५६१ ५

बहुरि पूर्वोक्त सामान्य जीवनिका प्रमाण विषैं इस पर्याप्त जीवनिका प्रमाणकौं घटाएं अपर्याप्त जीवनिके प्रमाण की संदृष्टि ऐसी हो है—

नाम	वेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	पंचेंद्रिय
प्रमाण	० ५।६१२०। =८४२४।a। ४।४।६५६१।	० ५।८४२४ =६१२०।a ४।४।६५६१।	० ५।५८३६। =५८६४।a। ४।४।६५६१।	० ५।५८६४। =५८३६।a। ४।४।६५६१।

इहां सामान्य राशि सो तौ मूलराशि अर पर्याप्त जीवराशि सो ऋणराशि इनि दोऊनिविषैं जगत्प्रतर अर ताकौं प्रतरांगुल अर चौगुणा पैंसाठिसैं इकसठि का भाग = ० समान देखि मूलराशिका गुणकार लिखि तामैं
४।४।६५६१
ऋणराशिका गुणकार घटावनेकौं ऊपरि लिखि घटावनेकी संदृष्टि उपरि बिंदी करी है। बहुरि भागहारका भागहार भाज्यका गुणकार होइ इस न्यायकरि मूलराशिविषैं भागहार प्रतरांगुल ताका भागहार असंख्यात था ताकौं मूलराशिके गुणकारानिका गुणकार कीया अर ऋणराशिविषैं पांचका अंक था ताकौं ऋणराशिके गुणकारनिका गुणकार कीया है। अथ कायमार्गणा अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए हैं—

तहां बादर सूक्ष्म पृथ्वी आदि च्यारि कायिक जीवनिका शरीर घनांगुलके असंख्यातवे भागमात्र कह्या है

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अपर्याप्तका जघन्य शरीर अवगाहनकी ऐसी ६ ९ २२ (a, १— / प। १९ । ८ । ८ । ८ । २२ । ७। ९ / a a a) अर पृथ्वीकायिक वादरपर्याप्तका उत्कृष्ट अवगाहनाकी ऐसी ६ ९ ४ (a १— / प ४ ८ । ४ । ७ । ९ / a a) इत्यादि जीवसमासोक्त संदृष्टि जाननी । बहुरि प्रतिष्ठित शरीरानिका प्रमाण ल्यावनेकौं प्रमाणराशि प्रतिष्ठितका उत्कृष्ट अवगाह जीव समासोक्त ऐसा ६ (प २ ७ ९ / a) फलराशि १ एक इच्छाराशि संख्यात घनांगुल प्रमाण एक स्कंध ६ ७ तहां लब्धराशि दोयवार पल्यका असंख्यातवां भागकौं दशवार संख्यातकरि गुणै जो प्रमाण होइ प २ ७ १७ (a) तितना एक स्कंधविषैं प्रतिष्ठित शरीरानिका प्रमाण जानना । बहुरि निगोद कथन विषैं असंख्यात लोक प्रमाण स्कंधानिकी संदृष्टि ऐसी ≡ a याकौं क्रमतैं असंख्यात लोक करि गुणैं अंडर आवास पुलवी शरीरनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी हो है स्कंध ≡ a । अंडर ≡ a ≡ a । आवास ≡ a ≡ a ≡ a पुलवी ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a शरीर ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a । बहुरि प्रमाण राशि सर्व निगोद शरीरनिका प्रमाण ऐसा ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a फल राशि वक्ष्यमाण वादर निगोद जीव प्रमाण ऐसा १३— (९) इच्छा राशि एक करि लब्ध राशि मात्र एक वादर निगोद शरीर विषैं जीवानिका प्रमाण ऐसा १३— (९ ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a ≡ a) जानना । बहुरि प्रमाण एक समय १ अर फल एक समयविषैं निगोद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै जीव उपजनेका प्रमाण असंख्यात लोकमात्र ऐसा ≡ a अर इच्छा उत्कृष्ट जीवनिका इतर निगोदविषैं रहने का अढाई पुद्गल परावर्तनमात्र काल ऐसा पु $५_{२}$ तहां लब्ध राशि मात्र इतर निगोदके जीवनिका प्रमाण ऐसा हो है पु $५_{२}$ ≡ a। बहुरि उपपाद मारणांतिकवालेका त्रस नाली बाह्य अस्तित्व पाइये है तहां संदृष्टि ऐसी—

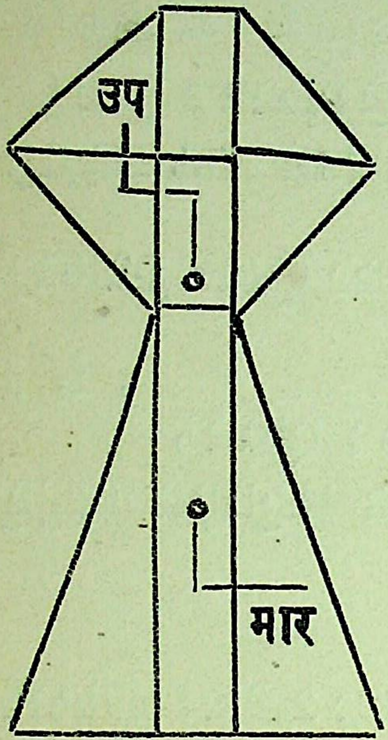

इहां लोकका आकारकरि बीचि त्रस नालीका आकारकरि उपपादवाले वा मारणांतिकवालेका त्रसनालीके अभ्यंतर बाह्यविषैं प्रदेशनिकी श्रेणीके आकारकी संदृष्टि जाननी। बहुरि जीवनिकी संख्याविषैं असंख्यात लोकमात्र अग्निकायिककी संदृष्टि ऐसी ≡ a ताकौं प्रतिभागका प्रमाण यथायोग्य असंख्यातलोकमात्र ताकी संदृष्टि नवका अंक ताका भाग देइ एक भाग ऐसा ≡ $a_{९}$ १ ताहीमैं समच्छेदकरि मिलाएं पृथ्वीकायिक राशिकी संदृष्टि ऐसी ≡ $a_{९}$ । १० इहां एक अधिक भागहारकरि गुणैं पूर्ण भागहारका भाग दीएं एक भागका मिलावनेकी संदृष्टि जाननी। ऐसैं ही ताकौं प्रतिभागका भाग देइ एक भाग ऐसा ≡ $a_{९}$ $१०_{९}$ । १ ताहीमैं मिलाएं अप्कायिक जीव राशिकी संदृष्टि ऐसी ≡ $a_{९}$ । $१०_{९}$ । १० बहुरि ताकौं प्रतिभागका भाग देइ एक भाग ऐसा ≡ a । $१०_{९}$ । $१०_{९}$ । $१_{९}$ ताहीमैं मिलाएं वायु कायिक राशिकी संदृष्टि ऐसी $\equiv_{९}$ a $१०_{९}$ $१०_{९}$ १० बहुरि अप्रतिष्ठित प्रत्येक यथा योग्य असंख्यात लोकमात्र ताकी संदृष्टि ऐसी ≡ a इनतैं असंख्यात लोक गुणे प्रतिष्ठित प्रत्येकनिकी ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—
≡ a ≡ a इनि दोऊनिकौं मिलाएं प्रत्येक वनस्पति कायिककी ऐसी ≡ a ≡ a इहां असंख्यात लोककौं दोऊ विषैं समान देखि आगिला असंख्यात लोकका गुणकारके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि जाननी।

बहुरि आगै कहिएगा त्रस राशि ऐसा = अर पृथ्वी आदि च्यारिका प्रमाण जोडैं साधिक चौगुणे तेज
४
२
a

। १—
कायिक राशि मात्र ऐसा ≡ a ६ अर प्रत्येक वनस्पति कायिक राशि ऐसा ≡ a ≡ a इन तीनों राशिकौं संसारी राशि विषैं घटाएं साधारण राशिका प्रमाण ऐसा १३ ≡ इहां संसारी राशि १३ के आगें तीन राशि घटावनेकी ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी। बहुरि जो पृथ्वी कायिक आदिका प्रमाण कह्या ताकौं असंख्यात लोककी संदृष्टि नवका अंक ताका भाग देइ एक भाग मात्र बादर जीवनिका प्रमाण है। तहां अपना अपना सामान्य राशिकौं नवका भाग दीएं संदृष्टि हो है। बहुरि अवशेष बहु भाग मात्र सूक्ष्म है तहां अपना अपना सामान्य राशिकौं आठकरि गुणैं नवका भाग दीएं संदृष्टि हो है। बहुरि अपना अपना सूक्ष्म जीवनका प्रमाणकौं संख्यातका भाग दीएं एक भाग मात्र अपर्याप्त है तहां अपना अपना राशिकौं पांचका भाग दीएं संदृष्टि हो है। बहु भाग मात्र पर्याप्त है तहां अपना अपना राशिकौं च्यारिकरि गुणैं पांचका भाग दीएं संदृष्टि हो है कैसैं सो कहिए है—

अपर्याप्त काल संख्यात आवलीमात्र ऐसा २ ७ यातैं संख्यातकी संदृष्टि चारि गुणा पर्याप्त काल ऐसा २ ७ ४
१—
चारिका गुणकार ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं मिश्र काल ऐसा २ ७ ४ सो तो सर्वत्र प्रमाण राशि करिए अर अपना अपना सूक्ष्म जीवनिका प्रमाण फल राशि करिए अर पर्याप्त कथनविषैं पर्याप्त कालकौं अर अपर्याप्त कथनविषैं अपर्याप्त कालकौं इच्छा राशि करिए ऐसैं त्रैराशिक कीएं अपर्याप्त संख्याविषैं अपना अपना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्म राशिकौं पांचका भागहार है अर पर्याप्त संख्याविषैं च्यारिका गुणकार पांचका भागहार हो है। बहुरि पल्य-का असंख्यातवां भाग प/a करि भाजित जो प्रतरांगुल ४/प/a ताका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं बादर पर्याप्त अप्कायि-कका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी =/४/प/a याकौं आवलीका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि इहां नवका अंक ताका भाग दीएं बादर पर्याप्त पृथ्वी कायिकका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी =/४/प ९/a ऐसैं ही नवका अंक भागहारके आगे लिखैं पर्याप्त प्रतिष्ठित प्रत्येक अप्रतिष्ठित प्रत्येकनिकी संदृष्टि हो है। बहुरि घनावलीका असंख्यातवां भागमात्र बादर तेज कायिक हैं ताकी संदृष्टि ऐसी ८/a बहुरि लोकका संख्यातवां भाग मात्र वादर वायुकायिककी संदृष्टि ≡/१ बहुरि साधारण बादर जीवनिका प्रमाण ऐसा १३/९ ≡ है ताकौं असंख्यातकी सहनानी सातका अंकका भाग देइ एक भाग विषैं एकका गुणकार कीएं पर्याप्तनिकी ऐसी १३/९ ≡ १/७ बहुभाग विषैं छहका गुणकार कीएं अपर्याप्तनिकी ऐसी १३/९ ≡ ६/७ बहुरि आवलीका असंख्यातवां भाग करि २/a भाजित प्रतरांगुल ४/२/a का भाग जगत्प्रतरकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीएं सामान्य त्रस राशिकी संदृष्टि ऐसी $\underset{\substack{४\\२\\२}}{=}$ बहुरि प्रतरांगुलका संख्यातवां भागका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं पर्याप्त त्रस राशिकी संदृष्टि ऐसी $\underset{\substack{४\\५}}{=}$ इहां संख्यातकी सहनानी पांच का अंक जानना। बहुरि अपना अपना बादर पृथ्वी अप तेज वायु प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित प्रत्येक त्रसनिका सामान्य राशिकौं ऊपरि लिखि घटावनेकौं ताके नीचें अपना अपना पर्याप्त राशि लिखि घटावनेकी मूल राशितैं लगाय ऋण राशि पर्यंत ऐसी ⌣ संदृष्टि कीएं अपर्याप्त जीवनिकी संदृष्टि हो है इन सबनिके प्रमाणका यंत्र ऐसा—

बहुरि वादर तेज अप्रतिष्ठित प्रत्येक प्रतिष्ठित प्रत्येक पृथ्वी अप इन पंचराशिनिके अर्धच्छेद क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांचवार आवलीका असंख्यातवां भागका भाग पल्यकौं दीएं जो प्रमाण होइ तीहिं करि हीन सागर प्रमाण जानने अर वादर वायुकायिक राशिके संपूर्ण सागर प्रमाण अर्धच्छेद जानने तिनकी संदृष्टि ऐसी-

तेज	अप्रतिष्ठित	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	अप	वायु
सा — प ९	सा — प ९ ९	सा — प ९ ९ ९	सा — प ९ ९ ९ ९	सा — प ९ ९ ९ ९ ९	सा

इहां तेज आदिकविषैं सागरके आगें घटावनेकी ऐसी — संदृष्टि करि आगें पल्य लिखि ताके नीचे आवलीका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि नवका अंक ताका क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच वार भागहार जानना। बहुरि तहां तेजतैं अप्रतिष्ठित प्रत्येक इत्यादिविषैं अधिक अर्धच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रतिष्ठित	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	जल	वात
प ८	प ८	प ८	प ८	प १
९ ९	६ ६ ६	९ ९ ६ ६	६ ६ ६ ९ ९	६ ९ ६ ९ ९

इहां पल्यकौं भागहारका भाग देइ बहुरि अवशेष एक एक भागकौं भागहारका भाग देइ देइ बहुभाग बहुभाग अप्रातिष्ठित प्रत्येक आदिविषैं दीया। तहां पल्यकौं आठका गुणकार अर क्रमतैं दोय तीन च्यारि पांच वार प्रतिभागका भागहार जानना बहुरि अंतविषैं एकभाग ग्रह्या है तातैं तहां पल्यकौं एकका गुणकार पांचवार भागहारका भाग जानना । बहुरि यहां त्रैराशिक कीया तहां प्रमाण राशिविषैं देय राशि दोय विरलन राशि लोकका अर्धच्छेदमात्र ऐसा हो है प्र दे २ / वि छे छे छे ९ / ३ बहुरि फलराशि लोक ऐसा फ ≡ बहुरि इच्छाराशिविषैं देय राशि

दोय विरलन राशि एकवार भागहारका भाग पल्यकौं दीजिए तीहिंकरि हीन सागरमात्र ऐसा इ दे २ / वि सा— प / ९

तहां प्रमाण राशिके विरलन राशिका भाग इच्छाराशिके विरलन राशिकौं दीएं ऐसा सा— प / छे छे छे ९ ९ / ३

अपवर्तन कीएं लोकका अर्धच्छेद राशिकरि भाजित किंचिन्न्यून संख्यात पल्यमात्र प्रमाण ऐसा प १ — / छे छे छे ९ / ३

इतने लोक मांडि परस्पर गुणने। तहां मूलराशिमात्र लोकनिकौं परस्पर गुणैं असंख्यात लोक भए ताकी संदृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी ≡ a अर न्यून राशिमात्र लोकनिकौं परस्पर गुणें असंख्यात लोक भए सो स्तोक है तातैं ताकी संदृष्टि नवका अंककरि ताका भाग दीएं वादर तेज कायिक जीव राशिका प्रमाण ऐसा भया $\frac{\equiv a}{9}$ ऐसैं ही अन्य त्रैराशिक करि प्रमाण साधना।

अथ योग मार्गणा अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है। तहां औदारिक आदि शरीरनिका समयप्रबद्ध अर समय प्रबद्धकी अवगाहना अर वर्गणाकी अवगाहनाकी संदृष्टिका यंत्र ऐसा—

नाम समय प्रबद्ध	औदारिक स	वैक्रियिक स $\overline{a}$	आहारक स $\overline{a}$ । $\overline{a}$	तैजस स $\overline{a}$ $\overline{a}$ ख	कार्माण स $\overline{a}$ $\overline{a}$ ख ख
समय प्रबद्धकी अवगाहना	६ २ a	६ २ २ a a	६ २ २ २ a a a	६ २ २ २ २ a a a a	६ २ २ २ २ २ a a a a a
वर्गणाकी अवगाहना	६ २ २ a a	६ २ २ २ a a a	६ २ २ २ २ a a a a	६ २ २ २ २ २ a a a a a	६ २ २ २ २ २ २ a a a a a a

इहां औदारिकका समयप्रबद्धकी संदृष्टि आदि अक्षर रूप ऐसी स याकौं श्रेणीका असंख्यातवां भाग ऐसा $\frac{-}{a}$ ताकरि गुणें वैक्रियिककी ऐसी हो है स $\frac{-}{a}$ याकौं श्रेणीका असंख्यातवां भाग करि गुणें आहारककी ऐसी $\frac{--}{स\ a\ a}$ याकौं अनन्त ऐसा ख ताकरि गुणें तैजसका ऐसा $\frac{--}{स\ a\ a\ ख}$ याकौं अनंत करि गुणें कार्माणका ऐसा ७१ $\frac{--}{स\ a\ a\ ख\ ख}$ बहुरि घनांगुल ऐसा ६ ताकौं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग ऐसा $\frac{२}{a}$ ताका क्रमतैं एक दोय तीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च्यारि पांचवार भाग दीएं औदारिक आदिकी समय प्रबद्धकी अवगाहनाका प्रमाण हो है। बहुरि घनांगुलकौं ६ सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग २ का क्रमतैं दोय तीन च्यारि पांच छह वार भाग दीएं औदारिक आदिकी वर्गणाकी
a

अवगाहनाका प्रमाण हो है। बहुरि विस्रसोपचयका प्रमाण विषै प्रमाण राशि एक परमाणू प्र १ फलराशि अनंत गुणा जीवराशि फ १६ ख इच्छा राशि किंचिन्न्यून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध इ स a १२ — तहां लब्ध राशी मात्र विस्रसोपचय परमाणूनिका प्रमाण ऐसा जानना स a १२— १६ ख बहुरि औदारिक आदि शरीर-निका द्रव्य स्थिति गुणहानि नाना गुणहानि दो गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशिकी संदृष्टिनिका यन्त्र—

नाम	औदारिक	वैक्रियिक	आहारक	तैजस	कार्माण
द्रव्य	स	स a (ऊपर —)	स । a a (ऊपर — —)	स । a a । ख (ऊपर — —)	स a a ख ख (ऊपर — —)
स्थिति	प ३	सा ३३	२ वृ ७	सा ६६	सा ७० को २
गुणहानि आयाम	२ वृ	२ वृ	२ वृ	प वृ / छे व छे । a	प वृ / छे व छे
नानागु-णहानि	प ३ / २ वृ	सा ३३ / २ वृ	वृ	छे व छे a	छे व छे
दोगुण-हानि	२ वृ । २	२ वृ । २	२ वृ । २	प वृ २ / छे व छे a	प वृ २ / छे व छे
अन्योन्या-भ्यस्त	≡ a ।	≡ a ≡ a	वृ । वृ	क a वा सू २ / a	प / व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां जो पूर्वैं समय प्रबद्धकी संदृष्टि कही थी सोई द्रव्यकी संदृष्टि जाननी। बहुरि स्थिति औदारिककी तीन पल्य प ३ वैक्रियिककी सागर तेतीस सा ३३ आहारककी दोयबार संख्यात गुणित आवलीमात्र २ १ १ तैजसकी सागर छ्यासठि हो है सा ६६ कार्माणकी मोह अपेक्षा सागर सत्तर कोडाकोडी सा ७० को २ जाननी। बहुरि गुणहानि आयाम औदारिकादि तीनका अन्तर्मुहूर्त मात्र २ १ अर तैजस कार्माणका अपना अपना स्थिति संख्यात पल्य प्रमाण प १ ताकौं अपनी अपनी नाना गुणहानिका भाग दीएं हो है। बहुरि नाना गुणहानि औदारिक वैक्रियिककी अपनी अपनी स्थितिकौं गुणहानि आयाम २ १ का भाग दीएं हो है। आहारककी संख्यात मात्र है १ तैजसकी पल्यका अर्धच्छेद छे विषैं पल्यकी वर्गशलाकाका अर्धच्छेद व छे घटावनेकी आगैं लिखि ऐसी ‿ संदृष्टि करि ताकौं असंख्यात करि गुणनेकौं आगैं ऐसी a संदृष्टि कीएं ऐसा छे व छे a हो है। कार्माणकी a असंख्यात का गुणकार विना तैजसवत् संदृष्टि हो है छे व छे बहुरि दो गुणहानिविषै जो गुणहानिकी संदृष्टि थी ताकौं दोयकरि गुणनेकौं आगैं दोयका अंककी संदृष्टि हो है। बहुरि अन्योन्याभ्यस्त राशिकी क्रमतैं औदारिककी असंख्यात लोक प्रमाण ऐसी ≡ a यातैं असंख्यात लोक गुणा वैक्रियिककी ऐसी ≡ a ≡ a आहारककी संख्यात गुणित संख्यात मात्र ऐसी १ १ सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण तैजस कायकी ऐसी २/a याका अपवर्तन कीएं असंख्यात कल्प काल मात्र होइ ताकी तहां ही संदृष्टि ऐसी क a कार्माणकाकी पल्यकौं वर्गशलाकाका भाग दीएं ऐसी प/व संदृष्टि जाननी। इहां गुणहानि नाना गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि विषैं त्रैराशिक आदिक विशेष है तहां संदृष्टि सुगम है जातैं अपना अपना गुणहानि आयामकौं प्रमाण राशि कीएं फल राशि एक कीएं अपना अपना स्थितिकौं इच्छा राशि कीएं औदारिकादि शरीरनिका नाना गुणहानि राशि हो है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	प्रमाण गुणहानि	फलएक	इछास्थिति	लब्धनाना-गुणहानि
औदारिक	२ ७	१	प ३	प ३ २ ७
वैक्रियिक	२ ७	१	सा ३३	सा ३३ २ ७
आहारक	२ ७	१	२ ७ १	७
तैजस	सा ६६ छे व छे ७	१	सा ६६	छे व छे ७
कार्माण	सा ७० को २ छे व छे	१	सा ७० को २	छे व छे

बहुरि अपना अपना नाना गुणहानि राशिकौं प्रमाण राशि कीएं फल राशि अपनी अपनी स्थिति कीएं इच्छा राशि एक कीएं औदारिक आदि शरीरनिका गुणहानि आयामका प्रमाण हो है।

नाम	प्रमाणनाना-गुणहानि	फलस्थिति	इच्छाएक	लब्ध गुण हानि आयाम
औदारिक	प ३ २ ७	प ३	१	२ ७
वैक्रियिक	सा ३३ २ ७	सा । ३३	१	२ ७
आहारक	७	२ ७ ७	१	२ ७
तैजस	छे व छे ७	सा । ६६	१	सा ६६ छे व छे ७
कार्माण	छे व छे	सा ७० को २	१	सा ७० को २ छे व छे

बहुरि अन्योन्याभ्यस्तके प्रमाणकौं प्रमाण राशि विषै देय दोय विरलन लोकका अर्धच्छेद मात्र फल राशि लोक इच्छा राशिविषै देय दोय विरलन अंतर्मुहूर्तकरि भाजित तीन पल्य तहां प्रमाणके विरलन राशिका भाग इच्छाके विरलनकौं प्र दे २ / वि छे छे छे ९ / ७ फ ≡ इ दे २ / वि प ३ / २ ७ दीएं ऐसा हो है प ३ / २ ७ छे छे छे ९ / ७ इतने लोक माडि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परस्पर गुणे असंख्यात लोक ≡ a भए सो औदारिकका अन्योन्याभ्यस्त राशी है ऐसें ही वैक्रियिकका नाना गुणहानिकौं लोकका अर्धच्छेदका भाग दीएं ऐसा सा ३३ इतने लोक माडि परस्पर गुणें ताका अन्योन्याभ्यस्त
२ ७ छे छे छे ९
a
राशि ऐसा ≡ a ≡ a हो है। अथवा प्रमाण राशि विषैं विरलन राशि औदारिककी नाना गुणहानि ऐसी प प ३ फल राशि असंख्यात लोक ≡ a इच्छा राशी विषैं विरलन राशी औदारिककी नानागुणहानितैं एक सौ
२ ७
दश कोडाकोडी गुणा ऐसा इ प ३। ११० को २ इहां लब्ध एकसौ दश कोडाकोडि वार औदारिककी अन्योन्या-
२ ७
भ्यस्त राशिकौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो वैक्रियिकका अन्योन्याभ्यस्त राशि जानना। यातैं औदारिकका अन्योन्याभ्यस्त राशितैं वैक्रियिकका अन्योन्याभ्यस्त राशि विषैं गुणकार संभवै है। आहारकका संख्यात मात्र द्विक परस्पर गुणें अन्योन्याभ्यस्त राशी ऐसा ७ ७ तैजसविषैं नाना गुणहानि ऐसी छे व छे a थाकौं पल्यका अर्धच्छेद राशिका भाग दीएं ऐसा छे व छे a इस विषैं ऋण ऐसा व छे a जुदा कीएं अवशेष ऐसा छे a अपवर्तन
छे छे छे
कीएं असंख्यात रहे सो ऐसे a इतने पल्य परस्पर गुणें सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग ऐसा हो है २ बहुरि
२ a।
ऋण राशी मात्र द्विक परस्पर गुणें पल्यका असंख्यातवां भाग भया ताका भाग दीएं ऐसा a प अपवर्तन कीएं
a
सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग मात्र ही तैजसका अन्योन्याभ्यस्त राशी ऐसा भया २ कार्माण शरीरविषै ८३
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानागुणहानि ऐसा छे व छे तहां मूल राशि पल्य अर्धच्छेद मात्र ऐसा व छे इतने द्विक परस्पर गुणें पल्य होइ ताकौं ऋण राशि वर्ग शलाकाका अर्धच्छेद द्विकनिकौं परस्पर गुणे पल्यकी वर्ग शलाका होइ ताका भाग दीएं कार्माणका अन्योन्याभ्यस्त राशि ऐसा प व हो है ऐसें इनिका साधन जानना बहुरि इहां रचना कहिए है —

कार्माण समय प्रबद्ध द्रव्य ऐसा स ७ ✓ ख ख लघु संदृष्टि करनेकौं ताकी संदृष्टि ऐसी। स। बहुरि अन्योन्याभ्यस्त राशिकी संदृष्टि आदि अक्षररूप ऐसी। अ। तामैं एक घटाइ ताका भाग दीएं अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा स/अ १–

बहुरि दूणा दूणा दूणा क्रमतैं होइ आधा अन्योन्याभ्यस्त ऐसा। अ/२। ताकरि अंत गुणहानिके द्रव्यकौं गुणें प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा है स अ/अ १– २ याकौं गुणहानिकी संदृष्टि आदि अक्षर रूप ऐसा गु ताका भाग दीएं मध्य धन ऐसा स अ/अ १– २ गु बहुरि एक घाटि गुणहानिका आधाकरि हीन दो गुणहानि ऐसा गु ३/२ इहां दो गुणहानिमैं आधा गुणहानि घटाएं ड्योढ गुणहानि ऐसा गु ३/२ भया अर ऋणका ऋण आधा गुणहानि विषैं घाटि एकका आधा था ताकौं राशिका धन करनेकौं नीचै दोयका भाग हार देखि ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि करी है सो याका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिस मध्यम धनकौं भाग दीएं प्रथम गुणहानि संबंधी चय ऐसा स अ याकौं दो गुणहानि ऐसा गु २ ताकरि गुणे
१ ⌒ १—
अ २ गु गु ३
२

१—
प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा स अ गु २ यामैं एक एक चय घटाएं एक अधिक गुणहानि ऐसा गु ता-
१ ⌒ १—
अ २ गु गु ३
२ १—
करि गुणित अपना चय मात्र अंत निषेक ऐसा स अ गु हो है। ऐसैं द्वितीयादि गुणहानि विषैं रचनाकरि अंत
१ ⌒ १—
अ २ गु गु ३
२
गुणहानि विषैं द्रव्य ऐसा स याकौं गुणहानिका भाग दीएं मध्य धन ऐसा स याकौं एक घाटि गुणहानिका भाग
१ ⌒ १ ⌒
अ अ गु
आधारकरि हीन दो गुण हानिका भाग दीएं चय ऐसा स याकौं दो गुणहानि गु २ करि गुणें प्रथमनिषेक ऐसा
१ ⌒ १—
अ गु गु ३
२
१— १—
स गु २ यामैं एक एक चय घटै एक अधिक गुणहानि गु गुणित निज चयप्रमाण अंत निषेक ऐसा स गु हो है
१ ⌒ १— १ ⌒ १—
अ गु गु ३ अ गु गु ३
२ २
इस रचनाका यंत्र ऐसा जानना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	प्रथम गुणहानि	द्वितीयगुणहानि	मध्यमगुणहानि	उपांतगुणहानि	अंतगुणहानि
अंतनिषेक	१– स अ गु १ ⌢ १– अ २ गु गु ३ २	१– स अ गु १ ⌢ १– अ २ । २ गु गु ३ २	० ० ० ० ०	१ ⌢ स २ गु १ ⌢ १– अ गु गु ३ २	१– स गु १ ⌢ १– अ गु गु ३ २
मध्य निषेक	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
आदि निषेक	स अ गु २ १ ⌢ १– अ २ गु गु ३ २	स अ गु २ १ ⌢ १– अ २ । २ गु गु ३ २	० ० ० ० ०	स २ गु २ १ ⌢ १– अ गु गु ३ २	स गु २ १ ⌢ १– अ गु गु ३ २
सर्व द्रव्य प्रमाण	स अ १ ⌢ अ २	स अ १ ⌢ अ २ । २	० ० ० ० ०	स २ १ ⌢ अ	स १ ⌢ अ

इहां प्रथम गुणहानिके द्रव्य निषेक आदिकौं दोयका भाग दीएं द्वितीय गुणहानिके द्रव्यादिक जानने अर अन्त गुणहानि द्रव्यादिककौं दोय करि गुणें उपांत गुणहानि विषैं द्रव्यादिक जानने। मध्य गुणहानिके द्रव्यादिक विषैं बिंदीनिकी संदृष्टि जाननी बहुरि अंक संदृष्टिकरि द्रव्य निषेकादि रचना अर कर्मनिका सत्त्व दिखावनेकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण यंत्र रचना टीका विषै लिखी है सो जाननी। (देखो पृष्ठ ५३८ जीवकांड) त्रिकोण यंत्रविषैं नीचेतैं लगाय जो अठतालीस पंक्ति हैं तिन विषैं एक एक पंक्ति रूप एक एक समय संबन्धी एक एक निषेक जानना। आठ पंक्तिनिका समूहकौं गुणहानि संज्ञा जाननी सो इहां त्रिकोणयंत्रका जोड कहिए है तहां प्रथम ही हीन संकलन अपेक्षाकरि कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीचेतैं लगाय आठ पंक्ति रूप जो प्रथम गुणहानि तीहि विषैं जे द्वितीयादि पंक्ति विषैं निषेक घटे तिनके प्रमाण रूप घटावने योग्य जो ऋण ताकौं मिलाएं गुणहानि मात्र पंक्तिनिका घन गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण हो है जातैं प्रथम पंक्तिका जोड समय प्रबद्ध प्रमाण है। ऋणकौं मिलाएं अन्य पंक्तिनिका भी जोड़ याके समान हो है सो गुणहानिका प्रमाण आठ ताकरि गुणित समय प्रबद्धका प्रमाण तरेसाठिसै ऐसा ६३०० हो है। अब या विषैं ऋण कितना घटावना सो कहिए है—

प्रथम निषेक तौ एक घाटि गुणहानि मात्र ५१२ । ७ द्वितीय निषेक दोय घाटि गुणहानि मात्र ५ । ऐसैं ही एक एक घटता तृतीयादि निषेक होइ अंतविषैं द्विचरम निषेक एक प्रमाण जानना ऐसैं एक निषेक गुणहानि मात्र पंक्तिनि विषैं घटै हैं । अन्त निषेकका सर्वत्र सद्भाव है। सो इहां द्वितीयादि निषेकनिविषैं प्रथम निषेकतैं जितने जितने अपने अपने चय घटें तिनकौं मिलाएं सर्व निषेक प्रथम निषेक समान ऐसे भए ५१२ । ७ इनका जोड एक घाटि गच्छका एक

५१२ । ६
५१२ । ५
५१२ । ४
५१२ । ३
५१२ । २
५१२ । १

वार संकलनमात्र प्रथम निषेक प्रमाण भया सो इहां गच्छका प्रमाण आठ सो व्येकपदोत्तरघातः इत्यादि टीकाविषैं ज्ञानमार्गणा अधिकारविषैं उक्त संकलन सूत्र अपेक्षा करि एक घाटि गच्छकौं दोयका अर संपूर्ण गच्छकौं एकका

१ ⌒

भाग देइ ताकरि प्रथम निषेक इहां पांचसै बारह ताकौं गुणैं इतना जोड भया ५१२ । $\frac{८}{२}$ । $\frac{८}{१}$ बहुरि इहां मिलाए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुए चय ज्यूंके ज्यूं घटावनेतैं ऐसे ३२ । २१ इहां प्रथम पंक्तिके विषैं कोऊ निषेक घट्या नाहीं दूसरी पंक्तिविषैं

३२ । १५
३२ । १०
३२ । ६
३२ । ३
३२ । १

एक प्रथम निषेक घट्या तहां कोई चय मिलाया नाहीं। तीसरि पंक्तिविषैं एक पहिला एक दूसरा निषेक घट्या तामैं दूसरे निषेकविषैं एक चय मिलाया सो लिख्या। तीसरी पंक्तिविषैं एक पहिला एक दूसरा एक तीसरा निषेक घट्या तहां दूसरा निषेक विषैं एक चय तीसरा निषेकविषैं दोय चय मिलाएं ते तीन चय लिखे ऐसैं ही ऊपरि जानना। सो याका जोड दोय घाटि गच्छका दोयवार संकलनमात्र चय प्रमाण भया सो संकलनसूत्रके अनुसारि दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं तीन दोय एकका भाग देइ ताकरि चयका प्रमाण बत्तीस ताकौं

१ ‒ ^ १ ‒ ^
गुणैं ऐसा ३२ ८ ८ ८ भया। बहुरि पूर्वोक्त ऋण द्रव्य ऐसा ५१२। ८ ८ तहां प्रथम निषेककौं दोय गुणहानि
३ २ १ (ऋण द्रव्य: ऊपर १ ‒ ^, नीचे २ १)

ऐसा ८। २ ताकरि संभेदन कीएं पांचसै बाराकी जायगा बत्तीसके आगैं दोय गुणा गुणहानिका गुणकार ऐसा

१ ‒ ^
हो है ३२। ८। २। ८। ८ इहां गुणकार वा भागहारनिकौं संदृष्टिके अर्थि तीनकरि गुणैं ऐसा—
२ १

१ ‒ ^
३२। ८। ६। ८। ८ इहां छ गुणहानि ऐसे ८। ६ तिनविषैं एक गुणहानि गुणितका प्रमाण ऐसा हो है—
३ २ १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ —   २ — १ —

३२ । ८ । ८ । ८ यामैं घटावने योग्य चयनिका जोड रूप ऋणका ऋण ऐसा ३२ । ८ । ८ । ८ ताकौं घटाइए सो

३ २ १   ३ २ १

अन्य समान देखि बत्तीसके आगैं गुणहानि आठका गुणकार था तामैं याका दोय घाटि गुणहानिका गुणकार

१ —

घटाएं अवशेष दोयका गुणकार रह्या तब ऐसा भया ३२ । २ । ८ । ८ याकौं छह गुणहानिविषैं एक गुणहानि

३ २ १

१ —

घटाएं तहां पांच गुणहानिनिका प्रमाण ऐसा रह्या था ३२ । ८ । ५ । ८ । ८ तामैं जोडना सो अन्य सर्व समान देखि पंच

३ २ । १

गुणहानिनिके ऊपरि दोयकी अधिकता कीएं अर भागहारनिकौं परस्पर गुणैं प्रथम गुणहानिविषैं ऋण ऐसा

२ —   १ —

३२ । ८ । ५ । ८ । ८ हो हैं ऐसैं प्रथम गुणहानिके धन अर ऋण जानने । बहुरि इहां प्रथम गुणहानिका धन ऐसा

६

६३०० । ८ तामैं अंत गुणहानिका धन ऐसा १०० । ८ घटाएं अवशेष ऐसा ६२०० । ८ ताका आधा ऐसा ३१०० । ८ द्वितीय गुणहानिका धन जानना ।

ऐसैं ही सर्व ऊपरि भी सर्व गुणहानिनिके धन जानने ते ऐसे १०० । ८ इहां एक एक गुणहानिका धन

३०० । ८

७०० । ८

१५०० । ८

३१०० । ८

६३०० । ८

विषैं चरम गुणहानिका धन मात्र ऋण ऐसा १०० । ८ मिलाएं अर दोय करि संभेदन कीएं

१३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा धन हो है १०० ।८।२ इहां अंतधणं गुणगुणियं इत्यादि सूत्रकरि अंत धन ऐसा ३२०० ।८।२ ताकौं

२०० ।८।२

४०० ।८।२

८०० ।८।२

१६०० ।८।२

३२०० ।८।२

गुणकार दोय करि गुणें ऐसा ६४०० ।८।२ यामैं आदि ऐसा १०० ।८।२ घटाएं सर्व गुणहानिके धनका जोड ऐसा भया ६३०० ।८।२ बहुरि द्वितीयादि गुणहानिका ऋण भी क्रमतैं आधा आधा है सो ऐसा है। —

२— १ ⌒

१ ।८।५।८।८

२— ६ १ ⌒

२ ।८।५।८।८

२— ६ १ ⌒

४ ।८।५।८।८

२— ६ १ ⌒

८ ।८।५।८।८

२— ६ १ ⌒

१६ ।८।५।८।८

२— ६ १ ⌒

३२ ।८।५।८।८

६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां गुण्य आधा आधा कीया है सो ' अंतधणं गुणगुणियं , इत्यादि सूत्रकरि इहां अंत धन ऐसा

  २— १ ⌒
३२ । ८ । ५ । ८ । ८ गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा ६४ । ८ । ५ । ८ । ८ यामें आदि ऐसा
      ६

  २— १ ⌒
१ । ८ । ५ । ८ । ८ घटावनेकों चौंसठि गुण्य विषें एक गुण्य घटाएं समस्त गुणहानिका ऋण ऐसा
      ६

  २— १ ⌒
६३ । ८ । ५ । ८ । ८ हो है बहुरि पीछैं छहो गुणहानिनि विषें मिलाया हुआ दूसरा गुण्य ऐसा १०० । ८ याका
      ६

१०० । ८
१०० । ८
१०० । ८
१०० । ८
१०० । ८

जोड़ नाना गुणहानि गुणित अंत गुणहानिका धन मात्र ऐसा १०० । ८ । ६ । ऐसें ए तीनों राशि ऐसे

धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
६३०० । ८ । २	२— १ ⌒ ६३ । ८ । ५ । ८ । ८ ६	१०० । ८ । ६

इहां उत्कृष्ट समय प्रबद्ध प्रमाण शलाकाकरि हानिकों तरेसाठिसै का भाग दीएं ऐसे—

धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
६३०० । ८ । २ ६३००	२— १ — ६३ । ८ । ५ । ८ । ८ ६३०० । ६	१०० । ८ । ६ ६३००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपवर्तन कीएं ऐसे

धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
स ३ । ८ । २	२– १ – स ३ । ८ । ५ । ८ । ८ / १०० । ६	स ३ । ८ । ६ / ६३

भए।

इहां प्रथम ऋण विषैं सौका भागहार था ताकौं एक आधिक तिगुणा गुणहानिकरि संभेदन कीएं सौकी जायगा एक आधिक तिगुणा गुणहानि ऐसा ८।३ (१–) ताका प्रमाण पचीस ताके आगे च्यारिका गुणकार भया। इस च्यारि करि अगिला छहकौं गुणै तीन गुणहानि मात्र प्रमाण भया ऐसैं करतैं ऐसा स ३ । ८ । ५ । ८ । ८ (२– १ –) / ८ । ३ । ८ । ३ (१–) भया। इहां गुणहानि ऐसा ८ ताका अपवर्तन कीएं प्रथम ऋण ऐसा भया स ३ । ८ । ५ । ८ (२– १ –) / ८ । ३ । ३ (२–) बहुरि इहां आठका गुणकार ऊपरि एक घाटि तिस करि गुणित ऋणके ऋणका प्रमाणकौं अर अवशेषकौं जुदा जुदा स्थापैं दोऊ राशि ऐसे

ऋण राशि	ऋणका ऋणराशि
२– स ३ । ८ । ५ । ८ / १– ८ । ३ । २	२— स ३ । ८ । ५ / १– ८ । ३ । ३

बहुरि इन दोऊ राशिनि विषैं पंच गुणहानि मात्र गुणकारके ऊपरि जो दोय आधिक था ताकरि गुणित प्रमाण जुदा नीचैं स्थापैं अवशेषकौं ऊपरि स्थापैं ऐसा हो है—

ऋण राशि	ऋणका ऋण
स ३ । ८ । ५ । ८ / १– ८ । ३ । ३	स ३ । ८ । ५ / १– ८ । ३ । ३
ऋणका धन	**ऋणके ऋणका धन**
स ३ । २ । ८ / १– ८ । ३ । ३	स ३ । २ / १– ८ । ३ । ३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इहां प्रथम ऋणके धनकौं ऊपरि गुणकारनिकौं नीचैं भागहारनिकौं तीनकरि गुणैं ऐसा हो है—
स a । ६ । ८ इहां छहविषैं पांच रूप ऐसे स a । ५ । ८ इनकौं अपने ऊपरिका ऋणराशिविषैं जोडिए सो ऊपरि-
१—　　　　　　　　　　　　　　　　　१—
८ । ३ । ३ । ३　　　　　　　　　　　　　८ । ३ । ३ । ३
के ऋणकौं तीनकरि ऊपरि नीचै गुणैं ऐसा स a । ८ । ३ । ५ । ८ हो है सो याकैं अर वाकैं अन्य समानता देखि
१—
८ । ३ । ३ । ३ ।
तिगुणा गुणहानि ऐसा ८ । ३ ताके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा स a । ८ । ३ । ५ । ८ भया इहां
१—　　१—
८ । ३ । ३ । ३
एक अधिक तीन गुणहानि ऐसा ८ । ३ ताका अपवर्तन कीएं अर भागहारविषैं दोय जे तीनके अंक तिनकौं
परस्पर गुणैं ऐसा हो है स a । ८ । ५ बहुरि ऋणके धनका छह रूपनिविषैं पांच तौ ऋणराशिविषै जोडे अर
९
एक अवशेष रह्या सो ऐसा स a । ८ । १ सो याकौं ऋणका ऋणविषैं घटाइए है सो ऋणका ऋणकौं ऊपरि
१—
८ । ३ । ३ । ३
नीचैं तीनकरि गुणैं ऐसा भया स a । ८ । १५ यामैं अन्य समान देखि गुणकार पंद्रहविषैं एक घटाएं ऐसा भया
१—
८ । ३ । ३ । ३
१—
स a । ८ । १५ बहुरि याकौं ऊपरि नीचैं तीनकरि गुणैं ऐसा स a । ८ । ३ । १४ यामैं ऋणके ऋणका धनकौं
१—　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　१—
८ । ३ । ३ । ३　　　　　　　　　　　　　　८ । ३ । ३ । ३ । ३
ऊपरि नीचैं नवकरि गुणैं ऐसा स a । १८ याके अठारह रूपनिविषैं चौदह रूप ऐसे स a । १४ ऋणका ऋण-　९१
१—　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　१—
८ । ३ । ३ । ९　　　　　　　　　　　　　　८ । ३ । ३ । ९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैं जोड़ने सो अन्य समान देखि तिगुणा गुणहानिके ऊपरि एक अधिक करना तब ऋणका ऋण ऐसा भया
१—
स ३ । ८ । ३ । १४ इहां एक अधिक तिगुणा गुणहानिकौं समान देखि अपवर्तन कीएं ऐसा स ३ । १४ बहुरि इहां
१—
८ । ३ । ३ । ३ । ३ ३ । ३ । ३
ऊपरि तौ चौदह अर नीचैं तीन तीयानिकौं परस्पर गुणैं सत्ताईस होइ अर चौदहकरि अपवर्तन अठाईस होतैं होइ
सो इहां एक घाटिकौं न गिणि चौदह करि अपवर्तन कीएं आधा समय प्रबद्ध प्रमाण भया स ३ बहुरि अठारह
२
रूपनिविषैं चौदह रूप तौ जोडे अवशेष च्यारि रूप रहे ते ऐसे स ३ । ४ सो याका प्रमाण समयप्रबद्धके असं-
१—
८ । ३ । ३ । ६
ख्यातवे भागमात्र है ताके मिलावनेकौं किंचित अधिककी ऊपरि ऐसी । संदृष्टि कीएं ऋणका ऋणराशि ऐसा
।
हो है स ३ । याकौं द्वितीय ऋण एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तकरि भाजित अर गुणहानिकरि गुणित समय
२
प्रबद्धमात्र अंक संदृष्टिकरि ऐसा स ३ । ८ । ६ अर्थ संदृष्टि करि ऐसा स ३ प ०१ । छे व छे तामैं घटाइ अपवर्तन
६३ १—
छे व छे प
३
कीएं अवशेष किंचित् ऊन संख्यातपल्यकी वर्गशलाका गुणित समय प्रबद्धप्रमाण द्वितीय ऋण रहै है । बहुरि
प्रथम ऋण ऐसा स ३ । ८ । ५ रह्या था ताकौं संदृष्टिके अर्थि ऊपरि नीचै दोयकरि गुणैं ऐसा स ३ । ८ । १०
९ १८
इहां दश रूपनिविषैं एक रूप ऐसा स ३ । ८ । १ ताकौं जुदा राखैं अवशेष ऐसा स ३ । ८ । ९ ताका नवकरि
१८ १८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपवर्तन कीएं आधा गुणहानि ऐसा ९/२ ताकरि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण ऋण ऐसा हो है स a । ९/२ याकौं दोगुणहानिकरि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण जो धनराशि ऐसा स a । ८ । २ था तामैं घटाएं ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण ऐसा स a । ८ । ३/२ भया बहुरि यामैं जुदा राख्या था गुणहानि गुणित समय प्रबद्धका अठारह्वां भाग ऐसा स a । ८ । १/१८ तामैं द्वितीय ऋण किंचित् ऊन संख्यात वर्गशलाका गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण ऐसा स a व ७ृ मिलावनेकौं किंचित् अधिककी ऊपरि संदृष्टि कीएं ऐसा भया स a । ८/१८ ताके घटावनेकौं समय प्रबद्धका ड्योढ गुणहानिमात्र गुणकार ऐसा १२ ताके आगें किंचिद् ऊनकी ऐसी– संदृष्टि कीएं त्रिकोण यंत्रका जोडमात्र सत्त्व द्रव्यका प्रमाण ऐसा स a । १२ – हो है अब अधिक अधिक संकलन अपेक्षा त्रिकोण यंत्रका जोड कहिए है––

तहां त्रिकोण यंत्रविषैं ऊपरितैं लगाय आठ पंक्ति पर्यंत अन्त गुणहानि है। तहां ऊपरिकी पंक्तिविषैं एक अन्त हीका निषेक ऐसा ९ है ताके नीचैं पंक्तिविषैं अन्तके दोय निषेक ऐसे ९ । १० ताके नीचैं पंक्तिविषैं अंतके तीन निषेक ऐसे हैं । ९ । १० । ११ ऐसैं एक एक निषेक बधतैं तहां ऊपरितैं आठईं पंक्तिरूप अन्त गुणहानिका नाना समय सम्बन्धी प्रथम निषेक तामैं गुणहानिमात्र निषेक ऐसे ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ पाईए है इहां अन्त निषेक समान सर्व निषेकनिकौं जुदे स्थापिए अर निषेकनि विषैं संभवते अन्त गुणहानिके चय जुदे स्थापिए तब ऐसे

६	१	१	०
६	२	१	१
६	३	१	३
६	४	१	६
६	५	१	१०
६	६	१	१५
६	७	१	२१
६	८	१	२८

भए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां ऊपरिकी पंक्तिविषैं एक नवका ही निषेक है सो लिख्या चयका अभाव है। बहुरि ताके नीचे दोय निषेक हैं तातैं दोय अंत निषेक लिखि आगैं द्विचरम निषेकविषैं एक चय बधता है सो लिख्या। बहुरि ताके नीचे तीन निषेक हैं तातैं तीन अंत निषेक लिखे अर आगैं द्विचरम निषेकविषैं एक त्रिचरमविषैं दोय ऐसे तीन चय बधती हैं तातैं तीन चय लिखे ऐसैं ही सर्व जानने। इहां चयका प्रमाण एक जानना। अंत निषेकका प्रमाण नव जानना। ताके आगैं गुणकार जानने। इनि दोऊ पंक्तिनिका जोड देना सो प्रथम पंक्तिका जोड तौ गच्छका एकवार संकलनमात्र चरमनिषेक प्रमाण भया सो गच्छ इहां गुणहानिमात्र आठ तातैं संकलन सूत्रकरि गच्छ अर एक अ-

१—

धिक गच्छकौं दोय अर एकका भाग देइ ताकरि अंतनिषेक एक अधिक गुणहानि आठमात्र ऐसा ८ ताकौं गुणैं

१— १—

प्रथम पंक्तिका जोड ऐसा हो है ९ । ८ । ८ बहुरि दूसरी पंक्तिका जोड एक घाटि गच्छका दोयवार संकलनमात्र

२ । १

चय प्रमाण है सो संकलन सूत्रकरि एकघाटि गच्छ संपूर्ण गच्छ एक अधिक गच्छकौं क्रमतैं तीन दोय एकका

१ ⌒ १—

भाग देइ ताकरि चय ऐसा १ ताकौं गुणैं द्वितीय पंक्तिका जोड ऐसा १ । ८ । ८ । ८ अब इनि दोऊ पंक्तिनिके

३ । २ । १

१— १—

जोडकौं मिलावना सो तीनकरि समच्छेद कीया हूवा प्रथम पंक्तिका जोड ऐसा ९ ८ ८ ३ याकैं अर दूसरी पंक्तिका

३ । २ । १

१— १ ⌒

जोडकैं अन्य समान देखि ऐसा ८ । ३ गुणकारविषैं ऐसा ८ मिलाया तब दोयकरि अधिक च्यारि गुणहानिमात्र गुणकार भया जातैं एक अधिक आठका तिगुणा सत्ताईस तामैं एक घाटि आठ मिलाएं चौतीस भया सोई दोय अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२—
चौगुणा आठका प्रमाण है ऐसैं दोयकरि अधिक च्यारिगुणहानि ऐसा ८ । ४ ताकरि गुणित गुणहानि प्रमाण गच्छका
१— १— २—
संकलन ऐसा ८ । ८ ताकौं तीनका भाग दीएं ऐसा ८ । ८ । ८ । ४ । १ अंत गुणहानि संबंधी आदि धन भया
२ । १ ६
उत्तर धन इहां है नाहीं । बहुरि ताके नीचै आठ पंक्तिरूप द्विचरम गुणहानि तीहिविषैं जे अंत गुणहानिकी ऊपरितैं आठई पंक्तिरूप प्रथम निषेकविषैं जे नवक आदि सोलहका निषेक पर्यंत निषेक कहे ते तौ जुदे जुदे सर्व पंक्तिनिविषैं पाइए अर अंत गुणहानिकी अंत पंक्ति आदि देकरि पंक्तिनिविषैं जे निषेक कहे तिनतैं दूणे प्रमाण लीएं निषेक याकी अंतपंक्ति आदि देकरि पंक्तिनिविषैं अधिक पाइए ते अधिक निषेकनिविषैं द्विचरम गुणहानिका अंतनिषेक समान सर्व निषेक जुदे स्थापैं अर तहां बधर्ता द्विचरम गुणहानिके चय जुदे स्थापैं अंत गुणहानितैं दूणा प्रमाण लीए दोऊ पंक्ति ऐसी हो हैं—

	१	३	६	१०	१५	२१	२८
	—	—	—	—	—	—	—
०	२	२	२	२	२	२	२
१	२	३	४	५	६	७	८
—	—	—	—	—	—	—	—
२	२	२	२	२	२	२	२
—	—	—	—	—	—	—	—
१	१	१	१	१	१	१	१

इनके जोड़ अन्त गुणहानिकी दोऊ पंक्तिनिके जोडतैं दूणे ऐसे हो हैं प्रथम पंक्तिजोड़ | द्वितीय पंक्ति जोड़

प्रथम पंक्तिजोड़	द्वितीय पंक्ति जोड़
१— १—	१_ १—
८ । २ । ८ । ८	२ । ८ ८ ८
२ । १	३ २ १

इनि दोऊनिकौं पूर्वोक्त प्रकार जोडें अन्त गुणहानिका आदि धनतैं दूणा इस उपांत गुणहानिका आदि धन ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भया ८। ८। ८। ४। २ बहुरि अन्त गुणहानिकी आदिपंक्तिका जोड़ ऐसा १०० ताका सर्व पंक्तिनिविषैं सद्भाव जानि आठकरि गुणें उपांत गुणहानिविषैं उत्तर धन ऐसा १००। ८ हो है। बहुरि ताके नीचैं आठ पंक्तिरूप त्रिचरम गुणहानि तहां द्विचरम गुणहानिकी आदि पंक्तिके तौ सर्व निषेक सर्व पंक्तिनिविषै पाइए अन्त पंक्ति आदि देकरि पंक्तिनिविषैं द्विचरम गुणहानिके निषेकनितैं दूणा प्रमाण लीएं एक दोय आदि अधिक निषेक पाइए तातैं तहां आदिधन द्विचरम गुणहानिके आदि धनतैं दूणां अर उत्तरधन उपांत गुणहानिकी आदि पंक्तिके निषेकनिका जोडतैं आठगुणा ऐसा जानना ३००। ८ ऐसैं ही चतुश्चरमादि गुणहानिनिविषैं आदि धन दूणा दूणा उत्तरधन अपना अन्त पक्तितैं ऊपरकी पंक्तिके जोडतैं आठगुणा ऐसे जानने।

नाम	आदि धन	उत्तर धन
अंत गुणहानि	१– २— ८। ८। ८। ४। १ ६	०
पंचम गुणहानि	१– २– ८। ८। ८। ४। २ ६	१००। ८
चतुर्थ गुणहानि	१– २– ८। ८। ८। ४। ४ ६	३००। ८
तृतीय गुणहानि	१– २– ८। ८। ८। ४। ८ ६	७००। ८
द्वितीय गुणहानि	१– २– ८। ८। ८। ४। १६ ६	१५००। ८
प्रथम गुणहानि	१– २– ८। ८। ८। ४। ३२ ६	३१००। ८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां सर्व गुणहानिनिके आदि धनकौं जोडिए है अन्तधन ऐसा ८ । ८ । ८/६ । ४ । ३२ (१—, २—) याकौं गुणकार दोय करि गुणें ऐसा ८ । ८ । ८/६ । ४ । ६४ (१—, २—) यामैं आदि ऐसा ८ । ८ । ८/६ । ४ । १ (१—, २—) घटाएं सर्व गुणहानिनिके आदि धनका जोड ऐसा ८ । ८ । ८/६ । ४ । ६३ (१—, २—) भया बहुरि उत्तर धनविषैं सर्वत्र द्विचरम गुणहानिका उत्तरधन ऐसा १०० । ८ ताहिं प्रमाण ऋण छहौ जायगा मिलाएं ऐसा

१०० । ८
२०० । ८
४०० । ८
८०० । ८
१६०० । ८
३२०० । ८

भया ।

इहां अंत धन ऐसा ३२०० । ८ गुणकार दोय करि गुणे ऐसा ६४०० । ८ यामैं आदि ऐसा १०० । ८ घटाएं उत्तर धन ऐसा ६३०० । ८ भया बहुरि इस उत्तर धन विषैं मिलाया हूवा ऋण ऐसा १०० । ८ ताकौं नाना गुण हानि प्रमाण छह जायगा मिलाया तातैं ताका जोड नाना गुणहानि गुणित द्विचरम गुणहानिका उत्तर धन मात्र ऐसा १०० । ८ । ६ भया ऐसैं ए तीनौं राशि ऐसे भए

आदि धन	उत्तर धन	ऋण
८, ८, ८/६, ४, ६३ (१—, २—)	६३००, ८	१००, ८, ६

इहां समय प्रबद्ध शलाका ल्यावनेकौं तरेसाठिसैका भाग देइ अपवर्तन कीएं ए तीनौं राशि ऐसे भए—

आदि धन	उत्तर धन	ऋण
स ∂ ८, ८, ८, ४ / १००, ६ (१—, २—)	स ∂ ८	स ∂, ८, ६ / ६३

बहुरि इहां आदि धनका भागहार विषैं सौका भागहार था तहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संभदन करि एक अधिक तिगुणा गुणहानिके आगैं च्यारिका गुणकार करिए बहुरि इस च्यारिका गुणकार करि आगैं छहका गुणकार था ताकौं गुणे तीन गुणहानि भया सो लिखिए अर गुणकार भागहारविषैं गुणहा-

२– १–

निका अपवर्तन करिए तब आदि धन ऐसा भया स a ; ८ , ४ , ८ बहुरि इहां ऐसा ८ गुणकारकरि ऊपरि एक

१–

८ , ३ , ३

अधिक था ताके प्रमाणकौं जुदा आगे स्थापिए अवशेषकौं जुदा पाहिले स्थापिए तब दोऊ राशि ऐसे भए–

आदि धन आदि धनका धन । बहुरि इहां दोऊ राशिनिविषैं ऐसे ८ । ४ गुणकारके ऊपरि दोय अधिक हैं तिन

२– २–

स a ८ , ४ , ८ स a । ८ , ४

१– १–

८ , ३ , ३ ८ , ३ , ३

के प्रमाणकौं नीचैं स्थापैं अवशेषकौं ऊपरि स्थापैं ऐसैं हो है–

आदि धन	आदि धनका धन
स a । ८ । ४ । ८ । १– ८ । ३ । ३	स a । ८ । ४ १– ८ । ३ । ३
पहिले द्विकका धन	दूसरे द्विकका धन
स a । २ । ८ १– ८ । ३ । ३	स a । २ १– ८ । ३ । ३

इहां पहिले द्विकका धनकौं ऊपरि नीचैं तीनकरि गुणैं ऐसा स a । ६ । ८ याके छह रूपनिविषैं च्यारि

१–

८ । ३ । ३ । ३ ।

रूप ऐसे स a । ४ । ८ तिनकौं ऊपरिका आदिधन विषैं मिलावना सो आदिधनकौं ऊपरि नीचैं तीनकरि गुणैं १००

१–

८ । ३ । ३ । ३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा स a । ८ । ३ । ४ । ८ याकैं अर वाकैं अन्य समान देखि ऐसे ८ । ३ गुणकार ऊपरि एक अधिक करिए
१—
८ । ३ । ३ । ३
१— १—
तब ऐसा स a । ८ । ३ । ४ । ८ इहां ऐसेका ८ । ३ अपवर्तन कीएं अर भागहार दोय तीयानिकौं परस्पर
१—
८ । ३ । ३ । ३
गुणें आदि धन ऐसा हो है स a ४ ८ बहुरि दूसरे द्विकका धनकौं ऊपरि नीचैं तीनकरि गुणें ऐसा
६
स a । ६ इहां छह रूपनिविषैं च्यारि रूप ऐसे स a । ४ तिनकौं तीनकरि ऊपरि नीचैं गुण्या हुवा आदि धनका
१— १—
८ । ३ । ३ । ३ ८ । ३
धन ऐसा स a । ८ । ३ । ४ तामैं जोडना सो अन्य समानता देखि तिगुणा गुणहानि ऐसा ८ । ३ ताके ऊपरि एक
१—
८ । ३ । ३ । ३ । १—
अधिक करैं ऐसा हो है स a । ८ । ३ । ४ इहां एक अधिक तिगुणा गुणहानिका अपवर्तन करिए अर भागहारके
१—
८ । ३ । ३ । ३
दोय जे तीनके अंक तिनकौं परस्पर गुणिए तब आदि धनका धन ऐसा भया स a । ४ बहुरि पहिले द्विकका
९
धनविषैं अवशेष रहे दोयरूप ऐसे स a । २ । ८ याविषैं दूसरे द्विकके अवशेष रहे दोय रूप ऐसे स a । २ मिला-
१— १—
८ । ३ । ९ ८ । ३ । ९
वनेकौं किंचित् अधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा स a । ८ याकौं आदि धनका ऐसा स a । ४ तामैं जोड़ि अपवर्तन
१— ९
८ । ३ । ९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीएं किंचिदून आधा समय प्रबद्ध ऐसा स a । १– /२ भया याकौं ऋणराशि ऐसा स a । ८ । ६ /६३ । सो यहु संख्यात वर्ग शलाकामात्र समय प्रबद्ध प्रमाण है तामैं घटावनेकौं किंचित् ऊनकी आगैं संदृष्टि कीएं ऋणराशि ऐसा व ७–भया । बहुरि पूर्वोक्त आदि धन ऐसा स a । ४ । ८ /९ रह्या ताकौं उत्तर धन ऐसा स a । ८ तामैं जोडिए सो उत्तरधनकौं नवकरि समच्छेद कीएं ऐसा स a । ९ । ८ /९ सो याकैं अर वाकैं अन्य समानता देखि वाके च्यारि रूपनिविषैं याके नव रूप जोडैं ऐसा स a । ८ । १३ /९ भया । बहुरि इहां संदृष्टिके अर्थि गुणहानि गुणित समय प्रबद्धका अठारह्वां भाग ऐसा स a । ८ /१८ ऋण मिलावना सो तिस राशिकौं दोयकरि ऊपरि नीचैं गुणैं ऐसा स a । ८ । २६ /१८ याकैं अर मिलावने योग्य ऋणकैं अन्य समान देखि आगिला छब्बीसका गुणकारमें एक जोडैं ऐसा भया स a । ८ । २७ /१८ इहां नवकरि अपवर्तन कीएं ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध ऐसा स a । ८ । ३ /२ भया बहुरि यामैं प्रथम ऋण किंचिदून संख्यात वर्गशलाका गुणित समय प्रबद्धमात्र ताकरि अधिक गुणहानि गुणित समय प्रबद्धका अठारह्वां भागमात्र द्वितीय ऋण घटावनेकौं ड्योढ गुणहानिका गुणकारविषैं किंचिदूनकी संदृष्टि कीएं अर ड्योढकरि गुणित आठका प्रमाण बारह कीएं किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र सत्त्व ऐसा स a १२– हो है । अब अनुलोम विलोम अपेक्षा त्रिकोण यन्त्रका जोड़ कहिए है—

तहां त्रिकोण रचनाविषैं प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक एक पाइए है ५१२ । १ दूसरे निषेक दोय हैं— ४८० । २ तीसरे निषेक तीन हैं ४८० । ३ ऐसैं ही एक एक अधिक क्रमकरि अन्त निषेक गुणहानि मात्र २८८ । ८ पाइए हैं यहु प्रथम पंक्ति भई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बहुरि दूसरी गुणहानिके प्रथम निषेक एक अधिक एक गुणहानिमात्र है $\overset{१—}{२५६}$ । ८ दूसरे निषेक दोय अ-धिक गुणहानिमात्र हैं $\overset{२—}{२४०}$ । ८ ऐसैं ही एक एक अधिक होइ अंत निषेक दूणा गुणहानिमात्र है १४४ । ८ । २ यहु दूसरी पंक्ति भई । बहुरि यातैं एक एक अधिककरि तृतीय पंक्तिविषें निषेक हो है । ऐसैं ही चतुर्थादि पंक्ति जाननी जेथवां निषेक होइ तितने प्रमाण ते निषेक जानने तिनकी रचना ।

२८८ । ८	१४४ । $८^{८}_{७}$	७२ । $८^{८}_{७}$ २	३६ । $८^{८}_{७}$ ३	१८ । $८^{८}_{७}$ ४	९ । $८^{८}_{७}$ ५
३२० । ७	१६० । $८_{६}$	८० । $८_{६}$ २	४० । $८_{६}$ ३	२० । $८_{६}$ ४	१० । $८_{६}$ ५
३५२ । ६	१७६ । $८_{५}$	८८ । $८_{५}$ २	४४ । $८_{५}$ ३	२२ । $८_{५}$ ४	११ । $८_{५}$ ५
३८४ । ५	१९२ । $८_{४}$	९६ । $८_{४}$ २	४८ । $८_{४}$ ३	२४ । $८_{४}$ ४	१२ । $८_{४}$ ५
४१६ । ४	२०८ । $८_{३}$	१०४ । $८_{३}$ २	५२ । $८_{३}$ ३	२६ । $८_{३}$ ४	१३ । $८_{३}$ ५
४४८ । ३	२२४ । $८_{२}$	११२ । $८_{२}$ २	५६ । $८_{२}$ ३	२८ । $८_{२}$ ४	१४ । $८_{२}$ ५
४८० । २	२४० । $८_{१}$	१२० । $८_{१}$ २	६० । $८_{१}$ ३	३० । $८_{१}$ ४	१५ । $८_{१}$ ५
५१२ । १	२५६ । ८	१२८ । ८ २	६४ । ८ ३	३२ । ८ ४	१६ । ८ ५

बहुरि इहां प्रथम पंक्तिविषैं जे निषेक कहे तिनविषैं द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा २५६ तातैं अधिक

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जेते जेते अपने चय ऐसे ३२ पाईए तिनकौं जुदे ऐसे लिखिए—

३२	१	८
३२	२	७
३२	३	६
३२	४	५
३२	५	४
३२	६	३
३२	७	२
३२	८	१

इहां नीचैं पांचसै बारहका निषेकविषै दोय सै छप्पनका निषेकनैं बत्तीस प्रमाण लीएं अपने आठ चय बधती हैं अर सो निषेक एक ही है तातैं एक गुणे आठ चय लिखे ताके ऊपरि च्यारिसै असीका निषेकविषैं सात चय बधती है अर ते निषेक दोय हैं तातैं दुगुणे सात चय लिखे ताके ऊपरि च्यारिसै अठतालीसका निषेक विषै छह चय बधती हैं अर ते निषेक तीन पाइए है तातै तिगुणे छह चय लिखे ऐसैं ही ऊपरि भी रचना जाननी। बहुरि चय के आगें गुणकार है तिनकौं परस्पर गुणैं ऐसा हो है।

३२	८
३२	१४
३२	१८
३२	२०
३२	२०
३२	१८
३२	१४
३२	८

बहुरि इनिकौं अधिक हीनकरि स्थापैं एक चय गच्छ जो गुणहानिमात्र आठ ताका दोयवार संकलनमात्र ऐसे हो

३२	३६
३२	२८
३२	२१
३२	१५
३२	१०
३२	६
३२	३
३२	१

है इनिकौं संकलन सूत्रकरि जोडैं संम्पूर्ण गच्छ एक अधिक गच्छ दोय अधिक गच्छकौं क्रमतैं तीन दोय एकका भाग देइ ताकरि चयकौं गुणैं ऐसा हो है

१- २-
३२।८।८।८।
३।२।१

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इन चयनिकौं घटाएं अवशेष सर्व निषेक द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेक प्रमाण लीएं ऐसे रहे २५६ । ८ इनिकौं

२५६ । ७
२५६ । ६
२५६ । ५
२५६ । ४
२५६ । ३
२५६ । २
२५६ । १

जोडैं गच्छका एकवार संकलनमात्र द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक प्रमाण भया । सो संकलनसूत्र अपेक्षा संपूर्ण गच्छ एक अधिक गच्छकौं दोय एकका भाग देइ ताकरि द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेककौं गुणैं जोड ऐसा भया

२५६ । ८ । ८ (१—, २ । १) बहुरि याकौ तीनकरि समच्छेद कीएं अर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेककौं गुणहानि आठ करि संभेदन कीएं दोयसै छप्पनकी जायगा आठ गुणा बत्तीस भएं ऐसा ३२ । ८ । ८ । ८ । ३ (१—, ३ । २ । १) सो याकैं अर चय जोडकैं अन्य समानता देखि गुणकार रूप याका तिगुणा गुणहानिविषैं वाका दोय अधिक एक गुणहानि मिलाएं दोय अधिक च्यारि गुणहानिमात्र गुणकार भया तब चय जोड निषेक जोडकौं मिलाएं ऐसा प्रमाण भया—

३२ । ८ । ४ । ८ । ८ (२—, १—, ६) बहुरि दूसरी पंक्तिविषैं अपने निषेकनिके आगैं जो आठका गुणकार है ताकौं जुदा राखि तहां जे एक दोय आदि अधिक गुणकार हैं तिन अधिक गुणकारनिकरि गुणे हुए निषेक स्थापिए तब ऐसे हो हैं १४४ । ८ इनविषै पूर्वोक्तप्रकार तृतीय गुणहानिका प्रथम निषेक मात्र प्रमाण लीएं सर्व निषेक जुदे स्थापे अर

१६० । ७
१७६ । ६
१९२ । ५
२०८ । ४
२२४ । ३
२४० । २
२५६ । १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अवशेष अपने चयनिकौं जुदे स्थापे ऐसे हो हैं—

निषेक।	जुदे स्थापे चय।	गुणकार मिलाए ऐसे।	हीनाधिककरि गच्छकौं दोयबार संकलन कीए हुए चय।
१२८ । ८	१६ । ८ । १	१६ । ८	१६ । ३६
१२८ । ७	१६ । ७ । २	१६ । १४	१६ । २८
१२८ । ६	१६ । ६ । ३	१६ । १८	१६ । २१
१२८ । ५	१६ । ५ । ४	१६ । २०	१६ । १५
१२८ । ४	१६ । ४ । ५	१६ । २०	१६ । १०
१२८ । ३	१६ । ३ । ६	१६ । १८	१६ । ६
१२८ । २	१६ । २ । ७	१६ । १५	१६ । ३
१२८ । १	१६ । १ । ८	१६ । ८	१६ । १

इहां निषेक वा चयका प्रमाण प्रथम गुणहानितैं आधा जानना। बहुरि इहां पूर्वोक्त प्रकार चय वा निषेकनिका जोड दीएं पूर्वोक्ततैं आधा प्रमाण रूप दोऊनिके जोड़ ऐसे हो हैं— निषेक जोड़ चय जोड़

१—   १— २—
१२८।८। ८   १६। ८ ।८। ८
२।१   ३ २ १

बहुरि इनि दोऊनिकौं पूर्वोक्त प्रकार मिलाएं प्रथम गुणहानिके आधा द्वितीय गुणहानिका आदि धन ऐसा भया

२—   १—
१६ । ८ । ४ । ८ । ८ बहुरि इहां द्वितीय पंक्तिविषैं आठ गुणकार लीएं सर्व निषेक ऐसे १४४ । ८ इनिविषैं पूर्वोक्त
६

१४४ । ८
१६० । ८
१७६ । ८
१९२ । ८
२०८ । ८
२२४ । ८
२४० । ८
२५६ । ८

प्रकार तृतीय गुणहानिका प्रथम निषेक मात्र प्रमाण लीएं सर्व निषेक जुदे स्थापैं अर अवशेष अपने बधती चय- १०६

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका प्रमाण जुदा स्थापै ऐसे हो हैं—

निषेक	अधिक चय	इनिविषैं चयनिका जोड
१२८ । ८	१६ । ८ । १	
१२८ । ८	१६ । ८ । २	
१२८ । ८	१६ । ८ । ३	
१२८ । ८	१६ । ८ । ४	
१२८ । ८	१६ । ८ । ५	
१२८ । ८	१६ । ८ । ६	
१२८ । ८	१६ । ८ । ७	
१२८ । ८	१६ । ८ । ८	

तौ गुणहानिमात्र गच्छका संकलन ऐसा ८ । ८ (१— / २ । १) ताकरि गुणित गुणहानि गुणा अपना चय प्रमाण ऐसा हो है १६ । ८ । ८ । ८ (१— / २ । १) अर निषेकनिका जोड गुणहानिका वर्ग ऐसा ८ । ८ ताकरि गुणित तृतीय गुणहानिका प्रथम निषेकमात्र ऐसा १२८ । ८ । ८ हो है। बहुरि इहां तृतीय गुणहानिका प्रथम निषेककौं गुणहानि आठकरि संभेदन कीएं अर राशिकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा भया १६ । ८ । ८ । ८ । २ (२) याकैं अर चय जोड़कैं अन्य समानता देखि आगिला गुणकार दूणा गुणहानि ऐसा ८ । २ तामैं वाका गुणकार एक अधिक एक गुणहानि ऐसा ८ (१—) मिलाएं एक अधिक तिगुणा गुणहानिका गुणकार भया तब दोऊनिका जोड़रूप द्वितीय पंक्तिका उत्तरधन ऐसा भया १६ । ८ । ८ । ८ । ३ (१— / २) ऐसैं ही तृतीयादि पंक्तिनिके आदि धन उत्तर धन क्रमतैं आधे आधे जानने। विशेष इतना जो उत्तर धनकौं जेथई गुणहानि होइ तीहि प्रमाणतैं एक घाटि प्रमाणकरि गुणन करना इनकी संदृष्टि ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	आदिधन	उत्तर धन
अन्त गुणहानि	२— १— १ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	१— १ । ५ । ८ । ८ । ८ । ३ २
पंचम गुणहानि	२— १— २ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	१— २ । ४ । ८ । ८ । ८ । ३ २
चतुर्थ गुणहानि	२— १— ४ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	१— ४ । ३ । ८ । ८ । ८ । ३ २
तृतीय गुणहानि	२— १— ८ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	१— ८ । २ । ८ । ८ । ८ । ३ २
द्वितीय गुणहानि	२— १— १६ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	१— १६ । १ । ८ । ८ । ८ । ३ २
प्रथम गुणहानि	२— १— ३२ । ८ । ४ । ८ । ८ ६	०

बहुरि इहां आदि धनविषैं अन्तधन ऐसा ३२ । ८(२—) । ४(६) । ८ । ८(१—) ताकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा हो है । ६४ । ८(२—) । ४(६) । ८ । ८(१—) यामैं आदि ऐसा १ । ८(२—) । ४(६) । ८ । ८(१—) घटाएं सर्व गुणहानिनिके आदि धनका जोड ऐसा हो है ६३ । ८(२—) । ४(६) । ८ । ८(१—) बहुरि उत्तर धनविषैं जे एक आदि गुणकार कहे तिनकौं एक एक करि अपने २ गुण्य सहित आगैं आगैं स्थापने तहां प्रथम गुणहानिविषैं तौ उत्तर धनका अभाव है। बहुरि द्वितीय गुणहानिविषैं गुण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार एक ही था तातैं प्रथम पंक्तिविषैं एक ही जायगा ताका गुण्य ऐसा १६ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३ स्थापना। बहुरि तृतीय गुणहानिके गुणकार दोय थे तातैं प्रथम अर द्वितीय पंक्तिविषैं दोय जायगा तिनके गुणकार ऐसे स्थापने ८ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३ ऐसैं ही अन्त पर्यंत स्थापन कीएं ऐसे हो हैं—

अन्तगुणहानि	१ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०
पंचमगुणहानि	२ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	२ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	२ । ८ । ८ । $\overset{१—}{८}$ । ३	२ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०	०
चतुर्थगुणहानि	४ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	४ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	४ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०	०	०
तृतीयगुणहानि	८ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	८ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०	०	०	०
द्वितीयगुणहानि	१६ । ८ । $\frac{८}{२}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०	०	०	०	०
प्रथमगुणहानि	०	०	०	०	०	०

बहुरि 'अंतधणं गुणगुणियं' इत्यादि सूत्रकरि ऊर्ध्वरूप हानि पंक्तिनिका जोड दीएं क्रमतैं ऐसैं जोड हो हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमपंक्तिका जोड़	द्वितीयपंक्तिका जोड़	तृतीयपंक्तिका जोड़	चतुर्थपंक्तिका जोड़	पंचमपंक्तिका जोड़	षष्ठपंक्तिको जोड़
३१ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१५ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	७ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	३ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	०

बहुरि इनि छहौं जायगा जुदा जुदा इतना १ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३ ऋण मिलावना। तहां अन्य समान देखि पांचों जोडनिके गुण्यनिविषै एक एक अधिक कीएं अर छठी पंक्तिविषै ऋणमात्र प्रमाण लिखें छहौंराशि ऐसे—

३२ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१६ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	८ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	४ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	२ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३	१ । ८ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३

इनि छहौंका जोड दीएं ऐसा भया ६३ । ८ । $\underset{२ ।}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३ बहुरि इहां आठका अंक पहिलें लिख्या था ताकौं आगें स्थापै ऐसा ६३ । $\underset{२}{८}$ । $\overset{१—}{८}$ । ३ । ८ बहुरि एक अधिक तिगुणा गुणहानि ऐसा $\overset{१—}{८}$ । ३ ताका प्रमाण तौ पचीस भया अर तरेसठिके आगें जो आठका गुणकार था ताकौं दोयका भागहारकरि अपवर्तनकीएं तहां च्यारिका अंक भया। बहुरि पचीसकौं च्यारिकरि गुणें सौ भया ताकरि तरेसठिकौं गुणें तरेसाठिसै भए आगें आठका गुणकार रह्या तब ऐसा ६३०० । ८ राशि भया सो यहु अंकसंदृष्टिकरि गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण भया। बहुरि मिलाया था जो ऋण ताका प्रमाण ऐसा १ । ८ । ८ । $\underset{२}{\overset{१—}{८}}$ । ३ याकौं नानागुणहानि मात्र प्रमाण छह जायगा इतना इतना ऋण मिलाया तातैं याकौं छहकरि गुणें अर आठका अंक पहिले लिख्या था ताकौं आगें लिखें ऐसा— ११६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१।८।८।३।८।६ बहुरि इहां ऐसा १।८।८।३ अंकनिकौं परस्पर गुणें सौ भया। ताके आगें गुणकार लिखें ऋणराशि ऐसा १००।८।६ हो है बहुरि आदिधन ऐसा ६३।८।४।८।८ इन तीनौ राशिनिकौं समयप्रबद्ध शलाका करनेकौं तरेसठिसै तीनौ राशि ऐसे हो हैं

आदिधन	उत्तरधन	ऋण
२— १— स a।८।४।८।८। १००। ६	स a।८	स a।८।६ ६३

बहुरि इहांतैं आगै जैसैं अधिक संकलनविषै विधान कीया है तैसैं ही भी विधान कीएं किंचिदून द्व्यर्धगुणहानिगुणित समयप्रबद्धमात्र सत्त्व ऐसा हो है स a। १२— ऐसैं तीनप्रकारकरि त्रिकोणयंत्रके जोडका विधान कह्या।

बहुरि उत्कृष्ट संचयका कथनविषै सामान्योक्त यथासंभव संदृष्टि जाननी। अब जीवनिकी संख्याविषै संदृष्टि कहिए है—

वादरपर्याप्त तेजः कायिक अर वातकायिक बहुरि पंचेंद्री पर्याप्त तिर्यंच मनुष्य इनिका सामान्य प्रमाण पूर्वै कह्या तामैं वैक्रियिक शक्तियुक्त तेजः कायिक घनावली ≡ कौं दोयवार असंख्यात ८ का भाग दीजिए aa इतने हैं। वायुकायिक पल्यके असंख्यातवैं भाग मात्र है प/a पंचेंद्री तिर्यंच मनुष्य पल्यका असंख्यातवां भाग प/a करि गुणित घनांगुल ६ ताकरि गुणित जगच्छ्रेणि — मात्र हैं। तिनका यंत्र—

नाम	तेज	वायु	पंचेंद्री तिर्यंच मनुष्य
सामान्यराशि	८ / a	≡ / ७	= / ४ ५८६४ / ६५६१
विक्रियाशक्तियुक्त राशि	८ / aa	प / a	— ६ प / a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि त्रियोगी जीवराशि ऐसा ॥। ७।१ इहां तौ नारकी अर पर्याप्त संज्ञी तिर्यंच अर पर्याप्त मनुष्य इनि तीन
= ७
४।६५=१

राशि अधिककी संदृष्टि जाननी। बहुरि द्वियोगी जीवराशि ऐसा =४= तहां त्रस पर्याप्तराशिके आगैं त्रियोगी
५

राशि घटावनेकी संदृष्टि जाननी। बहुरि एक काययोगी जीवराशि ऐसा १३ = तहां संसारीविषैं त्रियोगी द्वियोगी राशि घटावनेकी आगैं संदृष्टि जाननी। बहुरि सत्य असत्य उभय अनुभय योगनिके काल ऐसे—

अनुभय	२ ७।	६४
उभय	२ ७।	१६
असत्य	२ ७।	४
सत्य	२ ७।	१

इहां सत्य मनोयोगका काल एक अंतर्मुहूर्तकी संदृष्टि ऐसी २ ७।१ ताकौं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिकरि क्रमतैं गुणें हैं तिनका जोड ऐसा २ ७।८५ इस जोडकौं क्रमतैं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिकरि गुणें सत्य असत्य उभय अनुभय वचनयोगके कालकी ऐसी संदृष्टि हो है—

अनुभय	२ ७	८५।	२५६
उभय	२ ७	८५।	६४
असत्य	२ ७	८५।	१६
सत्य	२ ७	८५।	४

इनिका जोड ऐसा २ ७।८५।३४० याकौं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिकरि गुणें काययोगका काल ऐसा— २ ७।८५।१३६० ऐसैं इनि तीनो योगका काल मिलाएं ऐसा २ ७।८५।१७०१ सो इनिका भाग त्रियोगी राशिकौं दीएं अर अपना अपना कालकरि गुणें सत्य मनोयोगी आदि जीवनिका प्रमाण आवै है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	मनोयोगी		वचनयोगी		काययोगी
सर्व	||| ॥ १ = ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१	सर्व	||| ॥ १ = ३४० ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१	सर्व	||| ॥ १ = १३४० ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१
अनुभय	||| ॥ १ = ६४ । ७ ४ । ६५ = । १ । ८५ । १७०१	अनुभय	||| ॥ १ = २५६ ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१		
उभय	||| ॥ १ = १६ । ७ ४ । ६५ = । १ । ८५ । १७०१	उभय	||| ॥ १ = ६४ ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१		
असत्य	||| ॥ १ = ४ । ७ ४ । ६५ = । १ । ८५ । १७०१	असत्य	||| ॥ १ = १६ ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१		
सत्य	||| ॥ १ = १ । ७ ४ । ६५ = । १ । ८५ । १७०१	सत्य	||| ॥ १ = ४ ७ ४ । ६५ = । १ । १७०१		

तहां गुणकार वा भागहारविषैं अंतर्मुहूर्तका वा पिच्यासीका समानपना जहां होइ तहां अपवर्तन करना। बहुरि द्वियोगीविषैं वा योगका काल एक अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ ७ । १ यातैं संख्यात गुणा काययोगका काल ऐसा २ ७ । ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोऊनिकौं मिलाएं ऐसा २ ७ । ५ याका भाग द्वियोगी जीवराशिकौं देइ अपना अपना कालकरि गुणें ऐसा प्रमाण हो है– अनुभय वचनयोगी औदारिक काययोगी । बहुरि काययोगी विषैं कार्माण काल तीन समय ३

= २ ७ । १   = २ ७ । ४
४ = २ ७ ५   ४ = । २ ७ । ५
५   ५

औदारिक मिश्र काल अंतर्मुहूर्त २ ७ यातैं संख्यात गुणा औदारिकका काल २ ७ । ४ इनिकौं जोडें तीन समय
३

अधिक संदृष्टि अपेक्षा पांचगुणा अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ ७ । ५ याका भाग एकयोगी जीव राशिकौं देइ अपना अपना कालकरि गुणें निज निज योगवाले जीवनिकी संख्या ऐसी हो है–

कार्माण	औदारिकमिश्र	औदारिक
१३ = । ३	१३ = । २ ७ ।	१३ = । २ ७ । ४
३	३	३
२ ७ । ५	२ ७ । ५	२ ७ । ५

इहां जोड्या हूवा काल प्रमाण राशि कीएं एकयोगी जीवनिकी संख्या फलराशि कीएं अपना २ काल इच्छा राशि कीएं लब्ध राशिमात्र जीवनिका प्रमाण हो है । बहुरि व्यंतर देवनिकैं निरंतर उत्पत्तिरूप सोपक्रमकाल आवलीका असंख्यातवां भाग मात्र ऐसा २ उत्पत्तिरहित अनुपक्रम
a

काल संख्यात आवली मात्र ऐसा २ ७ तहां दश हजार वर्ष प्रमाण स्थिति विषै पर्याप्त अपर्याप्त दोऊकाल संबन्धी शुद्ध उपक्रमशलाका तिसके कालनैं संख्यात गुणी २ ७ ७ इनतैं अपर्याप्त काल संबंधी संख्यात गुणी घाटि ऐसी २ ७ । इहां उपक्रम अनुपक्रम दोऊनिका काल मिलाएं प्रमाण राशि ऐसा २ फल राशि शलाका एक
a
a
२ ७

इच्छा राशि दश हजार वर्ष सो तीनवार संख्यात गुणित आवली मात्र ऐसा २ ७ ७ ७ लब्धराशिमात्र मिश्र शलाका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी २ १ १ १ इहां भाज्य राशिविषैं ऐसा २ १ १ मिलाएं ऋणका ऋण राशिका धन कीएं ऐसा भया
 १———
 २ १ । a a
 a

 १-- १-
२ १ १ १ । a । इहां ऐसा २ १ १ । a । भाज्य भागहारविषैं समान देखि अपवर्तन कीएं ऐसा रह्या १ १ यामैं
 १—
२ १ १ । a ।

ऋणराशिकौं किंचिदूनकी आगे संदृष्टि कीएं मिश्र शलाकाका प्रमाण ऐसा भया १ १ – बहुरि प्रमाण शलाका
१ फल उपक्रम काल ऐसा २ इच्छा शलाका इतनी ११– तहां लब्धराशिमात्र सर्वकाल संबंधी शुद्ध उपक्रम
 a
काल ऐसा २ १ १–बहुरि प्रमाण राशि सर्वकाल ऐसा २ १ १ १ फलराशि शुद्ध उपक्रमकाल ऐसा २ १ १–
 a a
इच्छा अपर्याप्त काल ऐसा २ १ लब्धराशिमात्र अपर्याप्त काल संबंधी शुद्ध उपक्रम काल ऐसा २१– हो है।
 a

सो पूर्वोक्त व्यंतर राशिकौं सर्व काल संबंधी शुद्ध उपक्रम शलाकाका भाग दीएं अर अपर्याप्त काल संबंधी शुद्ध
उपक्रम शलाकाकरि गुणें व्यंतरराशिविषैं वैक्रियिक मिश्र योगीनिका प्रमाण ऐसा हो है = २ १ — यामैं
 a ०
४ । ६५ = ८१ । १० । २ १ १–
 a

अवशेष देव अर नारकीमिश्रयोगी मिलावनेकी ऊपरि अधिककी संदृष्टि कीएं सर्व वैक्रियिक मिश्रयोगी राशी ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो है = २ ७— बहुरि त्रियोगी जीवनिविषैं काय योगीनिकी संख्याविषैं तिर्यंच मनुष्य संबंधी औदा-

४। ६५ = । ८१। १०। २ ७ ७

रिक काय योगीनिकी संख्या घटावनेकी आगैं ऐसी = संदृष्टि कीएं वैक्रियिक काय योगीनिकी संख्याकी संदृष्टि ऐसी हो है ॥। ॥ बहुरि आहारक काययोगी चौवन आहारक मिश्रयोगी सत्ताईस हैं।

= १३६० १
७
४। ६५ = १। १७०१

अथ वेद मार्गणा अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है—तहां ज्योतिष्क देव पण्णट्ठी प्रतरांगुल करि भाजित जगत्प्रतर प्रमाण है = याकौं क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच
४। ६५ =
छहबार संख्यात ७ ताका भाग दीएं व्यंतर अर तिर्यंच द्रव्य स्त्री अर तिर्यंच द्रव्य पुरुष अर तिर्यंच संज्ञी पंचेंद्रिय अर तिर्यंच संज्ञी पंचेंद्रिय तेजो लेश्यावाले अर तिर्यंच संज्ञी पंचेंद्रिय पद्म लेश्यावाले जीवनिका प्रमाण हो है।

तिर्यंच पद्मलेश्यावाले	= 4। ६५ = ७ ७ ७ ७ ७ ७
तिर्यंच पीतलेश्यावाले	= ४। ६५ = । ७ ७ ७ ७ ७
संज्ञी तिर्यंच	= ४। ६५ = । ७ ७ ७ ७
पुरुष तिर्यंच	= ४। ६५ = ७ ७ ७
स्त्रीवेदी तिर्यंच	= ४। ६५ = ७ ७
व्यंतर देव	= ४। ६५ = ७
ज्योतिष्क देव	= ४। ६५ =

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि च्यारि गतिविषैं देव गतिविषैं ताकी सामान्य राशिकौं तेतीसका भाग देइ बत्तीस करि गुणें स्त्रीवेदीनिका प्रमाण हो है। एक करि गुणैं पुरुषवेदीनिका प्रमाण हो है। नपुंमक वेदी है नाहीं। बहुरि मनुष्य गतिविषैं बादालके आगैं घन करनेकौं तीनबार लिखनेकी तीनका अंककी संदृष्टिकरि ताकौं च्यारिका भाग दीएं पुरुष वेदीनिका प्रमाण हो है। अर च्यारिका भाग देइ तीनकरि गुणें स्त्रीवेदीनिका प्रमाण हो है। सामान्य राशिविषैं इनकी संदृष्टि घटावनेकौं आगें संख्यात घाटकी संदृष्टि कीएं नपुंमक वेदीनिका प्रमाण हो है। बहुरि तिर्यंच गतिविषैं छसै योजनके वर्गका पण्णट्ठी इक्यासी च्यारिकौं परस्पर गुणि आगै दश विंदी दीजिएं इतने प्रतरांगुल हो हैं। ताका भाग जगत्प्रतरकौं दीजिए इतने स्त्रीवेदी हैं। इनके संख्यातवें भाग पुरुष वेदी हैं। संसारी राशिमें इनिकौं वा तीन गतिके जीवनिकौं घटावनेके अर्थि किंचित् ऊन कीएं नपुंसक वेदीनिका प्रमाण हो है। नरकगतिविषैं सामान्य राशिमात्र सर्व नपुंसक वेदी ही हैं।

नाम	पुरुषवेदी	स्त्रीवेदी	नपुंसकवेदी
देवगति	= १ ॥ १ ৭ ४ । ६५ = । १ । ३३	= ३२ ॥ १ ৭ ४ । ६५ = । १ । ३३	०
मनुष्यगति	४२ = ३ ४	४२ = ३ । ३ ४	० १ — ৭ — १३
तिर्यंचगति	= ० ४ । ६५ = । ८१ । ४ । १०৭	= ० ४ । ६५ = । ८१ । ४ । १०	१३—
नरकगति	०	०	– २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसें पुरुषवेदी वा स्त्रीवेदी देवनिकी संदृष्टिके ऊपरि मनुष्य तिर्यंच पुरुष स्त्री वेदी मिलावनेकी ऐसी ॥ संदृष्टि कीएं सर्व पुरुष वेदी वा स्त्री वेदीनिकी संदृष्टि हो है।

बहुरि दोय वेदी अर अवेदी इनि तीन राशि घटावनेकी संदृष्टि ऐसा ≡ संसारी राशिके आगें कीएं सर्व नपुंसक वेदीनिकी संदृष्टि हो है। तिनका यन्त्र

पुरुष	स्त्री	नपुंसक
॥ = ॥ १ १ ७ ४।६५ = ।१।३३	॥ ॥ १ = ३२ ७ ४।६५ = १।३३	१३ ≡

बहुरि संज्ञी पंचेंद्री गर्भज नपुंसक वेदी अर संज्ञी पंचेंद्री गर्भज पुरुष वेदी अर संज्ञी पंचेंद्री गर्भज स्त्री वेदी अर संमूर्छन असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त नपुंसक वेदी अर सन्मूर्छन संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त नपुंसक वेदी अर भोगभूमियां संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त स्त्री वा पुरुष वेदी अर असंज्ञी पंचेंद्री गर्भज नपुंसक वेदी अर असंज्ञी पंचेंद्री गर्भज पुरुष वेदी अर असंज्ञी पंचेंद्री गर्भज स्त्रीवेदी अर व्यंतर अर ज्योतिष्क ए ग्यारह जीवराशि ऊपरि ऊपरि स्थापि नीचैं जो राशी सो आठबार संख्यात ७ अर घन आवलीका असंख्यातवां भाग ८_{a} अर पल्यका असंख्यातवां भाग $प_{a}$ अर पण्णट्ठी प्रतरांगुल ४।६५ = इनका भाग जगत्प्रतरकौं = दीएं लब्धमात्र है। ताके ऊपरि दूसरा तीसरा चौथा राशि क्रमतैं संख्यात ७ गुणा है। पांच बार आवलीका असंख्यातवां भाग गुणा है ८_{a} छठा राशि पल्यका असंख्यातवां भाग $प_{a}$ गुणा है सातवां आठवां नवमां दशवां ग्यारह्वां राशी क्रमतैं संख्यात गुणां है सो जिस जिसका गुणकार होइ तिस तिस भागहार अर गुणकारका अपवर्तन कीएं इनि ग्यारह राशिनिकी संदृष्टि ऐसी हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ज्योतिष्क	= ४ ६५ =
व्यंतर	= ४ ६५ = ९
असं = पं = ग = स्त्री	= ४ ६५ = ९ ९
असं = पं = ग = पुरुष	= ४ ६५ = ९ ९ ९
असं = पं = ग = नपुं	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९
भो = सं = पं = ग = पु = स्त्री	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९
स = सं = प = नपुंसक	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९ प/a
स = अ सं = प = नपुंसक	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९ प/a ८/a
सं = पं = ग = स्त्री	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९ प/a ८/a ९
सं = पं = ग = पुरुष	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९ प/a ८/a ९ ९
सं = पं = ग = नपुंसक	= ४ ६५ = ९ ९ ९ ९ ९ प/a ८/a ९ ९ ९

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi .

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगैं कषाय मार्गणा अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है। तहां कषायनिके सर्व उदयस्थान असंख्यात लोक मात्र ऐसे ≡ a बहुरि प्रतिभागका प्रमाण यथायोग्य असंख्यात लोकमात्र ताकी संदृष्टि नवका अंक ९ ताका भाग देइ बहुभाग बहुभाग तीव्रतर अर तीव्र अर मंद शक्ति युक्तनिविषैं देना। तहां आठका गुणकार अर क्रमतैं एकबार दोयबार तीनबार नवका भागहार जानना अर एक भाग मंदतर शक्ति युक्त विषैं देना तहां एकका गुणकार तीन बार नवका भागहार जानना। ऐसैं च्यारि पदनिविषैं विभाग है अब चौदह पदनिविषैं कहिए है—

तीव्रतरविषैं सर्व स्थान कृष्णलेश्या ही के हैं $\equiv_{६}$ a।८ बहुरि तीव्रविषैं सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा $\equiv_{६}$ a $८_{६}$ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहु भाग बहुभाग कृष्णादि एक दोय तीन च्यारि पांच लेश्या युक्त स्थाननिकौं देना तहां आठका गुणकार अर क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांचवार नवका भागहार जानना। अर एक भाग छह लेश्या युक्त स्थाननिकौं देना तहां एकका गुणकार पांचबार नवका भागहार जानना। इहां एकबार दोयबार आदिकी संदृष्टि नवके आगें एक दोय आदि अंक जानने। बहुरि मंदविषैं सर्व स्थाननिका प्रमाण ऐसा— $\equiv_{६}$ $a_{६}$ $८_{६}$ ताकौं प्रतिभाग ९ का भाग देइ देइ बहुभाग बहुभाग कृष्णादि छह अर नीलादि पांच अर कापोतादि च्यारि अर पीतादि तीन अर पद्मादि दोय लेश्यानिके स्थाननिविषैं देना तहां ताकौं आठका गुणकार अर क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांचबार नवका भागहार जानना। एक भाग शुक्ललेश्याके स्थाननिविषैं देना तहां एकका गुणकार पांचबार नवका भागहार जानना। इहां भी एक बार आदिकी संदृष्टि नवका अंकके आगें एक दोय आदि अंक जानने। मंदतरके सर्व स्थान $\equiv_{६}$ $a_{६}$। $१_{६}$ शुक्ल लेश्या ही के हैं। अब बीस पदनिविषैं कहिए है—

तीव्रतरविषैं कृष्णलेश्याके स्थान $\equiv_{६}$ a ८ तिनिकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग आयु बंधके स्थाननिकौं एक भाग नरकायु बंधस्थाननिकौं देना। तहां ताकौं नव ९ का भाग देइ बहुभाग विषैं आठका एक भाग विषैं ए-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कका गुणकार जानना। बहुरि तीव्रविषै कृष्ण वा कृष्णादि दोय लेश्याके सर्वस्थान एक नरकायु बंधकौं कारण
ऐसा ≡ a।८।८ ≡ a।८।८ बहुरि कृष्णादि तीन लेश्याके स्थान ऐसे ≡ a।८।८ तिनकौं प्रतिभा-
९।९।६।१।१। ६।९।९।२ ९।६।९।३
गका भाग देइ बहुभाग बहुभाग नरक अर नरक तिर्यंच आयु बंध स्थाननिकौं देना। तहां ताकौं आठका गुणकार अर एक दोयबार नवका भागहार जानना। एक भाग नरकादि तीन आयु बंधस्थाननिकौं देना तहां एकका गुणकार दोयबार नवका भागहार जानना। इहां भी एकबार दोयबारकी संदृष्टि नवके आगैं एक दोयका अंक जानने। बहुरि कृष्णादि च्यारि अर पांच अर छह लेश्यानिके सर्व स्थान च्यारयो आयु बंधकौं कारण ऐसे हैं—
≡ a।८।८ ≡ ।८।८ ≡ a।८।१ बहुरि मंदविषैं कृष्णादि छह लेश्यायुक्त स्थान ऐसे
९।६।९।४, ६।९।९।५, ९।९।९।५
≡ a।८।८ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग बहुभाग च्यारि आयु अर नरक बिना तीन आयु बंधके
६।९।९।९।१
स्थाननिविषैं देना। तहां ताकौं आठका गुणकार क्रमतैं एक दोयवार नवका भागहार जानना। एक भाग नरक तिर्यंच बिना दोय आयु बंध स्थाननिकौं देना। तहां एकका गुणकार दोयबार नवका भागहार जानना। इहां भी एकबार दोयबारकी संदृष्टि नवके आगैं एक दोयका अंक जानने। बहुरि नीलादि पांच कापोतादि च्यारि लेश्यानिके सर्व स्थान एक देवायु बंधकौं कारण ऐसे हैं ≡ a।८।८ ≡ a।८।८ बहुरि पीतादि तीन
९।६।९।६।२ ६।९।६।६।३
लेश्याके स्थान ऐसे हैं ≡ a।८।८ तिनकौं प्रतिभागका नवका भाग देइ बहुभाग देवायुबंधकौं कारण स्थान-
६।६।६।६।४
निविषैं देना। एकभाग आयु अबंधस्थाननिकौं देना। बहुभागविषैं आठका एक भागविषैं एकका गुणकार दोऊविषैं एकबार नवका भागहार ताकौं जानना। बहुरि पद्मादि दोय वा शुक्ललेश्याके सर्व स्थान आयु बंधकौं कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जीवनिकी संख्याविषैं नारकीनिकैं लोभादिकका अर देवानिकैं क्रोधादिकका काल एक अंतर्मुहूर्त २ ७ १ तैं लगाय क्रमतैं संख्यात गुणा है सो संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक कीएं ऐसा—

नारककाल	क्रोध २७ । ६४	मान २७ । १६	माया २७ । ४	लोभ २७ । १
देवकाल	क्रोध २७ । १	मान २७ । ४	माया २७ । १६	लोभ २७ । ६४

हो है इनिका जोड दीएं ऐसा भया २ ७ । ८५ सो याकौं प्रमाण राशि करिए अर नारकीनिका वा देवनिका सामान्य प्रमाण ऐसा नारक देव ताकौं फलराशि करिए अर अपने अपने कषाय कालकौं इच्छाराशि करिए

— २ = ॥
७
४ । ६५ = १

तहां फलकौं इच्छाकरि गुणि प्रमाणका भाग दीएं अर अंतर्मुहूर्तका अपवर्तन कीएं क्रोधी आदि नारकीनिका वा देवनिका प्रमाण ऐसा आवै है ताका यंत्र—

नाम	क्रोधी	मानी	मायावी	लोभी
नारक	— २ । ६४ ८५	— २ । १६ ८५	— २ । ४ ८५	— २ । १ ८५
देव	= १ ॥ १ ७ ४ । ६५ = । १ । ८५	= ४ ॥ १ ७ ४ । ६५ = । १ । ८५	= १६ ॥ १ ७ ४ । ६५ = १ । ८५	= ६४ ॥ १ ७ ४ । ६५ = १ । ८५

इंद्रिय मार्गणा अधिकारविषैं त्रस राशिविषैं बेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्री जीवानिका प्रमाण ल्यावनेकौं समान भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देय भागकरि विधान कह्या था तैसें ही मनुष्य तिर्यंचनिकी सामान्य राशि ऐसा मनुष्य $\frac{१\equiv}{१।३}$ तिर्यंच १३- तिसविषैं

आवलीका असंख्यातवां भागमात्र प्रतिभागकी संदृष्टि नवका अंककरि लोभी मायावी क्रोधी मानीनिका प्रमाणविषैं ऐसे समान भाग अर देय भाग जानने–

नाम		लोभी	मायावी	क्रोधी	मानी	०
मनुष्य		८ १≡ १।३।९।४	८ १≡ १।३।९।४	८ १≡ १।३।६।४	८ १≡ १।३।९।४	समान भाग
		८ १≡ १।३।६।९	८ १≡ १।३।६।९।९	८ १≡ १।३।९।९।६।९	८ १≡ १।३।९।९।६।६।	देय भाग
तिर्यंच		१३—८ ९ । ४	१३—८ ६ । ४	१३—८ ६ । ४	१३—८ ६ । ४	समान भाग
		१३—८ ६ । ६	१३—८ ६।९।६	१३—८ ६।९।९।९	१३— ९।९।९।९।	देय भाग

बहुरि तहां ही जैसें विधान कह्या है तैसें इहां समच्छेदकरि समभाग वा देयभाग मिलाएं लोभी आदि जीव- १२३
निका प्रमाण ऐसा है–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	लोभी	मायावी	क्रोधी	मानी
मनुष्य	१_ — ८४२४ १।३।४।६५६१	१_ — ६१२० १।३।४।६५६१	१_ — ५८६४ १।३।४।६५६१	१_ — ५८३६ १।३।४।६५६१
तिर्यंच	१३ – ८४२४ ४ । ६५६१	१३ – ६१२० ४ । ६५६१	१३ – ५८६४ ४ । ६५६१	१३ – ५८३६ ४ । ६५६१

अथवा मनुष्य तिर्यंच विषैं काल अपेक्षा भी तैसैं ही अंतर्मुहूर्त मात्र कषायनिका कालविषैं समान भाग देयभाग स्थापि समच्छेदकरि मिलाएं ऐसैं हो है–

नाम	लोभ काल	मायाकाल	क्रोधकाल	मानकाल
समभाग	२ ७ृ । ८ ९ । ४	२ ७ृ । ८ ९ । ४	२ ७ृ । ८ ९ । ४	२ ७ृ । ८ ९ । ४
देयभाग	२ ७ृ । ८ ९ । ९	२ ७ृ । ८ ९ । ९ । ९	२ ७ृ । ८ ९ । ९ । ९ । ९	२ ७ृ । १ ९ । ९ । ९ । ९ ।
समच्छेदकरि मिलाया हुवा काल	२ ७ृ । ८४२४ ४ । ६५६१	२ ७ृ । ६१२० ४ । ६५६१	२ ७ृ । ५८६४ ४ । ६५६१	२ ७ृ । ५८३६ ४ । ६५६१

बहुरि इहां अंतर्मुहूर्त ऐसा २ ७ ताकौं प्रमाण राशि कीएं अर मनुष्य राशि वा तिर्यंच राशिकौं फलराशि कीएं अर समच्छेद करि मिलाया हूवा कालकौं इच्छा राशि कीएं भी लोभी आदि मनुष्यनिका वा तिर्यंच- १२४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निका तितना ही प्रमाण आवे है। मनुष्य राशिकौं वा तिर्यंच राशिकौं संदृष्टि अपेक्षा क्रमतैं चौरासीसै चौईस इकसठिसै वीस अठावनसै चौंसठि अठावनसै छत्तीसकरि गुणें अर च्यारि गुणा पैसठिसै इकसठिका सर्वत्र भाग दीएं लोभी मायावी क्रोधी मानीनिका प्रमाण हो है ऐसा अर्थ जानना।

आगें ज्ञान मार्गणा अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है — तहां पर्याय समास श्रुतज्ञानविषैं षट स्थानपतित वृद्धि का कथन है। तहां अनंत भागादिककी संदृष्टि ऐसी जाननी।

नाम सामान्य अनंतादि संदृष्टि	अनंत भाग ख	असंख्यात भाग a	संख्यात भाग ७	संख्यात गुणा ७	असंख्यात गुणा a	अनंत गुणा ख
विशेष जीवराशि आदिकी संदृष्टि	१६	≡ a	१५	१५	≡ a	१६
अनंतभागादिकी लघु संदृष्टि	उ	४	५	६	७	८

इहां प्रथम पंक्तिविषैं अनंतकी ऐसी ख असंख्यातकी ऐसा a संख्यातकी ऐसी ७ अर दूसरी पंक्तिविषैं जीवराशिकी ऐसी १६ असंख्यात लोककी ऐसी ≡ a उत्कृष्ट संख्यातकी ऐसी १५ अर तीसरी पंक्तिविषैं अनंतभागादिककी ऊर्वंकादि संदृष्टि जाननी। बहुरि अनंतभाग वृद्ध्यादिकविषैं ऊर्वंकादिकी संदृष्टि लिखिए अर सूच्यंगुलका असंख्यातवा भागवार पूर्ववृद्धि भएं एकवार अपर वृद्धि होइ सो सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि दोयवार लिखना कीजिए तब ऐसा यंत्र हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ १ a	२ २ a a	२ १ a	२ १ a	२ २ a a	२ २ a a	२ १ a	२ २ a a	२ १ a	
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	१
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	२ a
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ७	१
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	२ a
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	१
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ७	२ a
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	१
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ६	२ a
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ८	१

सो इस यंत्रके अर्थका विशेष स्वरूप टीकातैं जानना। बहुरि इस यंत्रके ऊपरि जहां ऐसा लिख्या है २ १ a तहां एक सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागवार विवक्षित वृद्धि भई जाननी। अर जहां ऐसा २ २ a a लिख्या है तहां सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग मात्र सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागवार वृद्धि जाननी। बहुरि तिर्यक् पंक्तिविषै जहां छह आदिका अंकके आगें एकका अंक लिख्या है तहां संख्यातगुण वृद्धि आदि एकवार भई जाननी। जहां ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२ लिख्या होइ तहां सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्रवार सो वृद्धि भई जाननी। बहुरि इस वृद्धिका अनुक्रमविषैं
a

पर्याय नामा जघन्य ज्ञानकी संदृष्टि ऐसी ज याकौं जीवराशिमात्र अनंतका भाग देइ एक भाग देय एक भागकौं
१—

समच्छेद करि जोडैं अनंत भागवृद्धिका प्रथम स्थान ऐसा हो है ज १६ इहां जीवराशिका भाग अर एक अधिक
१६

जीवराशिका गुणकार जानना। ऐसैं ही याकौं जीवराशिका भाग देइ एक भाग मिलाएं दूसरा भेद ऐसा हो है
१— १—

ज १६ १६ ऐसैं ही सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र वार भएं अनंत भाग वृद्धिका अंत स्थान हो है। तहां
१६ १६

जघन्यकौं जीवराशिमात्र अनंतका भाग एक दोय तीन च्यारि पांच छहवार क्रमतैं दीएं प्रक्षेपक अर प्रक्षेपक प्रक्षेपक अर पिशुलि अर पिशुलि पिशुलि अर चूर्णि अर चूर्णि चूर्णि ऐसैं हो है—

प्रक्षेपक	प्रक्षेपक प्रक्षेपक	पिशुलि	पिशुलि पिशुलि	चूर्णि	चूर्णि चूर्णि
ज	ज	ज	ज	ज	ज
१६	१६ । १६	१६ । १६ । १६	१६ । १६ । १६ । १६	१६ । १६ । १६ । १६ । १६	१६ । १६ । १६ । १६ । १६ । १६

बहुरि ऐसैं ही क्रमतैं जघन्यकौं एक घाटि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागवार जीवराशिका भाग दीएं द्विचरम चूर्णि चूर्णि होइ सो ऐसा ज अर जघन्यकौं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागवार जीवराशिका भाग दीएं

१—
१६ । २
a

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां ऐसा जानना– जघन्य अर एक प्रक्षेपक जोडें अनंत भाग वृद्धिका प्रथम स्थान हो है। बहुरि जघन्य अर दोय प्रक्षेपक अर एक प्रक्षेपक प्रक्षेपक जोडें दूसरा स्थान हो है। बहुरि जघन्य अर तीन प्रक्षेपक तीन प्रक्षेपक प्रक्षेपक एक पिशुलि जोडें तीसरा स्थान हो है। बहुरि जघन्य अर च्यारि प्रक्षेपक छह प्रक्षेपक प्रक्षेपक च्यारि पिशुलि एक पिशुलि पिशुलि जोडें चौथा स्थान हो है। बहुरि जघन्य अर पांच प्रक्षेपक दश प्रक्षेपक प्रक्षेपक दश पिशुलि पांच पिशुलि पिशुलि एक चूर्णि जोडें पांचवां स्थान हो है। बहुरि जघन्य अर छह प्रक्षेपक पंद्रह प्रक्षेपक प्रक्षेपक बीस पिशुलि पंद्रह पिशुलि पिशुलि छह चूर्णि एक चूर्णि चूर्णि जोडें छठा स्थान हो है अर मध्यस्थाननिकी संदृष्टि बिंदी जाननी। बहुरि अन्तस्थान विषैं जघन्य अर गच्छ इहां सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा $\frac{२}{a}$ सो गच्छ प्रमाण तौ प्रक्षेपक अर संकलन धन ल्यावनेका करण सूत्रका अभिप्रायतैं एक घाटि गच्छकौं दोयका भाग अर इहां संपूर्ण गच्छकौं एकका भाग ऐसा $\frac{२-१}{a\;२}$ $\frac{२}{a\;१}$ इहां घाटिकी संदृष्टि मूलराशिके आगे ऐसी–करि ऋणका लिखना जानना। इनिकौं परस्पर गुणें लब्धप्रमाण प्रक्षेपक प्रक्षेपक अर दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं क्रमतैं तीन दोय एकका भाग दीएं तिनकौं परस्पर गुणें $\frac{२-१}{a\;३} \Big| \frac{२-१}{a\;२} \Big| \frac{२}{a\;१}$ लब्धप्रमाण पिशुलि अर तीन घाटि गच्छ दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकका क्रमतैं भाग देइ परस्पर गुणें $\frac{२-३}{a\;४} \Big| \frac{२-२}{a\;३} \Big| \frac{२-१}{a\;२} \Big| \frac{२}{a\;१}$ लब्ध प्रमाण पिशुलि पिशुलि अर च्यारि घाटि गच्छ तीन घाटि गच्छ दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं पांच च्यारि तीन दोय एकका भाग क्रमतैं देइ परस्पर गुणैं $\frac{२-४}{a\;५}$ $\frac{२-३}{a\;४}$ $\frac{२-२}{a\;३}$ $\frac{२-१}{a\;२}$ $\frac{२}{a\;१}$ लब्ध प्रमाण चूर्णि अर पांच घाटि गच्छ च्यारि घाटि गच्छ तीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घाटि गच्छ दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं क्रमतैं छह पांच च्यारि तीन दोय एकका भाग देइ परस्पर गुणैं २–५/a६ २–४/a५ २–३/a४ २–२/a३ २–१/a२ २/a१ लब्ध प्रमाण चूर्णि चूर्णि अर ऐसैं ही क्रमतैं द्वितीय चूर्णि चूर्णि आदि जानि दोयतैं लगाय एक एक अधिक संपूर्ण गच्छ पर्यंतकौ एक घाटि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागतैं लगाय एक एक घाटि पर्यंतका भाग देइ

ज	१–^	२	३	४	मध्य	२–३	२–२	२—१	२
	२	१–^	१–^	१–^					
१६	a	२	२	२	० ० ०				
		a	a	a		a४	a३	a२	a१

गुणकार भागहार समान देखि अपवर्तन करिए तब द्विचरम चूर्णि चूर्णि गच्छ प्रमाण हो है ज १–^/२ २ (१६ a a) बहुरि चूर्णि चूर्णि एक ऐसैं नीचैं स्थापि सबनिकौं जोडें अन्तस्थान हो है। बहुरि ऐसैं अनन्तभागवृद्धिके स्थान भएं साधिक जघन्य ज्ञान भया ताकी संदृष्टि ऐसी ज (।) इहां अधिककी संदृष्टि ऊपरि ऐसी । जाननी। याकौं असंख्यात लोकमात्र असंख्यातका भाग देइ एक भाग जोडें असंख्यात भागवृद्धिका प्रथम स्थान ऐसा ज ≡ a (। १—) / ≡ a बहुरि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र अनन्तभाग वृद्धिके स्थान वीचि होइ अर असंख्यात भाग वृद्धिका द्वितीय स्थान ऐसा ज ≡ a ≡ a (। १— १—) / ≡ a ≡ a होहै ऐसैं असंख्यात भाग वृद्धिके स्थान सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र बार भए सो साधिक जघन्य भया ज (।) ताकौं उत्कृष्ट संख्यातका भाग देइ एक भाग तामें जोडें संख्यात भागवृद्धि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का प्रथम स्थान ऐसा ज १५ याही प्रकार कांडकका प्रमाण सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र सो अनंतभाग असंख्यात भाग वृद्धियुक्त-स्थान कांडक प्रमाण भए। बहुरि अनन्त भाग-वृद्धियुक्त स्थान कांडक मात्र भएं एक एक संख्यात भाग वृद्धि युक्त स्थान हो है। बहुरि ऐसैं ही क्रमतैं कांडक प्रमाण भएं एक एक संख्यात गुणवृद्धि स्थान हो है। बहुरि ऐसैं ही क्रमतैं कांडक प्रमाण संख्यात गुण वृद्धि युक्त स्थान कांडक प्रमाण भएं अर अनंत भाग वृद्धि युक्त स्थान कांडक प्रमाण भएं एक एक संख्यात गुण वृद्धि स्थान हो है। बहुरि ऐसैं ही क्रमतैं कांडक प्रमाण संख्यात गुण वृद्धि युक्त स्थान भएं अर कांडक प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थान भएं एक एक असंख्यात गुण वृद्धि युक्त स्थान हो है। बहुरि ऐसैं ही क्रमतैं कांडक प्रमाण असंख्यात गुण वृद्धि युक्त स्थान भएं अर कांडक प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थान भएं एक अनन्त गुण वृद्धि युक्त स्थान हो है ऐसा जानना। बहुरि हानि वृद्धिनिके प्रमाणकौं मिलाएं अंक संदृष्टि वा अर्थ संदृष्टि करि ऐसैं हो है—

अंकसंदृष्टि		अर्थसंदृष्टि	
८	१	१६	१
७	२	≡ a	२ a
६	२।३	१५	१_ २ २ a a
५	२।३।३	१५	१_ १_ २ २ २ a a a
४	२।३।३।३	≡ a	१_ १_ १_ २ २ २ २ a a a a
३	२।३।३।३।३	१६	१_ १_ १_ १_ २ २ २ २ २ a a a a a
जोड़ैं	३।२।३।२।३	जोड़	१_ १_ १_ १_ १_ २ २ २ २ २ a a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां अंक संदृष्टिविषैं अष्टांक जो अनन्त गुण वृद्धि सो एकबार है अर सप्तांक जो असंख्यात गुण वृद्धि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र वार हो है। सो इहां सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि दोयका अंक जानना। याकौं कांडक कहिए। दोऊनिकौं मिलाएं एक अधिक कांडकका प्रमाण तीन भया। बहुरि षष्ठांक जो संख्यात गुणवृद्धि सो एक अधिक कांडककरि गुणित कांडक प्रमाण हो है २। ३ इहां पूर्व वृद्धि अर याकौं जोडें एक अधिक कांडककौं एक अधिक कांडककरि गुणिए इतने हो हैं। ऐसैं ही ऊर्वंक पर्यंत जानना सो समस्त वृद्धिनिकौं जोडें एक अधिक कांडककौं पांचबार माडि परस्पर गुणें जेता होइ तितना प्रमाण हो है। ऐसैं ही अर्थ संदृष्टि विषैं जानना। इहां अनंतादिककी संदृष्टि जीवराशि आदि जाननी अर सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग मात्र कांडककी संदृष्टि ऐसी २_{a} जाननी एक अधिककी संदृष्टि ऐसी $२^{१-}_{a}$ जाननी। बहुरि साधिक जघन्य ज्ञान दूणा जहां जहां हो है ताके जाननेकौं ऐसा यंत्र हो है—

जघन्य	। ज	। ज	। ज	। ज
प्रक्षेपक	। ज १५ १५	। ज १५ ३ १५ ४	। ज १५ ४१ १५ ५६	। ज १५ ७ १५ १०
	प्रक्षेपक प्रक्षेपक	। १ ⌒ ज १५ ३ १५ ३ १५ १५ ४ २ ४ १	। १ ⌒ ज १५ ४१ १५ ४१ १५ १५ ५६ २ ५६ १	। १ ⌒ ज १५ ७ १५ ७ १५ १५ १० ३ १० १
			पिशुलि	। २ ⌒ १ ⌒ ज १५ ७ १५ ७ १५ ७ १५ १५ १५ १० ३ १० २ १० १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां संख्यातभाग वृद्धि युक्त स्थाननिविषैं साधिक जघन्यकौं एकवार दोयवार तीनवार उत्कृष्ट संख्यातका भाग दीएं प्रक्षेपक अर प्रक्षेपक प्रक्षेपक अर पिशुलि ऐसे हो हैं प्रक्षेपक ज/१५ प्रक्षेपकप्रक्षेपक ज/१५।१५ पिशुलि ज/१५।१५।१५

सो संख्यात भाग वृद्धिके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण स्थान भए तहां गच्छका प्रमाण उत्कृष्ट संख्यात मात्र ऐसा १५ सो इतने प्रक्षेपक ऐसे ज/१५ १५ अपवर्तन कीएं साधिक जघन्य भया याकौं साधिक जघन्य विषैं जोडैं साधिक जघन्य दूणा हो है। बहुरि तिसहीके उत्कृष्ट संख्यातके तीन चौथा भाग प्रमाण स्थान भएं तहां गच्छका प्रमाण उत्कृष्ट संख्यात ताका तीन चौथा भाग प्रमाण ऐसा १५।३/४ सो इतने तौ प्रक्षेपक ज/१५ १५।३/४ अर संकलन सूत्रका अभिप्राय करि एक घाटि गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौं दोय एकका भाग देइ परस्पर गुणें १५।३/४।२ १५।३/४।१ जो होइ तितने प्रक्षेपक प्रक्षेपक ऐसे ज/१५।१५ १५।३/४।२ १५।३/४।१ इनकौं साधिक जघन्यविषैं जोडैं साधिक जघन्य दूणा हो है। कैसैं? प्रक्षेपक प्रक्षेपकका ऋण ऐसा ज/१५ १।३/३२ याकौं जुदा राखि अपवर्तन कीएं ऐसा ज ९/३२ इहां एकरूप ऐसा ज १/३२ जुदा राखि अवशेष ऐसा ज ८/३२ अपवर्तन कीएं ऐसा ज १/४ याकौं प्रक्षेपक वृद्धि अपवर्तन किया हूवा ऐसा ज ३/४ तामें मिलाय अपवर्तन कीएं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधिक जघन्य भया बहुरि एक रूपका धन ऐसा ज १/३२ तामैं ऋण ऐसा ज १ ३/१५ ३२ घटावनेकौं किंचिदूनकरि साधिक जघन्य विषैं जोडें जो साधिक जघन्य भया ताकौं मूल साधिक जघन्यविषैं जोडें साधिक जघन्य दूणा हो है। बहुरि तिसहीके उत्कृष्ट संख्यातके इकतालीस छप्पनवां भाग मात्र स्थान भएं साधिक जघन्य दूणा हो है। तहां तिस प्रमाण मात्र गच्छ ऐसा १५ । ४१/५६ तहां गच्छ मात्र प्रक्षेपक ऐसे ज १५/१५ । ४१/५६ अर एक घाटि गच्छकौं अर संपूर्ण गच्छकौं दोय एकका भाग देइ १५ । ४१/५६ । २ । १५ । ४१/५६ । १ परस्पर गुणें जो होइ तितने प्रक्षेपक प्रक्षेपक ऐसे— ज १५ । ४१ । १५ । ४१/१५ । १५ । ५६ । २ । ५६ । १ इनिकौं मूल साधिक जघन्य विषैं जोडें साधिक जघन्य दूणा हो है। कैसैं ? इहां प्रक्षेपक प्रक्षेपक राशिविषैं ऋण ऐसा ज । १ । ४१/१५ । ५६ । ५६ अवशेष अपवर्तन किया हूवा ऐसा ज १६ । ८१/११२ । ५६ एक रूप धन ऐसा ज १/११२ । ५६ अवशेष ऐसा ज १६ । ८०/११२ । ५६ अपवर्तन कीएं ऐसा ज १५/५६ याकौं प्रक्षेपक राशि ऐसा ज ४१/५६ तामें जोडें साधिक जघन्य भया। बहुरि जुदा राख्या धन ऐसा ज १/११२ ५६ तामैं जुदा राख्या ऋण घटावनेकौं किंचिदूनकरि ताकौं साधिक जघन्य विषैं जोडें जो साधिक जघन्य भया ताकौं मूल साधिक जघन्य विषैं जोडें साधिक जघन्य दूणा हो है। बहुरि तिसही के उत्कृष्ट संख्यातके सात दशवां भाग मात्र स्थान भएं तहां प्रक्षेपक प्रक्षेपक पिशुलि जोडें साधिक जघन्य दूणा हो है तहां तत्प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा १५ । ७/१० गच्छमात्र प्रक्षेपक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा ज १५ । ७ बहुरि एक घाटि गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौं दोय एक का भाग दीएं तन्मात्र प्रक्षेपक प्रक्षेपक
१५ १०

| १ ⌒
ऐसा ज १५ ७ १५ ७ बहुरि दोय घाटि गच्छ एक घाटि गच्छ संपूर्ण गच्छकौं तीन दोय एकका भाग दीएं
१५ । १५ १० । २ । १० । १ | २ ⌒ १ ⌒

तन्मात्र पिशुलि ऐसा हो है ज १५ । ७ । १५ । ७ । १५ । ७ इन सबनिकौं जोडि साधिक जघन्यविषैं जोडैं साधिक
१५ । १५ । १५ । १० । ३ । १० । २ । १० । १

| १ ⌒
दूणा हो है कैसैं ? पिशुलिका प्रथम ऋण ऐसा ज २ । १५ । ७ । १५ । ७ जुदा स्थापि अवशेष अपवर्तन कीएं ऐसा
१५ । १५ । १५ । ६ । १० । १० । १०

| २ ⌒ | |
हो है ज १५ । ७ । ४१ इहां ऋण ऐसा ज १ ४१ जुदा स्थापि अवशेष अपवर्तन कीएं ऐसा ज ३४३ यामैं तेरहरूप
१५ १० ६०० १५ ६०० ६०००

| | |
ऐसे ज १३ जुदे राखि अवशेष ऐसे ज ३३० अपवर्तन कीएं ऐसा ज ११ इनकौं एक जायगा स्थापने । बहुरि
६००० | ६००० २० । १०

जुदा राख्या धनराशि ऐसा ज १३ तामैं पहिला दूसरा ऋण घटावनेकौं किंचिदूनकरि याकौं जुदा स्थापना । बहुरि
६०००

| १ ⌒ | |
प्रक्षेपक प्रक्षेपक राशि ऐसा ज १५ । ७ । ७ विषैं ऋण ऐसा ज १ । ७ जुदा स्थापि अवशेष ऐसा ज १५ । ७ । ७ अपवर्तन
१५ । २ । १० । १० १५ २०० १५ २००

| |
कीएं ऐसा ज ४३ यामैं पूर्वोक्त पिशुलि धन ऐसा ज ११ ऐसा ६० अपवर्तन कीएं ऐसा ३ यामैं प्रक्षेपकका
२०० २०० २०० १०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घन ऐसा ज ७ (१०) जोडें साधिक जघन्य हो है। बहुरि पिशुलिका घन ऐसा ज १३ (६०००) तामैं प्रक्षेपक प्रक्षेपकका ऋणके घटावनेकौं किंचिदूनकरि ताकौं तिस साधिक जघन्यविषैं जोडें जो साधिक जघन्य भया ताकौं मूल साधिक जघन्यविषैं जोडें साधिक जघन्य दूणा हो है ऐसें जानना। बहुरि एक अधिक सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागका वर्गका घनप्रमाण स्थाननिविषैं एकवार षद्स्थान होइ तौ असंख्यात लोकमात्र अनक्षर श्रुतज्ञानके सर्व स्थाननिविषैं केती वार होंइ ऐसें त्रैराशिक कीएं प्र— २।२।२।२।२ (१– १– १– १– १– / a a a a a) फ १ इ ≡ a लब्धराशि ऐसा ≡ a (१– १– १– १– १– / २।२।२।२।२। / a a a a a) सो इतनी वार हो है। बहुरि अक्षर श्रुतज्ञान ऐसा के (१– / १८ =) इहां श्रुतकेवलकी संदृष्टि ऐसी के ताकौं एकघाटि एकट्ठीका भाग जानना। बहुरि एक एक अक्षर वृद्धि करि अक्षर समासके भेद भएं इतने १६३४८३०७८८८ अक्षर भएं पद हो है ताकी संदृष्टि ऐसी प याके ऊपरि एक एक अक्षरकी वृद्धि लिएं पद समास भेद ऐसे—

१– २– १___ १___ १___ ...

प प। प। ० ० प२ प२। ० ० प ३ प ३। ० ० ० प ००० ७

१६ = १६ = १६ =

इहां पद अर एक दोय अक्षर अधिक पद मध्य भेद दूणां पद एक दोय अक्षर अधिक दूणां पद मध्य भेद तिगुणा पद एक अधिक तिगुणा पद मध्य भेद एक घाटि संख्यात हजार पदकी संदृष्टि क्रमतैं जाननी अर इहां ऐसी १६ = संदृष्टि है सो पदके एक छह अंकादिरूप अक्षरनिके प्रमाणकी संदृष्टि जाननी। बहुरि संख्यात हजार पदमात्र संघात श्रुतज्ञान ऐसा १६ = १००० ७ ऐसें ही अन्य भेद जानने। बहुरि शास्त्र स्वरूप श्रुतज्ञानके भेदनिविषैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां नीचैं मतिज्ञानके भेद ताके ऊपरि श्रुतज्ञानके भेद ताके ऊपरि श्रुत अक्षरनिका प्रमाण ताके ऊपरि पदके अक्षरनिका प्रमाण ताके ऊपरि सर्व अंगनिके पदनिका प्रमाण ताके ऊपरि ग्यारह अंगनिके पदनिका प्रमाण ताके ऊपरि बीचमें आचारांगादि अंगनिके पदनिका प्रमाण ऊपरि एक कोष्ठविषै प्रथमानुयोग अर सूत्रके पदनिका प्रमाण ऊपरि पूर्वगति चूलिकाके पदनिका प्रमाण इहांतैं ऊपरितैं लगाय एक पार्श्वविषैं परिकर्मके अर ताके पंच भेदनिके पदनिका प्रमाण अर दूसरा पार्श्वविषै चूलिका अर ताके पंच भेदनिके पदनिका प्रमाण बहुरि तहांतैं ऊपरि बीचमें उत्पाद आदि चौदह पूर्वनिके नाम नामके पार्श्वविषैं ताके पदनिका प्रमाण अर तहांतैं ऊपरि अवधिके तीन भेदनिका नाम ताके ऊपरि मनःपर्ययके भेदनिका नाम ताके ऊपरि केवलज्ञानका नाम अर ध्वजाविषैं सामायिक आदि प्रकीर्णकनिका नाम अर तहां ही तिन सबनिके अक्षरनिका प्रमाण लिख्या है सो जानना।

बहुरि अवधिज्ञानका कथनविषैं जघन्य देशावधिका विषयभूत द्रव्य लोककरि भाजित ऐसा मध्यम योगनिकरि उपार्जित औदारिक संचयमात्र ऐसा। स ã १२–१६ ख (१—) इहां किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित औदारिकका समय प्रवद्ध ऐसा स ã १६— (≡) याकौं अनंत गुणा जीवराशिमात्र एक एक परमाणू संबंधी विस्रसोपचय ऐसा १६ ख ताकरि गुणें ऐसा स ã १२—१६ ख यामैं मूल औदारिकका संचय द्रव्य ऐसा स ã १२— मिलावनेकौं आगिला गुणकार ऐसा १६ ख ताके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि जाननी। अर ताके नीचैं लोकका भाग देनेकी ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी। बहुरि जघन्य देशावधिका विषयभूत क्षेत्र जघन्य अवगाहना मात्र ऐसा हो है ६ ८/ã २२ इहां जीव समास अधिकारविषैं सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तकी

१/ã । १९ । ८/ã । ९ । ८/ã (१—) । २२ । ७ । ९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जघन्य अवगाहनाविषैं जो संदृष्टि थी सोई जाननी। बहुरि इस जघन्य क्षेत्रविषैं क्षेत्रखंडन विधानकरि भुज कोटि वेधनिका प्रमाण सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र ऐसैं है–

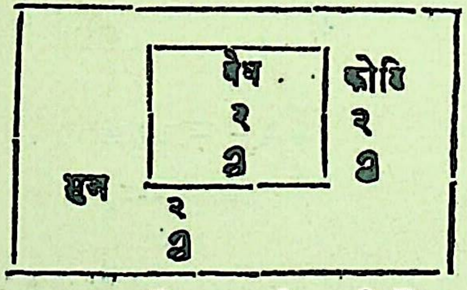

परस्पर गुणैं घनांगुलका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा ६/a क्षेत्र हो है। बहुरि जघन्य देशावधिका विषयभूत द्रव्य जिस क्षेत्रकौं रोकै सो क्षेत्र जघन्य देशावधि ज्ञानके विषयभूत द्रव्यतैं असंख्यात गुणा घाटि ऐसा है–

बहुरि जघन्य देशावधिका विषयभूत काल घनावलीका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा है

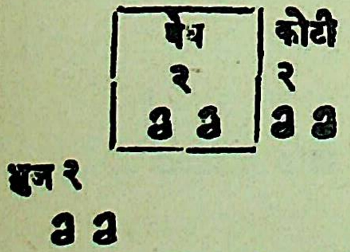

८/a बहुरि तिसहीका विषयभूत भाव तिस कालके असंख्यातवे भाग मात्र ऐसा हो है ८/a a बहुरि द्वितीयादि अवधि भेदनिका विषयभूत द्रव्य प्रमाण ल्यावनेकौं ध्रुवहार है ताकी संदृष्टि नवका अंक ९ है अर दोय घाटि देशावधिका भेद प्रमाण ध्रुवहारनिके परस्पर गुणनेतैं जो कार्माण वर्गणाका गुणकार होइ सो ध्रुवहारतैं अनंत गुणा ऐसा है
९ ख तातैं अनंतगुणी कार्माण वर्गणा ऐसी है ९ ख ख कार्माण वर्गणाका गुणकारकरि कार्माण वर्गणाकौं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणें अवधिका विषयभूत समयप्रबद्ध ऐसा स ख ख । स ख है । बहुरि मनोवर्गणाका जघन्य ऐसा ज जघन्य-
१- १-
का अनंतवां भागकरि अधिक उत्कृष्ट ऐसा ज ख उत्कृष्टमें जघन्य घटाएं एक मिलाएं ऐसा ज जानना ।
ख २—ᵔ—ख ख

१- १-
बहुरि वक्ष्यमाण देशावधिके द्रव्य अपेक्षा भेद ऐसे ≡ ६ । २ इनिमें दोय घटाएं ऐसे ≡ ६ । २ सो इतने ध्रुवहार
प a प a
a a

माडि स परस्पर गुणें कार्माण वर्गणाका गुणकार हो है । अंक संदृष्टिकरि जैसें तेरह जायगा नव माडि परस्पर-
९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९
गुणिए १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ तिस गुणकारकरि वर्गणाकों गुणें जघन्य देशावधिका विषयभूत द्रव्य हो
हे जातें देशावधिकी द्रव्य रचना ऐसी है—

व
ध
व
व । ध
व ध । ध
व ध । ध । ध
व ध । ध । ध । ध
०
२——ᵔ——
१——
व । ध ≡ - ६ २
प a
a

इहां उत्कृष्ट देशावधिका विषयभूत द्रव्य वर्ग-
णाकों ध्रुवहारका भाग दीएं ऐसा व तातें पूर्वभेदका द्रव्य वर्गणामात्र ऐसा व तातें नीचें नीचें भेदनिका प्रमाण
ध
वर्गणाकों एक दोय तीन च्यारि आदि वार ध्रुवहारकरि वर्गणाकों गुणे हो है तहां मध्यभेद होइ वर्गणाकों दोय घाटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशावधिका भेद प्रमाण वार ध्रुवहारकरि गुणें जघन्य देशावधिका विषयभूत द्रव्य हो है ऐसा जानना। बहुरि देशावधिका विषयभूत जघन्य क्षेत्र घनांगुलकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं ऐसा ६ प a उत्कृष्ट लोकमात्र ऐसा ≡ उत्कृष्टमें जघन्य घटाएं ऐसा ≡ – ६ प a इहां घटावनेकी संदृष्टि लोकके आगें ऐसी – – जाननी। याकौं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकरि गुणें ऐसा ≡ – ६ प a । २ a यामैं एक मिलाएं द्रव्य अपेक्षा देशावधिके भेदनिका प्रमाण ऐसा ≡ – ६ प a । २ a (१ ——) हो है। इहां जघन्य देशावधिका क्षेत्र ऐसा ६ । ८ a । २२ (१–) प । १९ a । ८ । ९ a । ८ । २२ a । ७ । ९ अपवर्तन कीएं पल्यका असंख्यातवां भागकरि भाजित घनांगुलमात्र ऐसा हो है ६ प a बहुरि जीव समास अधिकारोक्त अग्नि कायिक जघन्य अवगाहन ऐसा ६ । ८ a । २२ (१–) प । १९ a । ८ । ७ a । ८ । २२ a । ७ । ९ उत्कृष्ट ऐसा ६ । ८ a । ८ (१–) प a । ६ । ८ a । ८ । ७ । ९ उत्कृष्टमें जघन्य घटाइ अपवर्तन कीएं ऐसा ६ प a (१ —) a यामैं एक जोड़ें सर्व अग्निकायिक अवगाहना विकल्प ऐसा ६ प a (१ —) a याकरि अग्निकायिक राशि ऐसा (१—) हो है ≡ a ताकौं गुणें ऐसा ≡ a ६ प a (१ —) a प्रमाण भया सोई सर्व परमावधिके भेदनिका प्रमाण जानना। यातैं होय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां प्रथमकांडकका प्रथम भेदविषैं पूर्वोक्त जघन्य द्रव्य मात्र ऐसा स ० १२– १६ ख याकौं ध्रुवहारका भाग दीएं द्वितीय भेदविषैं ऐसा स ० १२– १६ ख याका तृतीय भेदतैं लगाय असंख्यात स्थान ऐसें ही क्रमतैं ध्रुवहारका भाग दीएं होंइ तिनकी संदृष्टि विंदी। बहुरि चौदहां पंद्रहां सोलहां सतरहवां अठारहवां कांडक प्रथमभेदका विषयभूत तैजस शरीरादिक प्रथम भेदके द्रव्यकौं ध्रुवहारका भाग दीएं द्वितीय भेदका द्रव्य हो है। ऐसें ही क्रमतैं ध्रुवहारका भाग दीएं तृतीयादि स्थान तिनकी संदृष्टि विंदी। उगणीसवां कांडकके प्रथम भेदका द्रव्य कार्माण समय प्रबद्ध याकौं ध्रुवहारका भाग दीएं द्वितीय भेदका द्रव्य मध्य भेदानिके ग्रहण अर्थि विंदी ऊपरि लिखि वर्गणाकौं दोयवार एकवार गुणें अर वर्गणामात्र अर अन्त भेदका द्रव्य ध्रुवहारकरि भाजित वर्गणा मात्र जानना। बहुरि प्रथम कांडकके द्रव्य अपेक्षा प्रथम भेदका विषय भूत क्षेत्र घनांगुलका असंख्यातवां भाग मात्र ऐसा ६/a दूसरे भेदनिका भी तिस प्रमाण अर मध्य भेदनिके ग्रहण निमित्त विंदी। अन्त भेदका क्षेत्र घनांगुलका संख्यातवां भाग मात्र ऐसा ६ बहुरि द्वितीयादि कांडकनिविषैं मध्य भेदनिकी विंदी घनांगुलकी ऐसी ६ पृथक्त्व घनांगुलकी ऐसी पृ ६ इत्यादि संदृष्टि जाननी। बहुरि चौदहां आदि कांडकनिका प्रथम भेदका क्षेत्र क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच छह बार असंख्यात गुणा द्वीप समुद्र प्रमाण अर अन्त कांडकके अन्त भेदका क्षेत्र लोक प्रमाण ≡ जानना। बहुरि प्रथम कांडकके प्रथम भेदका विषयभूत काल घन आवलीका असंख्यातवां भाग मात्र ऐसा ८/a द्रव्य अपेक्षा द्वितीय भेदविषैं ऐसा ही अर मध्य भेदनिकी संदृष्टि विंदी अन्त भेदविषैं घनावलीका सं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्यातवां भागमात्र काल ऐसा है ८ बहुरि ऊपरि मध्य भेदनिकी विंदी घनावलीकी ऐसी ८ पृथक्त्व घनावलीकी
७
ऐसी पृ ८ किंचिदून अंतर्मुहूर्तकी ऐसी २ ७– इत्यादि संदृष्टि जाननी। अर चौदहवां आदि कांडकनिका प्रथम भेदका काल क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच छह बार असंख्यात गुणा वर्षप्रमाण जानना। अंत कांडकके अंत भेदका काल एक समय घाटि पल्य प–१ जानना। बहुरि प्रथम कांडकके प्रथम भेदका भाव दोयवार असंख्यात-भाजित आवलीमात्र अर ऊपरि क्रमतैं एक दोय तीन बार आवलीका असंख्यातवां भाग ऐसा ८ ताकरि
a
गुणित भाव जानना। इस क्रमतैं मध्य भेद होहिं तिनकी संदृष्टि विंदी. अंतकांडकके अंत भेदका विषय भूत भाव असंख्यात लोक मात्र ≡ a जानना। ऐसैं इस रचनाका अभिप्राय है।

बहुरि क्षेत्रविषैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य अपेक्षा भेद भएं एक प्रदेश बधै। बहुरि कालविषैं ध्रुव वृद्धि अपेक्षा घनांगुल प्रमाण प्रदेश बधैं कालविषैं एक समय बधै सो प्रथम कांडकविषैं जघन्य क्षेत्रकौं उत्कृष्ट क्षेत्रविषैं घटाएं ऐसे ६। a–७ इहां समच्छेदकरि घनांगुलकौं समान देखि असंख्यातका गुणकारविषैं
७ a
संख्यात घटाया अर संख्यात गुणा असंख्यातका भाग दीया ऐसैं ही जघन्य कालकौं उत्कृष्ट कालविषैं घटाएं ऐसा ८ a–७ इनिकौं प्रथम भेद संबंधी विषै समच्छेद करि जोड़ें अंतभेदविषैं क्षेत्र काल हो है। बहुरि इस क्षेत्र वि-
७ a
शेषकौं काल विशेषका भाग दीएं ऐसा ६। a–७ अपवर्तन कीएं घनावलीकरि भाजित घनांगुलमात्र
७। a। ८ a–७
७ a
ध्रुव वृद्धिका प्रमाण ऐसा ८ हो है। ऐसैं ही अन्य कांडकनिविषैं भी यथासम्भव जानना।
a

बहुरि अध्रुव वृद्धि अपेक्षा क्षेत्रविषैं घनांगुलका असंख्यातवां भाग वा संख्यातवां भाग वा घनांगुल वा संख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वा असंख्यात गुणित घनांगुल अर ऐसैं ही जगच्छ्रेणि जगत्प्रतर विषैं कहना सो इतने इतने प्रदेश बधैं काल विषैं एक समय बधै है तिनकी संदृष्टि ऐसी ६/a ६/१ ६ ६ १ ६ a –/a –/१ — – १ – a =/a =/१ = = १ = a जाननी।

बहुरि परमावधिकी रचनाविषैं विषयभूत देशावधिके द्रव्यकौं ध्रुवहारका भाग दीएं प्रथम भेदका द्रव्य ऐसा व/६ ६ ऊपरि एक एक अधिक वार ध्रुवहारका भाग दीएं द्वितीयादि भेदका द्रव्य होइ। अंत भेदविषैं ध्रुवहारमात्र द्रव्य ऐसा ९ हो है बहुरि एक तीन छह दश पंद्रह इत्यादि जेथवां भेद होइ तावन्मात्र गच्छका संकलन धनमात्र आवलीका असंख्यातवां भाग ८/a करि प्रथम आदि भेदनिविषैं अर अंत भेदविषैं तीनवार असंख्यात लोक ≡ a ≡ a ≡ a करि लोक ≡ कौं गुणें क्षेत्र प्रमाण हो है अर समय घाटि पल्य प– १ कौं गुणें काल प्रमाण हो है। बहुरि एक दोय आदि एक एक अधिक वार आवलीका असंख्यातवां भाग ८/a करि प्रथमादि भेदनि विषैं अर अंत भेदविषै असंख्यात लोक ≡ a करि असंख्यात लोककौं ≡ a गुणें भाव प्रमाण हो है ऐसा जानना।

बहुरि इच्छिद रासिच्छेद, इत्यादि करण सूत्रका अभिप्राय करि संख्यात घाटि मध्यपरीतासंख्यात मात्र आवलीका असंख्यातवां भागके अर्धच्छेदानिकी संदृष्टि ऐसी १६– ४ इहां घटावनेकी संदृष्टिके आगें संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक जानना सो ताका भाग पल्यादिकके अर्धच्छेदनिकौं दीएं जो जो लब्धराशि होइ

पल्यके छे	सूच्यंगुलके छे छे	जगच्छ्रेणि वि छे छे	लोकके वि छे छे ९
१६ –४	१६– ४	१६– ४	१६ – ४

तितने तितने आवलीका असंख्यातवां भाग मांडि परस्पर गुणें

गोम्मट सार

१४२

पल्यादिक राशि हो है तातैं 'दिण्णच्छेदेणवहिद' इत्यादि सूत्रकरि प्रमाण राशि विषैं देय तो आवलीका असंख्या- अर्थसं०
तवां भाग अर विरलन आवलीका असंख्यातवां भागका अर्धच्छेदानिकरि भाजित लोकका अर्धच्छेद मात्र ऐसा
प्रमाणराशि फलराशि लोकमात्र ऐसा फल इच्छाराशिविषैं देयराशि आवलीका असंख्यातवां भागमात्र अर

दे । ८ ≡
a
वि वि छे छे १
१६ – ४ =

१ —— ।१ ——
विरलन राशि गच्छका संकलन धनमात्र सो अंत भेदविषैं गच्छ परमावधिका सर्व भेद प्रमाण ऐसा ≡ a ६ । a
प
a

सो एक घाटि गच्छकौं अर संपूर्ण गच्छकौं दोय अर एकका भाग देइ परस्पर गुणनमात्र हो है सो ऐसा—
इच्छाराशि दे ८ सो लब्ध राशिमात्र लोकनिकौं परस्पर गुणें ऐसा ≡ a ≡ a ≡ a गुणकार

१ –
a
१ —— १ ——
१ – १ –
वि ≡ a ६ a = a १ a
प २ प १
a a

परमावधिका अंत भेदविषैं क्षेत्र काल प्रमाण ल्यावनेकौं ऐसा जानना।

१४३

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमावधि विषयभूत द्रव्यादि रचना ।

नाम	द्रव्य	क्षेत्र	काल	भाव
अंत भेद	९	≡ ≡a। ≡a। ≡a	प-१ ≡ a ≡ a ≡ a	≡ a। ≡ a
मध्य भेद	:	:	:	:
पंचम भेद	व १।९।९।१।१।९	≡ ८।१५ a	प-१।द।१५ a	≡ a।८।द।द।द।द a।a।a।a।a
चतुर्थ भेद	व १।१।९।१।९	≡ द।१० a	प-१।द।१० a	≡ a।द।द।द।द a।a।a।a
तृतीय भेद	व १।९।९।९	≡द।द।द।द।द।द a।a।a।a।a।a	प-१।द।द।द।द।द।द a।a।a।a।a।a	≡ a।द।द।द a।a।a
द्वितीय भेद	व ९।९।९	≡ द।द।द a।a।a	प-१।८।द।८ a।a।a	≡ a।द।द a।a
प्रथम भेद	व ९।९	≡ द a	प-१।द a	≡ a।द a

बहुरि सर्वावधिका विषयभूत द्रव्य एक परमाणू क्षेत्र पांचबार असंख्यात लोक गुणा लोकमात्र बहुरि काल च्यारि असंख्यात लोक गुणित समयघाटि पल्य प्रमाण जानना । १४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य	क्षेत्र	काल
१	≡ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३	प— १ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३

बहुरि भाव है सो जघन्य देशावधितैं सर्वावधि पर्यंत सर्व द्रव्य अपेक्षा भेदानविषै क्रमतैं आवलीका असंख्यातवां भाग गुणा जानना। बहुरि वैमानिक देवनिके अवधि क्षेत्र ऐसा—

सौ २	स २	ब्र २	ला २	शु २	श २	आ २	आ २	ग्रैं ६	अनु ६	अनुत्तर ५
$\overline{७}$ ३/२	$\overline{७}$ ४	$\overline{७}$ ११/२	$\overline{७}$ ६	$\overline{७}$ । १५/२	$\overline{७}$ । ८	$\overline{७}$ १९/२	$\overline{७}$ १०	$\overline{७}$ ११	$\overline{७}$ १३	$\overline{७}$ । १४—
$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$
$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$	$\overline{७}$

इहां नीचैं अर पार्श्व विषै भुजकोटि तौ एक राजूमात्र जानना अर वीचिमें ऊंचाईका प्रमाण ड्योढ च्यारि साढा पांच छह साढा सात आठ साढा नव दश ग्यारह तेरह चौदह राजू मात्र जानना।

इहां सौधर्म युगलवालोंकैं रत्नप्रभापर्यंत अवधि क्षेत्र है सो तहांतैं ड्योढ राजू है। अर सनत्कुमार युगल वालोंके शर्करा प्रभापर्यंत अवधि क्षेत्र है तहांतैं सो च्यारि राजू है। ऐसैं ही अन्यकी भी ऊंचाईका प्रमाण जानना। ताके जाननेकौं रचना ऐसी——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

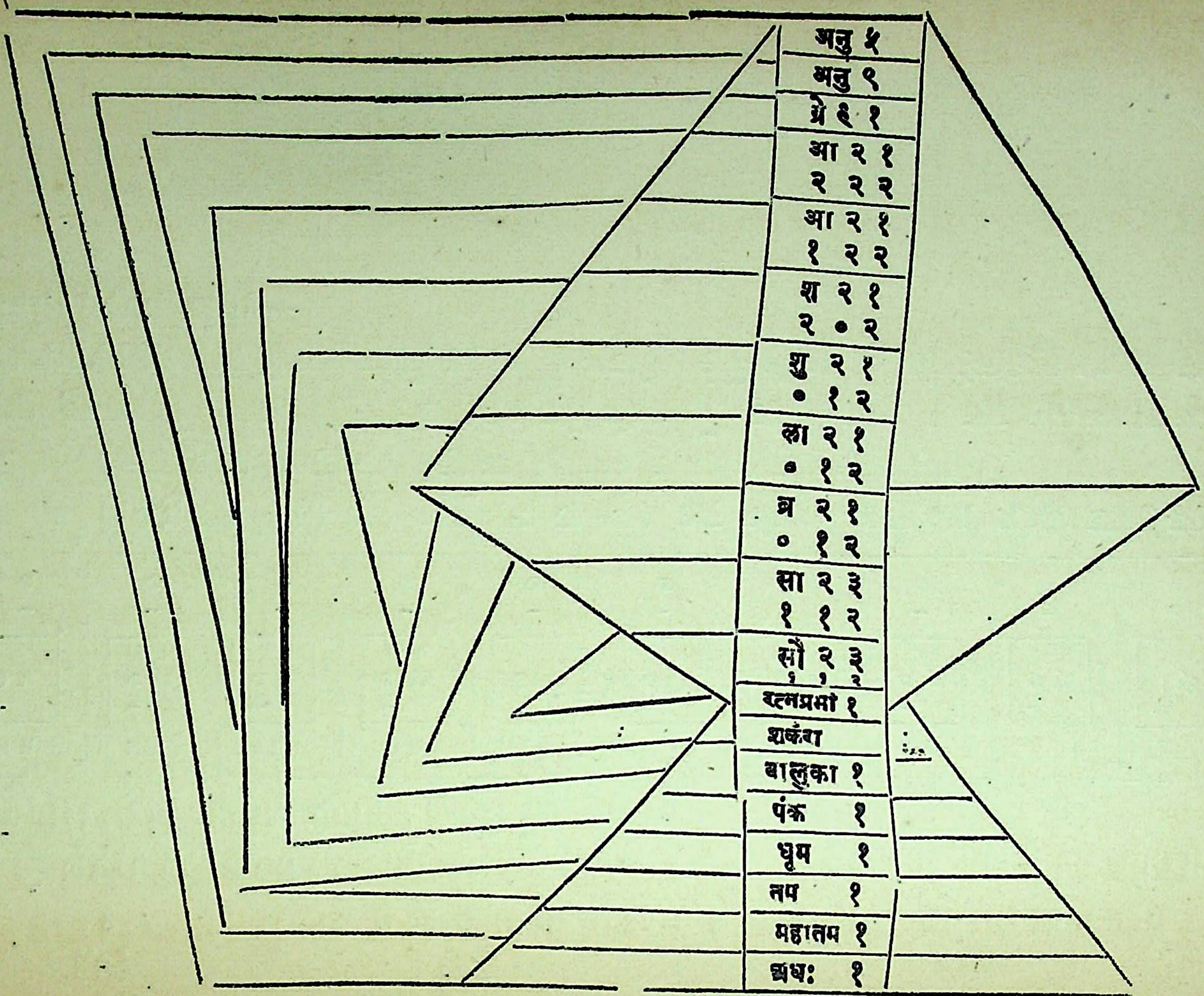

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस रचनाविषैं लोककी रचना करी अर जाकी ऊंचाई थी ताका नाम लिखि आगें जेता राजूका प्रमाण ऊंचाई थी तेतेका अंक लिख्या। स्वर्गनिविषे जहां दोय इन्द्र थे तहां दोय एके लिखि संदृष्टि करी। एक इंद्र था तहां एक एका एक विंदीकी संदृष्टि करी। बहुरि वैमानिक देवका जिस अपने स्थानतैं लगाय नीचेकौं जहां पर्यंत अवधिक्षेत्र था तिस अपने स्थानतैं लगाय तहां पर्यंत लीक करनेकी संदृष्टि करी है सो ऐसैं अवधिक्षेत्रका घनफल कीएं क्रमतैं सौधर्म द्विकादिककैं ड्योढ च्यारि साढा पांच छह साढा सात आठ साढा नव दश ग्यारह तेरह किंचिदून चौदह घनराजूमात्र क्षेत्र हो है सो घनराजूकी संदृष्टि ऐसी ≡/३४३ ताके आगें ड्योढ आदिका गुणकार कीएं संदृष्टि हो है। बहुरि समस्त कर्मका सत्त्व द्रव्य किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र ऐसा स a १२– ताकौं सातका भाग दीएं ज्ञानावरणका ऐसा स a १२–/७ याकौं अनंतका भाग देइ बहुभागमात्र देशघातियानिका द्रव्य ऐसा स a १२– ख / ७ ख इहां गुणकारविषैं एक घाटि है ताकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा स a १२–/७ याकौं च्यारिका भाग दीएं अवधि ज्ञानावरणका द्रव्य ऐसा स a १२–/७ ४ सो जितने अपने अपने क्षेत्रके प्रदेश हैं तितनी बार इस अवधि ज्ञानावरणके द्रव्यकौं ध्रुवहारका भाग दीएं जो द्रव्य होइ ताकौं वैमानिक देव अवधिज्ञानकरि जाने हैं। तिनकी रचना ऐसी है—

नाम	सौधर्मद्विक	सनत्कुमारद्विक	ब्रह्मद्विक	लांतवद्विक	शुक्रद्विक	शतारद्विक	आनतद्विक	आरणद्विक	ग्रैवेयिक ९	अनुदिश ९	अनुत्तर ५
क्षेत्रप्रमाण	≡ ३ / ३४३ २	≡ ४ / ३४३	≡ ११ / ३४३ २	≡ ६ / ३४३	≡ १५ / ३४३ २	≡ ८ / ३४३	≡ १९ / ३४३ २	≡ १० / ३४३	≡ ११ / ३४३	≡ १३ / ३४३	≡ १४ / ३४३
अवधिज्ञानावरणद्रव्य	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२– / ७ ४	स a १२ / ७ ४	स a १२– / ७ ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४८ बहुरि भवनत्रिक देवनिकैं अवधिका विषयभूत क्षेत्र वा कालकी अर वैमानिकनिके कालकी अर नारकीनिके क्षेत्रकी संदृष्टि सुगम है। सो कथन अनुसारि यथासंभव जानि लेनी। बहुरि मनःपर्यय ज्ञानका विषयभूत द्रव्यादिकविषैं एक समयविषैं निर्जरा योग्य औदारिकका समय प्रबद्ध ऐसा स a याकौं अनंतगुणा जीवराशिकरि गुणें विस्रसोपचय परमाणूनिका प्रमाण ऐसा स a १६ ख यामैं औदारिकका समयप्रबद्ध जोडनेकौं आगिला गुणकार ऊपरि एक अधिक कीएं ऋजुमतिका विषयभूत जघन्य द्रव्य ऐसा स a १६ ख (ऊपरि १—) हो है। बहुरि प्रमाणराशि औदारिक शरीरकी अवगाहना संख्यात घनांगुल अर फलराशि विस्रसोपचय सहित औदारिक शरीरका निर्जरारूप समय प्रबद्धमात्र अर इच्छाराशि इंद्रिय मार्गणाविषैं चक्षु इंद्रियकी अवगाहना कही थी तीहिं प्रमाण कीएं

प्रमाण	फल	इच्छाराशि
६ ७	१— स a १६ ख	६ प १— a प ७ ७ प a a

लब्धिराशिमात्र ऋजुमतिका विषयभूत द्रव्य ऐसा

१—
स a १६ ख। ६ प / a हो है। बहुरि याकौं मनोवर्गणाके भेदनिका अनंतवां भाग ऐसा ज १ / ख ख तींहि प्रमाण जो ध्रु-

१—
६ ७ प ७ ७ प
a a

वहार ताकी संदृष्टि नवका अंक ९ ताका भाग दीएं विपुलमतिका विषयभूत जघन्य द्रव्य हो है। बहुरि योगमार्गणाविषैं उक्त विस्रसोपचयरहित कार्माण समय प्रबद्ध ऐसा स a a a ख ख (ऊपरि — —) याकौं ध्रुवहारकी संदृष्टि नवका १४९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंक ताका भाग दीएं विपुलमतिके दूसरे भेदका विषयभूत द्रव्य ऐसा स a a a ख ख हो है। बहुरि याकौं असंख्यात कल्पकालमात्र ध्रुवहार ऐसे क a ९ ९ ९ तिनका भाग दीएं विपुलमतिका विषयभूत उत्कृष्ट द्रव्य हो है। बहुरि ऋजुमतिका विषयभूत जघन्य क्षेत्र दोय वा तीन कोश उत्कृष्ट सात वा आठ योजन अर विपुलमतिका विषयभूत जघन्य क्षेत्र आठ वा नव योजन उत्कृष्ट पैंतालीस लाख योजन मात्र समचतुरस्र क्षेत्र ताकी रचना ऐसी |४५ ल| ४५ ल ४५/क बहुरि ऋजुमतिका विषयभूत जघन्य काल दोय तीन भव उत्कृष्ट सात वा आठ भव अर विपुलमतिका विषय जघन्य आठ वा नव भव उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प/a बहुरि ऋजुमतिका विषयभूत जघन्य भाव तीन वार संख्यातकरि भाजित घनावलीमात्र उत्कृष्ट यातैं असंख्यात गुणा अर यातैं भी असंख्यात गुणा विपुलमतिका विषय भूत जघन्य भाव अर ताका विषय उत्कृष्ट असंख्यात लोकमात्र जानने। तिनकी रचना ऐसी हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	द्रव्य	क्षेत्र	काल	भाव
उत्कृष्टविपुलमति	— — . स a a a ख ख ९ क a ६ ९ ६	यो ४५०००००	भ प a	≡ a
मध्यविपुलमति	० ०	० ०	० ०	० ०
जघन्यविपुलमति	द्वितीयभेद — — स a a a ख ख ६ १___ जघन्य स a १६ ख ६ प १_ a ६ ७ृ प ७ृ ७ृ प ६ a a	यो ८ । ९	भ ८ । ६	८ a a a a a
उत्कृष्टऋजुमति	१___ स a १६ ख ६ प १_ a ६ ७ृ प ७ृ ७ृ प a a	यो ७ । ८	भ ७ । ८	८ a a a a
मध्यऋजुमति	० ०	० ०	० ०	० ०
जघन्यऋजुमति	१___ स a १६ ख	को २ । ३	भ २ । ३	८ a a a

१५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां मध्यभेदनिके ग्रहण निमित्त बिंदीनिकी संदृष्टि जाननी। बहुरि जीवनिकी संख्याविषैं मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी प्रत्येक पल्यके असंख्यातवे भाग मात्र प मनःपर्ययज्ञानी संख्यात ७ केवलज्ञानी संख्यात अधिक सिद्धराशिमात्र ३ बहुरि अवधिज्ञानी जीव ऐसे प । a — ७ इहां मतिज्ञानी जीवनिकी संख्याविषैं अवधिज्ञान रहित तिर्यंच मतिज्ञानी जीवनिके असंख्यातवे भागमात्र तिनके घटावनेकौं असंख्यातका भाग अर एक घाटि असंख्यातका गुणकार जानना। अर अवधिरहित संख्यात मनुष्य घटावनेकौं आगैं ऐसी — ७ संदृष्टि जाननी। बहुरि विभंगज्ञानी देव ऐसे ॥ इहां देवराशिके आगैं सम्यग्दृष्टीनिके घटावनेकौं आगैं ऐसी — संदृष्टि जाननी बहुरि पल्यका असंख्यातवां भाग गुणित घनांगुलकरि गुणी हुई जगच्छ्रेणिमात्र तिर्यंच ऐसे — ६ प अर मनुष्य संख्यात ७ अर नारकी ऐसे — २ — इहां नारक राशिविषैं सम्यग्दृष्टीनिके घटावनेकौं आगैं ऐसी — संदृष्टि जाननी। सो देवराशिविषैं इन तीन राशि मिलावनेकौं ऊपरि ऊभी तीन लीककी संदृष्टि कीएं विभंगज्ञानीनिकी संदृष्टि ऐसी हो है ।।।।। १ बहुरि कुमती कुश्रुतज्ञानी प्रत्येक ऐसे १३ — इहां संसारी राशिविषैं पंच सुज्ञानी जीव घटा-

१
७—
=
४।६५ = १

७—
=
४।६५ = १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनेकौं किंचिदूनकी आगें ऐसी — संदृष्टि जाननी।

कुमति	कुश्रुत	विभंग ॥	मति	श्रुत	अवधि	मनःपर्यय	केवल
१३–	१३–	॥। १ = ९– ४।६५ = १	प a	प a	१ प a-९ aa	९	९ ३

आगै संयम मार्गणा अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए हैं—तहां जीवनिकी संख्याविषै संदृष्टि ऐसी—

नाम	सामायिक	छेदोपस्थापन	परिहारविशुद्धि	सूक्ष्म सांपराय	यथाख्यात	संयमासंयम	असंयम
प्रमाण	८९०९९१०३	८९०९९१०३	६९९७	८९७	८९९९९७	प a a४a	१३–

इहां संयमासंयमवालोंकी संख्या आगें सम्यक्त्वमार्गणाविषैं देशसंयत गुणस्थानवर्तीनिकी संख्या कहेंगे सो जाननी अर संसारी राशिमें अन्य छह संयमीनिकी संख्या घटावनेकौं ऐसी—संदृष्टि कीए असंयमीनिकी संख्या जाननी। अन्य सर्व सुगम है।

अथ दर्शन मार्गणा अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है तहां जीवनिकी संख्याविषैं संदृष्टि ऐसी—

नाम प्रमाण	शक्तिचक्षुर्दर्शनी	व्यक्तचक्षुर्दर्शनी	अचक्षुर्दर्शनी	अवधिदर्शनी	केवलदर्शनी
	=।२= ४ ४ २ a	= २— ४ ४ ५	१३–	१ प a-९ a a	९ ३

इहां प्रमाणराशि वेंद्रिय आदि च्यारि ४ फलराशि त्रस जीवनिका प्रमाण ऐसा = इच्छाराशि चौंद्रिय पंचेंद्रिय
४
५
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोय २ कीएं लब्धराशि ऐसा = । २ इहां वेंद्री आदि किंचित् ऊन अनुक्रम लीएं हैं तातैं किंचित ऊन करनेकौं
४ ४
२
a

अर पर्याप्तनिकी संख्या घटावनेकौं आगें ऐसी = संदृष्टि कीएं शक्तिगत चक्षुर्दर्शनीनिकी संदृष्टि हो है। बहुरि प्रमाण राशि इच्छाराशि पूर्वोक्त कीएं अर फलराशि पर्याप्त त्रस जीवनिकी संख्या ऐसी = कीएं लब्धराशि ऐसा = २
४ ४ ४
५ ५

इहां वेंद्री आदि क्रमतैं हीन क्रम लीए हैं तातैं किंचित् ऊन करनेकी आगें ऐसी – संदृष्टि कीएं व्यक्त चक्षुर्दर्शनीनिकी संदृष्टि हो है। बहुरि संसारी राशिमें किंचित् ऊन करनेकौं आगें ऐसी – संदृष्टि कीएं अचक्षुर्दर्शनीनिकी संदृष्टि हो है। बहुरि अवधि केवल ज्ञानीनिकी संदृष्टि ज्ञानमार्गणा विषैं जैसैं कही तैसैं जाननी।

अथ लेश्या मार्गणाधिकारविषै संदृष्टि कहिए है। तहां कृष्णादि द्रव्य लेश्या इंद्रिय व्यक्तिकरि संख्याते हैं तहां संदृष्टि ऐसी a है। अर स्कंधनिकरि असंख्यात है तहां संदृष्टि ऐसी a अथवा असंख्याते लोकमात्र हैं। तहां संदृष्टि ऐसी ≡ a अर परमाणूनिकरि अनंत हैं तहां संदृष्टि ऐसी ख जाननी। बहुरि कषायनिके उदय स्थान असंख्यात लोकमात्र ऐसे ≡ a इनकौं यथायोग्य असंख्यात लोककी संदृष्टि नवका अंक ९ ताका भाग दीएं बहुभाग मात्र संक्लेश रूप अशुभलेश्याके स्थान ऐसे हैं ≡ a। ८ एक भागमात्र विशुद्धरूप शुभलेश्याके स्थान
९

ऐसे हैं ≡ a १ इहां भागहारका भाग देइ बहुभागविषै सर्वत्र एक घाटि भागहार प्रमाण करि गुणना जानना।
९

अर एक भाग विषै एककरि गुणना जानना। बहुरि अशुभलेश्याके स्थाननिकौं तिनही प्रतिभागका भाग देइ देइ बहुभाग बहुभाग मात्र कृष्ण नीलके स्थान अर एकभागमात्र कपोत लेश्याके स्थान जानने। बहुरि शुभलेश्याके १५३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

स्थाननिकौं प्रतिभागका भाग देइ देइ बहुभागमात्र पीत पद्मके स्थान अर एकभागमात्र शुक्लके स्थान जानने। तिनकी रचना—

सर्वकषायानिके स्थान ≡ ३

अशुभ लेश्यानिके स्थान ≡ ३ । ८ शुभलेश्यानिके स्थान ≡ ३ १

कृष्ण	नील	कपोत	पीत	पद्म	शुक्ल
उ ० ० ० ० ० ज	उ ० ० ० ० ज	उ ० ० ० ० ० ज	ज ० ० ० ० ० उ	ज ० ० ० ० ० उ	ज ० ० ० ० ० उ
≡ । ३ । ८ । ८	≡ ३ । ८ । ८	≡ ३ । ८ । १ ।	≡ । ३ । ८	≡ ३ । ८	≡ । ३ । १
९ । ९	६ । ६ । ६	९ । ६ । ९	९ । ६	९ । ९ । ६	९ । ६ । ९

इहाँ उत्कृष्ट वा जघन्यके बीचि वा जघन्य उत्कृष्टके बीचि बिंदीनिकी संदृष्टि मध्यस्थाननिके ग्रहण निमित्त जाननी। अर अशुभलेश्याके स्थान ऐसे ≡ ३ ८ तिनकौं क्रमतैं संदृष्टि अपेक्षा आठ आठ एक करि गुणें अर एकवार दोयवार दोयवार नवका भाग दीएं कृष्णादिकके स्थान हो हैं। अर शुभलेश्याके स्थान ऐसे ≡ ३ तिनकौं क्रमतैं आठ आठ एक करि गुणें अर एकवार दोयबार दोयवार नवका भाग दीएं पीतादिकके स्थान हो हैं ऐसा जानना। बहुरि अपकर्षणकरि आयु बांधनेवाले जीवनिका प्रमाण किंचिदून संसारी राशिमात्र ऐसा १३— याकौं संख्यात ७ का भाग देइ बहुभाग मात्र एकादि सात पर्यंत अपकर्षणकरि आयु बांधनेवालेनिका अर एक भागमात्र आठ अपकर्षणनिकरि आयु बांधनेवालेनिका प्रमाण ऐसा जानना।

१३—७—१	१३—७—१	१३—७—१	१३—७—१	१३—७—१	१३—७—१	१३—७—१	१३—१
७	७ ७	७ ७ ७	७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ७ ७ ७ ७
१	२	३	४	५	६	७	८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां बहुभागनिविषैं एक घाटि संख्यात ऐसा ७–१ ताका तौ गुणकार अनुक्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच छह सात बार संख्यात ऐसा ७ ताका भागहार जानना। अर एक भागविषैं एकका गुणकार सातवार संख्यातका भागहार जानना। अर नीचैं एक दोय आदि अपकर्षणनिकी संदृष्टि एका दूवा आदि अंक जानने। बहुरि आठ अपकर्षनि करि आयु बांधनेवालेकैं आठवां अपकर्षविषैं आयुबांधनेका जघन्य काल स्तोक अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ ७ याकौं संख्यातकी सहनानी च्यारिका अंक ताका भाग देइ एक भागमात्र विशेष अधिक ताका उत्कृष्ट काल ऐसा २ ७। ५ याकौं संख्यातकी सहनानी च्यारि करि गुणें ताके सातवां अपकर्षविषैं जघन्य काल ऐसा
४

२ ७। ५। ४ यातैं विशेष अधिक ताका उत्कृष्ट काल ऐसा २ ७। ५। ४। ५ ऐसैं ही एक अपकर्षका उत्कृ-
४ ४। ४

ष्ट पर्यंत टीका विषै कहे हैं जे वहत्तर स्थान तिन विषै अपने जघन्यकौं संदृष्टि अपेक्षा पांच करि गुणि च्यारिका भाग दीएं उत्कृष्ट हो है अर पूर्व उत्कृष्टकौं च्यारिकरि गुणें उत्तर जघन्य हो है ऐसा जानना। बहुरि जीवनिकी संख्याविषै कृष्णादि अशुभ लेश्यावाले जीव किंचिदून संसारी राशि मात्र ऐसैं १३–याकौं आवलीका असंख्यातवां भागकौं संदृष्टि नवका अंक ९ ताका भाग देइ बहु भाग ऐसा १३–८ ताकौं तीन भाग करि एक
९

एक समान भाग कृष्णादि लेश्यावालोंकौं देना अवशेष एक भाग ऐसा १३- ताकौं प्रतिभागका भाग देइ देइ बहु
९

भाग बहुभाग कृष्ण नील लेश्यावालोंको एक भाग कपोतवालोंको और देना।

नाम	कृष्ण	नील	कपोत
समानभाग	१३- ८ ९ ३	१३- ८ ९ ३	१३- ८ ९ ३
शेषभाग	१३- ८ ९ ९	१३- ८ ९ ९ ९	१३- १ ९ ९ ९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहां समच्छेद विधानकरि सर्वत्र तीनबार नव अर तीनका भागहार करनेकौं समान भागविषैं एकवार नव अर तीनका भागहार पूर्वे देखि दोयबार नवका गुणकार करना। अर देय भागविषैं तीनका भागहार नव देखि तीनका गुणकार करना अर कृष्णलेश्याकैं दोयवार ही नवका भागहार देखि एकवार नवका गुणकार करना। ऐसैं कीएं ऐसा हो है—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत
समानभाग	१३-८ ९ ९ ३ ९ ९ ९	१३-८ ९ ९ ३ ९ ९ ९	१३- ८ ९ ९ ३ ९ ९ ९
देयभाग	१३-८ ३ ९ ३ ९ ९ ९	१३-८ ३ ३ ९ ९ ९	१३-१। ३ ३ ९ ९ ९

तहां परस्पर गुणें अर समान भाग देयभाग मिलाएं कृष्णादि लेश्यावाले जीवनिका प्रमाण ऐसा हो है—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत
प्रमाण	१३-८६४ ३। ७२९	१३-९७२ ३। ७२९	१३-९५१ ३। ७२९

बहुरि काल अपेक्षा अंतर्मुहूर्तमात्र काल ऐसा २ ७ ताका तैसैं ही विधान कीएं कृष्णादि लेश्यानिका काल ऐसा—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत
प्रमाण	२ ७ ८६४ ३ ७२९	२ ७ ९७२ ३ ७२९	२ ७ ९५१ ३ ७२९

तहां प्रमाण राशि अंतर्मुहूर्त मात्र ऐसा २ ७ फलराशि जीवनिका प्रमाण ऐसा १३— इच्छाराशि अपना अपना कालकीएं पूर्वोक्त जीवनिका प्रमाण आवै है ऐसैं द्रव्य मानतैं कृष्णादि लेश्यावाले जीव अशुभलेश्यावाले जीवनिके त्रिभागमात्र हैं परंतु क्रमतैं हीन रूप हैं तातैं कृष्ण लेश्याका राशि ऊपरि किंचित अधिककी ऊभी लीक करनी। अर नील लेश्याका भागहार ऊपरि किंचित् अधिककी एक ऊभी लीक करनी। अर कपोत लेश्याका भागहार ऊपरि दोयबार किंचित् अधिककी दोय ऊभी लकीर करनी।

बहुरि क्षेत्रमानतैं लोकतैं अनंत गुणें ऐसे ≡ ख अर काल मानतैं अतीतकालतैं अनंत गुणें ऐसे हैं अ ख परंतु क्रमतैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीन रूप हैं तातैं कृष्णका राशि ऊपरि किंचित् अधिककी ऐसी । अर नीलका गुणकार आगें किंचित् हीनकी ऐसी – अर कपोतका गुणकार आगें दोयबार किंचित् हीनकी ऐसी = संदृष्टि जाननी । बहुरि भाव मानतैं केवलज्ञानके अनंतवे भागमात्र ऐसे के ख हैं परंतु क्रमतैं हीन है तातैं कृष्णका राशि ऊपरि किंचित् अधिककी अर नील कपोतका भागहार ऊपरि एकबार दोयबार किंचित् अधिककी संदृष्टि जाननी । ऐसैं कृष्णादि लेश्यावाले जीवनिका प्रमाण ऐसा जानना—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत
द्रव्यमान	। १३— २	१३– । २	१३— ॥ २
क्षेत्रमान	। ≡ ख	≡ ख–	≡ ख =
कालमान	। अ ख	अ ख–	अ ख =
भावमान	। के ख	के । ख	के ॥ ख

बहुरि शुभलेश्यावाले जीवनिविषै द्रव्य मानतैं शुक्ललेश्यावाले असंख्यात पद्मवाले तिनतैं असंख्यात गुणे पीतवाले इनतैं भी संख्यात गुणे जानने । बहुरि क्षेत्रमानतैं पीतलेश्यावाला ज्योतिष्क राशि ऐसा ४ । ६५ = भवनवासी राशि ऐसा – १ व्यन्तरराशि ऐसा = ४ ६१ = ८१।१० ० सौधर्म द्विकवासी ऐसा–३ पांचबार संख्यात गुणित पण्णट्ठी प्रमाण प्रतरांगुल करि भाजित जगत्प्रतरमात्र तैसे तिर्यंच ऐसा = ४ ६५ = ७ ७ ७ ७ ७ संख्याते तैसे मनुष्य ऐसे ७ इनके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलावनेकौं ज्योतिष्कराशि व्यंतरराशि पूर्वोक्त प्रकार मिलैं ऐसा = ४।६५ = ९ १ याके ऊपरि अन्य च्यारि राशि मिलावनेकी ऊभी च्यारि लीककी संदृष्टि कीएं पीतलेश्यावालोंकी संदृष्टि ऐसी हो है = ४६५ ९ ।।।। १ बहुरि छह बार संख्यात गुणित पण्णट्ठी प्रमाण प्रतरांगुलकरि भाजित जगत्प्रतर मात्र पद्मलेश्यावाले तिर्यंचका ४।६५ = ९ ९ ९ ९ ९ ९ प्रमाण है तामैं तैसे कल्पवासी वा मनुष्य मिलावनेकी ऊपरि दोय ऊभी लीककी संदृष्टि कीएं पद्मलेश्या- वालोंका प्रमाण हो है बहुरि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र शुक्ललेश्यावालोंका प्रमाण है a बहुरि काल मा- नतैं पीतवाले कल्पकालतैं असंख्यात अर संख्यातगुणे हैं क a । ९ पद्मवाले कल्पकालतैं असंख्यात गुणे हैं — क a शुक्लवाले पल्यके असंख्यातवें भागमात्र हैं प/a बहुरि भावमानतैं पीतादिकवाले अवधिज्ञानके भेदनिकी संदृष्टि प्राकृत नामका आदि अक्षररूप ऐसी ओ ताकैं असंख्यातका अर असंख्यात संख्यातका भाग अर असंख्यात संख्यात असंख्यातका भाग दीएं हो है ऐसैं पीतादि लेश्यावाले जीवनिका प्रमाण ऐसा जानना—

नाम	पीत	पद्म	शुक्ल
द्रव्यमान	a a ९	a a	a
क्षेत्रमान	।।।। = ४।६५=१ (१/९)	।। = ४।६५=९९९९९९	a (२)
कालमान	क a ९	क a	प/a
भावमान	ओ/a	ओ/a ९	ओ/a ९ a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि क्षेत्राधिकारविषैं कृष्णलेश्यावाले स्वस्थान स्वस्थान वेदना समुद्घात कषाय समुद्घात मारणांतिक समुद्घात उपपादवाले जीवनिका क्षेत्र सर्वलोक है ≡ तहां जीवनिका प्रमाण कहिए है—

कृष्णलेश्यावाला जीवराशि ऐसा १३—/३— ताकौं संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताका भाग देइ बहुभाग ऐसा १३—४/३—५ स्वस्थानविषैं देना। अवशेष एकभागका बहुभाग ऐसा १३—४/३—५।५ वेदना समुद्घातविषैं देना। अवशेष एक भागका बहुभाग ऐसा १३—४/३—५।५।५। कषायसमुद्घातविषैं देना अवशेष एक भाग ऐसा १३—१/३—५।५।५ ताकौं फलराशि करिए। अर अंतर्मुहूर्तकाल ऐसा है २ ७ ताकौं प्रमाणराशि करिए अर एक समय इच्छाराशि करिए प्र २ ७ फ १३—१/३—५।५।५ इ १ तहां लब्धराशि ऐसा १३—/३—५।५।५।२ ७ उपपादविषैं देना बहुरि याकौं फलराशि अर प्रमाणराशि एक समय इच्छाराशि अंतर्मुहूर्त कीएं प्र स० १ फ १३—/३—५।५।५।२ ७ इ २ ७ लब्धराशि मूलराशिके संख्यातवे भागमात्र ऐसा १३—/३—७ मारणांतिक समुद्घातविषैं देना। बहुरि पर्याप्त त्रसराशि ऐसा =/४/५ ताकौं किंचिदून शुभलेश्यावालेनिके घटावनेकौं आगै ऐसी — संदृष्टिकरि ताकौं किंचिदून तीनका भाग दीएं कृष्णलेश्यावाला पर्याप्त त्रसराशि ऐसा =/४।३—/५— याकौं संख्यातकी संदृष्टि पांचका भाग देइ बहुभाग ऐसा =४/४।३—५/५— स्वस्थान स्वस्थानविषैं देना। अवशेष एक भागका ब- १५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुभाग ऐसा = ४ विहारवत्स्वस्थानविषैं देना अवशेष एकभाग ऐसा = १ यथायोग्य अन्य पद-
४।३—५।५ ४।३—५।५
५— ५—
निविषैं देना। तहां त्रस पर्याप्तनिका मध्य अवगाह संख्यात घनांगुल मात्र फलराशिकरि विहारवत्स्वस्थान कृष्ण
लेश्यावाले जीवनिका प्रमाण मात्र इच्छाराशिकौं गुणें प्र १। फ ६ १। इ = ४ लब्धराशि ऐसा = ४।६ १
४।३—५।५ ४।३—५।५
५— ५—
अपवर्तन कीएं संख्यात सूच्यंगुलकरि गुणित जगत्प्रतरमात्र विहारवत्स्वस्थानविषैं क्षेत्र ऐसा = २ १ हो है।
बहुरि पल्यका असंख्यातवां भाग प मात्र घनांगुल ६ गुणित जगच्छ्रेणि — मात्र प्रमाणकौं किंचिदून तीनका भाग
a
दीएं कृष्णलेश्यायुत वैक्रियिक राशि ऐसा — ६। प याकौं संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताका भाग देइ
३— a
बहुभाग ऐसा —६।प ४ स्वस्थान स्वस्थानविषैं देना। अवशेष एकभागका बहुभाग ऐसा —६।प ४ विहार-
३— a ३— a
५ ५।५
वत्स्वस्थानविषैं देना। अवशेष एक भाग ऐसा — ६ प।४ वेदनासमुद्घातविषैं देना। अवशेष एक भागका बहु
३— a
५५५
भाग ऐसा — ६ प ४ कषाय समुद्घातविषैं देना अवशेष एक भाग ऐसा — ६ प १ वैक्रियिक समुद्घातविषैं देना
३—a ३—a
५५५५ ५५५५
याकौं यथा योग्य विक्रियाकी अवगाहना संख्यात घनांगुलमात्रकरि गुणें वैक्रियिक समुद्घातविषैं घनांगुलका वर्ग १६०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा ६ । ६ ताकरि गुणित असंख्यात जगच्छ्रेणीमात्र क्षेत्र ऐसा हो है — ७ । ६ । ६ बहुरि सामान्य लोक लोकमात्र अर अधो लोकलोकका च्यारि सातवां भागमात्र अर ऊर्ध्व लोक लोकका तीन सातवां भागमात्र अर तिर्यग्लोक लक्ष योजन गुणित जगत्प्रतरका गुणचासवां भागमात्र अर मनुष्यलोक संख्यात घनांगुलमात्र ऐसा जानना—

नाम	सामान्य	अधः	ऊर्ध्व	तिर्यग्	मनुष्य
प्रमाण	≡	≡४ / ७	≡३ / ७	≡१ ल / ४९	६ १

तहां कृष्णलेश्यावाले स्वस्थान स्वस्थान वेदना कषाय मारणांतिक उपपाद युक्त जीव सर्व लोकविषैं हैं । बहुरि विहारवत्स्वस्थानका क्षेत्र सामान्यादिक तीन लोकनिका असंख्यातवां भागमात्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र मनुष्यलोकतैं असंख्यात गुणा जानना । बहुरि वैक्रियिकका क्षेत्र सामान्यादि च्यारि लोकनिका असंख्यातवां भागमात्र मनुष्य लोकतैं असंख्यात गुणा जानना । बहुरि ऐसैं ही नील कपोत लेश्याविषैं जानना, विशेष इतना जीवनिका प्रमाण किंचित् ऊन ऊन जानना । बहुरि पीतलेश्यावाला जीवराशि ऐसा ॥ ≡ ॥ १ १ / ४।६५= १ याकौं संख्यातका भागदेइ बहुभाग ऐसा ॥॥ ≡४ १ १ / ४।६५= १।५ स्वस्थान स्वस्थानविषै देना अवशेषका बहुभाग ऐसा ॥॥ ≡४ १ १ / ४।६५= १।५।५ विहारवत् स्वस्थानविषैं देना । अवशेषका बहुभाग ऐसा ॥॥ ≡४ १ १ / ४।६५ = १।५।५।५ वेदना समुद्घातविषै देना । अवशेषका बहुभाग ऐसा ॥॥ ≡४ १ १ / ४।६५ = १।५।५।५।५ कषाय समुद्घातविषैं देना अवशेष एकभाग ऐसा ॥॥ ≡१ १ १ / ४।६५ = १।५।५।५।५ वैक्रियिक समुद्घातविषै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देना । तहां स्वस्थान स्वस्थान राशिकौं घनांगुलका संख्यातवां भागकरि गुणें ताका क्षेत्र ऐसा ॥॥ १ =४ ७ ६ ४।६५=१।५।७

बहुरि वेदना कषाय समुद्घात राशिकौं साढा च्यारि गुणा घनांगुलका संख्यातवां भाग ऐसा ६।९ ७।२ ताकरि गुणें वेदना समुद्घातका क्षेत्र ऐसा ॥॥ १ =४ ७ ६।९ ४ ६५=१।५।५।५।७।२ हो है अर कषाय समुद्घातका क्षेत्र ऐसा हो है–

॥॥ १ =४ ७ ६।९ ६५= १।५।५।५।५।७।२ बहुरि विहारवत्स्वस्थानराशिकौं संख्यात घनांगुलकरि गुणें ताका क्षेत्र ऐसा-

॥॥ १ =४। ७६ ७ ४।६५=१।५।५ बहुरि वैक्रियिक समुद्घात राशिकौं संख्यात घनांगुलकरि गुणें ताका क्षेत्र ऐसा हो है

॥॥ १ =१ ७६ ७ ४।६५= १।५।५।५।५ बहुरि व्यंतर देवराशि ऐसा = ० ४।६५ =८१।१० याकौं संख्यात वर्ष अपना आयु संबंधी शुद्ध

शलाका दोयवार संख्यात गुणित असंख्यात मात्र ऐसी a।७।७ ताका भाग दीएं एक समयविषैं मरनेवालोंका प्रमाण ऐसा = ० ४।६५ =८१।१०।a।७७ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभागमात्र विग्रह गति

जीवराशि ऐसा हो है = प १ ० a ४।६५ =।८१।१०।a।७।७। प a याकौं प्रति भागका भाग देइ बहुभागमात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ ‿ १ ‿
मारणांतिक समुद्घात जीवराशि ऐसा— = प प
a a
४ । ६५ = । ८१ । १० । a । ७ । ७ । प प .
a a

याकौं प्रतिभागका भाग देइ एकभागमात्र दूरमारणांतिक जीवराशि ऐसा =

१ ‿ १ ‿
प प । १
a a
४ । ६५ = । ८१ । १० । a । ७ । ७ प प प
a a a

याकौं मारणांतिक समुद्घातका काल अंतर्मुहूर्त संबंधी शुद्ध शलाका संख्यात गुणित असंख्यात मात्र ऐसी a । ७ ताकरि गुणिए अर एक समयका भाग दीजिए तब सर्व एकटे दूर मारणांतिक समुद्घातवालोंका प्रमाण ऐसा—

१ ‿ १ ‿
= प प – १ a । ७
a a
४ । ६५ = ८१ । १० । a । ७ । ७ । प प प
a a a

बहुरि एक राजूका संख्यातवां भागमात्र लंबा सूच्यंगुलका संख्यातवां भागमात्र चौडा वा ऊंचा क्षेत्र ऐसा—

| २ | २
| ७ | ७
–
७ ७

ताका घनफल प्रतरांगुलका संख्यातवां भागकरि गुणित जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा

– ४
a । ७ । ७

ताकरि तिस राशिकौं गुणैं दूरमारणांतिक समुद्घातका क्षेत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा हो है– प प १ । ३ । ७ । — ४ बहुरि बारह योजन लंबा नव योजन चौडा सूच्यं-

४ । ६५ = ८१ । १० । ३ । ७ । ७ प प प । ३ । ७ । ७

गुलका संख्यातवां भाग मात्र चौडा क्षेत्र ऐसा जानना– २ ७ यो ९ यो १२

ताका घनफल संख्यात घनांगुलमात्र ऐसा ६ ७ ताकरि संख्यात जीव गुणें तैजस समुद्घातका क्षेत्र ऐसा हो है ७ ६ ७ बहुरि सूच्यंगुलका संख्यातवां भागमात्र चौडा अर ऊंचा संख्यात योजन लंबा क्षेत्र ऐसा हो है याका घनफल संख्यात घनांगुलमात्र ऐसा ६ ७ याकरि संख्यात जीव गुणें आहारक समुद्घातका क्षेत्र ऐसा ७ । ६ । ७ हो है। २ ७ यो ७ २ ७

बहुरि सौधर्मद्विकराशि घनांगुलका तृतीय मूलकरि गुणित जगच्छ्रेणिमात्र ऐसा — ३ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं समय समय प्रति मरनेवालोंका प्रमाण ऐसा — ३ प/a याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीए बहुभागमात्र विग्रह गतिवालोंका प्रमाण ऐसा — ३ प/a प/a प/a याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ १८
दीएं बहुभागमात्र मारणांतिक समुद्घातवालोंका प्रमाण ऐसा–३ प प याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग
a a
प प प
a a a

१८ १८
दीएं एकभागमात्र दूर मारणांतिक समुद्घात वालोंका प्रमाण ऐसा – ३ प। प। १ याकौं द्वितीय दीर्घ दंडविषैं
a a
प प प प
a a a a

तिष्ठता मारणांतिक पूर्वक उपपाद जीवनिका प्रमाण ल्यावनेकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक

१८ १८
भाग मात्र उपपाद जीवराशि ऐसा हो है– ३ प । प । बहुरि संख्यात सूच्यंगुलमात्र चौडा वा ऊंचा ड्योढ
a a
प प प प प
a a a a a

२१ २१
– ३
७ २
राजू लंबा क्षेत्र ऐसा हो है–

याका घनफल संख्यात प्रतरांगुल ४ १ गुणित ड्योढ राजू मात्र ऐसा – ३।४।१ याकरि तिस राशिकौं गुणें
७।२

१८ १८ –
उपपाद क्षेत्र ऐसा हो है–३ प प। ७ ३।४ १ बहुरि पद्मलेश्याविषैं कहिए है–
a a २
प प प प प
a a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मलेश्या जीवराशि ऐसा = ४।६५=।१६ ॥ इहां भागहारविषैं छहवार संख्यातकी संदृष्टि संख्यातके आगे छहका अंक जानना। याकौं संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताका भाग देइ बहुभाग ऐसा ॥ =४ ४।६५=१।६।५ स्वस्थान स्वस्थानविषैं देना। अवशेषकौं संख्यातका भाग देइ बहुभाग ऐसा ॥ =४ ४।६५=१।६।५।५ विहारवत्स्वस्थानविषैं देना अवशेषकौं संख्यातका भाग देइ बहुभाग ऐसा ॥ =४ ४।६५=१।६।५।५।५ वेदना समुद्घातविषैं देना। अवशेष एक भाग ऐसा = ॥ १ ४।६५=१।६।५।५।५ कषाय समुद्घातविषैं देना। तहां पहिला दूसरा राशिकौं संख्यात घनांगुलमात्र क्षेत्रकरि गुणैं स्वस्थान स्वस्थानका क्षेत्र ऐसा = ॥ ४।६।१ ४।६५=१।६।५ विहारवत्स्वस्थानका क्षेत्र ऐसा हो है = ॥ ४।६ १ ४।६५=१।६।५।५ बहुरि तीजा चौथा राशिकौं साढा च्यारि गुणा संख्यात घनांगुल करि गुणैं वेदना समुद्घातका क्षेत्र ऐसा ॥ =४ ६ १ ४।६५=१६।५।५।५। ९/२ हो है कषायसमुद्घातका क्षेत्र ऐसा हो है = ॥ ।६ १।९ ४ ६५=१।६ ५ ५ ५ २

बहुरि सनत्कुमार माहेंद्र देवराशि अपना ग्यारहवां मूलकरि भाजित जगच्छ्रेणिमात्र ऐसा — ११ याकौं संख्यातका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग देइ बहुभाग ऐसा ११।४ स्वस्थान स्वस्थानविषैं देना। अवशेषका बहुभाग ऐसा ११।४ विहारवत्स्वस्थान-
५ ५।५
विषैं देना। अवशेषका बहुभाग ऐसा ११।४ वेदना समुद्घातविषै देना। अवशेषका बहुभाग ऐसा ११।४
५।५।५ ५।५।५।५
कषाय समुद्घातविषैं देना। अवशेष एकभाग ऐसा ११।१ वैक्रियिक समुद्घातविषै देना। याकौं संख्यात घनां-
५।५।५।५
गुल करि गुणें वैक्रियिक समुद्घातका क्षेत्र ऐसा — ६ ७ बहुरि सनत्कुमार माहेंद्र देवराशि ऐसा — याकौं पल्यका
११।५।५।५।५ ११
असंख्यातवां भागका भाग दीएं प्रतिसमय मरनेवालोंका प्रमाण ऐसा ११ प याकौं ताहीका भाग दीएं बहुभागमात्र
a

विग्रहगतिवालोंका प्रमाण ऐसा — प याकौं ताहीका भाग दीएं बहुभागमात्र मारणांतिक वालोंका प्रमाण ऐसा
११ a
प प
a a

१ १
— प प। याकौं ताहीका भाग दीएं एकभागमात्र दूर मारणांतिकवालोंका प्रमाण ऐसा — प प १ याकौं ताही
a a a a
११ प प प ११ प प प प
a a a a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का भाग दीएं उपपाद दंडस्थित जीवनिका प्रमाण ऐसा — प प   इहां प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग गुणित
a a
११ प प प प प
a a a a a

तीन राजू ऐसा हो है ७ । ३ । ४ ताकरि दूरमारणांतिक राशिकों गुणें ताका क्षेत्र ऐसा हो है — प प — । ३ । ४
९   a a ७   ९
११ प प प प
a a a a

अर संख्यात प्रतरांगुल गुणित तीन राजू ऐसा ७ । ३ । ४ ९ ताकरि उपपाद दंड स्थित जीवराशिकों गुणें ताका क्षेत्र ऐसा — प प । ७ । ३ । ४ । ९ हो है । बहुरि तैजस आहारकका क्षेत्र तेजोलेश्यावत् ऐसा हो है—
a a
११ प प प प प
a a a a a

९ । ६ । ९ । ९ । ६ । ९ बहुरि शुक्लेश्याविषै कहिए है—

शुक्ललेश्या जीवराशि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा प याकों संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताका
a
भाग देइ बहुभाग ऐसा प ४ स्वस्थान स्वस्थानविषैं देना अवशेषका बहुभाग ऐसा प ४ । विहारवत्स्वस्थानविषैं
a ५   a ५ । ५
देना । अवशेषका बहुभाग ऐसा प । ४ वेदना समुद्घातविषैं देना । अवशेषका बहुभाग ऐसा प ४
a । ५ । ५ । ५   a । ५ । ५ । ५ । ५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कषायसमुद्घातविषैं देना। अवशेष एक भाग ऐसा प १ वैक्रियिक समुद्घातविषैं देना। तहां प्रथ-
a।५।५।५।५

मराशिकौं घनांगुलका असंख्यातवां भाग ऐसा ६ ताकरि गुणें स्वस्थान स्वस्थानका क्षेत्र ऐसा हो है प।४।६
७ a।५।७

तीसरा चौथा राशिकौं साढा च्यारि गुणा घनांगुलका संख्यातवां भागकरि गुणें वेदना समुद्घातका क्षेत्र ऐसा

प।४। ६।९ कषायसमुद्घातका क्षेत्र ऐसा हो है प। ४। ६ ९। बहुरि दूसरा राशिकौं संख्यात
a ५।५।५।७।२ a।५।५।५।५।७।२

घनांगुलकरि गुणें विहारवत्स्वस्थानका क्षेत्र ऐसा हो है प।४।६।७ बहुरि पंचम राशिकौं संख्यात घनांगुलकरि
a।५।५

गुणें वैक्रियिक समुद्घातका क्षेत्र ऐसा प।६।७ बहुरि छह राजू लंबा सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र
a।५।५।५।५

चौडा ऊंचा क्षेत्र ताका घनफल प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग गुणित छह राजू प्रमाण ऐसा — ७।६।४
७

| २ | २
| a | a
—
७ ६

ताकरि संख्यात जीवराशि गुणें मारणांतिक समुद्घातका क्षेत्र ऐसा — ४ बहुरि तैजस आहारकका क्षेत्र पद्म-
७।७।६।७

लेश्यावत् ऐसा हो है ७ ६ ७। ७ ६ ७ बहुरि केवलि समुद्घातविषैं किंचिदून चौदह राजू ऊंचा बारह योजन चौडा क्षेत्र

का 'वासोत्ति गुणो परिही' इत्यादि सूत्रकरि १२।३।१२।७।१८ दोयसै सोलह गुणां प्रतरांगुल गुणित जगच्छ्रे-
५

२३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णी मात्र क्षेत्र भया —— ४ । २१६ ताकौं चालीस जीवनिका प्रमाणकरि गुणें स्थित दंडका क्षेत्र ऐसा हो है
— ४ । ८६४० याकौं नव गुणां कीएं उपविष्ट दंडका क्षेत्र ऐसा हो है—४ । ७८७६० बहुरि किछू घाटि चौदह
राजू लंबा सात राजू चौडा बारह अंगुल ऊंचा क्षेत्रका क्षेत्रफल सूच्यंगुल गुणित जगत्प्रतरतैं चौईस गुणा ऐसा
भया = २ । २४ याकौं चालीस जीवनिका प्रमाणकरि गुणें पूर्वाभिमुख स्थित कपाटका क्षेत्र ऐसा हो है
= २ । ९६० यातैं तिगुणा उपविष्टका ऐसा = । २ । २८८० हो है। बहुरि किंचिदून चौदह राजू लंबा पूर्व
पश्चिमविषै लोकवत् चौडा तहां मुख एक राजू — (७ १) भूमि सात राजू — (७ । ७) मिलें आठ राजू — (७ । ८) आधा कीएं च्यारि
राजू — (७ । ४) गच्छ सात राजूकरि गुणें च्यारि प्रतर राजू प्रमाण क्षेत्र ऐसा = ४ (७ ।) अधो लोकका भया। अर मुख
एक राजू — (७ । १) भूमि पांच — (७ । ५) जोडें छह — (७ । ६) आधा कीएं — (७ । ३) तीन राजू होइ। याकौं गच्छ साढा तीन राजू — ७ (७ २)
करि गुणें ऐसा होइ = २ । १ (७ । ७ । २) अपवर्तन कीएं ऐसा = ३ (७ । २) याकौं दूणा कीएं ऊर्ध्वलोकका क्षेत्र = ३ (७ ।) अधो लोक
ऊर्ध्वलोकका क्षेत्र मिलें जगत्प्रतरमात्र क्षेत्र भया = । याकौं बारह अंगुलकी ऊंचाई करि गुणि जीवनिका प्रमाण
चालीस करि गुणें च्यारिसै असी सूच्यंगुल गुणित जगत्प्रतरमात्र उत्तराभिमुख कपाटका क्षेत्र ऐसा = २ । ४८०
हो है। बहुरि यातैं तिगुणा उपविष्टका ऐसा = २ । १४४० हो है। बहुरि लोकका असंख्यातवां भागमात्र वात
वलयका क्षेत्र घटावनेकौं लोककौं असंख्यातका भाग देइ एक घाटि असंख्यात करि गुणें प्रतरका क्षेत्र ऐसा ≡ (१ ० / a । / a)
बहुरि लोक पूरणका क्षेत्र सर्वलोकमात्र ऐसा है ≡ । बहुरि स्पर्शनाधिकारविषैं कहिए है तहां कृष्णलेश्यावालोंकैं १७०
स्वस्थान स्वस्थान वेदना कषाय मारणांतिक उपपाद इन पंच पदनिविषैं स्पर्श सर्वलोकमात्र ऐसा है ≡ । बहुरि एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजू लंबा अर चौडा संख्यात सूच्यंगुल ऊंचा तिर्यग्लोक ऐसा 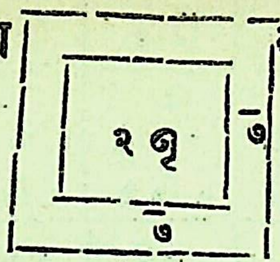 ताका क्षेत्रफल संख्यात सूच्यंगुलगुणित प्रतर रज्जुमात्र विहारवत्स्वस्थानका स्पर्श ऐसा = ४९ । २ ७ बहुरि एक राजू लंबा चौडा पांच राजू ऊंचा क्षेत्रका 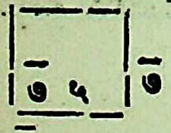 क्षेत्रफल पांच घन राजू मात्र वैक्रियिकका स्पर्श ऐसा ≡ ५ / ३४३ बहुरि ऐसैं ही नील कपोतविषैं जानना।

बहुरि तेजो लेश्याविषैं स्वस्थान स्वस्थानका स्पर्श ल्यावनेकौं रज्जुप्रतर क्षेत्रविषैं लवणोद कालोद स्वयंभूरमण समुद्रनिका क्षेत्रफल घटाया है ताका विधान टीकाविषैं है ताकी संदृष्टि सुगम है। सिद्धभया स्वस्थान स्वस्थानका स्पर्श संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगत्प्रतरका इक्यावनवां भागमात्र ऐसा हो है = २ ७ / ५१ बहुरि विहारवत्स्वस्थान वेदना कषाय वैक्रियिक समुद्घातविषैं क्षेत्र किंचिदून आठ चौदहवां भागमात्र ऐसा हो है ८— / १४ किंचिदूनकी संदृष्टि आगैं ऐसी — जाननी। तहां चौदह घन राजूकी एक शलाका होइ तो आठ घन राजूकी केती होइ ऐसैं त्रैराशिक

प्रमाण	फल	इच्छा
≡ १४ / ३४३	श १	≡ ८ / ३४३

कीएं आठ चौदहवां भाग मात्र आवै है मारणांतिकविषैं किंचिदून नव चौदहवां भाग मात्र स्पर्श ऐसा है ९— / १४ तैजस आहारक विषैं संख्यात घनांगुल मात्र ऐसा है ६ १ उपपादविषैं किंचिदून ड्योढ चौदहवां भाग मात्र ऐसा ३— / २८ इहां तीनकौं अठाईसका भाग जानना। बहुरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मलेश्याविषैं स्वस्थान स्वस्थान विषैं पूर्ववत् स्पर्श ऐसा = २१ / ५१ विहारवत्स्वस्थान वेदना कषाय वैक्रियिक मारणांतिक समुद्घातविषैं किंचिदून आठ चौदहवां भाग मात्र ऐसा ८— / १४ तैजस आहारकविषैं संख्यात घनांगुल मात्र ऐसा ६ १ बहुरि शुक्ल लेश्याविषैं स्पर्श स्वस्थान स्वस्थानविषैं तेजोलेश्यावत् ऐसा = २ १ / ५१ विहारवत्स्वस्थान वेदना कषाय वैक्रियिक मारणांतिक समुद्घातविषैं किंचिदून छह चौदहवां भाग मात्र ऐसा ६— / १४ केवल समुद्घातविषैं संख्यात प्रतरांगुल गुणित जगच्छ्रेणि —४ १ दूणां कीएं स्थित उपविष्ट दंडका ऐसा —४ १।२।—४ १।२ संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगत्प्रतरकौं = २ १ दूणां कीएं पूर्व उत्तर सन्मुख स्थित उपविष्ट कपाटका ऐसा = २ १ २। = २ १ २। = २ १ २। = २ १ २ प्रतर लोक पूर्णका क्षेत्रवत् ऐसा प्र ≡ / ३ ३ १ — लो = स्पर्श जानना बहुरि काल अधिकार विषैं संदृष्टि ऐसी जाननी—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत	पीत	पद्म	शुक्ल
उत्कृष्टकाल	२ १ २ सा ३३	२ १ २ सा १७	२ १ २ सा ७	२ १ २ सा ५— / २	२ १ २ सा ३७ / २	२ १ २ सा ३३
जघन्यकाल	२ १	२ १	२ १	२ १	२ १	२ १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां उत्कृष्टविषैं सागर तेतीस सत्रह सात किंचिदून अढाई साढा अठारह तेतीसके ऊपरि दोय अंतर्मुहूर्त अधिककी संदृष्टि जाननी। अर जघन्य विषैं अंतर्मुहूर्तकी संदृष्टि जाननी। बहुरि अंतर अधिकारविषैं कृष्णादि लेश्यानिका अंतरकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	कृष्ण	नील	कपोत	पीत	पद्म	शुक्ल
उत्कृष्ट अंतर	२ ९ृ १० पू को व– ८ सा ३३	२ ९ृ ८ पू को व– ८ सा ३३	२ ९ृ ६ पू को व– ८ सा ३३	२ ९ृ ६ व १००० ९ृ पु=प= २ a	२ ९ृ ५ व १००० ९ृ प a पु=प= सा २२ a	२ ९ृ ७ व १००० ९ृ प a पु=प= सा २२ a
जघन्यअंतर	२ ९ृ	२ ९ृ	२ ९ृ	२ ९ृ	२ ९ृ	२ ९ृ

इहां कृष्णादि तीन लेश्यानिविषैं दश आठ छह अंतर्मुहूर्त अधिक आठ घाटि कोडि पूर्व वर्ष सहित तेतीस सागरमात्र अंतर जानना। पीतविषैं छह अंतर्मुहूर्त संख्यात हजार वर्ष अधिक पुद्गलपरिवर्तन आवलीका असंख्यातवां भाग मात्र अंतर जानना। यामैं पल्यका असंख्यातवां भाग अधिक दोय सागर जोडैं पद्म शुक्लविषैं अंतर हो है। विशेष इतना पद्मविषैं पांच शुक्लविषैं सात अंतर्मुहूर्तकी अधिकता जाननी।

बहुरि अल्पबहुत्व अधिकार विषैं जीवनिकी संख्या संख्या अधिकारवत् ऐसी जाननी।

नाम	कृष्ण	नील	कपोत	पीत	पद्म	शुक्ल
प्रमाण	। १३– ३	१३– । ३	१३– ॥ ३	a a ९ृ	a a	a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अथ भव्य मार्गणा अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है। तहां जीवनिकी संख्याविषैं अभव्य राशी जघन्य युक्तानंत मात्र ऐसा ज जु अ। भव्य राशि किंचिदून संसारी राशिमात्र ऐसा १३– जानना। बहुरि परिवर्तनविषै पुद्गल परिवर्तनका अगृहीत ग्रहणकाल अनंत तातैं अनंत गुणा मिश्रग्रहण काल तातैं अनंतगुणा गृहीत ग्रहण काल याका अनंतवां भाग अधिक जघन्य पुद्गल परिवर्तन काल तातैं अनंतगुणा उत्कृष्ट गृहीत ग्रहण काल याका अनंतवां भाग अधिक उत्कृष्ट पुद्गल परिवर्तन काल तहां अनंतकी संदृष्टि ऐसी ख अनंतवां भाग मिलावने की संदृष्टि एक अधिक अनंतका गुणकार अनंतका भागहार कीएं ऐसी संदृष्टि हो है–

नाम	अगृहीत	मिश्र	जघन्य गृहीत	जघन्य पुद्गल परिवर्तन	उत्कृष्ट गृहीत	उत्कृष्ट पुद्गल परिवर्तन
काल	ख	ख ख	ख ख ख	१– / ख ख ख ख / ख	१– / ख ख ख ख ख / ख	१– १– / ख ख ख ख ख ख / ख ख

बहुरि अगृहीतकी शून्य मिश्रकी हंसपद गृहीतकी एका अनंतवारकी दोयवार लिखना ऐसी संदृष्टि कीएं पुद्गल परिवर्तनका क्रम ऐसा हो है–

० ० ×	० ० ×	० ० १	० ० ×	० ० ×	० ० १
× × ०	× × ०	× × १	× × ०	× × ०	× × १
× × १	× × १	× × ०	× × १	× × १	× × १
१ १ ×	१ १ ×	१ १ ०	१ १ ×	१ १ ×	१ १ ०

याका विशेष टीकातैं जानि लेना।

बहुरि क्षेत्र काल भव परिवर्तनविषैं विशेष संदृष्टि है नाहीं। बहुरि भाव परिवर्तनविषैं संदृष्टि ऐसी ↑ इहां स्थितिविषैं संदृष्टि ऐसी जाननी– १७५

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिति	△ अंतः को २	△ १	△ २	मध्यस्थिति	△ ३० को २ सागर
कषायाध्यवसाय स्थान	जघन्य ० ० ≡ a	० ० ≡ a	० ० ≡ a	० ०	० ० ≡ a ० ० ७
अनुभागबंधाध्यवसायस्थान	जघन्य ० ० ≡ a ० ० = a	० ० ≡ a ० ० ≡ a	० ० ≡ a ० ० a	० ०	० ० ≡ a ० ० ≡ a ० ७
योगस्थान	जघन्य ० ० a ० ० a ० ० a ० ० a	० ० a ० ० a ० ० a ० ० a ० ० a	० ० a ० ० a ० ० a ० ० a ० ० a ० ० a	० ०	० ० a ० ० a ० ० a ० ०

तहां जघन्य स्थिति अंतः कोटाकोटी तातैं एक दोय आदि समय अधिक मध्यस्थिति उत्कृष्ट स्थिति ज्ञानावरण अपेक्षा तीस कोडाकोडी सागर तिनकी संदृष्टि जाननी। बहुरि एक एक स्थिति भेदविषैं असंख्यात लोकमात्र कषायाध्यवसाय स्थाननिकी पलटनि हो है। बहुरि एक एक कषायाध्यवसाय स्थाननिविषैं असंख्यात लोकमात्र अनुभागाध्यवसाय स्थाननिकी पलटनि हो है। बहुरि एक एक अनुभागाध्यवसाय स्थाननिविषैं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भाग मात्र योगस्थाननिकी पलटन हो है। तहां असंख्यात लोककी ऐसी ≡ a जगच्छ्रेणीका असंख्यातवां भागकी ऐसी a तहां एक एक स्थिति संबंधी बहुतवार जिनकी पलटनि हो है तिनकी संदृष्टिनिका यथासंभव दोयवार आदि लिखना जानना। बहुरि सर्वत्र जघन्यतैं आगें वा अन्यत्र मध्य भेदनिके ग्रहण निमित्त बिंदीनिकी संदृष्टि जाननी।

अथ सम्यक्त्व मार्गणा अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है — तहां जीवनिकी अवगाहनाविषै संदृष्टि ऐसी—

नाम	जघन्यशरीरकी सूक्ष्मनिगोदजीवकै	मध्यशरीरका	उत्कृष्टशरीर मत्स्यके	जघन्यादिवेदन समुद्घातवालेकी	उत्कृष्टवेदनासमुद्घातवालेका	जघन्यादिमारणांतिक समुद्घातवालेकी	उत्कृष्टमारणांतिकसमुद्घातवालेका	लोकपूरणका
प्रदेश प्रमाण	६ / a	१– २– / ६ ६ ००० / a a	६९९९९९	१ / ६९९९९९ ००००	६९९९९९ २	१ / ६९९९९९२ ०००	– / ७ १५ ४ ९ / २	≡

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तहां जघन्य शरीरकी अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवे भागमात्र ६/a तातैं एक दोय प्रदेश अधिक आदि मध्य अवगाहना बहुरि पंचवार संख्यात गुणित उत्कृष्ट शरीर अवगाहना तातैं एक प्रदेश अधिक आदि वेदना समुद्धात अवगाहना उत्कृष्ट शरीर अवगाहनातैं तिगुणी उत्कृष्टवेदना समुद्घात अवगाहना तातैं एक प्रदेश अधिक आदि मारणांतिक समुद्घात अवगाहना साढा सात राजू ७ १५/२ कौं संख्यात प्रतरांगुल ४ ९ करि गुणें मारणांतिकको उत्कृष्ट अवगाहना लोकमात्र लोक पूरणकी अवगाहना जाननी। बहुरि इहां उत्कृष्ट मारणांतिककी अवगाहना विषैं स्थंडिल क्षेत्र जाननेकौं रचना ऐसी—

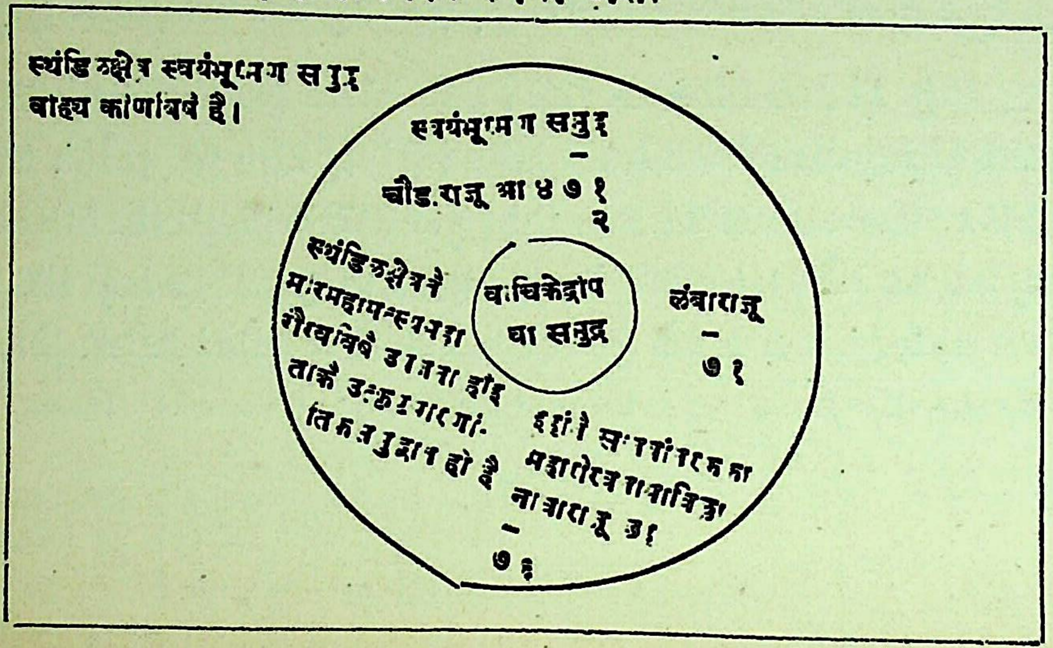

बहुरि मत्स्यका मारणांतिक दंडका क्षेत्रकी रचना ऐसी जाननी—

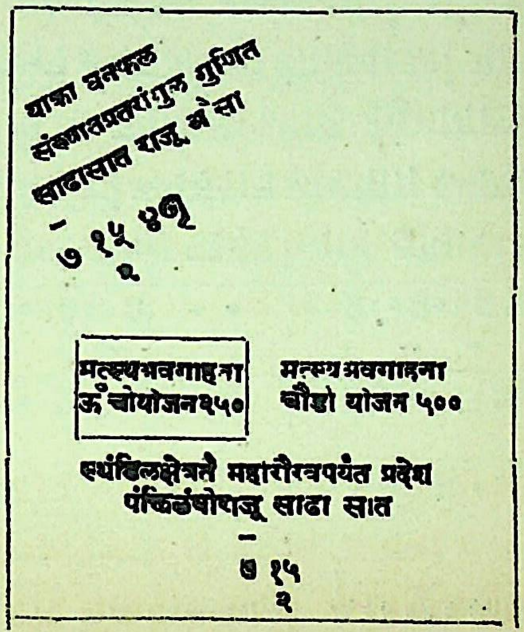

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि द्रव्यनिकी संख्याविषैं द्रव्यमानकरि जीवराशि ऐसा १६ यातैं एक दोय तीनवार क्रमतैं अनंतगुणा पुद्गल व्यवहार काल अलोकाकाश जानना अर धर्म अधर्म लोकाकाश एक एक मुख्यकाल लोकमात्र जानना।

क्षेत्र मानकरि जीव पुद्गल व्यवहारकाल अलोकाकाश तौ लोकतैं एक, दोय तीन च्यारि वार क्रमतैं अनंत गुणा जानना। धर्म अधर्म लोकाकाश मुख्य काल लोकमात्र ≡ जानने।

कालमानकरि जीव पुद्गल व्यवहार काल अलोकाकाश तौ अतीत कालतैं एक दोय तीन च्यारि वार क्रमतैं अनंत गुणा जानना। धर्म अधर्म लोकाकाश मुख्यकाल कल्प कालतैं असंख्यात a गुणा जानना।

भावमानकरि जीव पुद्गल व्यवहारकाल अलोकाकाश तौ केवलज्ञानके च्यारि तीन दोय एक वार क्रमतैं अनंतवां भागमात्र जानने। धर्म अधर्म लोकाकाश मुख्य काल अवधि ज्ञानके भेदनिका असंख्यातवां भागमात्र जानने। तिनकी रचना ऐसी–

नाम	जीव	पुद्गल	धर्म	अधर्म	लोकाकाश	मुख्यकाल	व्यवहारकाल	अलोकाकाश
द्रव्यमान	१६	१६ ख	१	१	१	≡	१६ ख ख	१६ ख ख ख
क्षेत्रमान	≡ ख	≡ ख ख	≡	≡	≡	≡	≡ ख ख ख	≡ ख ख ख ख
कालमान	अ ख	अ ख ख	क a	क a	क a	क a	अ ख ख ख	अ ख ख ख ख
भावमान	के ख ख ख ख	के ख ख ख	ओ a	आ a	आ a	आ a	के ख ख	के ख

बहुरि इहां क्षेत्र काल भाव मान विषैं प्रमाण ल्यावनेकौं त्रैराशिक ऐसे–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध	प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
≡	श १	१६	श १६ ≡	श १	≡	श १६ ≡	≡ ख
अ	श १	१६	श १६ अ	श १	अ	श १६ अ	अ ख
प ९	श १	≡	श ≡ प ९	श १	क	श ≡ अपव- प र्तनकीए ९ अँक। a	क a
≡	श १	≡ a	श ≡ ९ ≡	श a	a	श १	ओ a
१६	श १	के	श के १६	श ख	के	श १	के ख ख ख ख

इहां जीवराशिकी ऐसी १६ अनंतकी ऐसी ख अतीतकालकी ऐसी अ असंख्यातकी ऐसी a कल्पकालकी ऐसी क अवधिके भेदनिकी प्राकृत नामका आदि अक्षर रूप ऐसी ओ शलाकाकी ऐसी श पल्यका संख्यातवां भागकी ऐसी प संदृष्टि जानि यथासंभव विचारना।
९

बहुरि तेईस जातिकी पुद्गल वर्गणानिका कथनविषैं अणु वर्गणा एक एक परमाणुरूप अर संख्याताणु वर्गणाका जघन्य दोय दोय परमाणुरूप, बहुरि मध्य तीन तीन आदि परमाणुरूप, उत्कृष्ट उत्कृष्ट संख्यातपरमाणु रूप सो उत्कृष्ट संख्यातकी संदृष्टि ऐसी १५ बहुरि असंख्याताणुवर्गणाका जघन्य जघन्य असंख्याताणुरूप ताकी
१—
संदृष्टि ऐसी १६ मध्य एक अधिक ऐसी १६ इत्यादिरूप उत्कृष्ट उत्कृष्ट असंख्यात अणुरूप ताकी संदृष्टि ऐसी २५५ बहुरि अनंताणुवर्गणाका जघन्य तो तातैं एक परमाणू अधिक ऐसा २५६ अर उत्कृष्ट यातैं अनंत गुणा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि आहारक वर्गणा जघन्य तातैं एक अणु अधिक अर यातैं याका अनंतवा भाग अधिक उत्कृष्ट, बहुरि अग्राह्य वर्गणाका तातैं एक अणु अधिक जघन्य अर यातैं अनंतगुणा उत्कृष्ट, बहुरि तैजस वर्गणाका तातैं एक एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं याका अनंतवां भाग अधिक उत्कृष्ट, बहुरि अग्र ह्य वर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं अनंतगुणा याका उत्कृष्ट, बहुरि भाषा वर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं याका अनंतवां भाग अधिक उत्कृष्ट, बहुरि अग्राह्य वर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं अनंतगुणा उत्कृष्ट, बहुरि मनोवर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं याका अनंतवांभाग अधिक उत्कृष्ट, बहुरि अग्राह्य वर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं अनंतगुणा उत्कृष्ट, बहुरि कार्माण वर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर याका अनंतवा भाग अधिक उत्कृष्ट, बहुरि ध्रुववर्गणाका तातैं एक अणू अधिक जघन्य अर यातैं अनंत जीवराशि गुणा उत्कृष्ट, बहुरि सांतर निरंतर वर्गण का तातैं एक अणु अधिक जघन्य अर यातैं अनंत जीवराशि गुणा उत्कृष्ट, बहुरि शून्य वर्गणाका तातैं एक अधिक जघन्य अर यातैं अनंत जीवराशि गुणां उत्कृष्ट ऐसैं सोलह वर्गणा सिद्ध भईं। इहां एक अणू अधिक कह्या है तहां संदृष्टि पूर्वराशिके ऊपरि ऐसा १—करनी अर अनंत गुणा कह्या तहां संदृष्टि पूर्वराशिके आगें ऐसी ख करनी अर अनंतवां

१—

भाग अधिक कह्या तहां पूर्वराशिके आगें तौ एक अधिक अनंतका गुणकारकी ऐसी ख अर नीचैं अनंतका भागहारकी ऐसी ख संदृष्टि करनी। बहुरि अनंत जीवराशि गुणा कह्या तहां पूर्व राशिके आगें ऐसी १६ ख संदृष्टि करनी। बहुरि प्रत्येक शरीर वर्गणाका जघन्यकी संदृष्टि विषैं योगमार्गणा विषैं उक्त कार्माणका समय-

— —

प्रबद्ध ऐसा स a a खख याकौं किंचिदून द्व्यर्ध गुण हानि ऐसा १२—करि गुणें सत्त्व रूप कार्माण स्कंध भया। याकौं अनंतगुणा जीवराशि ऐसा १६ ख ताकरि गुणें तहां विस्रसोपचय परमाणूनिका प्रमाण होइ यामें कार्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण स्कंध जोडनेकौं अनंत गुणा जीवराशि प्रमाण गुणकारके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं विस्रसोपचय सहित कार्माण स्कंध ऐसा स a a ख ख १२– १६ ख भया इहां एक कार्माणका समयप्रबद्धकी अपेक्षा इस स्कंधकौं एक कर्म कार्माण नाम गोत्र वेदनीय इन तीन कर्मका ग्रहणनिमित्त आगें तीनका गुणकार करना। अर आयुकर्म औदारिक शरीर तैजस शरीर इनके मिलावनेकौं तिस ऊपरि अधिक तीन राशिकी तीन ऊभी लीक करनी ऐसैं जघन्य प्रत्येक वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी हो है– स a a ख ख १२– १६ ख ३ बहुरि सर्व कर्मका समयप्रबद्धकी अपेक्षाकरि पूर्वोक्तप्रकार विस्रसोपचय सहित सर्व कार्माण स्कंध ऐसा– स a ८ ख ख १२-१६ ख इहां गुणित कर्मांश जीवनिका ग्रहण है तातैं जघन्य समयप्रबद्धतैं पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग गुणा समय प्रबद्ध ग्रहण करनेकौं सकारके आगें बत्तीसका अंककी संदृष्टि करनी। बहुरि औदारिक तैजसका स्कंध मिलावनेकौं ऊपरि दोय राशि अधिककी दोय ऊभी लीक करनी। अर इहां आवलीका असंख्यातवां भाग मात्र जीवनिके शरीरनिका एक स्कंध है तातैं आवलीका असंख्यातवां भाग करि गुणनेकौं आगें ऐसी ८/a संदृष्टि करनी। ऐसैं करतैं उत्कृष्ट प्रत्येकवर्गणाकी ऐसी स ३२ a a १२– १६ ख ८/a संदृष्टि हो है। बहुरि ध्रुव शून्य वर्गणाका जघन्यकी संदृष्टि याके ऊपरि एक अणु अधिककी संदृष्टि कीएं हो है। अर वक्ष्यमाण जघन्य बादर निगोद वर्गणाकी संदृष्टि ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि कीए याका उत्कृष्टकी संदृष्टि हो है। बहुरि बादर निगोदका जघन्य विषैं पूर्वोक्त कार्माण स्कंधकी संदृष्टिके ऊपरि औदारिक तैजस शरीर स्कंधरूप दोय राशि मिलावनेकौं ऊपरि दोय ऊभी लीक कीए एक जीव सम्बन्धी तीन शरीरनिका स्कंध ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

— — ॥ १—

म २ २ ख ख १२— १६ ख इहां गुणित कमांश जीवनिका ग्रहण नाहीं तातैं सकारके आगैं बत्तीसका अंक नाहीं लिख्या । बहुरि एक पुलवीविषैं असंख्यात लोकमात्र शरीर होंइ तौ आवलीका असंख्यातवां भागमात्र पुलवीनिविषैं केते शरीर होंइ प्र १ फ ≡ २ इ ८/२ असैं त्रैराशिक कीएं शरीरनिका प्रमाण ऐसा हो है ≡ २ ८/२ बहुरि एक शरीरविषैं बादर निगोद राशि ऐसा १३—/९ ताकौं पांचबार असंख्यात लोकका भाग दीएं ऐसा १३—/९ ≡ २ ५ जीवनिका प्रमाण होइ तौ इतने ≡ २ ८/२ शरीरनिविषैं केते जीव पाइए ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं

प्र १ फ १३—/९ ≡ २ ५ इ ≡ २ ८/२ लब्धराशि मात्र जीवनिका प्रमाण ऐसा भया १३— ≡ २ ८/९ ≡ २ ५ । २ बहुरि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र जीव क्षीणकषायका शरीरविषै मरे तिनके घटावनेकौं एक घाटि पल्यका असंख्यातवां भाग करि गुणें पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां जीवनिका प्रमाण ऐसा १३— ≡ २ ८ प (१—) / २ २ / ९ ≡ २ ५ प / २

याकरि तिस एक जीव संबंधी तीन शरीरनिका संचयकौं गुणैं जघन्य बादर निगोद वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी

— — ॥ १— १—

स २ २ ख ख १२— ११ ख १३— ≡ २ ८ प / २ २ / ९ ≡ २ ५ प / २

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि एक मूलकादि शरीरविषैं जघन्य वादर निगोदनिके शरीरनिका प्रमाण जगच्छ्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणा शरीरनिका प्रमाण ऐसा ≡ a । ८ – (a a) अर एक शरीरविषैं जीवनिका प्रमाण ऐसा है १३– (६ ≡ a । ५) इनकौं परस्पर गुणें सर्वत्र जीवनिका प्रमाण ऐसा १३ – ≡ a । ८ – (९ ≡ a । ५ a a) याकरि पूर्वोक्त एक जीवसंबंधी तीन शरीरनिका संचयकौं गुणें अर इहां गुणित कर्मांश जीवनिका ग्रहण है तातैं सकारके आगें बत्तीसकी संदृष्टि कीएं उत्कृष्ट वादर निगोद वर्गणाकी ऐसी संदृष्टि हो है—

स ३२ a a खख १२ – १६ ख १३ – ≡ a ८ – (६ ≡ a । ५ a । a)

बहुरि शून्यवर्गणाका जघन्यकी संदृष्टि याके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं हो है। अर वक्ष्यमाण जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाकी संदृष्टिके ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि कीएं याका उत्कृष्टकी संदृष्टि हो है। बहुरि सूक्ष्म निगोद वर्गणाका जघन्यविषैं उत्कृष्ट वादर निगोद वर्गणाके शरीरनिका प्रमाण ऐसा ≡ a ८ – (a a) तातैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागगुणा एक स्कंधविषैं शरीरनिका प्रमाण ऐसा ≡ a । ८ । २ – (a a a) हो है अर कायमार्गणाविषैं उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद राशिका प्रमाण ऐसा १३ – ८ (६) ताकौं पांचवार असंख्यात लोकका भाग दीएं एक शरीर विषैं जीवनिका प्रमाण ऐसा १३ – । ८ (६ । ≡ a । ५) है याकौं तीन शरीरनिका प्रमाणकरि गुणें जीवनिका प्रमाण ऐसा १३ – ८ ≡ a । ८ । २ । – (९ ≡ a । ५ a a a) भया याकौं पूर्वोक्त एक जीव संबंधी तीन शरीरनिका संचयकौं गुणें अर इहां क्षपितकर्मांश जीवनिका ग्रहण है तातैं सकारके आगें बत्तीसका गुणकार न कीएं जघन्य सूक्ष्मनिगोद वर्गणाकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संदृष्टि ऐसी हो है स ² ² ख ख ॥ १२ – १६ ख १३ – ८ ≡ २ ८ । २– बहुरि ऐसीही संदृष्टि उत्कृष्ट निगोद
९ ≡ २ ५ २ २ २

वर्गणाकी जाननी। विशेष इतना – जो इहां गुणित कर्मांश जीवनिका ग्रहण है तातैं सकारके आगें बत्तीसका अंककी संदृष्टि करनी। बहुरि नभोवर्गणाका जघन्यकी संदृष्टि ताके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं हो है। बहुरि याकौं प्रतरका असंख्यातवां भागकरि गुणनेकी आगें ऐसी = संदृष्टि कीएं ताका उत्कृष्टकी संदृष्टि हो है। बहुरि
२

महास्कंध वर्गणाका जघन्यकी संदृष्टि ताके ऊपरि एक अधिक की संदृष्टि कीएं हो है। बहुरि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग यामैं मिलावनेकौं एक अधिक पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प १– ताकरि
२

गुणैं अर पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प ताका भाग दीएं उत्कृष्ट महास्कंधकी संदृष्टि हो है ऐसैं तेईस
२

वर्गणानिकी संदृष्टि जाननी–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि पुद्गल परमाणूनिकै स्निग्ध रूक्ष गुण पाइए तिनके सब अंश एकादि एक एक बंधते सम अंश दोय आदि दोय दोय बंधते विषम अंश बंधयोग्य तीन आदि दोय दोय बंधते संख्यात ७ असंख्यात a अनंत ख पर्यंत जानने तिनकी रचना—

सर्व अंश स्निग्ध	सर्व अंश रूक्ष	सम अंश स्निग्ध	सम अंश रूक्ष	विषम अंश स्निग्ध	विषम अंश रूक्ष
ख	ख	ख	ख	ख	ख
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
a	a	a	a	a	a
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
७	७	७	७	७	७
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
६	६	१२	१२	१३	१३
५	५	१०	१०	११	११
४	४	८	८	९	९
३	३	६	६	७	७
२	२	४	४	५	५
१	१	२	२	३	३
					०

इहां मध्य अंशनिके ग्रहण निमित्त बिंदानिकी संदृष्टि जाननी। बहुरि गुणस्थाननिविषै जीवसंख्या ऐसी—

मिथ्यादृष्टि	१३–	
सासादन	प घन ५२ को a a	
मिश्र	प घन १०४ को a २	
असंयत	प घन ७०० को a	
देशसंयत	५ घन १३ को a a ४ a	
प्रमत्त	५९३९८२०६	
अप्रमत्त	२९६९९१०३	
अपूर्वकरण	५९८	२९९
अनिवृत्तिकरण	५९८	२९९
सूक्ष्मसांपराय	५९८	२९९
उपशांतमोह	०	२९९
क्षीणमोह	५९८	
सयोगी	८९८५०२	
अयोगी	५९८	
सिद्ध	३	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां मिथ्यादृष्टि किंचिदून संसारी राशि मात्र अर सासादन दोयवार असंख्यात एकवार संख्यातकरि भाजित पल्य मात्र, मिश्र दोयवार असंख्यात करि भाजित पल्यमात्र, असंयत एकवार असंख्यात करि भाजित पल्यमात्र, देशसंयत दोयवार असंख्यात एकवार संख्यात एकवार असंख्यात भाजित पल्यमात्र जानने । इहां असंख्यातकी संदृष्टि ऐसी a संख्यातकी च्यारिका अंक ४ जानना । बहुरि सासादनादिविषै मनुष्य क्रमतैं बावन, एक सौ च्यारि, सातसै, तेरह कोडि मिलावने रूप धनराशि जानना। प्रमत्तादि विषैं अंकनिकरि संख्या कही है सो जाननी । तहां अपूर्वकरणादिविषैं पंक्तिविषैं क्षपकनिकी पार्श्वविषैं उपशमीनिकी संख्या जाननी। सिद्ध सिद्धराशिमात्र जानने। बहुरि असंयत मिश्र सासादनके पल्यकौं भागहार ऐसे असंयत a मिश्र aa सासादन aa४ इनिकौं एक घाटि आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग इनहीमें मिलावनेकौं आवलीका असंख्यातवां भागमात्र असंख्यातकी संदृष्टि ऐसी a ताकरि गुणें अर एक घाटि ताका भाग दीएं देवविषैं असंयत आदिके भागहार ऐसे हो हैं असंयत $\frac{a|a}{a-1}$ मिश्र $\frac{aaa}{a-1}$ सासादन $\frac{aa४a}{a-1}$ बहुरि इनिकौं तैसैं ही एक घाटि आवलीका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग मिलाएं सौधर्मद्विक विषैं असंयतादिकके ऐसे भागहार हो हैं—

असंयत $\frac{a|a|a}{a-1\ a-1}$ मिश्र $\frac{aa\ aa}{a-1|a-1}$ सासादन $\frac{aa४aa}{a-1a-1}$ बहुरि सौधर्मद्विकका सासादनके भागहारतैं क्रमतैं असंख्यात अर असंख्यात अर संख्यात करि गुणें सनत्कुमार युग्म विषैं असंयतादिकके भागहार हो हैं। ऐसैं क्रमतैं सौधर्म युग्मके ऊपरि शतार युग्म पर्यंत पांच युग्म अर ज्योतिषी अर व्यंतर अर भवनवासी अर तिर्यंच अर प्रथमादि सप्त पृथ्वीके नारकी इनि सोलह स्थाननिविषैं पूर्व पूर्वतैं गुणनका अनुक्रम जानना। तिनकी संदृष्टिविषैं सनत्कुमार १८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्विकका सासादनविषैं जो ऐसी a a ४ a a a a ४ संदृष्टि भई तहां ऐसा aa च्यारिका अंकके आगें लिख्या था
a—१ a—१
ताकौं च्यारिका अंकके पहिलें लिखें ऐसा a a a a। ४। a a। ४ भया ताके आगें ब्रह्म द्विकादिविषैं गुणकार
a—१। a—१
यथासम्भव जानने । बहुरि लांतवद्विकविषैं ऐसी संदृष्टि a a a a ४ a a ४ के आगें दोय तीन आदिके
a—१ a—१
अंककरि दोय तीन आदि बार दोयबार असंख्यात अर एक बार संख्यातका ऐसा a a ४ गुणकार जानि लेना। अर ताके आगैं असंख्यातविषैं असंख्यातका ऐसा a मिश्रविषैं दोयवार असंख्यातका ऐसा aa सासादनविषैं दोयवार असंख्यात एकवार संख्यातका ऐसा a a ४ गुणकार जानि लेना । अर प्रथम पृथ्वीका असंयतका अर तिर्यंच देश संयतका भागहारकी समान संदृष्टि जाननी । ऐसैं असंयतादिविषैं पल्यके भागहारनिकी संदृष्टि हो है।

बहुरि गतिमार्गणा विषैं अपना अपना राशिका जो प्रमाण कह्या है तामैं अन्य गुणस्थान संख्या घटावनेकौं गुणकार आगें किंचित् ऊनकी ऐसी – संदृष्टि कीएं अथवा भागहार ऊपरि किंचित् अधिकको ऐसी । संदृष्टि कीएं मिथ्याविषैं प्रमाणकी संदृष्टि हो है। सो ऐसैं जाननी–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसैं सप्तम नरक पृथ्वीका सासादनविषैं भागहार ऐसा— a a २ a ४ a a ४ । १६ भया ताकी लघु सं-
a–१ a–१
दृष्टि करनेकौं ऐसी = संदृष्टि करि आगें असंख्यात गुणाकीएं ऐसी a संदृष्टि कीएं आनत द्विकका असंयतवि-षैं भागहारकी संदृष्टि ऐसी = a हो है । बहुरि यातैं आरण द्विक आदि अंतका ग्रैवेयक पर्यंत दश स्थाननिका असंयतविषैं भागहार क्रमतैं संख्यातगुणे हैं सो संख्यातकी संदृष्टि इहां पांचका अंक अर एक बार दोयबार आदिकी संदृष्टि आगें एका दूवा आदि अंक जानने । ऐसैं अंतविषैं ऐसी = a । ५ । १० संदृष्टि भई । बहु-रि यातैं आनतद्विक आदि अन्त ग्रैवेयक पर्यंत ग्यारह स्थाननिका मिथ्यादृष्टिविषैं भागहार क्रमतैं संख्यात गुणें हैं सो इहां संख्यातकी संदृष्टि छहका अंक अर एकबार दोयबार आदिकी संदृष्टि आगें एका दूवा आदि अंक जानने । ऐसैं अन्तविषैं ऐसी = a । ५ । १० । ६ । ११ संदृष्टि भई । बहुरि यातैं अनुदिश अर विजयादि विमाननिके असंयतविषैं भागहार क्रमतैं संख्यात गुणें हैं सो इहां संख्यातकी संदृष्टि सातका अंक अर एक-बार दोयबारकी संदृष्टि आगें एका दूवा अंक जानने । ऐसैं अंतविषैं ऐसी = a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । २ संदृष्टि भई । बहुरि यातैं आनत द्विकका मिश्रविषैं भागहार असंख्यात गुणा है ताकी संदृष्टि ऐसी— = a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । २ a बहुरि यातैं आरण द्विक आदि अंत ग्रैवेयक पर्यंत दश स्थाननिका मिश्र विषैं भागहार क्रमतैं संख्यात गुणे हैं सो इहां संख्यातकी संदृष्टि आठका अंक अर एकबार दोयबार आ-दिकी संदृष्टि एका दूवा आदि अंक जानने ऐसैं अंतविषैं ऐसी = a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । २ । a । ८ । १० संदृष्टि भई । बहुरि यातैं आनतद्विक आदि अंतग्रैवेयक पर्यंत ग्यारह स्थाननिका सासादनविषै भागहार क्रमतैं संख्यातगुणे हैं । सो इहां संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक अर एकवार दोयवार आदिकी संदृष्टि आगें एका दूवा आदि अंक जानने । ऐसैं अंत विषै ऐसी = a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । २ । a । ८ । १० । ४ । ११ संदृष्टि भई । इनकी रचना ऐसी जाननी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनतद्विक आदि अन्तग्रैवेयिकपर्यंतविषैं भागहारनिकी रचना।

नाम	असंयतकेभाग०	मिथ्यादृष्टिके भागहार	मिश्रके भागहार	सासादनके भागहार
नवमग्रैवेयिक	= a ५ १०	= a ५ १० ६ ११	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १०	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ११
अष्टमग्रैवेयिक	= a ५ ९	= a ५ १० ६ १०	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ९	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ १०
सप्तमग्रैवेयिक	= a ५ ८	= a ५ १० ६ ९	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ८	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ९
षष्ठग्रैवेयिक	= a ५ ७	= a ५ १० ६ ८	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ७	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ८
पंचमग्रैवेयिक	= a ५ ६	= a ५ १० ६ ७	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ६	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ७
चतुर्थग्रैवेयिक	= a ५ ५	= a ५ १० ६ ६	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ५	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ६
तृतीयग्रैवेयिक	= a ५ ४	= a ५ १० ६ ५	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ४	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ५
द्वितीयग्रैवेयिक	= a ५ ३	= a ५ १० ६ ४	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ ३	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ४
प्रथमग्रैवेयिक	= a ५ २	= a ५ १० ६ ३	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ २	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ ३
आरणद्विक	= a ५ १	= a ५ १० ६ २	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ २
आनतद्विक	= a	= a ५ १० ६ १	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a	= a ५ १० ६ ११ ७ २ a ८ १० ४ १

अनुदिश विजयादिककै असंयत विषैं भागहार रचना

अनुदिश	= a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । १
विजयादि	= a । ५ । १० । ६ । ११ । ७ । २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसें ए कहे भागहार तिनका भाग पल्यकों दीएं जो जो प्रमाण आवे सो सो अपना अपना राशि जानना। बहुरि सर्वार्थ सिद्धिके देव गतिमार्गणाविषैं जो मनुष्यिणिनिका प्रमाण कह्या तातैं तिगुणे अथवा सात गुणे जानने तिनकी संदृष्टि ऐसी ४२ = ४२ = ४२ = ३/४ । ३ अथवा ७। बहुरि मनुष्यगतिविषैं वावन कोडि आदि सासादन आदिविषैं जीव संख्याते हैं तिनके घटावनेकी संदृष्टि मनुष्यराशिके आगें कीएं मिथ्यादृष्टिविषैं मनुष्यनिकी ऐसी १ ⌢ / १ । ३—७ संदृष्टि जाननी। बहुरि सम्यक्त्वनिविषैं जीवानिकी संख्याकी संदृष्टि ऐसी जाननी

नाम प्रमाण	क्षायिकी	ःदक	उपशमी	सासादन	मिश्र	मिथ्या
	प २७	प ३ २ ७।	प २ ७। ३	प २ ३ । ४	प ३ ३	१३—

इहां सात आठ वर्षका तीनवार संख्यात गुणित आवलीमात्र कालविषैं जो संख्यात क्षायिकी सौधर्म द्विकविषैं उपजैं तो संख्यात पल्यमात्र स्थितिकालविषैं केते उपजैं ऐसैं त्रैराशिक कीएं— प्रमाण फल इच्छा लब्धराशि-
२ ७ ७७ ७ प ७
मात्र क्षायिकीनिका प्रमाण संख्यात आवली भक्त पल्यमात्र जानना। तिनतैं असंख्यात गुणे वेदक अर तिनहीके असंख्यातवें भागमात्र उपशमी जानने। बहुरि सासादन मिश्र मिथ्यादृष्टिनिकी संख्या अपने अपने गुणस्थानवत् जानना। बहुरि नव पदार्थनिका प्रमाण ऐसा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	जीव	अजीव	जीवपुण्य	अजीवपुण्य	जीवपाप	अजीवपाप	आश्रव	संवर	निर्जरा	बंध	मोक्ष
द्रव्यमान	१६	३ ≡ १६ ख	७ १ —— प a ४ a a ४ a a	स a १२— ७	१३—	१ स a १२—७ ७	स a	स a	स a १२-६४ ओ प ८ ५ a	स a	स a १२—
क्षेत्रमान	≡ ख ख	≡ ख ख ख	२ a	≡ ख ७	≡ ख ख—	१ ≡ ख ७ ७	≡ ख	≡ ख	≡ ख	≡ ख	। ≡ ख
कालमान	अ ख	अ ख ख	क a	क ख—	क ख—	क ख	क ख	क ख	क ख	क ख	क ख
भावमान	के ख ख	के ख	ओ a	के ख ख ख	के— ख ख	के ख ख ख	के ख ३	के ख ३	के ख ३	के ख ३	के ख ३

इहां द्रव्य मानकरि जीवराशि ऐसा १६ बहुरि यातैं अनन्तगुणा पुद्गलराशिके ऊपरि धर्मादि तीन द्रव्य सहित लोकमात्र काल द्रव्य अधिक कीएं अजीवराशि हो है। बहुरि असंयत प्रमाण ऐसा प/a देश संयत प्रमाण ऐसा—

प/a।४।a।a इहां भागहारविषैं एकवार असंख्यातकी समानता देखि अन्यकरि समच्छेद कीएं पल्यकी समानता

१— देखि आगैं गुणकारनिके ऊपरि एक अधिक कीएं ऐसा प a ७ a / a ४ a a इहां प्रमत्तादिकके संख्यात जीव मिलावनेकौं ऊपरि संख्यातकी संदृष्टि कीएं जीव पुण्यराशिकी संदृष्टि हो है। बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धके संख्यातवे भागमात्र अजीव पुण्य है। बहुरि किंचिदून संसारी राशिमात्र जीव पाप है। बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धकौं संख्यातका भाग दीएं बहुभाग ग्रहण निमित्त एक घाटि संख्यात ११०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि गुणें अजीव पाप हो है। बहुरि आस्रव संवर बंध ए प्रत्येक समय प्रबद्धमात्र हैं बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणित समय प्रबद्धकौं अपकर्षण भागहार ओ अर पल्यका असंख्यातवां भाग $\frac{प}{a}$ का भाग दीएं गुणश्रेणि योग्य द्रव्य होइ ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा चौसाठि करि गुणे पिच्यासीका भाग दीएं उत्कृष्ट निर्जरा द्रव्य हो है। बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र मोक्ष द्रव्य जानना। बहुरि क्षेत्रमानकरि दोयवार अर तीनवार अनंत गुणे लोकमात्र जीव अर अजीव हैं। सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जीव पुण्य हैं। अनंतगुणा लोककौं संख्यातका भाग देइ एक भागमात्र अजीव पुण्य हैं। बहुभागमात्र अजीव पाप हैं। किंचिदून दोयवार अनंत गुणित लोकमात्र जीव पाप हैं अनंतगुणा लोक मात्र बंधादिक हैं बहुरि कालमानकरि एक दोयवार अतीत काल गुणित जीव अजीव हैं कल्पकालका असंख्यातवां भागमात्र जीव पुण्य हैं। किंचिदून अनंतगुणा कल्पकालमात्र अजीव पुण्य हैं। किंचिदून अनंतगुणा अतीत कालमात्र जीव पाप हैं। अजीव पाप आदि अनंतगुणा कल्पकाल-मात्र हैं बहुरि भावमानकरि दोयवार एकवार केवल ज्ञानकौं अनंतका भाग दीएं जीव अजीवराशि हो है। अवधि-ज्ञानके भेद ओ निके असंख्यातवें भागमात्र जीव पुण्य हैं। किंचिदून दोयवार अनंत भाजित केवलज्ञानमात्र जीव पाप हैं अन्य पदार्थ तीनवार अनंतकरि भाजित केवल ज्ञानमात्र हैं। इनकी यथासंभव संदृष्टि यंत्र विषैं जाननी।

अथ संज्ञी मार्गणाधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है— तहां जीवनिकी संख्याविषैं संदृष्टि ऐसी—

नाम	संज्ञी	असंज्ञी
पमाख्य	॥ ||| १ = ७ ४।६५=१	१३–

इहां गति मार्गणा उक्त देवराशिके ऊपरि अन्य तीन गतिके संज्ञी मिलावनेकौं ऊपरि ऊभी तीन लीककी संदृष्टि कीएं संज्ञीकी संदृष्टि हो है। तिनके घटावनेकौं संसारी राशिके आगें किंचि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूनकी ऐसी — संदृष्टि कीएं असंज्ञीनिकी संदृष्टि हो है।

अथ आहार मार्गणाधिकारविषैं संदृष्टि काहिए है। तहां आहारका उत्कृष्टकाल सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य काल तीन समय घाटि उच्छ्वासका अठारह्वां भागमात्र बहुरि अनाहारकका उत्कृष्ट काल तीन समय जघन्य काल पाणिमुक्त गतिवालेकैं एक समय मात्रकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	आहारककाल	अनाहारककाल
उत्कृष्ट	२ a	स ३
जघन्य	ओ १ — ३ १८	स १

बहुरि कार्माण काल तीन समय ३ औदारिक मिश्रकाल एक अंतर्मुहूर्त ऐसा २ ७ १ औदारिक काल यातैं संख्यात गुणा सो संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक कीएं ऐसा २ ७ ४ इनकौं जोडें ऐसा २ ७ ५ प्रमाण राशि अर फलराशि किंचिदून संसारी राशि अर इच्छाराशि अनाहारक काल कीएं लब्ध राशिमात्र तिन जीवनिका प्रमाण जानना

(३— ऊपर लिखा: २ ७ ५ प्रमाण राशि)

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्धराशि
३— २ ७ ५	१३—	३	१३—३ अनाहारक जीवप्रमाण ३— २ ७ । ५
३— २ ७ ५	१३—	२ ७ । ५	१३— २ ७ । ५ आहारक जीव-प्रमाण ३— २ ७ । ५

अथ उपयोगाधिकारविषैं संदृष्टि काहिए है— तहां जीवनिकी संख्याविषैं ज्ञानोपयोगी जीवनिका ज्ञानमार्गणावत् अर दर्शनोपयोगी जीवनिका दर्शनमार्गणावत् ऐसा प्रमाण जानना। १९२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नाम	कुमति ज्ञानी	कुश्रुति ज्ञानी	विभंग ज्ञानी	मति ज्ञानी	श्रुत ज्ञानी	अवधि ज्ञानी	मनःपर्यय ज्ञानी	केवल ज्ञानी	तिर्यंच विभं. ज्ञा.	मनुष्यवि-भंग ज्ञानी	नारक वि.ज्ञा.	देवविभंग ज्ञानी	शक्तिचक्षु दर्शनी	व्यक्तचक्षु दर्शनी	अचक्षु दर्शनी	अवधि दर्शनी	केवल दर्शनी
प्रमाण	१३–	१३–	॥ १ ॥ = ॰ ४ ६५=१	प a	प a	१ ^ प a a a	॰	॰ ३	– ६ प a	॰	–२–	॥ = १– ४ ६५=॰	= २= ४ ४ a	= २= ४ ४ ५	१३–	१ ^ प a a a	॰ २

ओघादेश विषैं विंशतिप्ररूपणा निरूपण अधिकारविषैं यथासंभव मार्गणा भेदनिके आदि अक्षर लिखि अर नीचैं गुणस्थान जीवसमासानिकी संख्याके अंक लिखें रचना हो है। अर गुणस्थानानिके नामका आदि अक्षर लिखि तिनके नीचैं यथासम्भव मार्गणा भेदनिके प्रमाणका अंक लिखें रचना हो है सो कथन अनुसारि जाननी। बहुरि आलाप अधिकारविषैं विशेष संदृष्टि है नाहीं।

इति जीवकांडविषैं अर्थसंदृष्टिस्वरूप निरूपणं समाप्तं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ कर्मकांडीयसंदृष्ट्यधिकारः ।

अथ कर्मकांड महाधिकार विषैं अर्थसंदृष्टि स्वरूप निरूपण करिए है तहां प्रथम कर्मप्रकृतिसमुत्कीर्तन अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है—

तिसविषैं एक समय संबंधी बंध उदय द्रव्य समयप्रबद्धमात्र है स a बहुरि किंचिदून द्व्यर्ध गुणित समयप्रबद्ध स a १२– कौं अनंतगुणा जीवराशि १६ ख करि गुणें विस्रसोपचय द्रव्य होइ । गुणकार ऊपरि एक अधिक कीएं विस्रसोपचयसहित कार्मांण द्रव्य होइ स a १२– १६ ख [१—] । याकौं अपकर्षण भागहार ओ का अर पल्य का असंख्यातवां भाग प/a का अर असंख्यात लोक ≡ a का भाग दीएं अर एक घाटि असंख्यात लोक ≡ a [१ ^] करि गुणें गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्य हो है । याकौं अंकसंदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग दीएं चौंसठिकरि गुणें एक समयविषैं उत्कृष्ट निर्जरा योग्य द्रव्य हो है । बहुरि सत्त्व द्रव्य किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र है । इनकी संदृष्टि ऐसी जाननी—

नाम	बन्धयोग्य	उदययोग्य	उत्कृष्ट निर्जरायोग्य	सत्त्वद्रव्य
प्रमाण	स a	स a	स a १२— १६ ख [१—] ≡ a [१ ^] ६४ / ओ प/a ≡ a ८५	स a १२—

बहुरि उपशम सम्यक्त्व करि मिथ्यात्वकौं मिथ्यात्वमोहनी अर मिश्र मोहनी अर सम्यक्त्वमोहनीरूप तीन प्रकार कीया तिनके द्रव्यकी वा शक्तिकी रचना ऐसी— १६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम वा निषेक संदृष्टि	मिथ्यात्व ४	सम्यग्मिथ्यात्व	सम्यक्प्रकृति क्त्व
द्रव्य प्रमाण	० ० स ∂ १२–गु १ ˆ / ७ ख १७ ∂ गु १– ० १– ० ∂	स ∂ १२– ∂ / ७ ख १७ गु ∂ १–	स ∂ १२– १ / ७ ख १७ गु ∂ १–
शक्ति प्रमाण	३ ख ६ ना	३ ख ६ ना ख	३ ख ६ ना ख ख

इहां ऊपरि क्रमतैं हीन रूप निषेकनिकी रचना ऐसी △ जाननी मिथ्यात्वके निषेकनिविषैं अतिस्थापनावलीप्रमाण निषेक घटावनेकौं च्यारिका अंककी संदृष्टि आवलीकी करि तिनके नीचै अवशेष निषेकनिकी जुदी संदृष्टि जाननी। बहुरि परमाणुरूप द्रव्यका परिमाणविषैं आयु विना सात कर्मनिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र ऐसा स ∂ १२– ताकौं सातका भाग दीएं मोहका ऐसा स ∂ १२– ताकौं अनंतका भाग दीएं सर्वघाती द्रव्य ऐसा स ∂ १२– (७ ख) याकौं सतरहका भाग दीएं मिथ्यात्वका ऐसा स ∂ १२– (७ ख १७) बहुरि याकौं गुण संक्रमण भागहार ऐसा गु ताका भाग देइ बहुभाग ग्रहण अर्थि एक घाटि तीहिं करि गुणन करना। अर अगलेकी अपेक्षा भागहारकौं एक अधिक असंख्यातकरि गुणना अर ताहीका भाग देना ऐसैं कीएं १९६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन पुंजनिविषैं मिथ्यात्वका द्रव्यकी संदृष्टि हो है। बहुरि पूर्वोक्त मिथ्यात्व द्रव्यकौं एक अधिक असंख्यात a का भाग देइ असंख्यातकरि गुणें सम्यग्मिथ्यात्वका अर एक करि गुणें सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य हो है ऐसा जानना। इहां समय समय प्रति अंतर्मुहूर्त पर्यंत मिथ्यात्व द्रव्यकौं गुण संक्रमणका भाग देइ अपकर्षणकरि तीन पुंजरूप करिए है तातैं विंदीनिकी वा अंतर्मुहूर्तकी संदृष्टि जाननी। बहुरि अनुभागका अविभाग प्रतिच्छेद रूप शक्ति ताकी अपेक्षा वर्गणा व कौं स्पर्धक शलाकाकी संदृष्टि नवका अंक ९ ताकरि गुणि अर नाना गुणहानि शलाका ना करि गुणें मिथ्यात्वकी शक्तिका प्रमाण हो है। याकौं अनंत ख का भाग दीएं मिश्रकी शक्तिका प्रमाण हो है। याकौं अनंतका भाग दीएं सम्यक्त्वप्रकृतिकी शक्तिका प्रमाण हो है। बहुरि शक्ति प्रमाण ऊपरि तीनका अंककी संदृष्टि यथासम्भव जाननी। बहुरि प्रकृति आदिके नामनिका आदि अक्षर रूप वा प्रकृतिनिके प्रमाणका अंक रूप करि प्रकृतिनिकी रचना हो है सो सुगम है अपनी बुद्धितैं जानि लेनी।

अथ बंध उदय सत्वाधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है—तहां उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट अजघन्य जघन्य रूप स्थिति अनुभाग प्रदेश बंधनिकी रचना ऐसी—

स्थिति	अनुभाग	प्रदेश
△ ०००० △	≡ △ ००० ≡ △	स ३२ ००० स १

इहां उत्कृष्ट अर जघन्य स्थिति अनुभाग समयप्रबद्ध लिखि तिनके वीचि मध्यभेद ग्रहण निमित्त विंदीनिकी संदृष्टि जाननी बहुरि प्रकृतिबंधविषैं वरोवरि च्यारि कोठे करि पहिले कोठेविषैं गुणस्थानका आदि अक्षर अर दूसरा आदि कोठेनिविषैं क्रमतैं तहां संभवती व्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतिनिके प्रमाणरूप अंक लिखने ऐसैं जे गुणस्थान तिनकी रचना संभवै तितनी ऊपरि २ पंक्ति कीएं रचना हो है सो कथन अनुसारि जानि लेनी तैसैं-गुणस्थाननिविषैं ऐसी रचना हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०	११९	११९	११९	१०३	९८	६२	६१	५७	५३	४३	४६	१९	३
०	१	१	१	१७	२२	५८	५९	६३	६७	७७	७४	१०१	११७
०	१	०	०	१६	५	३६	१	६	४	१०	०	२५	१६
अ	स	क्षी	उ	सू	अ	अ	अ	प्र	दे	अ	मि	सा	मि

ऐसैं विवक्षित मार्गणाभेदका नाम ऊपरि लिखि वा तहां ही बंधयोग्य प्रकृतिनिका प्रमाण लिखि नीचैं संभवते गुणस्थाननिविषैं रचना करनी। बहुरि स्थितिबंधका कथनविषैं भी नामका आदि अक्षररूप वा प्रकृति आदिनिके प्रमाणका अंकरूप सुगम रचना तौ अपनी बुद्धितैं जाननी। बहुरि ज्ञानावरण आदि मूल प्रकृतिनिकी उत्कृष्ट जघन्य स्थिति ऐसी—

नाम उत्कृष्ट स्थिति	ज्ञानावरण	दर्शनावरण	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम	गोत्र	अंतराय
	सा ३० को २	सा ३० को २	सा ३० को २	सा ७० को २	सा ३३	सा २० को २	सा २० को २	सा ३० को २
जघन्यस्थिति	२ १	२१	२ १ । १२	२१	मु १	मु ८	मु ८	२ १

जाननी। इहां सागरकी ऐसी सा कोडाकोडिकी ऐसी को २ अंतर्मुहूर्तकी ऐसी २ १ मुहूर्तकी ऐसी मु जाननी बहुरि ऐसैं ही उत्तर प्रकृतिनिकी जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति कथनके अनुसारि जानि रचना जाननी। बहुरि उत्कृष्ट ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामनिके स्वरूपविषैं उत्कृष्ट कर्म स्थिति सत्तरि कोडाकोडि सागर सो दोयवार संख्यात गुणित पल्यमात्र ऐसी प १ १ जघन्य स्थिति अंतःकोटाकोटी सो संख्यात पल्यमात्र ऐसी प १ उत्कृष्ट मैं जघन्य घटावनेकौं ऐसा प १ समान देखि आगिला संख्यातका गुणकारविषैं एक घटाएं ऐसा प १ १ १–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यामैं एक जोडैं समस्त स्थिति भेदानिका प्रमाण ऐसा १—— हो है बहुरि एक एक स्थिति संबंधी असंख्यात लो-

१—
प ७ ७

कमात्र परिणाम ऐसे ≡ a तिनकी रचना ऐसी——

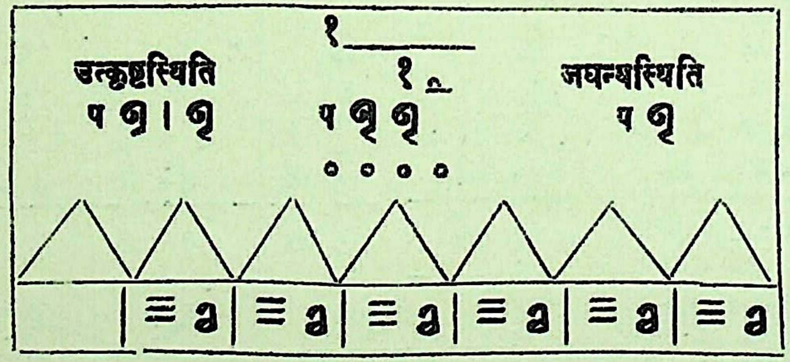

इहां स्थितिकी संदृष्टि ऐसी ↑ जाननी। बहुरि इहां जघन्य स्थिति तैं लगाय एक एक समय अधिक मध्यभेद होइ। ऊपरि तीन दोय एक घाटि उत्कृष्ट स्थिति अर उत्कृष्ट स्थितिपर्यंत ऊर्ध्व गच्छ होइ एक एक स्थिति विषैं असंख्यात लोकमात्र परिणाम अर तिन परिणामनिविषैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र अनुकृष्टि खंडनिकी रचना जैसैं अधःकरणविषैं अंकसंदृष्टि पूर्वक विधान कह्या है तैसैं इहां भी जानना। तहां प्रथम प्रथम खंडकी ईषत् संज्ञा है मध्य खंडनिकी मध्य संज्ञा है अंत खंडकी उत्कृष्ट संज्ञा है तिनकी रचना अंक संदृष्टिकी तौ अधःकरणवत् टीकातैं जाननी अर अनुकृष्टिरूप तिर्यग्गच्छकी अपनी बुद्धितैं यथासंभव जानना। अर अर्थ संदृष्टिरूप ऊर्ध्व गच्छकी ऐसी जाननी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

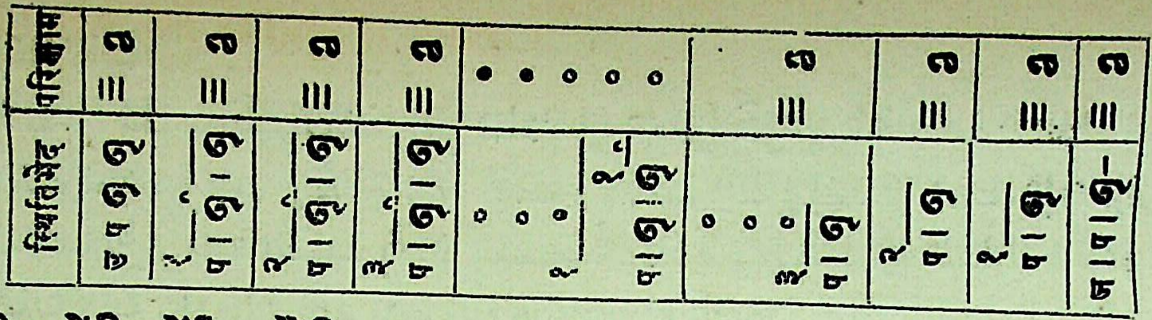

बहुरि एकेंद्रिय वेंद्रिय तेंद्रिय चौंद्रिय अर असंज्ञी पंचेंद्रियकैं मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति क्रमतैं एक पचीस पचास सौ हजार सागर प्रमाण है। बहुरि इस उत्कृष्ट स्थितिमैंस्यौं एक एक घाटि असंख्यात भाजित पल्य अर च्यारि तीन दोय एकबार संख्यात भाजित पल्यकौं घटाएं क्रमतैं जघन्य स्थिति हो है। अर संज्ञीके उत्कृष्ट सत्तरि कोडाकोडी सागर जघन्य अंतः कोटाकोटी स्थिति है तिनकी रचना ऐसी–

नाम	एकेंद्रिय	वेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	असंज्ञी पंचेंद्रिय	संज्ञी पंचेंद्रिय
उत्कृष्टस्थिति	सा १	सा २५	सा ५०	सा १००	सा १०००	सा ७० को २
जघन्य स्थिति	सा १ १ ^/प) a	सा २५ १ ^/प) ? ४	सा ५० १ ^/प) ? ३	सा १०० १ ^/प) ? २	सा १००० १ ^/प) ?	अं को २

इहां जघन्य स्थितिविषैं ऊपरि उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण लिखि नीचैं घटावने योग्य राशिकी ऐसी) संदृष्टि जाननी। अन्य सुगम है।

बहुरि सत्तरिकोडा कोडी सागरकौं प्रमाणराशि कीएं अपनी अपनी मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वा जघन्य स्थिति कौं फल राशि कीएं चालीस तीस वीस कोडाकोडी सागरकौं इच्छाराशि कीएं लब्धराशि तिस मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा जघन्य स्थितिकौं सातका भाग दीएं अर क्रमतैं च्यारि तीन दोय करि गुणें जो होइ तन्मात्र चालीस तीस वीस कोडाकोडी सागर मात्र उत्कृष्ट स्थिति धारक कर्मनिकी एकेंद्रियादिककैं उत्कृष्ट वा जघन्य स्थिति जाननी। ताकी रचना ऐसी—

भाव	नाम	एकेंद्रिय	बेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	असंज्ञी पंचेंद्रिय
उत्कृष्ट	चालीसिय	सा ४ ७	सा २५ ४ ७	सा ५० ४ ७	सा १०० ४ ७	सा १००० ४ ७
उत्कृष्ट	तीसिय	सा ३ ७	सा २५ ३ ७	सा ५० ३ ७	सा १०० ३ ७	सा १००० ३ ७
उत्कृष्ट	बीसिय	सा २ ७	सा २५ २ ७	सा ५० २ ७	सा १०० २ ७	सा १००० २ ७
जघन्य	चालीसिय	सा ४ १ ^) ७ प ऋ	सा २५ ४ १ ^) ७ प ऋ ४	सा ५० ४ १ ^) ७ प ऋ ३	सा १०० ४ १ ^) ७ प ऋ २	सा १००० ४ १ ^) ७ प ऋ
जघन्य	तीसिय	सा ३ १ ^) ७ प ऋ	सा २५ ३ १ ^) ७ प ऋ ४	सा ५० ३ १ ^) ७ प ऋ ३	सा १०० ३ १ ^) ७ प ऋ २	सा १००० ३ १ ^) ७ प ऋ
जघन्य	बीसिय	सा २ १ ^) ७ प ऋ	सा २५ २ १ ^) ७ प ऋ ४	सा ५० २ १ ^) ७ प ऋ ३	सा १०० २ १ ^) ७ प ऋ २	सा १००० २ १ ^) ७ प ऋ

ऐसैं ही अन्य स्थितियुक्त कर्म प्रकृतिनिकी जाननी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि अंतर्मुहूर्त ऐसा २ ७ याकौं एक पचीस पचास सौ हजार करि गुणैं एकेंद्रिय वेंद्रिय तेंद्रिय चौंद्रिय असंज्ञी पचेंद्रियनिकैं जघन्य आबाधा हो है। संज्ञीकैं दोयवार संख्यात गुणित आवलीमात्र ऐसी है— २ ७ ७ बहुरि इस जघन्य आबाधाके ऊपरि एकेंद्रियकैं आवलीका असंख्यातवां भाग २ वेंद्रियादिककैं क्रमतैं च्यारि
a

तीन दोय एकवार संख्यात भाजित आवली अधिक कीएं, संज्ञीकैं जघन्य-कौं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिकरि गुणैं उत्कृष्ट आबाधा हो है। बहुरि उत्कृष्ट मैं जघन्य घटाइ एक जोडैं एकेंद्रिया-दिककैं अधिक कीया राशितैं एक एक अधिक मात्र अर संज्ञीकैं एक घाटि संख्यात गुणित जघन्य स्थितितैं एक अधिकमात्र सर्व आबाधा भेदनिका प्रमाण जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी-

नाम	उत्कृष्ट आबाधा	जघन्य आबाधा	आबाधा
संज्ञी	२ ७ ७ ४	२ ७ ७	२ ७ ७ ४ / २ १
असंज्ञी	२ ७ / २ ७ १००० / ४	२ ७ १०००	२ / ४ ७
चौइंद्रिय	२ ७ ७ / २ ७ १००	२ ७ १००	२ / ४ ७ ७
तेइंद्रिय	२ ७ ७ ७ / २ ७ ५०	२ ७ ५०	२ / ४ ७ ७ ७
बेइंद्रिय	२ ७ ७ ७ ७ / २ ७ २५	२ ७ २५	२ / ४ ७ ७ ७ ७
एकेंद्रिय	२ a / २ ७ १	२ ७ १	२ / ४ a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि जघन्य स्थिति साधनेकौं करण सूत्रकरि एकेंद्रियके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट आबाधा ऐसी २ इहां अ-
ə
२ १
धिक राशिविषैं भाज्य अर मूलराशिविषैं गुणकार आवलीकौं देखि एकका असंख्यातवां भागकौं मूलराशिका गु-
णकारके ऊपरि किंचित् अधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा २ ७ बहुरि ताकैं उत्कृष्ट स्थिति एक सागर सो दोयबार
संख्यात गुणित पल्यमात्र ऐसी प ७ १ याकौं ताका भाग दीएं आबाधाकांडक प्रमाण ऐसा प १ १ याकौं आ-
२ १
बाधाके भेद ऐसे १— २ ə तिनकरि गुणें ऐसा प १ १ । १— २ ə अपवर्तन कीएं पल्यका असंख्यातवां भाग मात्र ऐसा प ə
२ १
याभैं एक घटाइ याकौं उत्कृष्ट स्थितिविषैं घटाएं एकेंद्रियकैं जघन्य स्थिति ऐसी सा १— प ə याकौं उत्कृष्ट स्थितिमैं घ-
टाइ एक जोडें सर्व स्थिति भेदनिका प्रमाण ऐसा प ə हो है। ऐसैं ही बेंद्रियकैं उत्कृष्ट आबाधा ऐसी २
१ ७ ७ १
२ १ २५
अपवर्तन कीएं ऐसी २ १ २५ याकरि भाजित उत्कृष्ट स्थितिमात्र आबाधाकांडक ऐसा सा २५ अपवर्तन
२ १ । २५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीएं ऐसा सा याकौं आबाधा भेद ऐसा २ ताकरि गुणें ऐसा सा २ अपवर्तन कीएं ऐसा प
२ ११११ २११४ ११११

यामैं एक घटाइ याकौं उत्कृष्ट स्थिति विषैं घटाएं जघन्य स्थिति ऐसी सा २५) याकौं उत्कृष्ट स्थितिमैं
१ प ११११

घटाइ अवशेष विषैं एक जोडैं सर्व स्थिति भेद प्रमाण ऐसा प हो है। बहुरि तेंद्रियकैं उत्कृष्ट आबा-
११११

धा ऐसी २ याकरि भाजित उत्कृष्ट स्थितिमात्र आबाधा कांडक ऐसा सा ५० अपवर्तन कीएं ऐसा
१११ २१।५० २१।५०

सा हो है। याकौं आबाधा भेद ऐसा सा ताकरि गुणें ऐसा सा २ अपवर्तन कीएं ऐसा प
२१ २ ११११ २१११ १११

यामैं एक घटाइ याकौं उत्कृष्ट स्थितिविषैं घटाएं जघन्य स्थिति ऐसी है सा ५०) याकौं ऊत्कृष्ट स्थितिविषैं घटाइ
१ प १११

अवशेषविषैं एक जोडैं सर्व स्थिति भेद प्रमाण ऐसा प हो है बहुरि चौंद्रियकैं उत्कृष्ट आबाधा ऐसी २ २०४
१११ ११ २१।१००

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याकरि भाजित उत्कृष्ट स्थिति मात्र आबाधाकांडक ऐसा सा १०० / २ ९ १०० अपवर्तन कीएं ऐसा सा / २ ९ याकौं आबाधा भे-
दनिकरि गुणें ऐसा सा २ १ – / २ ९ । ९ ९ अपवर्तन कीएं ऐसा प / ९ ९ यामैं एक घटाइ याकौं उत्कृष्ट स्थितिमैं घटाएं जघन्य
स्थिति ऐसी सा (१०० / १ – प / ९ ९) याकौं उत्कृष्ट स्थिति विषैं घटाएं एक जोडें सर्व स्थितिभेद प्रमाण ऐसा प / ९ ९ हो है। बहुरि
असंज्ञीकैं उत्कृष्ट आबाधा ऐसी २ / ९ याकरि भाजित उत्कृष्ट स्थितिमात्र आबाधा कांडक ऐसा सा १००० / २ ९ १००० अपवर्तन
कीएं ऐसा सा / २ ९ । १००० याकौं आबाधा भेदनि करि गुणें ऐसा सा २ १ – / २ ९ ९ अपवर्तन कीएंऐसा प / ९ यामैं एक घटाइ अवशेष उ-
त्कृष्ट स्थितिविषैं घटाएं जघन्य स्थिति ऐसी सा (१००० / १ – प / ९) याकौं उत्कृष्ट स्थितिमैं घटाएं एक जोडें सर्व स्थिति
भेद प्रमाण ऐसा प / ९ हो है। ऐसैं यहु कथन कह्या ताकौं अंक संदृष्टिकरि दिखावे हैं ताका यंत्र–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४	६३	६२	६१	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५
४८	४७	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३९	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३
१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२
४				४				४				४				४			

इहां ऊपरि चौसठि समय आदि एक एक घाटि पैंतालीस समय पर्यंत वीस स्थिति भेद लिखे तहां स्थिति की संदृष्टि ऐसी करी ^ तहां नीचै ऊभी लीकके पासि सोलह समय आदि आबाधा काल लिख्या। आबाधा काल स्थितिमैं घटाएं अवशेष निषेकनिका प्रमाण ऐसी △ संदृष्टिके वीच लिख्या। अर च्यारि च्यारि स्थिति भेदनि विषैं एकसी आबाधा पाइए तातैं आबाधा कांडकका प्रमाण नीचैं च्यारि च्यारि लिख्या जानना। बहुरि सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण राशि कीएं अपनी अपनी मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट जघन्य स्थिति फलराशि कीएं चालीस तीस वीस कोडाकोडी सागर इच्छा राशि कीएं लब्धराशिमात्र चालीसियादिकनिकी उत्कृष्ट वा जघन्य स्थिति हो है सो त्रैराशिक विषैं प्रमाण फल इच्छाकी संदृष्टि सुगम है। अर लब्धराशि मात्र स्थितिका कथन है। इहां भी त्रैराशिक दिखावनेकौं रचना कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि एकेंद्रियादिकके स्थिति भेदनिका प्रमाण पूर्वोक्त ऐसा—

नाम प्रमाण	एकेंद्रिय	बेंद्रिय	तेंद्रिय	चौंद्रिय	असंज्ञी	संज्ञी
	प / a	प / ७ ४	प / ७ ३	प / ७ २	प / ७	१ / १ / प ७ ७

इनिविषैं एकेंद्रियकेविषैं बादर पर्याप्तकैं उत्कृष्ट, सूक्ष्म पर्याप्तकैं उत्कृष्ट बादर अपर्याप्तकैं उत्कृष्ट सूक्ष्म अपर्याप्तकैं उत्कृष्ट सूक्ष्म अपर्याप्तकैं जघन्य बादर अपर्याप्तकैं जघन्य सूक्ष्म पर्याप्तकैं जघन्य बादर पर्याप्तकैं जघन्य स्थिति बंधरूप आठ स्थान तिनके बीचि सात अंतरालनिविषैं संख्यातकी संदृष्टि दोयका अंक कीएं क्रमतैं एकसौ छिनवे अठाईस च्यारि एक दोय चौदह अठ्याणवे शलाकानिका प्रमाण हो है सो सर्व शलाकानिकौं जोडें तीनसै तियालिस शलाकानिका प्रमाण होइ। याका भाग एकेंद्रियके स्थिति भेद ऐसे प / a ताकौं देय करि अपना अपना शलाका प्रमाण करि गुणें अंतरालनिविषैं स्थितिभेदनिका प्रमाण आवै है। ऐसैं ही आबाधा काल भेदनिका प्रमाण ऐसा २ / a ताकौं तीनसै तियालीसका भाग देइ अपनी अपनी शलाकाकरि गुणें अंतरालनिविषैं आबाधा भेदनिका प्रमाण आवै है। बहुरि बीचि अंतरालनिविषैं स्थिति वा आबाधाके भेद प्रमाण जानने। बहुरि ऐसैं बादर पर्याप्तकैं उत्कृष्ट स्थितिबंध एक सागर अर आगें सात स्थाननिविषैं एक घाटि पल्यका असंख्यातवां भाग प / a कौं तीनसै तियालीसका भाग देइ क्रमतैं एकसौ छिनवै दोयसै चौईस दोयसै अठाईस दोयसै गुणतीस दोयसै इकतीस दोयसै पैंतालीस तीनसै तियालीस करि गुणें जो जो प्रमाण होइ ताकौं सागरविषैं घटाएं अपना अपना स्थितिबंधका प्रमाण हो है। इहां पहिलैं एकसौ छिनवै शलाकाकरि गुण्या पीछै तामैं अठाईस मिलाइ दोयसै चौईस करि गुण्या ऐसैं ही पूर्व पूर्वविषैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शलाकानिका प्रमाण मिलाइ गुणकारका प्रमाण जानना। इनकी रचना ऐसी—

नाम	वा प उ	सू प उ	वा अ उ	सू अ उ	सू अ ज	वा अ ज	सू प ज	वा प ज	
स्थिति भेदप्रमाण	सा १	प १९६ a ३४३	प २८ a ३४३	प ४ a ३४३	प १ a ३४३	प २ a ३४३	प १४ a ३४३	प ९८ a ३४३	सा १ १ — प a
आबाधा भेदप्रमाण	२ a २७	— १९६ २ ३४३ a	१— २ २८ a ३४३	१— २ ४ a ३४३	१— २ १ a ३४३	१— २ २ a ३४३	१— २ १४ a ३४३	१— २ ९८ a ३४३	२७
स्थितिबंध प्रमाण	सा १	सा १ १ ^) प १९६ a ३४३	सा १) १ ^) प २२४ a ३४३	सा १) १ ^) प २२८ a ३४३	सा १) १ ^) प) २२९ a ३४३	सा १) १ ^) प २३१ a ३४३	सा १) १ ^) प २४५ a ३४३	सा १) १ ^) प ३४३ a ३४३	

इहां ऊपरि वादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त उत्कृष्ट जघन्यका आदि अक्षर रूप संदृष्टि करि नाम जानना। नीचैं इहां स्थितिका कथन है तातैं असी ^ संदृष्टि जाननी। तहां बीचि अंतरालनिविषै स्थिति भेदनिका प्रमाण जानना अर आदि अंत विषैं उत्कृष्ट जघन्य स्थिति वा आबाधाका प्रमाण जानना। बहुरि नीचै आठौं स्थाननिविषैं स्थितिबंधका प्रमाण जानना। बहुरि ऐसैं ही बेंद्रिय तेंद्रिय चौंद्रिय असंज्ञीकैं प्रत्येक पर्याप्तकैं उत्कृष्ट अपर्याप्तकैं जघन्य पर्याप्तकैं जघन्य स्थितिबंधरूप च्यारि च्यारि स्थान हैं तिनके तीन अंतरालनिकी क्रमतैं च्यारि एक दोय शलाका हैं मिलिकरि सात भई ताका भाग अपना अपना स्थिति भेद प्रमाण क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकबार संख्यात भाजित पल्यमात्र तिनकौं वा आबाधाभेदप्रमाण एक एक अधिक क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकबार संख्यातकरि भाजित आवलीमात्र तिनकौं देइ अपना अपना शलाका प्रमाण करि गुणें अंतरालनिविषैं स्थिति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि संज्ञी पंचेंद्रिय विषैं पर्याप्तकैं उत्कृष्ट अपर्याप्तकैं जघन्य पर्याप्तकैं जघन्य स्थितिरूप स्थान तिनके तीन अन्तरालनिविषैं स्थिति भेद पूर्वोक्त ऐसे प ७ ७ (१— १—) इनकौं संख्यातकी संदृष्टि पांचका अंक ताका भाग देइ बहुभागमात्र प्रथम अन्तरालविषैं अवशेषकौं ताका ही भाग देइ बहुभाग मात्र दूसरा अन्तरालविषैं एक भाग तीसरा अन्तरालविषैं स्थिति भेदनिका प्रमाण जानना। ऐसैं ही आबाधा भेदनिविषैं उत्कृष्ट आबाधा तीन बार संख्यात गुणित आवली मात्र जघन्य आबाधा दोयबार संख्यात गुणित आवलीमात्र तहां उत्कृष्ट विषैं जघन्य घटाएं (१— १) एक जोडें आबाधा भेद ऐसे २ ७ ७ ७ तिनका विधान कीएं आबाधाभेदनिका प्रमाण जानना। बहुरि च्यार्यो स्थाननिविषैं जघन्य स्थितितैं लगाय संख्यातगुणां स्थितिबंधका प्रमाण हो है। तिनकी रचना पूर्वोक्त प्रमाण ऐसी जाननी—

नाम	संज्ञीपंचेंद्री				
नाम	पउ		अउ	अज	पज
स्थिति भेद प्रमाण	सा७० क्रो२	१ / १ प७७८ / ५	१ / १ प७७४ / ५५	१ / १ प७७ / ५५	साअं कोर
आबाधा भेद प्रमाण	वर्ष ७००० ताका २७७७	१ / १ २७७७४ / ५	१ / १ २७७७४ / ५५	१ / १ २७७७४ / ५५	२७७
स्थिति बंध प्रमाण	प७७	प७५५	प७५	२७	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि आबाधा कथनविषैं संज्ञीकैं एक कोडाकोडी सागरकी सौ वर्ष आबाधा होइ तौ सत्तर कोडाकोडी सागरकी केती होइ ? ऐसैं त्रैराशिक करना। ऐसैं ही अन्यका साधन करना।

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
सा १ को २	व १००	७० को २	सत्तर कोडाकोडी सागर वर्ष ७००० आबाधा

बहुरि येंद्रियकैं प्रमाण पचीस सागर फल ताकी उत्कृष्ट आबाधा मात्र इच्छा पचीस सागरका च्यारि सातवां भाग मात्र कीएं लब्धिमात्र ताकैं चालीसियाकी आबाधाका प्रमाण आवै है। ऐसैं ही अन्य साधन करना—

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
सा २५	२ ७ृ ७ ७ ७ृ २ ७ृ। २५	सा २५ ४/७	२ ७ृ ७ृ ७ृ ७ २ ७। २५ ४/७

बहुरि अंतःकोटाकोटी सागरकी आबाधा अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसी २ ७ृ ताके संख्यातवे भाग जघन्य स्थितिकी ऐसी २ ७ृ आयुकर्मकी आबाधा जघन्य तौ अंतर्मुहूर्त अथवा आवलीका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य २ ७ अथवा २/४ ‍२/३

उत्कृष्ट पूर्वकोटिवर्षका तीसरा भागमात्र जाननी। बहुरि उदीरणा अपेक्षा सातकर्मकी आबाधा आवलीमात्र २ है। बहुरि उदीरणाविषैं रचना ऐसी हो है—

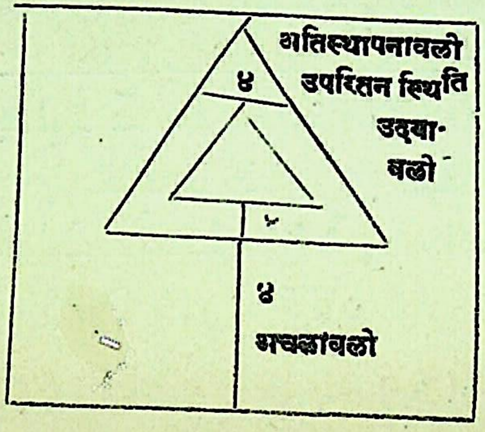

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां नीचैं तौ उदीरणा होने योग्य नाहीं ऐसी आबाधारूप अचलावलीकी संदृष्टि ऐसी । बहुरि उदीरणाविषैं अपकर्षण कीया हूआ जो द्रव्य तीहि विषैं आवली कालविषैं उदय आवने योग्यरूप उदयावलीकी ऐसा ☐ ऊपरि अपकर्षण कीया हूआ द्रव्य उदयावलीतैं उपरितन स्थितिविषैं दीया तिनके निषेकनिकी क्रम हीन रूप ऐसी ▵ ऊपरि अपकर्षण कीया हूआ द्रव्य जहां न दीजिए ऐसी अतिस्थापनावलीकी ऐसी △ संदृष्टि जाननी। अर आवलीकी संदृष्टि च्यारिका अंक जानना । बहुरि अनुभाग बंधका कथनविषैं घातियानिके स्पर्धक लता दारु अस्थि शैल रूप च्यारि प्रकार अनुभाग धरे हैं तहां लता भागतैं लगाय दारुभागका अनंतवां भाग ऐसा दा १/ख तहां पर्यंत देशघाती है । बहुरि दारुका अनंत बहुभाग ऐसा दा १-^/ख ख तहांतैं लगाय शैल पर्यंत सर्वघाती हैं । तहां मिथ्यात्वविषैं विशेष ऐसा है जो लतातैं लगाय दारुका अनंतवां भाग पर्यंत स्पर्धक तौ सम्यक्त्व प्रकृति रूप हैं अर दारुका अनंत बहुभागका अनंतवां भागरूप स्पर्धक मिश्र प्रकृति रूप हैं । दारुका अनंत बहु भागका बहुभागरूप अर अस्थि शैल रूप स्पर्धक मिथ्यात्व प्रकृति रूप है । बहुरि शक्ति करि एक गुणहानि विषैं स्पर्धक शलाकाकी संदृष्टि नवका अंक ऐसा ९ ताकौं नाना गुणहानिकरि गुणें ऐसी ९ ना याकौं अनंतका भाग देइ बहुभाग बहुभाग मात्र शैल अस्थिदारु रूप है । एक भाग मात्र लता रूप है तिनकी रचना ऐसी जाननी—

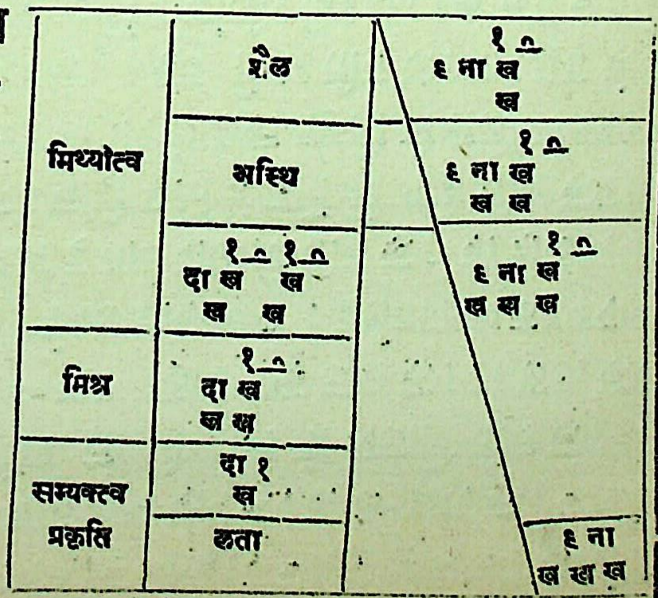

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि मति आदि च्यारि ज्ञानावरण चक्षु आदि तीन दर्शनावरण पांच अंतराय च्यारि संज्वलन पुरुषवेद ए सतरह प्रकृति तौ शैलादि च्यारि रूप वा शैल विना तीन रूप वा दारु लता दोय रूप वा लतारूप करि च्यारि प्रकार प्रवर्तैं हैं। अवशेष तीन रूप प्रवर्तैं है। तहां मिथ्यात्वविषैं विशेष जो मिथ्यात्व तौ शैलादि तीन रूप वा शैल विना दोय रूप वा दारु रूप करि तीन प्रकार प्रवर्तैं है। अर सम्यक्त्व प्रकृति दारु लता रूप वा लता रूप ही प्रवर्तैं है मिश्र प्रकृति केवल दारु रूप ही है बहुरि अन्य प्रकृतिनिविषैं केवल ज्ञानावरण १ दर्शनावरण छह कषाय बारह उणीस प्रकृति सर्व घाती ही हैं। तातैं इनविषैं लताभागका अभाव है तातैं शैलादि तीन रूप वा शैल विना दोय रूप वा दारु रूप प्रवर्तैं है। बहुरि नोकषाय आठ केवल लता रूप नाही प्रवर्तैं हैं तातैं शैलादि तीन रूप वा शैल विना तीन रूप वा दारु लता दोय रूप प्रवर्तैं है। बहुरि अघाति कर्मनिविषैं प्रशस्त प्रकृति बियालीस तिनका अनुभाग गुड खंड शर्करा अमृत रूप च्यारि प्रकार है सो च्यार्‍यो रूप वा अमृत विना तीन रूप वा गुड खंड रूप दोय प्रकार प्रवर्तैं है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृति सैंतीस तिनका अनुभाग निंब कांजीर विष हलाहल रूप च्यारि प्रकार है। तहां तिन च्यार्‍यो रूप वा हलाहल विना तीन रूप वा निंब कांजीर रूप दोय प्रकार प्रवर्तैं है ऐसैं इन अनुभागनिका प्रवर्तना यथा संभव गुणस्थाननिविषैं जानना। तिनकी रचना का यंत्र—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

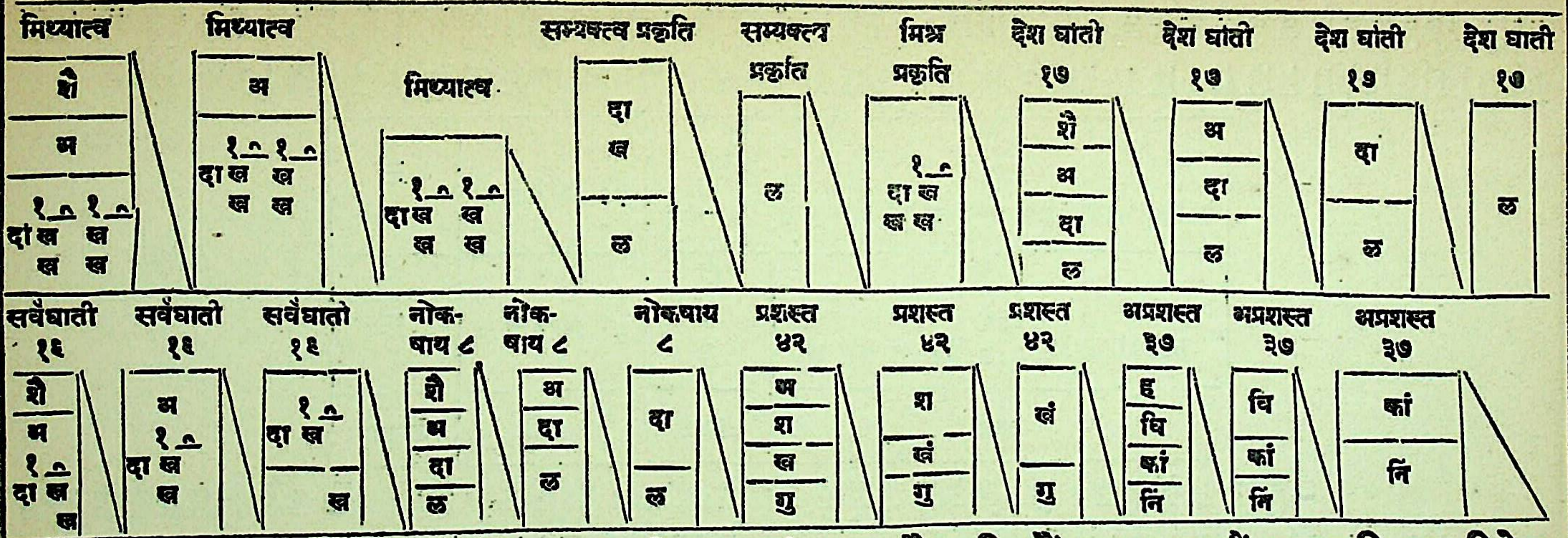

इहां नामका आदि अक्षरादि रूप संदृष्टि जाननी। अर शैलादिकतैं लगाय क्रमतैं गुणहानि वा निषेकनिविषैं परमाणुरूप द्रव्यका प्रमाण अधिक रूप है तातैं शैलादिक रचनाके आगैं ताकी ऐसी |\ संदृष्टि क्रम अधिक रूप जाननी। बहुरि प्रदेश बंधका कथनविषैं एक शरीरकरि रोक्या हूआ पल्यका असंख्यातवां भागकरि भाजित घनांगुलमात्र एक क्षेत्र ऐसा ६/प/a याकौं लोक ≡ विषैं घटाइ एक जोडैं ताके भेद ऐसे ≡ − ६/प/a इहां लोकके आगैं घटावनेकी ऐसी − संदृष्टि लिखि आगैं ऋण राशि लिख्या है। बहुरि एक क्षेत्रकौं लोकविषैं घटाएं अनेक क्षेत्र ऐसा ≡ − ६/प/a इहां भी तैसैं ही संदृष्टि जाननी।

बहुरि प्रमाण राशि लोक फलराशि पुद्गल राशि इच्छाराशि अपना अपना क्षेत्र कीएं लब्धमात्र अपने अपने क्षेत्र संबंधी रूपी द्रव्य हो है—

२६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
≡	१६ ख	६ प a	१६ ख ६ प ≡ a एक क्षेत्रका द्रव्य
≡	१६ ख	≡ – ६ प a	१६ ख ≡ – ६ प ≡ a अनेक क्षेत्रका द्रव्य

बहुरि अपने अपने द्रव्यकौं अनंत ऐसा ख ताका भाग देइ एककरि गुणें कर्मरूप होने योग्य योग्य द्रव्य है। एक घाटि अनंत ऐसा ख करि गुणें कर्मरूप न होने योग्य अयोग्य द्रव्य हो है बहुरि उत्कृष्ट समय प्रबद्ध ऐसा स ३२ हो है याकौं अतीत काल करि गुणें एक जीवकरि ग्रह्या हूआ द्रव्य ऐसा स ३२ अ याकौं सर्व जीवराशि करि गुणें सर्व जीवनिकरि ग्रह्या हूआ सादि द्रव्य ऐसा स ३२ अ १६ हो है। बहुरि प्रमाणराशि लोक फलराशि सादि द्रव्य इच्छाराशी एक वा अनेक क्षेत्र कीएं लब्धमात्र एक अनेक क्षेत्र संबंधी सादि द्रव्य हो है–

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
≡	स ३२ अ १६	६ प a	स ३२ अ १६ ६ प a एकक्षेत्रसादिद्रव्य
≡	स ३२ अ १६	≡ – ६ प a	स ३२ अ १६ ≡ – ६ प ≡ a अनेकक्षेत्रसादिद्रव्य

बहुरि अपने अपने सादि द्रव्यकौं अनंतका भाग देइ एक करि गुणें अपना अपना क्षेत्र संबंधी योग्य सादि द्रव्य हो है। एक घाटि अनंतकरि गुणें अयोग्य सादि द्रव्य हो है। बहुरि पूर्वोक्त एक अनेक क्षेत्र संबंधी योग्य २१४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोग्य द्रव्यविषैं इस सादि द्रव्यकौं घटाएं अवशेष अनादि द्रव्य हो है सो ऊपरि सामान्य द्रव्य लिखि नीचैं सादि द्रव्य लिखि घटावनेकी ऐसी) संदृष्टि कीएं ताकी संदृष्टि हो है। इनि सवनिकी संदृष्टि ऐसी जाननी—

नाम	समस्तसामान्य प्रमाण	एक क्षेत्रसंबंधी प्रमाण	अनेकक्षेत्रसंबंधी प्रमाण
क्षेत्र	≡	६ प a	≡ - ६ प a
द्रव्य	१६ ख	१६ ख ६ प ≡ a	१६ ख ≡ - ६ ≡ प a
योग्यद्रव्य	१६ ख ख	१६ ख ६ ≡ ख प a	१६ ख ≡ - ६ ≡ ख प a
अयोग्यद्रव्य	१६ ख ख^{१⌒} ख	१६ ख ६ ख^{१⌒} ≡ प ख a	१६ ख ≡ - ६ ख^{१⌒} प ख a
सादिद्रव्य	स ३२ अ १६ । १	स ३२ अ १६ ६ ≡ प a	स ३२ अ १६ ≡ - ६ ≡ प a
योग्यसादिद्रव्य	स ३२ अ १६ १ ख	स ३२ अ १६ ६ १ ≡ प ख a	स ३२ अ १६ ≡ - ६ १ प ख a
अयोग्यसादिद्रव्य	स ३२ अ १६ ख^{१⌒} ख	स ३२ अ १६ ६ ख^{१⌒} प ख a	स ३२ अ १६ ≡ - ६ ख^{१⌒} प ख a
अनादिद्रव्य	१६ ख स ३२ अ १६ १)	१६ ख ६ ≡ प a) स ३२ अ १६ ६ प a	१६ ख ≡ - ६ प a) स ३२ अ १६ ≡ - ६ ≡ प a
योग्यअनादिद्रव्य	१६ ख ख) स ३२ अ १६ १ ख	१६ ख ६ प a) स ३२ अ १६ ६ १ प ख a	१६ ख ≡ - ६ ≡ ख प a) स ३२ अ १६ ≡ - ६ १ प ख a
अयोग्यअनादिद्रव्य	१६ ख ख^{१⌒} ख स ३२ अ १६ ख^{१⌒} ख	१६ ख ६ ख^{१⌒} प ख a) स ३२ अ १६ ६ ख^{१⌒} प ख a	१६ ख ≡ - ६ ख^{१⌒} प ख a स ३२ अ १६ ≡ - ६ ख^{१⌒} प ख a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इहां सादि वा अनादि वा उभय योग्य द्रव्यतैं समय प्रबद्ध मात्र द्रव्यकौं समय २ प्रति प्रकृतिनिरूप परिणमावैं है। ताका विभाग कहिए है—

समय प्रबद्ध ऐसा स a याकौं आवलीका असंख्यातवां भागमात्र प्रतिभागकी संदृष्टि नवका अंक ९ ताका भाग दीएं बहुभाग ऐसा स a ८/९ ताकौं आठका भाग देइ एक एक समान भाग ज्ञानावरणादिकनिकौं देना। बहुरि अवशेष एक भाग ऐसा स a १/९ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग बहुभाग वेदनीय मोहनीयकौं देना अवशेष एक भाग ऐसा स a १/९ ९ ९ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग ऐसा स a ८/९ ९ ९ ९ ताकौं तीनका भागदेइ एक एक भाग ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतरायकौं देना। अवशेष एक भाग ऐसा स a १/९ ९ ९ ९ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग ऐसा स a ८/९ ९ ९ ९ ९ ताकौं दोयका भाग देइ एक एक भाग नाम गोत्रकौं देना अवशेष एक भाग ऐसा स a १/९ ९ ९ ९ ९ आयुकौं देना ताकी रचना ऐसी—

नाम	वेदनीय	मोहनीय	ज्ञानावरण	दर्शनावरण	अंतराय	गोत्र	नाम	आयु
सम-भाग	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८	स a ८/९ ८
देय-भाग	स a ८/९ ९	स a ८/९ ९ ९	स a ८/९ ९ ९ ९ ३	स a ८/९ ९ ९ ९ ३	स a ८/९ ९ ९ ९ ३	स a ८/९ ९ ९ ९ ९ २	स a ८/९ ९ ९ ९ ९ २	स a १/९ ९ ९ ९ ९

इहां वा आगें उत्तर प्रकृतिनिका कथनविषैं जेतीवार बहुभागका ग्रहण होइ तेतीवार संदृष्टिरूप प्रतिभाग नवका भाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देइ बहुभागविषैं आठका, अंतविषैं एक भागविषैं एकका गुणकार जानना। बहुरि सम भाग देय भाग मिलाएं जो जो प्रमाण होइ सो सो अपना अपना द्रव्य जानना। बहुरि उत्तर प्रकृतिनिका विभाग करिए है—

तहां ज्ञानावरणका समभाग रूप द्रव्य ऐसा स a ८ यामें देय भाग मिलावनेकौं ऊपरि साधिककी संदृष्टि
। ६ । ८
ऐसी। कीएं ऐसा स a ८ इहां गुणकार भागहारतैं एक घाटि है ताकौं संदृष्टि विषैं न गिणि आवलीका असंख्या-
६ । ८ । ।
तवां भागका अपवर्तन कीएं ऐसा स a ऐसैं ही सर्व मूल प्रकृतिनिके द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी स a जाननी। तहां
८ ८ ।
ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनीयके द्रव्यकौं प्रत्येक अनंतका भाग देइ एक करि गुणें सर्वघाती द्रव्य ऐसा स a १
८ ख
। १ख
एक घाटि अनंतकरि गुणें देशघाती द्रव्य ऐसा स a ख हो है। तहां सर्वघाती देशघाति द्रव्य जाननेकौं
८ ख
ज्ञानावरणका उदाहरण कहिए है—

।
ज्ञानावरणका देश घाती द्रव्यविषैं केवलज्ञानावरणका द्रव्य वक्ष्यमाण ऐसा स a ८ । १ ताकरि हीन सर्व
। १ख ८ ख ६ । ५
घाती द्रव्य ऐसा स a ८ प जोडें साधिक समय प्रबद्धका आठवां भागमात्र मतिज्ञानावरणादि च्यारिकां द्रव्य
। ८ ख ६ ५
ऐसा स a सो तौ द्रव्य जानना। स्थिति तीनवार अनंतका परस्पर गुणनमात्र जाननी। गुणहानि आयाम दो-
८
यवार अनंतका परस्पर गुणनमात्र जानना। याकौं दोयकरि गुणें दोगुणहानि जाननी। नाना गुणहानि अनंत जाननी। अन्योन्याभ्यस्त राशि दोय बार अनंतका परस्पर गुणन मात्र जाननी। इनकी संदृष्टि ऐसी— २१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नाम प्रमाण	द्रव्य स । ८ a	स्थिति ख ख ख	गुणहानि आयाम ख ख	दो गुणहानि ख ख २	नाना गुणहानि ख	अन्योन्याभ्यस्त राशि ख ख

इहां द्रव्यकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तका भाग दीएं शैलभागकी अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा स a ।
१ —
८ ख ख

बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति दूणां दूणां द्रव्य होइ। याकौं यथायोग्य आधा अनंत ऐसा स ख ताकरि गुणें
२
दारुका बहुभागकी प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा स a ख । इहां पर्यंत तौ सर्व घाती द्रव्य है। बहुरि दारु बहु-
१ —
८ । ख ख २

भागका प्रथम गुण हानिका द्रव्यतैं दूणा दारु एक भागकी अंत गुण हानिका द्रव्य ऐसा स a ख २ ।
१ —
८ ख । ख २

यातैं गुणहानि गुणहानि प्रति दूणा दूणा होइ शैल भागकी अंत गुणहानिके द्रव्यकौं आधा अन्योन्याभ्यस्त ऐसा ख ख ताकरि गुणै लताभागकी आदि गुणहानिका द्रव्य ऐसा हो है स a ख ख । यहु देशघाती द्रव्य जानना
२
।
१ —
८ ख ख २

यहां शैल भागतैं लगाय निषेकादि क्रमतैं अधिक रूप हैं तातैं आगें ऐसी △ संदृष्टि क्रमरूप अधिक जाननी। ऐसे ही अन्यका जानना—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

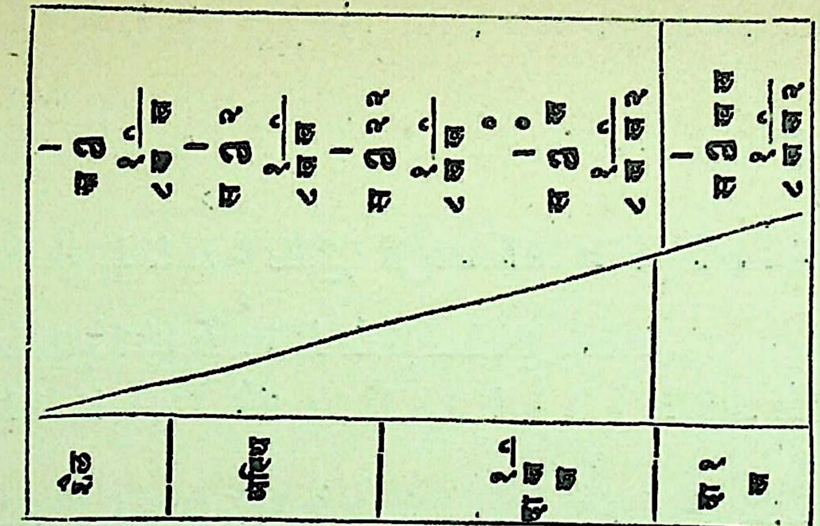

बहुरि इहां ज्ञानावरणका सर्वघाती द्रव्य ऐसा स a [८ ख] याकौं प्रतिभाग ऐसा ९ ताका भाग देइ एक एक समान भाग ऐसा स a ८ [८।ख।९।५] पांचौ जायगा देना। अवशेष एक भाग ऐसा स a [८ ख ९] ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभाग मति श्रुत अवधि मनःपर्यय आवरणकौं देना एक भाग केवलज्ञानावरणकौं देना तहां तिस द्रव्यका बहुभागनिविषैं संदृष्टि अपेक्षा आठका गुणकार अर क्रमतैं एक दोय तीनवार नवका भागहार अर एकका भागहार जानना। ऐसैं ही अन्यत्र यथासंभव जानना।

बहुरि ज्ञानावरणका देशघाती द्रव्य ऐसा स a ख [।१–; ८ ख] याकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागके च्यारि भागनिविषैं एक एक समान भाग ऐसा स a ख ८ [।१–; ८ ९ ख४] च्यारि जायगा देना। अवशेष एक भागका बहुभाग बहुभाग मति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुत अवधि ज्ञानावरणकौं देना। एक भाग मनःपर्यय ज्ञानावरणकौं देना। केवलज्ञानावरणका देश घाती द्रव्य है नाहीं।

बहुरि ऐसैं ही दर्शनावरणका सर्वघाती द्रव्य ऐसा स a/८ ख याकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं नवका भाग देइ एक एक समान भाग ऐसा स a ८/८ ६ ख ६ नव जायगा देना। अवशेष एक भागके बहुभाग बहुभाग स्त्यानगृद्धि आदिकौं देइ एक भागका भाग अंतविषैं केवल दर्शनावरणकौं देना। बहुरि ताका देशघाती द्रव्य ऐसा स a ख/८ ख ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं तीनका भाग देइ एक एक समान भाग ऐसा स a ख ८/८ ख ६ ३ तीन जायगा देना। अवशेषका बहुभाग बहुभाग चक्षु अचक्षु आवरणकौं एक भाग अवधि दर्शनावरणकौं देना। पांच निद्रा केवल दर्शनावरणका देशघाती द्रव्य है नाहीं। बहुरि अंतरायका द्रव्य ऐसा स a/८ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं पांचका भाग देइ एक एक समान भाग पांच जायगा देना। अवशेषका उलटा क्रमकरि बहुभाग बहुभाग वीर्यांतरायादिककौं एकभाग दानांतरायकौं देना।

बहुरि मोहनीयका सर्वघाती ऐसा स a/८ ख ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं सतरहका भाग देइ एक एक समान भाग ऐसा स a ८/८ ख ६ १७ सतरह जायगा देना। बहुरि अवशेषका बहुभाग बहुभाग अनंतानुबंधी लोभ माया क्रोध मान आदिककौं एक भाग अंत विषैं अप्रत्याख्यान मानकौं देना। बहुरि ताका देशघाती द्रव्य ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स a ख इहां गुणकारकेंविषैं एक हीनकौं न गिणि अनंतका अपवर्तन कीएं ऐसा स a याकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं आवलीका असंख्यातवां भागका दोयका भाग देइ एक एक भाग ऐसा स a ८ कषाय अर नोकषायकौं देना। अवशेष एकभाग कषायहीकौं देना। तहां कषाय द्रव्यविषै बहुभागके आबाधाका द्रव्य ऐसा स a ८ एक भागका ऐसा स a १ इनके अन्य भागहार समान देखि एक भागकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा स a २ इहां दोय गुणकारनिमैं एक ग्रहि आठ विषैं जोडें ऐसा स a । ९ इहां नवका अंकरूप आवलीका असंख्यातवां भागका अपवर्तन कीएं ऐसा स a बहुरि अवशेष एक गुणकार ऐसा स a १ ताके जोडनेकौं तिस राशिके असंख्यातवे भाग याकौं जानि ताके ऊपरि अधिककी ऐसी। संदृष्टि कीएं संज्वलनका देशघाती द्रव्य ऐसा स a हो है। ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं च्यारिका भाग देइ एक एक समान भाग ऐसा स a । ८ च्यारि जायगा देना। अवशेषका बहुभाग बहुभाग संज्वलन लोभ माया क्रोधकौं एकभाग मानकौं देना। बहुरि नोकषायनिका युगपत् पांचहीका बंध होइ तातैं नोकषाय द्रव्य ऐसा स a ८ इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा स a ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं पांचका भाग देइ एक एक समान भाग

३०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा स a ८ / ८।६।२।५ पांच जायगा देना। अवशेषका बहुभाग वेदादिककौं एक भाग जुगुप्साकौं देना। इहां मिथ्यात्व अर बारह कषायनिविषैं देशघाती बहुरि नोकषायनिविषैं सर्वघाती स्पर्धक है नाहीं।

बहुरि नामका तेईसका आदि बंधस्थान है तहां तेईसका स्थानकी विवक्षाकरि तहां तीन भेदरूप शरीर प्रकृतिकौं एक जानि इकईस विभाग करने सो नामका द्रव्य ऐसा स a / ८ ताकौं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागकौं इकईसका भागदेइ एक एक भाग ऐसा स a ८ / ८ ६ २ १— इकईस जायगा देना। अवशेषका बहुभाग बहुभाग निर्माण आदि उलटा क्रमस्वरूपकौं अर एक भाग गति प्रकृतिकौं देना। तिनकी रचना—

ज्ञानावरणीयकर्मरचना।

सर्वघाती द्रव्य

नाम	मतिज्ञानावरणीय	श्रुतज्ञानावरणीय	अवधिज्ञानावरणीय	मनःपर्ययज्ञानावरणीय	केवलज्ञानावरणीय
समभाग	स a ८ / ८ ख ६ ५	स a ८ / ८ ख ६ ५	स a ८ / ८ ख ९ ५	स a ८ / ८ ख ९ ५	स a ८ / ८ ख ९ ५
देयभाग	स a ८ / ८ ख ९ ९	स a ८ / ८ ख ६ ६ ९	स a ८ / ८ ख ६ ९ ९ ९	स a ८ / ८ ख ६ ६ ६ ९ ६	स a १ / ८ ख ६ ९ ९ ६ ६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देशघाती द्रव्य ।

नाम	मतिज्ञानावरणीय	श्रुतज्ञानावरणीय	अवधिज्ञानावरणीय	मनःपर्ययज्ञानावरणीय
समभाग	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ९ ४	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ९ ४	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ९ ४	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ९ ४
देयभाग	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ६ ६	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ९ ९ ६	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ६ ९ ९ ९	। १⌒ स a ख ८ ८ ख ६ ९ ९ ६ ६

दर्शनावरणीय कर्मरचना ।

सर्वघाती द्रव्य ।

स्त्यान गृद्धि	निद्रा निद्रा	प्रचला प्रचला	निद्रा	प्रचला	चक्षुदर्शनावरणीय	अचक्षुदर्शनावरणीय	अवधिदर्शनावरणीय	केवलदर्शनावरणीय
। स a ८ ८ ९ ख ९	। स a ८ ८ ६ ख ९	। स a ८ ८ ६ ख ६	। स a ८ ८ ६ ख ६	। स a ८ ८ ६ ख ६	। स a ८ ८ ६ ख ९	। स a ८ ८ ६ ख ६	। स a ८ ८ ६ ख ९	। स a ८ ८ ६ ख ९
। स a ८ ८ ख ६ ६	। स a ८ ८ ख ६ ६ ९	। स a ८ ८ ख ६ ९ ६ ९	। स a ८ ८ ख ९६९९६	। स a ८ ८ ख ६ ६ वार	। स a ८ ८ ख ९ ७	। स a ८ ८ ख ९ ८	। स a ८ ८ ख ९ ९ वार	। स a १ ८ ख ६ ६ वार

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशघाती द्रव्य ।			अंतराय कर्म रचना ।				
चक्षुदर्शनावरणीय	अचक्षुदर्शनावरणीय	अवधिदर्शनावरणीय	वीर्यांतराय	उपभोगांतराय	भोगांतराय	लाभांतराय	दानांतराय
। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ६ ९ ६	। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ६ ६ ९	। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ६ ९ ९	। स ə ८ ८ ५ ९	। स ə ८ ८ ५ ९	। स ə ८ ८ ५ ९	। स ə ८ ८ ५ ९	। स ə ८ ८ ५ ६
। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ६ ६	। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ९ ६ ९	। १ ‿ स ə ख ८ ८ ख ९ ६ ९	। स ə ८ ८ ९ ९	। स ə ८ ८ ९ ९ ६	। स ə ८ ८ ६ ९ ९ ९	। स ə ८ ८ ६ ६ ९ ६ ६	। स ə १ ८ ९ ९ ६ ९ ६

वेदनीय कर्म रचना ।	आयु कर्म रचना ।	गोत्र कर्म रचना ।	
नाम	साता वा असाता	च्यारिआयुमध्येवध्यमान एक आयु	नीच गोत्र वा उच्चगोत्र
समभाग	। स ə ८ ९ ८	। स ə ८ ९ ८	। स ə ८ ९ ८
देयभाग	। स ə ८ ९ ६	। स ə १ ९ ६ ९ ९ ६	। स ə ८ ६ ६ ९ ९ ९ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहनीयकर्मरचना ।

सर्वघाती द्रव्य ।

नाम	मिथ्यात्वमोहनीय	अनंतानुबंधी लोभ	अनंतानुबंधी माया	अनंतानुबंधी क्रोध	अनंतानुबंधी मान
समभाग	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७
देयभाग	। स a ८ ८ ख ९ ९	। स a ८ ८ ख ९ ९ ९	। स a ८ ८ ख ९ ९ ९ ९	। स a ८ ८ ख ९ ९ ९ ९ ९	। स a ८ ८ ख ९ ९ ९ ९ ९ ६
संज्वलन लोभ	संज्वलन माया	संज्वलन क्रोध	संज्वलन मान	प्रत्याख्यान लोभ	प्रत्याख्यान माया
। स a ८ ८ ख ६ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ६ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ६ १७	। स a ८ ८ ख ६ १७
। स a ८ ८ ख ९ ७	। स a ८ ८ ख ९ ८	। स a ८ ८ ख ६ ६ वार	। स a ८ ८ ख ९ १०	। स a ८ ८ ख ६ ११	। स a ८ ८ ख ६ १२
प्रत्याख्यान क्रोध	प्रत्याख्यान मान	अप्रत्याख्यान लोभ	अप्रत्याख्यान माया	अप्रत्याख्यान क्रोध	अप्रत्याख्यान मान
। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a ८ ८ ख ६ १७
। स a ८ ८ ख ९ १३	। स a ८ ८ ख ६ १४	। स a ८ ८ ख ९ १५	। स a ८ ८ ख ९ १६	। स a ८ ८ ख ९ १७	। स a १ ८ ख ९ १७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशघाती द्रव्य ।

नाम	संज्वलन लोभ	संज्वलन माया	संज्वलन क्रोध	संज्वलन मान
समभाग	। स a ८ ८९२४	। स a ८ ८९२४	। स a ८ ८९२४	। स a ८ ८९२४
देयभाग	। स a ८ ८२९९	। स a ८ ८२९९९	। स a ८ ८२९९९९	। स a ८ ८२९९९९९
पुरुष स्त्री नपुंसकवेद	रति वा अरति	हास्य वा शोक	भय	जुगुप्सा
। स a ८ ८२९५	। स a ८ ८२९५	। स a ८ ८२९५	। स a ८ ८२९५	। स a ८ ८२९५
। स a ८ २८९९	। स a ८ ८२९९९	। स a ८ ८२९९९९	। स a ८ ८२९९९९९	। स a १ ८२९९९९९

नामकर्मरचना ।

नाम	तिर्यंचगतिनाम	एकेंद्रीनाम	औदारकतैजस कार्मणशरीर	हुंडसंस्थान	वर्ण	गंध	रस
समभाग	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१	। स a ८ ८९२१
देयभाग	। स a ८ ८९९२०	। स a ८ ८९९२०	। स a ८ ८९९१९	। स a ८ ८९९१८	। स a ८ ८९९१७	। स a ८ ८९९१६	। स a ८ ८९९१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	स्पर्श	तिर्यंचानुपूर्वी	अगुरुलघु	उपघात	स्थावर	सूक्ष्म	अपर्याप्त
समभाग	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१
देयभाग	१ स a ८ ८ ९ ९ १४	१ स a ८ ८ ९ ९ १३	१ स a ८ ८ ९ ९ १२	१ स a ८ ८ ९ ९ ११	१ स a ८ ८ ९ ९ १०	१ स a ८ ८ ९ ९ ९ वार	१ स a ८ ८ ९ ९ ८
नाम	साधारण	अस्थिर	अशुभ	दुर्भग	अनादेय	अयश	निर्माण
समभाग	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१	१ स a ८ ८ ९ २१
देयभाग	१ स a ८ ८ ९ ९ ७	१ स a ८ ८ ९ ९ ६	१ स a ८ ८ ९ ९ ५	१ स a ८ ८ ९ ९ ४	१ स a ८ ८ ९ ९ ३	१ स a ८ ८ ९ ९ २	१ स a ८ ८ ९ ९

तहां समान भाग तौ जैसैं लिखे हैं तैसैं जानने। अर देय भागनिविषैं जेतीबार बहुभाग ग्रह्या होइ तेतीबार एकतैं लगाय एक एक अधिक क्रमलीएं प्रतिभागका भाग देइ बहुभागनिविषैं संदृष्टिकरि आठका एकभाग विषैं एकका गुणकार जानना। तहां प्रचलादिकका देयभागविषैं नवका अंक आगैं छह सात आदि नव पर्यंत अंकनिकरि वा अनंतानुबंधी मानादिकका देयभागविषैं छह सात आदि सतरह पर्यंत अंकनिकरि अर तिर्यंच गति आदिका देय भागविषैं बीस बीस उगणीस आदि एक पर्यंत अंकनिकरि जेतेका अंक होइ तेतीबार तहां प्रतिभागका भाग जानना। बहुरि वेदनीय आयु गोत्र इनका वर्तमान कालविषैं एक एक प्रकृतिहीका बंध है तातैं इनिका मूलप्रकृतिका सर्वद्रव्य उत्तरप्रकृतिविषैं देना इनिविषैं विभाग है नाहीं। ऐसैं बंधविषैं समय प्रबद्धका विभाग कह्या। सो जेती प्रकृतिनिका जहां बंध होइ तहां तितनी प्रकृतिनिका विभाग यथासंभव करना। बहु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रि युगपत् बंधरूप नोकषायनिका निरंतर बंधकाल विषैं पुरुषवेदका ऐसा २ ७ २ यातैं संख्यातकी संदृष्टि दोय गुणां स्त्रीवेदका ऐसा २ ७ ४ यातैं संख्यातकी संदृष्टि च्यारिगुणा हास्य वा रतिका ऐसा २ ७ । १६ यातैं संख्यातकी संदृष्टि दोगुणा अरति वा शोकका ऐसा २ ७ । ३२ बहुरि यातैं विशेष अधिक नपुंसक वेदका ऐसा २ ७ । ४२ इहां तीनों वेदनिका मिलाया हूवा काल ऐसा २ ७ । ४८ हास्य युग्म अरति युग्मका मिलाया हूवा ऐसा २ ७ । ४८ इहां मिलाया हूवा काल प्रमाण राशि कीएं बहुरि नोकषायका द्रव्य ऐसा स a / ८।२ था ताका पांच भाग करनेकौं दोयके भागहारकौं पांचकरि गुणें द्रव्य ऐसा स a / ८।१० ताकौं फलराशि कीएं बहुरि अपना अपना काल इच्छा राशि कीएं लब्धमात्र अपना अपना द्रव्य संचय हूवा हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
२ ७ृ । ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ २	। स a २ पुरुषद्रव्य ८ । १० । ४८
२ ७ृ ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ । ४	। स a ४ स्त्रीद्रव्य ८ । १० । ४८
२ ७ृ । ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ । ४२	। स a ४२ नपुंसक ८ । १० । ४८
२ ७ृ । ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ । १६	। स a १६ रतिद्रव्य ८ । १० । ४८
२ ७ृ । ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ । ३२	। स a ३२ अरतिद्रव्य ८ । १० । ४८
२ ७ृ ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ । १६	। स a १६ हास्यद्रव्य ८ १० ४८
२ ७ृ ४८	। स a ८ । १०	२ ७ृ ३२	। स a ३२ शोकद्रव्य ८ । १० । ४८

बहुरि योगनिकी रचनाविषैं एकेंद्रिय सूक्ष्म पर्याप्त आदि चौदह जीव समासनिविषैं नीचैं पूर्वभवका शरीर छिड्या ताके ऊपरि उपजतें पहले समय एक समयमात्र उपपाद योग हो है। सो जघन्य तौ विग्रह गतिवालेकैं हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। उत्कृष्ट ऋजुगतिवालेकैं हो है। ऋजुगतिविषै सूधा गमन हो है ताकी संदृष्टि ऐसी ¡ सो लिख्या ऊपरि ए-
कांतानुवृद्धि जघन्य तौ पहले समय हो है। उत्कृष्ट पर्याप्तकैं तो एक समय घाटि शरीरपर्याप्त काल ऐसा १—/२ भएं हो है। अपर्याप्तकैं अपनी स्थिति सांसके अठारहैं भागमात्र ऐसी १/१८ ताका दोय तीसरा भाग ऐसा १/१८ २/३ भएं हो है। मध्य मध्यविषैं हो है ऊपरि परिणाम योग्य स्थान पर्याप्तकैं तौ एकेंद्रियकैं शरीर इंद्रिय उच्छ्वास विकलत्रय चतुष्ककैं शरीर इंद्रिय उच्छ्वास भाषा संज्ञीकैं शरीर इंद्रिय उच्छ्वास भाषा मन पर्याप्तिकाल तहां शरीर पर्याप्तिकाल अंतर्मुहूर्तमात्र २ ७ अर ताके ऊपरि अन्य पर्याप्तिकाल अपनी स्थिति पर्यंत सर्वत्र उत्कृष्ट मध्य जघन्य हो है उ ००० ज। अर अपर्याप्त अपनी स्थितिका एक तीसरा भाग ऐसा १/१८। १/३ ताका प्रथम समयतैं लगाय उत्कृष्ट मध्य जघन्य रूप अपनी स्थिति पर्यंत हो है इनकी रचना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां नामका आदि अक्षरकी वा मध्यविषैं विंदीनिकी इत्यादि संदृष्टि जाननी।

बहुरि एक योग स्थानविषैं नाना गुणहानि दोयवार असंख्यात भाजित पल्यमात्र एक गुणहानिविषैं स्पर्धक दोयवार असंख्यात भाजित श्रेणीमात्र एक स्पर्धकविषैं वर्गणा असंख्यात भाजित श्रेणीमात्र एक वर्गणाविषैं वर्ग असंख्यात जगत्प्रतरमात्र एक वर्गविषैं अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोकमात्र हैं। तिनकी अर्थ संदृष्टि वा अंक संदृष्टि ऐसी—

नाम	एकवर्गणाविषै अविभाग प्रतिच्छेद	एकवर्गणाविषैं वर्ग	एकस्पर्धकविषैं वर्गणा	एकगुणहानिविषैं स्पर्धक	एकस्थानविषैं गुणहानि	स्थान
अर्थसंदृष्टि	≡ a	= a	$\overline{a}$	$\overline{aa}$	$\overset{प}{aa}$	१
अंकसंदृष्टि	८	२५६	४	९	५	१

बहुरि एक स्थानविषैं स्पर्धक वा वर्गणानिके प्रमाण ल्यावनेकौं त्रैराशिक ऐसा—

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्ध
गुणहानि १	स्पर्द्धक $\overline{aa}$	गुणहानि $\overset{प}{aa}$	एकस्थान स्पर्द्धक $\overline{aa}\ \overset{प}{aa}$
स्पर्द्धक १	वर्गणा $\overline{a}$	स्पर्द्धक $\overline{aa}\ \overset{प}{aa}$	एकस्थान वर्गणा $\overline{aa}\ \overset{प}{aa}\ \overline{a}$

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि एक स्थानविषैं वर्ग जीवप्रदेशमात्र ऐसे ≡ हैं। अर अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोकमात्र ही आलापकरि जानने ≡ a। बहुरि इहां द्रव्यादिकका प्रमाण ऐसा–

नाम	द्रव्य	स्थिति	गुणहानि	नाना गुणहानि	दो गुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त
अंक संदृष्टि	३१००	४०	८	५	१६	१२
अर्थ संदृष्टि	≡	— a	— a a	प a a	— २ a a	प a

इहां द्रव्य तौ जीव प्रदेश प्रमाण लोकमात्र अर स्थिति एक स्थान संबंधी वर्गणाका प्रमाण श्रेणीका असंख्यातवां भागमात्र अर गुणहानि आयाम एक गुणहानिविषैं वर्गणानिका प्रमाण मात्र अर नानागुणहानि एक स्थान विषैं गुणहानिका प्रमाण मात्र अर दोगुण हानि गुण हानि आयामतैं दूणा अर अन्योन्याभ्यस्त राशि पल्यका असंख्यातवां भागमात्र जानना।

बहुरि लोकमात्र सर्व जीवके प्रदेश ऐसे ≡ इनकौं ड्योढ गुणहानि ऐसा — a a ३/२ ताका भाग दीएं प्रथम वर्गणा ऐसा ≡ / — a a ३/२ इहां हारका हारकौं भाज्यका गुणकार कीएं ऐसा ≡ a a। २ / — ३ जगच्छ्रेणिकरि लोकका अपवर्तन कीएं ऐसा भया = a a २ बहुरि ऊपरि एक एक विशेष घाटि क्रमकरि प्रथम गुणहानि हो है। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा अनुक्रम जानना। सो अंक संदृष्टि करि टीकाविषैं व्यक्त कथन कीया है सो जानना। बहुरि इस जघन्य स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी वि १६ इहां वर्गणा वर्गणा प्रति जितना जितना घटै ताका नाम विशेष है। ताकी संदृष्टि ऐसी। वि। याकौं दो गुणहानिकी संदृष्टि ऐसी १६ ताकरि गुणैं प्रथम वर्गणाके प्रदेश हो हैं ऐसा जानना। बहुरि याकरि जघन्य वर्गकी संदृष्टि ऐसी। व। ताकौं गुणैं जघन्य वर्गणाकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी। व वि १६। याकौं एक स्पर्धकविषैं जेती वर्गणा पाइये ताकी संदृष्टि ऐसी ४ ताकरि गुणें स्थूलपनैं जघन्य स्पर्धक ऐसा व वि। १६ ४ भया बहुरि इसहींकौं आदि उत्तरकरि स्पर्धक शलाकाकौं गच्छकरि संकलन कीएं ऋ-

१–
ण सहित प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा व वि १६ ४ ९ । ९ हो है। इहां संकलन सूत्र अपेक्षा आगै एक घाटि
२ । १
गच्छकौं दोयका भाग अर गच्छकौं एकका भाग देइ तिनका गुणकार कीया है। बहुरि इहां स्पर्धक स्पर्धक प्रति ऋण कितना वा गुणहानि गुणहानि प्रति द्रव्य वा ऋण कितना वा सर्व जघन्य योग स्थानका द्रव्य कितना? ताकी संदृष्टि रूप विशेष कथन संस्कृत टीकातैं जानना। बहुरि असंख्यात लोकमात्र ≡ a अविभाग प्रतिच्छेदनिका समूह वर्ग ताकी संदृष्टि ऐसी। व। ऐसैं वर्ग असंख्यात जगत्प्रतरमात्र लिखने जातैं प्रथम वर्गणाविषैं वर्ग ऐसे ≡ a a । २ हैं
३

बहुरि ऊपरि एक अविभाग प्रतिच्छेदकरि अधिक वर्ग लिखने ते वर्ग प्रथम वर्गणाके वर्गनितैं एक विशेष घाटि लिखने ऐसैं अविभाग अधिक विशेष घाटि क्रमकरि एक स्पर्धकविषैं वर्गणा शलाका ऐसी ४ तींहि प्रमाण लिखने। बहुरि जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं दूणे द्वितीय स्पर्धककी आदि वर्गणाके वर्गनिके अविभाग प्रतिच्छेद जानने। ते प्रथम स्पर्धककी अंत वर्गणातैं एक विशेष करि हीन हैं। इहां भी पूर्ववत् करना तिनकी रचना

० ४
० १––
व २
व २ व २
० ४
०
२ २ २ २ २
व व व व व
१– १– १– १– १– १–
व व व व व व
व व व व व व व

३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसैं जेथवां स्पर्धक होइ तींहि प्रमाणकरि गुणित तौ आदिविषैं अर ऊपरि एक एक अधिक अविभाग संयुक्त वर्गनिका समूह रूप वर्गणा जगच्छ्रेणिका असख्यातवां भागमात्र भएं एक एक स्पर्धक हो है। अर जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र स्पर्धक भएं प्रथम गुणहानि प्रति आदि वर्गणाविषैं वर्गनिका प्रमाण आधा आधा है। ऊपरि विशेष हीन क्रम लीएं हैं सो विशेष भी आधा आधा है। ऐसैं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र गुणहानि भएं जघन्य योग स्थान हो है। तहां वर्गनिकी संदृष्टि ऐसी ३ व व ९ ०० व व व व ना इहां नीचैं जघन्य वर्ग लिखे अर ऊपरि जघन्य वर्गनिके अविभाग प्रतिच्छेदानितैं स्पर्धक शलाका अर नाना गुणहानि गुणित अविभाग प्रतिच्छेद अंत गुणहानिका अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाके वर्गनिविषैं हो है तातैं एक घाटि वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि तीनका अंक ताकरि अधिक अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाके वर्गनिविषैं अविभाग प्रतिच्छेद हैं। तिनका समूह रूप उत्कृष्ट वर्ग लिख्या है। मध्यविषैं बिंदीनिकरि मध्यभेद जानने। ऐसैं शक्तिप्रधानताकरि कथन जानना। बहुरि प्रदेश प्रधानताकरि प्रथम स्पर्धक वर्गणा ऐसी $\overline{=}$ ० ० २ ३ याकौं दोगुणहानि ऐसा $\overline{०}$ ० २ ताका भाग दीएं ऐसा $\frac{=}{००}$ ० ० २ २ ३ इहां जगच्छ्रेणि वा दोयका अपवर्तन कीएं दोयवार संख्यात हारका हार था ताकौं भाज्यका गुणकार कीएं विशेष ऐसा – ० ० ० ० २ हो है ताकी संदृष्टि ऐसी वि बहुरि आदि वर्गणादिक पूर्वैं कहे हैं ते जानने। अर प्रमाण ल्यावनेकौं संस्कृतटीकाविषैं संदृष्टि लीएं विशेष कथन कीया है सो तहांतैं जानना। बहुरि शक्तिप्रधानताकरि वा प्रदेशप्रधानताकरि प्रमाण ल्यावनेकौं कथन संस्कृतटीकाविषैं कह्या है तहां संदृष्टिनिका स्वरूप इहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कह्या है तैसैं ही यथा संभव जानना इहां विस्तारके भयतैं वा नीकैं समझनेमें न आया तातैं विशेष नाहीं लिख्या है।

बहुरि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य स्पर्धक ऐसा— प्रमाण सो इतने अविभाग प्रतिच्छेद
व वि १६ ४ २
a

बंधे एक स्थान होइ फल इतने इच्छा १— तौ जघन्य स्थानके अविभाग प्रतिच्छेद बंधैं के ते
१ व । वि । १६ । ४ । ६ । ना
अ

१—
स्थान होंइ ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धराशि ऐसा— व । ९ । ना । वि । १६ । ४ इहां समान भाज्य भागहार-
व । वि । अ । १६ । ४ २
a

१— —
निका अपवर्तन कीएं ऐसा ना ९ भया सो यहु जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र ऐसा a̅ प्रमाण जानना। सो
अ २
a

द्वितीय स्थानतैं लगाय इतने इतने वृद्धि स्थान भएं एक एक अपूर्व स्पर्धक हो है। ऐसैं एक गुणहानिविषैं जेते स्पर्धक पाइए तीहिंमात्र स्पर्धक शलाका ऐसी a̅ सो इतने अपूर्व स्पर्धक बंधें जघन्य योग स्थान दूणा हो है। ऐसैं दूणा दूणा होइ उत्कृष्ट योग स्थान हो है ताकी रचना——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

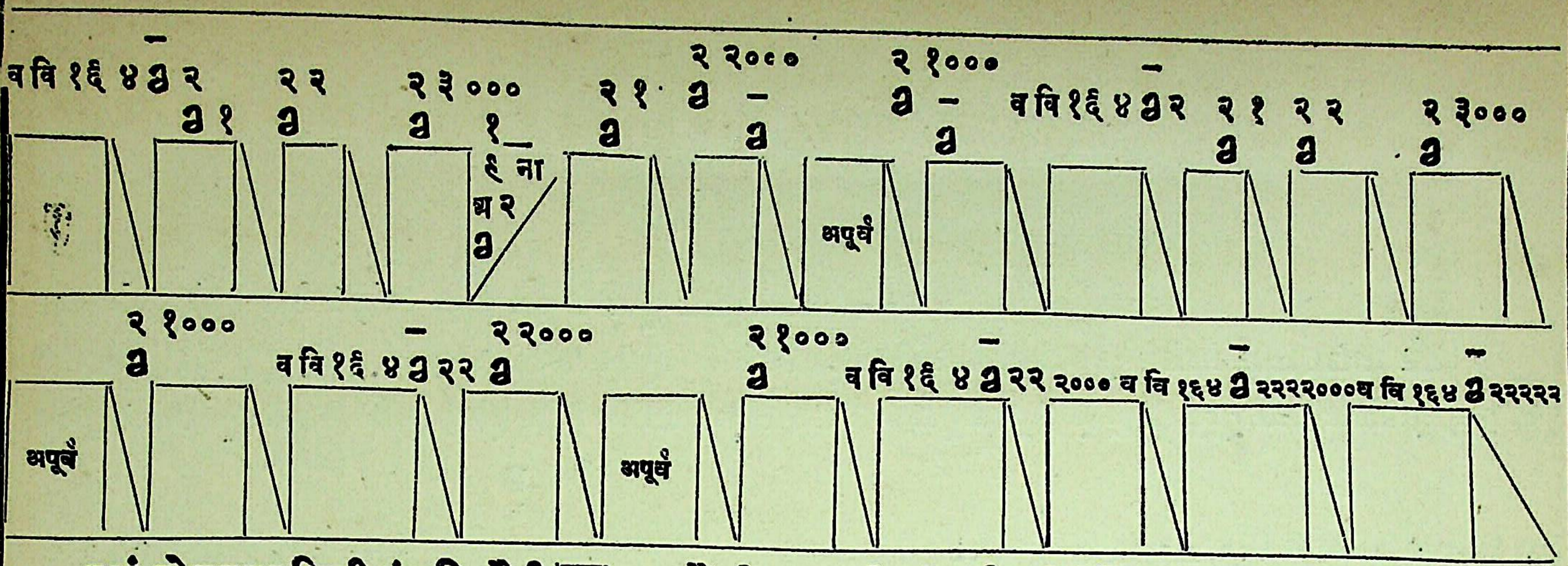

इहां योगस्थाननिकी संदृष्टि ऐसी 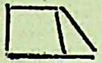 जातैं योगस्थाननिकी वर्गणानिविषैं समान अविभाग प्रतिच्छेद लीएं वर्ग क्रमतैं हीन प्रमाण रूप पाइए है। बहुरि सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि ऐसी २/a सो इतने एक दोय तीन आदि बार जघन्य स्पर्धक बधे द्वितीयादि स्थान होंइ। बहुरि ऐसैं इतने ९ ना / अ २ / a स्थान भएं अपूर्व स्पर्धक होइ। बहुरि आगैं तैसैं ही इतने –/a स्थान भएं अपूर्व स्पर्धक होइ। ऐसैं इतने –/a अपूर्व स्पर्धक भएं जघन्य स्थान जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणित जघन्य स्पर्धक मात्र ऐसा व वि १६ ४–/a सो दूणा होइ। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार भएं तातैं दूणा होइ ऐसैं ही दूणा दूणा होइ तिनकी संदृष्टि जाननी। बहुरि प्रमाण राशि सूच्यंगुलका अ- २३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संख्यातवां भागमात्र जघन्य स्पर्धक मात्र फलराशि स्थान एक इच्छाराशी जघन्य स्थानतैं लगाय दूणा दूणा भया तींहि मात्र जहां जहां दूणा हो है तहां तहां स्थाननिका प्रमाण ऐसा आवै है—

प्रमाण	फल	इच्छा	लब्धस्थान भेद
व त्रि १६ । ४ २ a	१	— व वि १६ ४ a	— । a २ । १ a
व वि १६ । ४ २ a	१	— व वि १६ ४ a २	— । a २ । २ a
व वि १६ ४ २ a	१	— व वि १६ ४ a २ २	— । a २ २ २ a
व वि १६ ४ २ a	१	— व वि १६ ४ a २ २ २	— । a २ २ २ २ a
व वि १६ ४ २ a	१	— व वि १६ ४ a २ २ २ २	— । a २ २ २ २ २ a

तहां अंक संदृष्टि करि अन्त धन ऐसा
— ।
a २ २ २ २ २
२
a
याकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा
— ।
a २ २ २ २ २ २
a

इहां दूवानिकौं परस्पर गुणें ऐसा
—
a ३२
२
a
यामैं आदि ऐसा
— १
a २
a
घटाएं ऐसा
— । ३१
a २
a
सर्व योग स्थान विकल्प

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो हैं। याकौं एक घाटि गुणकारका भाग दीएं ऐसा ३ २ ३१ याकौं आदि ऐसा ३ २ १ ताका भाग दीएं ऐसा ३१ एक जोडें ऐसा ३२ याकौं जेतीबार गुणकार दोयका भाग इच्छाराशि अर दूणा दूणा तीहिं प्रमाण नाना गुणहानि हो है। ऐसै ही पूर्वोक्तप्रकार प्रमाण फलराशि करतैं अंतविषैं दोयकरि भाजित संभवे। पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग गुणित जघन्य स्थानमात्र उत्कृष्ट योग स्थान ऐसा व वि- १६ ४ ३ छे याकौं इच्छाराशि कीएं लब्धमात्र अंतधन ऐसा ३ २ छे याकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा ३ २ ३ २। इहां दोयका अपवर्तन कीएं ऐसा ३ २ छे इहां आदि ३ २ १ ऐसा घटावनेकौं आगिला गुणकार ऐसा छे तामैं एक घटाएं ऐसा — छे याकौं एक घाटि उत्तर एकका भाग दीएं भी ऐसा ही रह्या सो इतने सर्व योगस्थाननिके भेद जानने। इस प्रमाणकौं एक घाटि गुणकार एक ताकरि गुणें ऐसा ३ २ ३ याकौं प्रभव जो आदि ऐसा ३ २ ताका भाग दीएं ऐसा ३ छे १ इहां भाज्य भाग हारानिका समानपना देखि अपवर्तन कीएं ऐसा छे भया यामैं एक

३ २ १

जोडें ऐसा छे याकौं जेतीबार गुणकार दोयका भाग संभवै तीहि प्रमाण नाना गुणहानि शलाका असंख्यात घाटि पल्यकी वर्ग शलाकामात्र ऐसी व — ४ हो है। यहां असंख्यातकी संदृष्टि ग्यारहिका अंक जानना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तींहिविषैं ऊर्ध्वरूप चौरासी स्थाननिके चौरासी कोठेकरि तिनके पार्श्वनिविषैं रचना करनी । तहां सूक्ष्म-एकेंद्रिय बादर एकेंद्रिय वेंद्रिय तेंद्रिय चौंद्रिय असंज्ञी संज्ञीकी संदृष्टि क्रमतैं ऐसी—

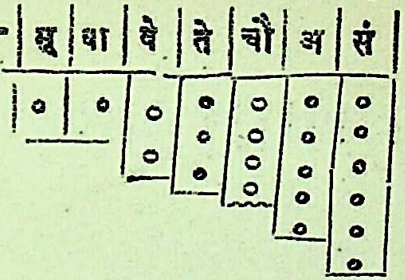

बहुरि जघन्य मध्य उत्कृष्टकी ऐसी ज । म । उ । जाननी । बहुरि रचनाका दक्षिण भागविषैं लब्धि अपर्याप्तकके उत्तरभागविषैं निर्वृत्ति अपर्याप्त वा पर्याप्तकके उपपाद वा एकांतानुवृद्धि परिणाम योगनिकी रचना जाननी । बहुरि चौरासी स्थाननिविषैं जेथवां स्थान होइ तितनेकी तहां अंक संदृष्टि जानना । ऐसैं ऐसी ० ज १ संदृष्टिकरि सूक्ष्म एकेंद्रीका जघन्य उपपाद योग रूप प्रथम स्थान जानना । ऐसी संदृष्टिकरि वादर एकेंद्रीका जघन्य उपपाद रूप चौथा स्थान जानना । ऐसी ० ० ० ० ० उ ८४ संदृष्टिकरि संज्ञी पर्याप्तका उत्कृष्ट परिणाम योग रूप चौरासीवां स्थान जानना ।

बहुरि ऊर्ध्व रचनाके बीचि श्रेणीका असंख्यातवां भागमात्र स्थाननिका कोऊ स्वामी नाहीं ऐसैं अंतरालरूप स्थान तिनकी ऐसी — ३ म संदृष्टि जाननी । बहुरि उपपाद एकांतानुवृद्धि योगनिकी स्थिति तौ एक समय मात्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही है। अर परिणाम योगकी स्थिति दोय समय आदि आठ समय पर्यंत है सो परिणाम योगके कालकी काल
यव मध्य रचना हो है तहां पर्याप्त वेंद्रियका जघन्य स्थान ऐसा व वि १६ ४ — तातैं पल्यके अर्धच्छेदनिका अ-
a
संख्यातवां भाग गुणा संज्ञीका उत्कृष्ट योग स्थान पूर्वोक्त प्रकार ऐसा व वि १६ ४ — छे यामैं आदि घटाएं ऐसा
१ ‿ a a १ ‿
व वि १६ ४ — छे स्थान स्थान प्रति वृद्धि प्रमाण ऐसा व वि १६ ४ २ ताका भाग दीएं ऐसा — २ छे यामैं एक
a a १ – १ ‿ a a a a
जोडैं सर्व स्थान प्रमाण ऐसा — २ छे याकौं पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प ताका भाग देइ बहुभाग ऐसा
१ —— a a a a १ ——
१ ‿ १ ‿ १ ‿ १ ‿
— २ छे प इतने दोय समय निरंतर प्रवर्तनेवाले स्थान हैं। अवशेषका बहुभाग ऐसा — २ छे प इतने तीन
a a a a a a a a
प प प
a १ —— a a
१ ‿ १ ‿
समय निरंतर प्रवर्तनेवाले योग स्थान हैं। आधे ऐसे — छे प ऊपरिले च्यारि समय निरंतर प्रवर्तनेवाले
a २ a a
a प प प २
१ —— a a a
१ ‿ १ ‿
योगस्थान हैं। बहुरि अवशेषका बहुभागके आधे ऐसे — छे प नीचले पांच समय निरंतर प्रवर्तनेवाले योगस्था-
a २ a a
a प प प प २
a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न हैं। आधे ऐसे — छे प ऊपरले पांच समय निरंतर प्रवर्तनेवाले योगस्थान हैं। बहुरि अवशेषका बहुभागके आधे ऐसे — छे प | — छे प | नीचले अर ऊपरिले छह समय निरंतर प्रवर्तनेवाले योगस्थान हैं। बहुरि अवशेषका बहुभागके आधे ऐसे — छे प | — छे प नीचले वा ऊपरिले सात समय निरंतर प्रवर्तनेवाले योगस्थान हैं। अवशेष एक भाग ऐसा — छे इतने निरंतर आठ समय प्रवर्तनेवाले योगस्थान हैं। बहुरि इहां पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि बत्तीसका अंक कीएं पूर्वोक्त प्रकार आदिविषैं अन्त घटाइ वृद्धिका भाग दीएं एक जोडें योगस्थाननिके भेद ऐसे — ३१ इनिकी पूर्वोक्त रचना कीएं अर बीचमैं आठ समयवालोंकैं ऊपरि वा नीचैं सात समय आदि निरंतर प्रवर्तनेवाले योगस्थाननिका प्रमाण लिखैं यव नामा अन्न ताके आकार कालयवमध्य रचना ऐसी हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां जेतीवार बहुभागका ग्रहण हूवा होइ तेतीवार पल्यका असंख्यातवां भागका भाग जानना। अर बहु-भागविषैं एकघाटि प्रतिभागका एकभागविषैं एकका गुणकार जानना। बहुरि दोय तीन आदि समयनिकी संदृष्टि दोय तीन आदिका अंक जानना बहुरि जीव यव मध्य रचनाविषैं अंक संदृष्टि अपेक्षा तौ कथन टीकाविषैं कीया है सो जानना। अर्थसंदृष्टि अपेक्षा इहां करिए है—

इहां संख्यातकरि भाजित प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं तत्प्रमाण त्रसराशि ऐसा $\frac{=4}{5}$ सो तौ द्रव्य जानना। बहुरि जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य स्पर्धक रूप जघन्य उपपाद स्थानतैं चौरासी स्थाननिकी अपेक्षा पिचहत्तरिवार पल्यका असंख्यातवां भागकरि गुणें बेंद्रियका जघन्य परिणाम योग स्थान ऐसा $\frac{\overline{a}\ प\ ७५}{a}$ याकौं अपवर्तन कीएं जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र ही रह्या सो ऐसा $\overline{a}$ यामैं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जोडैं अनंतर स्थान ऐसा $\frac{\overset{२}{a}}{\overline{a}}$ ऐसैं ही बधतैं पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भागकरि जघन्यकौं गुणें संज्ञी पर्याप्तका उत्कृष्ट परिणाम योग स्थान ऐसा व वि १६ ४ $\frac{\overline{a}}{a}$ छे इहां पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि बत्तीसका अंककी जघन्य स्पर्धकका सर्वत्र सद्भाव देखि न लिखे अंत स्थान ऐसा $\overline{a}$ ३२ यामैं आदि ऐसा $\overline{a}$ १ घटाएं ऐसा $\overline{a}$ ३१ याकौं वृद्धि प्रमाण ऐसा $\frac{२}{a}$ ताका भाग दीएं ऐसा $\overline{a}\ \frac{३१}{\frac{२}{a}}$ यामैं एक जोडैं त्रस जीवनिका समस्त परिणाम योगस्थान ऐसा $\frac{१-}{-a}\ \frac{३१}{\frac{२}{a}}$ हो है सो इहां स्थिति जा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ननी। बहुरि पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग ऐसा छे तिाकौं असंख्यातका भाग देइ एक भाग ऐसा छे १ जुदा राखि अवशेष बहुभाग ऐसा छे ३ ताकौं दोयका भाग देइ नीचली नाना गुणहानि शलाकाका प्रमाण ऐसा छे ३ हो है। बहुरि आधा ऐसा छे ३ यामैं एक भाग जुदा राख्या था सो जोडना सो याकैं अर वाकैं अन्यहार समान देखि दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा छे २ भया सो इसकैं अर मूलराशि ऐसा। छे। समान देखि आगिला गुणकार ऊपरि एक घाटिकी संदृष्टि थी तहां एक अधिककी संदृष्टि कीएं ऊपरली नाना गुणहानि शलाकाका प्रमाण ऐसा छे ३ हो है। इनि दोऊनिकौं मिलाएं नाना गुणहानि शलाका ऐसी छे याकौं प्रमाण राशि कीएं पूर्वोक्त स्थितिकौं फलराशि कीएं एक गुणहानिकौं इच्छाशि कीएं प्र छे - ३१ फ १ इ लब्धराशि ऐसा ३ ३१ २ छे गुणहानि आयाम हो है ताकी लघु संदृष्टि ऐसी। गु। बहुरि अन्योन्याभ्यस्तराशि पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा प तहां तीनवार अर दोयवार असंख्यातकरि भाजित पल्यमात्र नीचला अर ऊपरिला अन्योन्याभ्यस्त राशि ऐसा प ३ ३ प ३ ३ वार जानना। इनकी रचना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य	स्थिति	गुणहानि	नाना गुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त
= ४ ५	१— — ३१ a २ a	१— — ३१ a २ छे a a	छे a	प a

ऊपरकी	नीचेकी	ऊपरकी	नीचेकी
१— छे a a a	१— छे a a a	प a a	प a २ वार

बहुरि इहां द्रव्यकौं किंचित् ऊन तीन गुणा गुणहानि ऐसा गु ३ — ताका भाग दीएं यवाकार रचनाका मध्य ऐसा = याकौं दो गुणहानि ऐसा गु २ ताका भाग दीएं चय ऐसा = याकौं दो गु-

४ गु ३— / ५ ... ४ गु ३—गु २ / ५

णहानिकरि गुणें यवमध्यविषैं निषेक ऐसा = गु २ यामैं एक एक चय घटावतैं एक घाटि गुणहानिमात्र चय

४ ३ — गु २ / ५

१ —
ऐसा = गु २ घटावना सो अन्य सर्व समान देखि भाज्यका गुणकार दो गुणहानिविषैं एक घाटि गुणहानि

४ गु ३ — गु २ / ५

१—
घटाएं एक अधिक गुणहानि अवशेष रह्या सो लिखें अंत निषेक ऐसा = गु यामैं एक चय घटावनेकौं

४ / ५ गु ३ — गु २

गुणकारके ऊपरि एक अधिक था सो दूरि कीएं द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा = गु इहां संदृष्टिके २४५

४ / ५ गु ३ — गु २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थि भाज्य वा भागहारकौं दो गुणा कीएं प्रगट यव मध्यतैं आधा प्रमाण ऐसा हो है = गु / ४ गु ३ – गु २ २ / ५ ऊपरि इहां पूर्व चयतैं आधा प्रमाण लीएं चय ऐसा = ४ गु ३ – गु २ २ / ५ सो पूर्वोक्त प्रकार एक चय घटतैं एक घाटि गुणहानिमात्र चय घटतैं अंत निषेक ऐसा = १— गु / ४ गु ३ – गु २ २ / ५ यामैं एक चय घटाएं तीसरी गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा = गु / ४ गु ३ – गु २ २ / ५ इहां भी भाज्य भागहारकौं दोयकरि गुणें द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेकतैं आधा प्रमाण ऐसा = गु २ / ४ गु ३ – गु २ २ २ / ५ हो है इहां पूर्व चयतैं आधा प्रमाण लीएं ऐसा = ४ गु ३ – गु २ २ २ / ५ सो एक चय घटतैं एक घाटि गुणहानिमात्र चय घटैं अंत निषेक ऐसा = १— गु / ४ गु ३ – गु २ २ २ / ५ सो यामैं एक चयघटैं चतुर्थ गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा = गु / ४ गु ३ – गु २ २ २ / ५ इहां भाज्यका भागहारकौं दोयकरि गुणें तृतीय गुणहानितैं आधा प्रमाण ऐसा = गु २ / ४ गु ३ – गु २ २ २ / ५ प्रगट हो है। इहां पूर्व चयतैं आधा प्रमाण लीएं ऐसा = ४ गु ३ – गु २ २ २ २ / ५ सो एक एक चय घटतैं एक घाटि गुणहानिमात्र चय घटतैं अंत निषेक ऐसा = १— गु / ४ गु ३ – गु २ २ २ २ / ५ ऐसैं ही पंचमादि गुणहानिविषैं आधा आधा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होइ अंत गुणहानिविषैं एक घाटि ऊपरिकी नाना गुणहानि प्रमाण दूवानिका भागहार हो है। तिनकौं परस्पर गुणें ऊपरला अन्योन्याभ्यस्त राशितैं आधा ऐसा $\frac{प}{a\,a\,२}$ ताका भागहार हो है। अर अंत निषेकविषैं एक अधिक गुणहानिका गुणकार हो है सो ऐसैं अंत गुणहानिका अंत निषेककी संदृष्टि ऐसी $= \frac{४}{५}\; \frac{गु \overline{१}}{गु ३ - गु २ प / a\,a\,२}$ ऐसैं ऊपरकी गुणहानिविषैं रचना जाननी। बहुरि ऊपरकी गुणहानिनिके निषेकानितैं अपना अपना एक एक चय घाटि नीचेकी गुणहानिनिके निषेक हैं सो ऐसी = संदृष्टिक आगें जो गुणकार तामें एक घटाएं एक चयका घटावना हो है। सो प्रथम निषेकविषैं ऐसी गु २ संदृष्टि ऊपरि एक घटाएं अर अंत निषेकविषैं ऐसी $गु \overline{१}$ संदृष्टि ऊपरि एक अधिक था सो दूरि कीएं नीचेकी गुणहानिनिविषैं संदृष्टि हो है। जैसैं यव मध्यतैं लगाय ऊपरकी गुणहानिनिविषैं रचना कही तैसैं ही नीचेकी गुणहानिनिविषैं रचना हो है। पूर्ववत् सर्व इहां भी कथन जानना विशेष इतना-

जो इहां नीचली नाना गुणहानि प्रमाण गुणहानिनिकी रचना हो है। तातैं अंतविषैं एक घाटि नीचली नाना गुणहानि प्रमाण दूवानिकौं परस्पर गुणें नीचली अन्योन्याभ्यस्त राशितैं आधा ऐसा $\frac{प}{a\,a\,a\,२}$ ताका भागहार हो है। तातैं अंत निषेककी संदृष्टि ऐसी $= \frac{४}{५}\; \frac{गु \overline{१}}{गु ३ - गु २ प / a\,a\,a\,२}$ जाननी। इहां गुणकार तौ ऐसी = संदृष्टिके आगें भागहार ऐसी ४ संदृष्टिके आगें लिखने। अब इनका जोड कहिए है—

सो नीचली प्रथम गुणहानिका प्रथमनिषेक रूप मुख ऐसा $= \frac{४}{५}\; \frac{गु २}{गु ३ - गु २}$ अंत निषेकरूप भूमि ऐसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—
= गु इनके जोडनेकौं दोय गुणहानि अर एक अधिक गुणहानि मिलाय एक अधिक तीन गुणहानिका
४ गु ३—गु २
५

१— १—
गुणकार कीएं जोड ऐसा = गु ३ आधा कीएं ऐसा = गु ३ याकौं गच्छ गुणहानिकरि गुणें नीचली
४ गु ३—गु २ ४ गु ३—गु २ २
५ ५

१—
प्रथम गुणहानिका सर्व द्रव्य ऐसा हो है = गु ३ गु ऐसैं ही नीचली अंत गुणहानिविषैं मुख ऐसा
४ गु ३—गु २ २
५

१— १—
= गु २ भूमि ऐसा = गु जोडैं ऐसा = गु ३ आधा
४ गु ३—गु २ १ ४ गु ३—गु २ १ ४ गु ३—गु २ १
५ ७ ७ ७ २ ५ ७ ७ ७ २ ५ ७ ७ ७ २

१—
कीएं ऐसा = गु ३ बहुरि इहां अंतधणं गुणगुणियं इत्यादि सूत्रकरि प्रथम गुणहानिका द्रव्य-
४ गु ३—गु २ १ २
५ ७ ७ ७ २

१—
मात्र अंतधनकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा = गु ३ गु २ इहां दोगुणहानिका अपवर्तन कीएं ऐसा
४ गु ३—गु २ २
५

१—
= गु ३ याभैं अन्त गुणहानिका द्रव्यमात्र आदि धन घटावना सो अपवर्तन कीया हूवा आदि धन ऐसा
४ गु ३—२
५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१—
= गु ३
४ गु ३— २ प
५ ∂ ∂ ∂
हो है। सो इसकैं अर तिस अन्त धनकैं अन्यहार समान देखि ऐसे प ∂ २ वार हार करि समच्छेद कीएं अन्तधन ऐसा

१—
= गु ३ प
४ गु ३—२ ∂ ∂ ∂
५ प
∂ ∂ ∂

हो है। सो इसकैं अर तिस आदिकैं अन्य समान देखि इसविषैं भाज्यका गुणकार ऐसा प ∂ ∂ ∂ ताके ऊपरि एक घाटि कीएं आदि धन रहित सो गुणकार गुणित अंत धन ऐसा

१— १ ⌒
= गु ३ प
∂ ∂ ∂
४ गु ३— २ प
५ ∂ ∂ ∂

हो है। याकौं एक घाटि गुणकार एकका भाग दीएं भी ऐसा ही रहे है सो यह नीचली सर्व गुणहानिनिका धन जानना। बहुरि मिलाया हूवा ऋण गुणहानि गुणहानि गुणित अपना अपना चय प्रमाण है सो प्रथम गुणहानिविषैं ऋण ऐसा

= गु
४ गु ३— गु २
५

सो अन्त धन है अर अन्त गुणहानिविषैं ऋण ऐसा

= गु
४ गु ३— गु २ प
५ ∂ ∂ ∂

सो आदि धन है। इहां अन्त धनकौं गुणकार दोयकरि गुणैं ऐसा

= गु
४ गु ३— गु २
५

यामैं पूर्वोक्त प्रकार समच्छेदकरि आदि धन घटाएं ऐसा

१ ⌒
= प
४ ∂ २ वार
५ गु ३—प
∂ ∂ ∂

समस्त नीचली गुणहानि सम्बन्धी ऋण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो है। बहुरि ऊपरिकी प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा $= \dfrac{\text{गु}\ २}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २}$ अन्त निषेकका द्रव्य ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २}$ इनिकौं जोडि आधाकरि गुणि हानिरूप गच्छकरि प्रथम गुणहानिका सर्व द्रव्य ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}\ ३\ \text{गु}}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २\ २}$ हो है बहुरि अंत गुणहानिका प्रथम निषेक ऐसा $= \dfrac{\text{गु}\ २}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २\ \frac{१}{२\ २}}$ अंत निषेक ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २\ \frac{१}{२\ २}}$ इनि कौं जोडि आधाकरि गच्छकरि गुणें अंत गुणहानिका सर्वद्रव्य ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}\ ३}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २\ \frac{१}{२\ २}}$ हो है। बहुरि इहां प्रथम गुणहानिका द्रव्यरूप अंत धनकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}\ ३\ \text{गु}\ २}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - \text{गु}\ २\ २}$ अपवर्तन कीएं ऐसा $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}\ ३}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - २}$ यामैं पूर्वोक्त प्रकार अंत गुणहानिका द्रव्यरूप आदि धन घटाएं एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं ऊपरि की सर्व गुणहानिनिका द्रव्य ऐसा हो है $= \dfrac{\overset{१-}{\text{गु}}\ ३\ \overset{१-}{\text{प}}\ \frac{}{२\ २\ व\ र}}{\frac{४}{५}\ \text{गु}\ ३ - २\ \frac{१}{२\ २\ २}}$ इनकी रचना ऐसी जाननी—

३४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि इहां ऊपरिकी सर्व गुणहानिनिका अर नीचली गुणहानिनिका अर तहां ऋणका सर्वधनरूप तीन राशि ऐसे–

ऊपरिका	नीचेका	ऋणका
१– १ ० = गु ३ प a a ४ गु ३– २ प ५ a a	१– १ ० = गु ३ प a a a ४ गु ३– २ प ५ a a a	१ ० = प a a a ४ गु ३– प ५ a a a

तिन विषैं ऐसे प/a a a गुणकारविषै एक घाटि है सो जितनेका यहु गुणकार था तिहि प्रमाण ऋण राशि नीचै स्थापैं गुणकार विषैं एक घाटि दूरि करि धनराशि ऊपरि स्थापैं ऐसा हो है–

नाम	ऊपरिका	नीचेका	ऋण
धनराशि	१— = गु ३ प a a ४ गु ३– २ प ५ a a	१— = गु ३ प a a a ४ गु ३– २ प ५ a a a	= प a a a ४ गु ३– प ५ a a a
ऋणराशि	१– ० = गु ३ १ ४ गु ३– २ प ५ a a	१– ० = गु ३ १ ४ गु ३–२ प ५ a a a	= १ ४ गु ३– प ५ a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां दोयबार वा तीनबार पल्यका असंख्यातवां भागका धनराशिविषैं अपवर्तन कीएं ऐसा—

नाम	ऊपरिका	नीचेका	ऋण
धनराशि	१— = गु ३ १ ४ गु ३— २ ५	१-- = गु ३ १ ४ गु ३—२ ५	= ४ गु ३— ५
ऋणराशि	१— ० = गु ३ १ ४ गु ३— २ प ५ aa	१— ० = गु ३ १ ४ गु ३— २ प ५ aaa	= ४ गु ३— प ५ aaa

हो है इहां ऊपरिका नीचेका द्रव्य मिलाएं ऐसा हो है १— = गु ३ । ४ गु ३ —२ ५ २ दोयका अपवर्तन कीएं ऐसा १— = गु ३ । ४ गु ३ — ५ इहां गुणकारविषैं एक अधिक है ताका प्रमाण ऐसा = १ ४ गु ३ — ५ जातैं सो गुणकार इतने प्रमाणका है। सो याकैं अर ऋणराशिका धन रूप द्रव्यकैं समान देखि ताकौं देइ दूरि कीया अवशेष ऐसा = गु ३ ४ गु ३ — ५ बहुरि ऋणका ऋणकैं अन्य भागहारनिकी समानता देखि दोयकरि समच्छेद कीएं ऋणका ऋण ऐसा = २ ४ गु ३ — प २ ५ aaa राशिका धन होइ तातैं याकौं नीचेका ऋणमें घटावना सो अन्यकी समानता देखि आगै ऐसी गु ३ गुणकार ऊपरि एक अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था तहां एक घाटि कीएं ऐसा = $\frac{गु३^{१-}\;\;१}{\frac{४}{५}\;गु३-२\;प_{aaa}}$ भया याके उपरितैं ऋणतैं असंख्यातवे भाग जानि याके मिलावनेकौं ऊपरिका ऋण ऊपरि साधिककी ऐसी । संदृष्टि कीएं ऐसा = $\frac{गु३^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु-२\;प_{aa}}$ भया याके घटावनेकौं तिगुणी गुणहानि आगें किंचिदूनकी ऐसी − संदृष्टि कीएं ऐसा = $\frac{गु\;३-}{\frac{४}{५}\;गु\;३-}$ हो है । इहां अपवर्तन कीएं ऐसा = $\frac{४}{५}$ पर्याप्त त्रस राशिमात्र सर्वद्रव्यका प्रमाण आवै है । ऐसैं जीव यव मध्य रचना कही सो यहां यव मध्य रूप जो मध्य योग स्थान तातैं ऊपरि वा नीचे एक एक निषेकविषै जितना जितना प्रमाण कह्या तितने तितने जीव एक एक योगस्थाननिके धारक लोकविषैं जानने । बहुरि जीव यव रचनाके निषेकनिकी रचना ऐसी हो है−

ऊपरकी गुणहानि ।

नाम	प्रथम गुणहानि	द्वितीय गुणहानि	तृतीय गुणहानि	चतुर्थ गुणहानि	मध्यगुणहानि	अंतगुणहानि
अंतनिषेक	$\frac{= गु^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु३-गु\;२}$	$\frac{= गु^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;२}$	$\frac{= गु^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;२\;२}$	$\frac{= गु^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;२\;२\;२}$	० ० ०	$\frac{= गु^{१-}}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;प_{aa२}}$
मध्य निषेक	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	नाना	० ० ०
प्रथम निषेक	$\frac{= गु\;२}{\frac{४}{५}\;गु३-गु\;२}$	$\frac{= गु\;२}{\frac{४}{५}\;गु३-गु\;२\;२}$	$\frac{= गु\;२}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;२\;२}$	$\frac{= गु\;२}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;२\;२\;२}$	० ० ०	$\frac{= गु\;२}{\frac{४}{५}\;गु३-गु२\;प_{aaa}}$

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां ऊपरि ऊपरिकी गुणहानिके अंत निषेक रचना अर प्रथम निषेक लिखे अर नीचैं नीचैं गुणहानिके प्रथम निषेक अर अंत निषेक लिखे सो ऊपरिके निषेकनिकी तौ संदृष्टि पूर्वोक्त जाननी। अर नीचेके निषेक ऊपरिके निषेकनितैं एक एक चय घटाएं हो हैं—

नीचेकी गुणहानि।

नाम	प्रथमगुणहानि	द्वितीय गुणहानि	मध्य गुणहानि	अंत गुणहानि
अंत निषेक	= गु ४ गु ३ - गु २ ५	= गु ४ गु ३ - गु २ २ ५	० ० ०	= गु ४ गु ३ - गु २ ५ ५ ३ ३ ३ २
मध्य निषेक	० ० ०	० ० ०	नाना	० ० ०
प्रथम निषेक	१ ^ = गु २ ४ गु ३ - गु २ ५	१ ^ = गु २ ४ गु ३ - गु २ २ ५	० ० ०	१ ^ - गु २ ४ गु ३ - गु २ ५ ५ ३ ३ ३ २

सो चयकैं अर ऊपरिके निषेकनिकैं अन्य सर्व समानता देखि ऊपरिके प्रथम निषेक विषैं गुणकार ऐसा गु २ ताके ऊपरि एक चय घटावनेकौं एक घाटि कीएं नीचेके प्रथम निषेककी संदृष्टि हो है। अर ऊपरिके अन्त निषेकविषैं गुणकार ऐसा गु (१—) ताके ऊपरि एक अधिक था सो दूरि कीएं नीचेके अंत निषेककी संदृष्टि हो है। बहुरि मध्य निषेकके ग्रहण निमित्त बिंदीनिकी संदृष्टि जाननी। बहुरि इहां ऊपरि ऊपरिके अंत निषेक प्रथम निषेक अर नीचे नीचेके प्रथम निषेक अंत निषेक लिखि बीचि मध्य निषेकनिके ग्रहण निमित्त बिंदी लिखि यवाकार रचना कीएं जीव यव रचना ऐसी हो है— २५१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

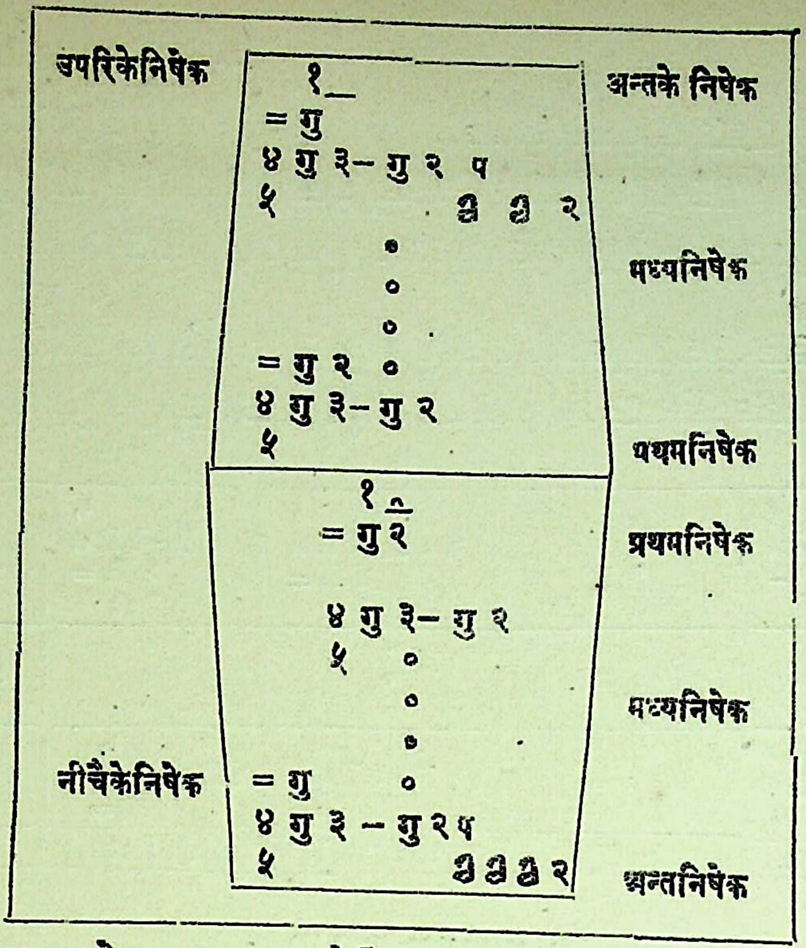

बहुरि पर्याप्त त्रसकैं जघन्य योगस्थान जगच्छ्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणित जघन्य स्पर्धकमात्र ऐसा व वि १६ ४ —इस जघन्य योगस्थानतैं जघन्य समय प्रबद्ध बंधै सो ऐसा । स । बहुरि इहां जघन्य स्थानकौं प्रमाणराशि कीएं समय प्रबद्धकौं फलराशि कीएं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागमात्र जघन्य स्पर्धक ऐसा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व वि १६ ४ । २ बंधैं एक एक योगस्थान होइ सो याकौं इच्छाराशि प्रमाण व वि १६ । ४ – a फल स इच्छा व वि १६ । ४ । २ a कीएं
a

लब्धराशि ऐसा स २ एक एक योगस्थान प्रति समय प्रबद्ध अधिक बंधे हैं सो ऐसा वृद्धिका प्रमाण स्थान स्थान
a a

प्रति एक दोय आदि गुणा होइ तहां जघन्य योगस्थान दूणा हो है । तहां जघन्य समय प्रबद्ध भी दूणा हो है । बहुरि तहां तैसैं ही वृद्धि होतैं जहां जघन्य योगस्थान चौगुणा हो है तहां जघन्य समय प्रबद्ध भी चौगुणा हो है ऐसैं क्रमतैं अंतविषैं जघन्य योगस्थान वा जघन्य समय प्रबद्धतैं पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग गुणा उत्कृष्ट योगस्थान वा उत्कृष्ट समय प्रबद्ध हो है । इनकी रचना–

योगस्थान	– व वि १६ ४ a	२ १ a – a	२ २ a – a	०००	– a २	२ १ a – a	२ २ a – a	०००	– a २ २	२ १ a – a २ २	२ २ a – a २ २	०००	– a २ २ २	०००	– a छे a
समय प्रबद्ध	स	स २ – a a स	स २ २ – a a स	०००	स २	स – २ a a स २	स २ a a स २	०००	स २ २	स २ १ – a a स २ २	स २ २ – a स २ २	०००	स २ २ २	०००	स छे a

इहां जघन्य योगस्थानकी ऐसी – अधिककी ऊपरि लिखि नाना गुणकारकी आगें लिखना । मध्य भेदनिकी विंदी इत्यादि संदृष्टि जाननी । बहुरि जघन्य स्थान ऐसा व त्रि १६ । ४ – याकौं अन्त स्थान ऐसा—
a a

व त्रि १६ ४ – छे तामैं घटावनेकौं जघन्य स्थानकी लघु संदृष्टि ऐसी – ताके आगें गुणकार ऐसा छे तामैं एक
a a a a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

घटाएं ऐसा — छे (१ ─ / a a) याकौं वृद्धि प्रमाण सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागका भाग दीएं ऐसा — छे (१ ─ / a २ a / a) यामैं एक जोडैं

निरंतर योग स्थाननिकौं असंख्यातवां भाग दीएं अन्तरगत योगस्थान ऐसे — छे (१ ── / १ ─ / a २ a a / a) बहुरि इनिकौं असंख्यात-

का भाग दीएं सांतर निरंतर योगस्थान ऐसे — छे (१ ── / १ ─ / a २ a a a / a) इहां प्रथम राशिकौं असंख्यातकरि समच्छेद कीएं प्र-

थम द्वितीय राशि ऐसे — छे (१ ── / १ ─ / a २ a a a / a) a — छे (१ ── / १ ─ / a २ a a / a) बहुरि इनिके मिलावनेकौं अन्य सर्व समान देखि प्रथम राशिका गुण-

कार ऐसा a ताके ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं ऐसी — छे (१ ─ / १ ─ १ ─ / a २ a a / a) a इहां तीसरा राशि मिलावनेकी गुणकार

ऊपरि एकका असंख्यातवां भाग मिलावनेकौं किंचित् अधिककी संदृष्टि ऐसी । कीएं सर्व योगस्थाननिका प्रमाण

ऐसा हो है — छे (१ ─ / १ ─ १ ─ / a २ a a / a) a बहुरि इहां एक घाटि पल्य अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भागकी संदृष्टि इकतीसका अंक

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीएं ऐसा − ३१ (१− / a२ a) a (१− / a) हो है। इतने असंख्यात लोक गुणें सर्व प्रकृति समूह ऐसा है ≡ a ≡ a २ (॥) कैसें ? सो कहिए है—

ज्ञानावरणविषें असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोकमात्र श्रुत भेदनिके आवरण ऐसे हैं ≡ a ≡ a इतने ही मति आवरण ≡ a ≡ a हैं बहुरि घनांगुलका असंख्यातवां भागकरि हीन लोककौं सूच्यंगुलका असंख्यातवां भागकरि गुणि एक अधिक कीएं देशावधिके भेदनिके आवरण ऐसे ≡ − ६ २ (१—— / a a) बहुरि अग्निकायका अवगाहन भेदनिकरि गुणित असंख्यात लोकमात्र अग्निकाय प्रमाण परमावधिके भेदनिके आवरण ऐसे हैं ≡ a ६ (१— / a) a (१^) सर्वावधिका आवरण एक १ मनःपर्ययका आवरण असंख्यात कल्पमात्र क a केवल आवरण एक १ सर्व मिलि ज्ञानावरण ऐसे ≡ a ≡ a २ (। / a) इहां मति श्रुत आवरणकौं मिलाइ अन्यके मिलावनेकौं ऊपरि किंचित् अधिककी ऐसी। संदृष्टि जाननी। बहुरि नाम कर्मविषें कहिए है—

नारकानुपूर्वीविषें सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग गुणा प्रतर रज्जुप्रमाण क्षेत्र ऐसा = २ (४९ a) याकौं पूर्व शरीर अवगाहनामात्र घनांगुलका (अ)संख्यातवां भागकरि गुणें प्रथम भेद ऐसा = २ ६ (४९ a ०) संख्यात घनांगुल करि गुणें अन्त भेद ऐसा = २ ६ ० (४९ a) इहां अंतविषें आदि घटावनेकौं अन्यहार समान देखि संख्यातकरि समच्छे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द कीएं अंत भेद ऐसा = २ ६ ७ ७ भया याकैं अर आदिकैं अन्य समानता देखि आगिला ऐसा ७ ७ गुणकारमें एक घटाएं ऐसा = २ ६ ७ ७ यामैं एक जोडें नारकानुपूर्वीके सर्व भेद ऐसे = २ ६ ७ ७ हो हैं। बहुरि तिर्यंचानुपूर्वीविषै क्षेत्र लोक प्रमाण ऐसा ≡ याकौं पूर्व शरीर अवगाहना प्रमाण घनांगुलका असंख्यातवां भागकरि गुणें प्रथम भेद ऐसा ≡ ६ संख्यात घनांगुल करि अंत भेद ऐसा ≡ ६ ७ अंतमें आदि घटावनेके अर्थि अंतका असंख्यात करि समच्छेद करि अन्य समान देखि ऐसा ७ ७ गुणकार विषैं एक घटाएं ऐसा ≡ ६ ७ ७ यामैं एक जोडें तिर्यंचानुपूर्वीके सर्व भेदनिका प्रमाण ऐसा ≡ ६ ७ ७ हो है।

बहुरि मनुष्यानुपूर्वीविषैं पैंतालीस लाख योजन वृत्त विष्कंभ गुणित प्रतर रज्जुमात्र क्षेत्र ऐसा = ४५ ल याकौं पूर्व शरीर अवगाहन घनांगुलका असंख्यातवां भागकरि गुणें प्रथम भेद ऐसा = ४५ ल ६ संख्यात घनांगुलकरि गुणें अंत भेद ऐसा = ४५ ल ६ ७ अंतविषैं आदि घटावनेके अर्थि अंतकौं असंख्यातकरि समच्छेद करि अन्य समान देखि ऐसा ७ ७ गुणकार विषैं एक घटाएं ऐसा = ४५ ल ६ ७ ७ यामैं एक जोडें मनुष्यानुपूर्वीके सर्व भेदनिका प्रमाण ऐसा = ४५ ल ६ ७ ७ हो है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि देवानुपूर्वीविषैं क्षेत्र नवसै योजन गुणा रज्जु प्रतर प्रमाण ऐसा = ९०० (४९) याकौं पूर्व शरीर अवगाहना घनांगुलका संख्यातवां भागकरि गुणैं प्रथम भेद ऐसा = ९००६ (४९) १ संख्यात घनांगुलकरि गुणैं अंत भेद ऐसा = ९००।६१ (४९) अन्तविषैं आदि घटावनेके अर्थि अंतकौं संख्यात करि समच्छेदकरि अन्य समान देखि ऐसे १ १ गुणकार विषैं एक घटाएं ऐसा = ९००६ (४९) १ १ १ यामैं एक अधिक कीएं देवानुपूर्वीके सर्व भेद ऐसे = ९०० ६ १ १ (४९) ऐसैं इनि आनुपूर्वी भेदनिके मिलावनेके अर्थि पूर्वोक्त ज्ञानावरणकी उत्तरोत्तर प्रकृतिनिकी संदृष्टि ऊपरि किंचित् आधिककी संदृष्टि ऐसी। कीएं सर्व प्रकृति समूह ऐसा ≡ a ≡ a २ हो है। अन्य उत्तरोत्तर प्रकृतिनिका उपदेश इहां नाहीं हैं। बहुरि इनतैं सर्व प्रकृतिनिके स्थिति भेद असंख्यात गुणें हैं। कैसें? सो कहिए है—

जघन्य स्थिति संख्यात पल्यमात्र प १ उत्कृष्ट यातैं संख्यात गुणी प १ १ यामैं जघन्य घटावनेकौं अन्य समान देखि संख्यात गुणकारविषैं एक घटाएं ऐसा प १ १ यामैं एक जोडैं स्थिति भेद ऐसे प १ १ एक प्रकृतिके होंइ तौ इतनी प्रकृतिनिके स्थिति ≡ a ≡ a ॥ भेद केते होंइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धमात्र ऐसे—

≡ a ≡ a २ प १ १ सर्व प्रकृतिनिके स्थिति भेद हो हैं। बहुरि इनितैं सर्व स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात गुणें हैं। कैसैं? सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक प्रकृतिस्थिति बंधके कारण परिणाम असंख्यात लोकमात्र ऐसे ≡ a सो द्रव्य है। बहुरि स्थितिभेद प्रमाण मात्र स्थिति ऐसी प १ १ बहुरि नाना गुणहानि पल्यच्छेदनिके असंख्यातवां भागमात्र ऐसी छे a बहुरि अन्योन्याभ्यस्तराशी पल्यके असंख्यातवां भागमात्र ऐसा प/a स्थितिकौं नाना गुणहानिका भाग दीएं गुणहानि आयाम ऐसा प १ १/छे a याकौं दोयकरि गुणें दो गुणहानि ऐसा प १ १ २/छे a बहुरि तिनि स्थिति भेदनिविषैं जघन्य स्थिबंधकौं कारण परिणाम सबतैं थोरे हैं तेऊ असंख्यात लोकमात्र हैं ते ऐसे ≡ a इनकौं गच्छ गुणहानि आयाम ऐसा। गु। ताकरि गुणें आदि धन ऐसा ≡ a गु बहुरि एक एक स्थिति प्रति बंधने रूप चय ताका प्रमाण प्रथमकौं एक अधिक गुणहानिका भाग दीएं ऐसा ≡ a/गु बहुरि एक घाटि गच्छ ऐसा गु ताका आधा ऐसा गु/२ याकौं चयकरि गुणें ऐसा गु/२ ≡ a/गु याकौं गच्छकरि गुणें ऐसा गु/२ ≡ a/गु गु चयधन हो है। बहुरि आदि धन अर चयधन जोडनेके अर्थि समच्छेद कीएं आदि धन ऐसा ≡ a गु गु २/गु २ आगें पीछें लिखे चय धन ऐसा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

≡ a गु गु १– / गु २ इहां एक अधिक हीनकौं न गिणि आदि धनका दोय गुणकारका जायगा तीनका गुणकार कीएं तिनका जोड ऐसा ≡ a गु गु १– ३ / गु २ प्रथम गुणहानिका द्रव्य हो है। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति दूणा होइ। आधा अन्योन्याभ्यस्त ऐसा प / a २ ताकरि प्रथम गुणहानिके द्रव्यकौं गुणें अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा ≡ a गु गु १– ३ प / १– गु २ a २

इस अन्त धनकौं गुणकार दोय करि गुणें ऐसा ≡ a गु गु १– ३ प २ / १– गु २ a २ दोयका अपवर्तन कीएं ऐसा

≡ a गु गु १– ३ प / १– गु २ a यामैं आदि प्रथम गुणहानिका द्रव्य घटावनेकौं अन्य समान देखि गुणकार ऐसा प / a तामैं एक घटाएं समस्त गुणहानिका धन ऐसा ≡ a गु गु १– ३ प १– १ / १– गु a हो है। बहुरि एक प्रकृतिके स्थिति भेद ऐसे प १– ७ १ ७ इनि-कौं एते ≡ a गु गु १– ३ प १– १ / १– गु a स्थिति बंधाध्यवसाय होंइ तौ इतने ≡ a ≡ a २ प ॥ १– ७ १ ७ स्थिति भेदके केते होंइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धमात्र सर्व स्थिति बंधाध्यवसाय ऐसे ≡ a ≡ a २ ॥ ≡ a गु गु १– ३ प १– १ / १– गु २ a हो हैं। बहुरि इनतैं असंख्यात लोक गुणे अनुभागाध्यवसाय स्थान हैं कैसैं? सो कहिए है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जघन्य स्थितिबंध संबंधी स्थितिबंधाध्यवसायनिके अनुभागाध्यवसाय स्थान असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोकमात्र ऐसे ≡ a ≡ a सो द्रव्य जानना। जघन्य स्थितिकौं कारण स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात लोकमात्र ऐसे ≡ a सो स्थिति जाननी। दोयका असंख्यात भाजित आवलीमात्र नाना गुणहानि ऐसा २ / a a याका भाग स्थितिकौं दीएं गुणहानि आयाम ऐसा ≡ a / २ / a a याकौं दोयकरि गुणें दो गुणहानि ऐसा ≡ a २ / २ / a a आवलीका असंख्यातवां भागमात्र नाना गुणहानि ऐसा २ / a इहां जघन्य स्थिति बंधाध्यवसाय संबंधी अनुभागबंधाध्यवसाय स्थान सबतैं थोरे हैं तथापि असंख्यात लोक गुणित असंख्यात लोकमात्र ऐसे हैं ≡ a ≡ a याकौं मुख कहिए। इस मुखकौं गच्छ जो गुणहानि ताकरि गुणें आदि धन ऐसा ≡ a ≡ a गु बहुरि तिस मुखकौं एक अधिक गुणहानिका भाग दीएं चय ऐसा ≡ a ≡ a / १— / गु बहुरि एक घाटि गच्छका आधाकौं चय करि गच्छकरि गुणें चय धन ऐसा १— / गु / २ ≡ a ≡ a गु / १— / गु पूर्वोक्त प्रकार आदि धन चय धन मिलाएं प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा ≡ a ≡ a गु गु ३ / १— / गु २ गुणहानि गुणहानि प्रति दूणा होइ। अन्योन्याभ्यस्तका आधा ऐसा २ / a २ ताकरि प्रथम गुणहानिके द्रव्यकौं गुणें अंतगुणहानिका द्रव्य ऐसा ≡ a ≡ a गु गु ३ / १— / गु २। २ / a २ इस अंत धनकौं गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा ≡ a ≡ a गु गु ३ २ २ / १— / गु २ / a २ दोयका अपवर्तन कीएं ऐसा हो है ≡ a ≡ a गु गु ३ २ / १— / गु २ / a यामैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि प्रथम गुणहानिका द्रव्य घटावनेकौं अन्य समान देखि ऐसे २ गुणकारविषैं एक घटाएं सर्व गुणहानिका द्र-

१– १–᪲ a

व्य ऐसा हो है ≡ a ≡ a गु गु ३ । २ बहुरि एक स्थिति भेदके इतने अनुभागाध्यवसायस्थान होंइ तौ सर्व

१–– a
गु २

स्थिति भेदनिके केते होंइ ऐसें त्रैराशिक कीएं

प्रमाण	फल	इच्छा
१	≡ a ≡ a गु गु ३ २ (ऊपर: १– १–᪲; नीचे: १–– / गु २; a)	≡ a ≡ a २१ ७ ७ (ऊपर: ॥ १– १–᪲)

॥ १– १᪲ १– १᪲

लब्धराशि मात्र अनुभागाध्यवसाय ऐसे हो हैं ≡ a ≡ a २ प ७ ७ ≡ a ≡ a गु गु ३ २

१– a
गु २

बहुरि अनंत गुणे कर्म परमाणू हैं ते किंचित् ऊन ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण ऐसे हैं— स १२ – सो इसका स्वरूप दिखावनेकौं त्रिकोण रचना करि अंक संदृष्टि पूर्वक विशेष कथन टीकाविषैं किया है सो जानना। तहां अधिक हीन गुणकार भागहारादिककी संदृष्टि यथासंभव जाननी। वा आगे कर्मस्थिति रचना अधिकारविषैं वर्णन करेंगे तहां त्रिकोण रचनाके जोडका विशेष जानना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदय रचना				उदीरणा रचना			
मि	१२	१२	११०	मि	०	०	११२
स	३०	४२	८०	स	३९	३९	८३
क्षी	१६	५७	६५	क्षी	१६	५४	६८
उ	२	५९	६३	उ	२	५६	६६
सू	१	६०	६२	सू	१	५७	६५
अ	६	६६	५६	अ	६	६३	५९
अ	६	७२	५०	अ	६	६९	५३
अ	४	७६	४६	अ	४	७३	४९
प्र	५	८१	४१	प्र	८	८१	४५
दे	८	८७	३५	दे	८	८७	३५
अ	१७	१०४	१८	अ	१७	१०४	१८
मि	१	१००	२२	मि	१	१००	२२
सा	९	१११	११	सा	९	१११	११
मि	५	११७	५	मि	५	११७	५

यह भूतबलि अचार्य अपेक्षा रचना है यतिवृषभ आचार्य अपेक्षा मिथ्यात्व सासादन सयोगी अयोगी विषैं विशेष है सो टीकातैं जानना ।

बहुरि कर्मनिका उदय वर्णनविषैं च्यारि कोष्ठ समान करि प्रथम कोष्ठविषैं विवक्षित गुणस्थान नाम द्वितीयादि कोष्ठनिविषैं व्युच्छित्ति उदय अनुदय प्रकृतिनिका प्रमाण लिखि जेते गुणस्थान संभवैं तिनकी ऊपरि ऊपरि रचना कीएं रचना हो है । अथवा संभवते गुणस्थाननिकी पंक्ति समान कीएं च्यारि पंक्ति नीचैं नीचैं कीएं रचना हो है । ऐसैं ही गुणस्थाननिविषैं व्युच्छित्ति उदीरणा अनुदीरणाकी रचना हो है । ऐसैं ही मार्गणा रचना विषैं ऊपरि वा पार्श्वविषैं मार्गणा नाम लिखि तहां संभवती उदय प्रकृति लिखि संभवते गुण स्थाननिकी कथन अनुसारि रचना जाननी । बहुरि सत्ता वर्णनविषैं भी उदयवत् पंक्तिकरि जैसैं व्युच्छित्ति उदय अनुदय लिख्या था

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैसैं व्युच्छित्ति सत्व असत्व प्रकृतिनिका प्रमाण गुणस्थान मार्गणा स्थाननिविषैं लिखैं रचना हो है । इहां अनिवृत्ति करणविषैं नव भागनिकी अयोगीविषैं पहिले कालकी वा अंतसमयकी जुदी रचना जाननी—

मि	सा	मि	अ	दे	प्र	अ	अ	अ	२	३	४	५	६	७	८	९	सू	उ	क्षी	स	अ	अ
०	०	०	१	१	०	८	०	१६	८	१	१	६	१	१	१	१	१	०	१६	०	७२	१३
१४८	१४५	१४७	१४८	१४७	१४६	१४६	१३८	१३८	१२२	११४	११३	११२	१०६	१०५	१०४	१०३	१०२	१०१	१०१	८५	८५	१३
०	३	१	०	१	२	२	१०	१०	२६	३४	३५	३६	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४७	६३	६३	१३५

यहु रचना क्षायिककी अपेक्षा है । विशेष टीकातैं जाननी । बहुरि अनिवृत्तिकरणके भागनिविषैं वा सूक्ष्म सांपरायविषैं कर्म प्रकृति क्षपावनेका वा उपशमावनेका अनुक्रमकी रचना—

क्षपावनेकी रचना ।

१६	अप्रत्याख्यानादि ८	नपुंसक १	स्त्री १	हास्यादि ६	पुरुष	क्रो	मा	मा	लो

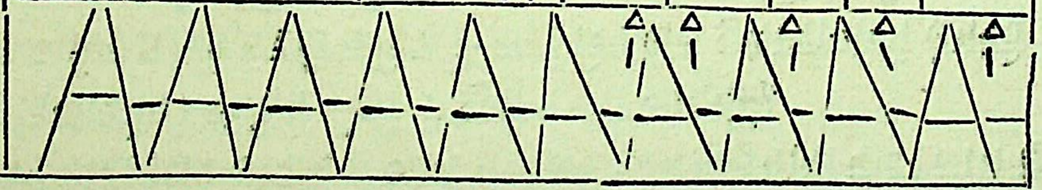

उपशमावनेकी रचना ।

नपुंसक	स्त्री	हास्यादि ६	पुरुष	क्रो २	क्रो	मा २	मा	मा २	मा	लो १	लो

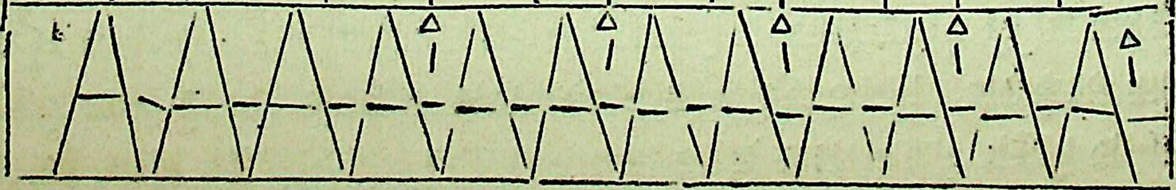

३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां ऊपरि सोलह आदि प्रकृतिनिकी संख्या वा नामका आदि अक्षरनिकरि प्रकृति जाननी तहां उपशम रचनाविषै क्रोधादिकके आगें दोयका अंककरि अप्रत्याख्यान क्रोधादिक जानने । अर केवल क्रोधादिक करि संज्वलन जानने । बहुरि मायाकी संदृष्टि द्वितीय अक्षर रूप जाननी । बहुरि इनिके निषेक क्रमहीन रूप हैं तातैं इहां ऐसी △ संदृष्टि जाननी । बहुरि उच्छिष्टावलीके जुदे दिखावनेकौं तिनके वीचि लीककी संदृष्टि जाननी । बहुरि पुरुषवेद संज्वलन क्रोध मान माया वादर लोभके नवीन बंधमैं आए ऐसे नवक समय प्रबद्ध ते तिनहीके क्षपण उपशमन कालविषैं नाही क्षिपैं उपशमैं हैं आगें संज्वलन क्रोध मान माया वादर लोभ सूक्ष्म लोभ क्षिपै उपशमै है सो तिनके जुदे दिखावनेकी वीचिमैं ऐसी △ जुदी रचना जाननी ।

अथ विशेष सत्ता अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है—तहां विवक्षित गुणस्थानविषैं संभवते बद्धायु अबद्धायुके स्थान प्रमाण कोष्ठकरि एक एक कोष्ठविषैं ऊपरिका प्रकृतिनिका प्रमाण नीचैं भंगानिका प्रमाण लिखें रचना हो है जैसैं मिथ्यादृष्टिविषैं ऐसी रचना हो है—

बद्धायु	१४६ १	१४५ ५	१४२ १	१४१ ५	१४० ५	१३९ ५	१३७ १	१३१ १	१३९ १	१२७ १
अबद्धायु	१४५ १	१४४ ४	१४१ १	१४० ४	१३९ ४	१३८ ४	१३६ ४	१३० २	१२९ पुनरुक्त	१२७ १ पुनरुक्त

ऐसैं ही अन्य गुणस्थाननिविषैं कथन अनुसारि रचना जाननी ।

अथ त्रिचूलिका अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है तहां नव प्रश्नचूलिकाविषैं प्रकृति आदिनिका नामका आदि अक्षर अर प्रमाणके अंक इत्यादि रूप सुगम रचना जाननी । बहुरि पंच भागहार चूलिकाविषैं मिथ्यात्वकौं प्राप्त होतैं सम्यक्त्व प्रकृति मिश्रप्रकृतिका अंतर्मुहूर्त पर्यंत अधःप्रवृत्त संक्रम है । द्विचरम कांडक पर्यंत उद्वेलन संक्रम है । चरम कांडकविषैं गुण संक्रमण है अंत काल विषैं सर्व संक्रमण है ताकी संदृष्टि ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

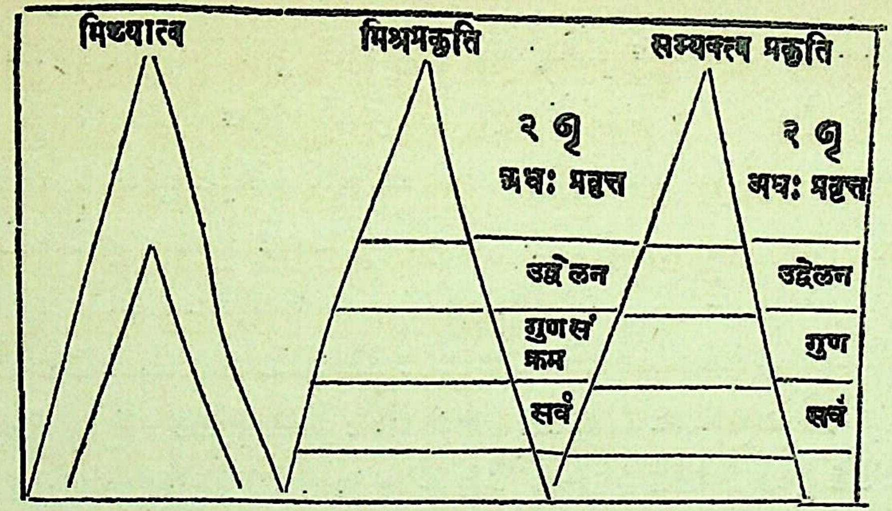

इहां क्रम हीन निषेक मिथ्यात्वादिकके हैं तातैं ऐसी ⏢ संदृष्टि करी तहां मिथ्यात्वविषैं उच्छिष्टावलीके घाटि करनेकैं जुदी संदृष्टि करी है अर मिश्र वा सम्यक्त्व प्रकृतिकैं अधः प्रवृत्त आदि भागहार लिखे हैं। अधःप्रवृत्तके कालकी ऐसी २ पृ संदृष्टि लिखी है सो जाननी। बहुरि अल्प बहुत्वविषैं सर्व संक्रमणका प्रमाण एक अर गुण संक्रमण भागहारका च्यारिवार असंख्यात भाजित पल्यच्छेदमात्र अर अपकर्षण वा उत्कर्षण भागहार तीनवार असंख्यात भाजित पल्यच्छेदमात्र अर अधःप्रवृत्त संक्रमण भागहार दोयवार असंख्यात भाजित पल्यच्छेदमात्र अर जघन्य योगतैं उत्कृष्ट योगका गुणकार एकवार असंख्यात भाजित पल्यच्छेदमात्र अर कर्म स्थितिकी नाना गुणहानि पल्यकी वर्ग शलाकाका अर्धच्छेद निकरि हीन पल्यके अर्धच्छेदमात्र अर पल्यके अर्धच्छेद अर पल्यका वर्गमूल स्वकीय प्रमाणमात्र अर कर्म स्थिति विषैं गुणहानि आयाम स्वकीय नानागुणहानि प्रमाणकरि भाजित संख्यात पल्यमात्र। इहां च्यारिवार कोटि गुणित सातसै पल्य वर्गमूलका वर्ग ऐसा मू १ मू १। ७०० को ४ परस्पर गुणें संख्यात पल्यमात्र हो है। बहुरि कर्म स्थितिकी अन्योन्याभ्यस्तराशि अपनी वर्ग शलाकाकरि भाजित पल्य मात्र अर पल्य स्वप्रमाणमात्र अर कर्म स्थिति संख्यात पल्यमात्र अर विध्यात संक्रम भागहार दोयवार असंख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाजित सूच्यंगुल प्रमाण अर उद्वेलन भागहार एकवार असंख्यात भाजित सूच्यंगुल प्रमाण अर अनुभागकी नाना गुणहानि अनंत तातैं ताका गुणहानिआयाम अनंतगुणा तातैं ड्योढ गुणा द्व्यर्ध गुणहानि दोय गुणा दो गुणहानि यातैं अनंतगुणा अन्योन्याभ्यस्तराशि जानना। ए क्रमतैं बहु प्रमाण लीए हैं तिनकी रचना–

नाम	सर्व संक्रम	गुणसंक्रम	उत्कर्षण अपकर्षण	अधः प्रवृत्त	योगगुणकार	स्थितिनानागुणहानि	पल्य छेद	पल्य मूल	स्थितिगुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त	पल्य	कर्म स्थिति	विध्यातसंक्रम	उद्वेलन	अनुभागनानागुणहानि	गुण हानि	द्व्यर्द्धगुणहानि	दोगुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त
प्रमाण	१	छे / a a a a	छे / a a a	छे / a a	छे / a	छे व छे	छे	मू	प ७ / छे व छे	प / व	प	प ७	२ / a a	२ / a	ख	ख ख	ख ख ३/२	ख ख २	ख ख २ ख

इहां समान्योक्तकरि सर्व संदृष्टि जाननी। बहुरि दशकरणचूलिका नामका आदि अक्षर वा प्रमाणका अंक इत्यादि सुगम संदृष्टिकरि रचना जाननी।

अथ स्थान समुत्कीर्तन अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है तहां कहीं गुणस्थान वा प्रकृति वा बंध उदय सत्त्व वा भंग इत्यादिकनिके नामका आदि अक्षर रूप संदृष्टि हो है। कहीं प्रकृतिनिका प्रमाण कहीं भंगानिका प्रमाण कहीं एक हीं कोठेविषैं ऊपरि ऊपरि प्रकृतिनिका प्रमाण नीचे प्रकृतिनिका प्रमाण कहीं स्थाननिका प्रमाण इत्यादि प्रमाणनिके अंकनिकी संदृष्टि हो है। बहुरि तहां यथा संभव ऊर्ध्वरूप वा तिर्यग्रूप कोठे हो हैं बहुरि कहीं ऊपरिके कोठेविषैं विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणानिका नाम नीचैं तहां संभवते बंधादिकके स्थाननिका प्रमाण नीचैं एक एक जुदा जुदा स्थान लिखना। बहुरि आधार आधेयका कथनविषैं ऊपरि आधारस्थान नीचैं संभवते आधेय स्थान वा तिनके नीचैं ते जुदे जुदे आधेय स्थान लिखतैं ऐसैं रचना हो है। तहां सर्वत्र स्थाननिकी संदृष्टि जेती प्रकृतिनिका समूह रूप स्थान होइ तितनेका अंक जानना। जैसैं तेइसका स्थानकी संदृष्टि ऐसी २३ इत्यादि अनेक प्रकार रचना हो है सो ए रचना सुगम है टीकाविषैं कथन कीया है ताके अनुसारि रचना जानि लेनी। कथन पूर्वे कीया ही था रचना सुगम है। तातैं इहां विशेष प्रयोजन न जानि विस्तारके भयतैं रचना नाहीं लि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खी है। बहुरि मोहके कूटनिकी वा भंगादि ल्यावनेकौं त्रैराशिककी वा नवम गुणस्थानविषैं वेद अपेक्षा मोहके बंधादि स्थानकी इत्यादि केती एक रचना टीकाविषैं लिखी है सो तहांतैं जाननी बहुरि संस्कृत टीकाविषैं रचना करी है तिनविषैं आवरणदेशघादंतराय इत्यादि गाथाका अर्थविषैं देशघाती सर्वघाती प्रकृति शैलादि च्यारि प्रकार वा तीनप्रकार अनुभागरूप परिणवै है तिनकी रचना अनुभाग बंधविषैं जैसैं करी है तैसैं इहां भी जाननी विशेष नाहीं। बहुरि कषायनिविषैं नामके बंधस्थान कहे हैं तहां कषायनिके च्यारि चौदह वीस स्थान तिनकी रचना ऐसी—

च्यारिपद	शिलाभेद तीव्रतर ≡ ३८ ९		पृथ्वीभेद तीव्रतर ≡ ३८ ९९							
चौदहपद	१		२	२	३			४	५	६
पदनिविषैं लेश्या	कृष्ण १११११११११		कृष्ण १ १ १ १	नीलयुत २ २ २ २	कपोतयुत ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३			पीतयुत ४ ४ ४ ४	पद्मयुत ५ ५ ५ ५	शुक्लयुत ६ ६ ६ ६
वीसपद	०००० उ कृ	नरक १ १ १ १	नरक १ १ १ १	नरक १ १ १ १ उ नी	नरक १ १ १ १ उ क	न ति २ २ २ २	न ति म ३ ३ ३ ३	सर्व ४ ४ ४ ४ ज ते	सर्व ४ ४ ४ ४ ज प	सर्व ४ ४ ४ ४ ज शु

धूलिराजी मंद ≡ ३८ / ६६६ जलराशिमंदतर ≡ ३१ / ९९९

६			५	४	३	२	१	१
कृष्णहीन ६६६६ ६६६६ ६६६६			नीलहीन ५५५५	कपोतहान ४४४४	पीतहीन ३३३३	पीतहीन २२२२	पद्महान ११११	शुक्लहीन ११११११११
सर्व ४४४४	नारकविना ३३३३	म दे २२२२ ज कृ	दे ११११ ज नी	दे ११११ ज क	दे ११११ ज पी	०००० उ प	००००	०००००००० उ शु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस रचनाका विशेष स्वरूप तौ कषायमार्गणा अधिकारतैं जानना। बहुरि इसविषैं ऊपरि च्यारि पद अर तिनके स्थान लिखे हैं अर नीचे चौदह पदनिविषैं जेती जेती लेश्या पाइए तिनके अंक लिखे हैं। नीचैं वीस पदनिविषैं तेई लेश्या जेती जेती पाइए तिनके अंक लिखे हैं। नीचैं वीस पदनिविषैं आयुका अबंध स्थानविषैं बिंदी अर एक आदि आयुका जहां बंध तहां एक आदिका अंक लिखे हैं। तहां वीस पदनिविषैं कहे-लेश्या रूप आयु बंधाबंध रूप स्थान ते बहुत बहुत पाइए है तातैं बहुतकी संदृष्टि च्यारिवार लिखना जानना। तहां कृष्णका आयु अबंधरूप प्रथम स्थान उत्कृष्ट जानना। मनुष्य देव आयु बंधरूप अंतस्थान जघन्य जानना। ऐसैं ही अन्य लेश्यानिका जानना। बहुरि अन्य संदृष्टि सुगम है।

अथ आस्रव अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है— तहां गुणस्थान भंग आस्रवादिकनिका आदि अक्षररूप वा आस्रव भंग ध्रुव गुण अध्रुव गुणकार इत्यादिकनिके प्रमाणके अंकरूप वा एकही कोठेविषैं ऊपरि आस्रव स्थान नीचैं तिनके भंगनिरूप सुगम संदृष्टि करि रचना जाननी। जैसैं गुणस्थाननिविषैं ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	अ	०	०	०							
	स	१	७	१ १							
	क्षी	१	६	१ १							
१	उ	१	६	१ १							
१	सू	२	१०	२ १							
१	अ	२	१६	१५	१४	१३	११	१०	२ ३ १ १		
१	अ	२	२२	५ १	६ १	७ १					
	अ	२	२२	५ १	६ १	७ १					
	प्र	२	२४	५ १	६ १	७ १					
	दे	३	३७	८ १	९ २	१० ३	११ ३	१२ ३	१३ २	१४ २	
	अ	३	४६	९ १	१० २	११ ३	१२ ३	१३ ३	१४ ३	१५ २	१६ १
	मि	३	४३	९ १	१० २	११ ३	१२ ३	१३ ३	१४ ३	१५ २	१६ २
	सा	३	५०	१० १	११ २	१२ ३	१३ ३	१४ ३	१५ ३	१६ २	१७ १
	मि	४	५५	१० १	११ ३	१२ ५	१३ ६	१४ ६	१५ ६	१६ ५	१७ ३	१८ १

इहां गुणस्थाननिके नाम आगे मूल आस्रवनिका प्रमाण आगे उत्तर आस्रवनिका प्रमाण आगे तहां संभवते आस्रवनिके स्थान वा तहां ही तिनके भंग लिखे हैं। ऐसैं ही अन्य भी रचना यथा संभव जाननी।

अथ भाव अधिकार विषैं संदृष्टि कहिए है– तहां गुणस्थान भावना भंग वा भंगनिविषैं प्रत्येक द्विसंयोगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिसंयोगी आदि भंग इत्यादिकनिके प्रमाणका अंकरूप इत्यादि सुगम संदृष्टि करि रचना जाननी तहां स्थान गति जाति पद प्रत्येक पद गतिविषैं रचना कथन अनुसारि जाननी । तहां प्रत्येक पद रचनाविषैं भावनिकी रचना मिथ्यादृष्टिविषैं ऐसी——

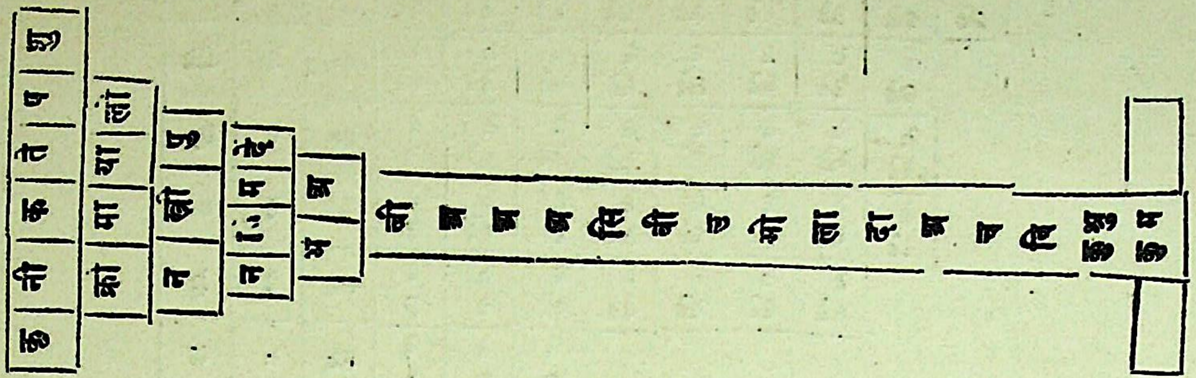

ऐसैं ही अन्यत्र जाननी । बहुरि इहां भंगनिकी रचना ऐसी——

अप्र भं १ । द्वि ४ । त्रि ६ । च ४ । पं १ एवं १६
चप्र भ १ द्वि ३ त्रि ३ च १ एवं ८
त्रि प्र भं १ द्वि २ त्रि १ एवं ४
द्वि प्र भं १ द्वि १ एवं २
कु प्र भं १

ऐसैं ही ऊपरि ऊपरि संभवते भंगनिकी रचना जाननी । बहुरि ए भंग ऐसैं दूणें दूणें बंधते होंइ तहां रचना मिथ्यादृष्टिविषैं ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यादृष्टिके भंग ६५ = ७ १ ९ ५

लेश्या ३६ । ६ । ६ । ६५ = १६ २० ४

क्रोध ४ मा ४ मा ४ ला ४ । ६५ = ८३६

लिंग १ । ३ । ३ । २ । ६५ = । ४ ९

न ति म दे ६५ = २४

म ६५ = १

जी ६५ = १
४

अ
अ
अ
मि
वी
उ
मो
ला
दा
अ

च २ २ २

विभंग २ २

कश्रुति २

कुमति १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसें ही सर्व गुणस्थाननिकी रचना जाननी। इहां संदृष्टि सुगम है टीकाविषैं कथन कीया है ताके अनुसारि रचनाका अर्थ जानना।

अथ त्रिकरण अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है—तहां सर्व संदृष्टि जैसैं जीवकांडके गुणस्थानाधिकारविषैं करणानिका कथनविषैं संदृष्टि कही है तैसैं ही इहां भी जाननी। विशेष है नाही तातैं दूसरी वार नाहीं लिखी है।

अथ कर्मस्थिति रचना सद्भाव अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है तहां आबाधाकी संदृष्टि सुगम है वा पूर्वैं कही है सो जानना। बहुरि स्थितिविषैं आबाधा वा निषेकनिकी रचना ऐसी—

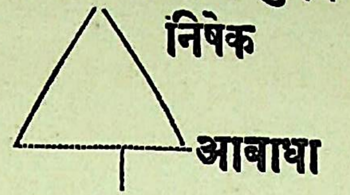

बहुरि कर्मस्थिति रचनाविषैं अंक संदृष्टिकरि द्रव्यादिकका प्रमाण वा तहां रचना टीकाविषैं कही है सो जाननी तहां गुणहानिविषैं चय ल्यावनेकौं एकघाटि गुणहानिका आधा ऐसा $\overset{१-}{\underset{२}{८}}$ ताकरि हीन दो गुणहानि १६ गुणित गुणहानि ८ मात्र प्रमाण ऐसा ८।१६ — $\overset{१-}{\underset{२}{८}}$ ताकरि भाजित अपना अपना द्रव्यमात्र चय जानना। अन्य सुगम है। बहुरि अर्थ संदृष्टिविषैं द्रव्य उत्कृष्ट समय प्रबद्धमात्र ऐसा स ३ स्थिति संख्यात पल्यमात्र ऐसी प १ स्थितिकौं नानागुणहानिका भाग दीएं गुणहानि होइ ताकी संदृष्टि ऐसी। गु। तातैं दूणी दोगुणहानि ऐसी गु २ ए तौ संदृष्टि सातौं कर्मनिकी समान है। बहुरि नानागुणहानि अन्योन्याभ्यस्तराशी ल्यावनेकौं पल्यकी वर्गशलाका आदि पल्यका प्रथम मूल पर्यंत द्विरूपवर्गधाराके स्थानरूपराशि अर इनहीके अर्धच्छेद अर इनहीकी वर्गशलाका स्थापि तीन पंक्ति ऐसैं करनी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मू १	छे २	व-१
मू २	छे २२	व-२
मू ३	छे २२२	व-३
० ० ०	० ० ०	० ० ०
व व	वछे२	१— व व
व	वछे	व व

इहां प्रथम पंक्तिविषैं पल्यकी वर्गशलाका ऐसी । व । ताका वर्ग ऐसा । व व । ऐसैं ही पूर्व पूर्वका वर्ग होइ । अंतविषैं तीसरा दूसरा पाहिला पल्यके वर्ग मूल जानने । बहुरि दूसरी पंक्तिविषैं वर्गशलाकाके अर्द्धच्छेद ऐसे । व छे । तिनतैं दूणे ऐसे । व छे २ । ऐसैं ही दूणे दूणे होइ अंतविषैं तीन दोय एकवार दोयकरि भाजित पल्यके छेद जानने । बहुरि तीसरी पंक्तिविषैं वर्गशलाकाकी वर्गशलाका ऐसी । व व । तातैं एक अधिक ऐसी व व ऐसैं एक एक अधिक होइ अंतविषैं तीन दोय एक घाटि पल्यकी वर्गशलाका जाननी । इहां प्रथम पंक्तिके राशिनिकौं परस्पर गुणै पल्यकी वर्गशलाकाकरि भाजित पल्यमात्र मिथ्यात्वका अन्योन्याभ्यस्त राशि ऐसा प/व बहुरि द्वितीय पंक्तिके राशि जोडनेकौं अंतधन ऐसा छे/२ गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा छे/२ २ अपवर्तन कीएं ऐसा । छे । यामैं आदि ऐसा व छे घटाएं मिथ्यात्व कर्मका नाना गुणहानिराशि ऐसा छे व छे हो है । औरनिका आगें कहेंगे । लघु संदृष्टि अन्योन्याभ्यस्तकी ऐसी । अ । नानगुणहानिकी ऐसा । ना । जाननी । बहुरि नाना गुणहानि प्रमाण राशि । स्थिति फलराशि एक शलाका इच्छाराशि कीएं प्र/छे व छे फ/प ७ इ/श १ लब्धराशिमात्र गुणहानि आयाम ऐसा प ७/छे व छे हो है । यातैं दूणा दोगुणहानि २७६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा प १२ छे व छे अब इहां रचना कहिए है—

जघन्य समय प्रबद्धतैं पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग गुणा उत्कृष्ट समय प्रबद्ध ऐसा स छे अपवर्तन कीएं जघन्य समय प्रबद्धतैं असंख्यात गुणा ऐसा स a याकौं सातका भाग दीएं मोहका ऐसा स a ७ याकौं अनंतका भाग दीएं सर्वघाती ऐसा स a ७ ख याकौं सतरहका भाग दीएं मिथ्यात्व प्रकृतिका द्रव्य ऐसा स a ७ । ख । १७ जानना। बहुरि याकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त राशी ऐसा हो है। अ १ । ताका भाग दीएं अंतगुणहानिका द्रव्य ऐसा—

अंत गुणहानिका द्रव्य	स a १ / ७ ख १७ । अ १
उपांत गुणहानिका द्रव्य	स a २ / ७ ख १७ अ । १
मध्य गुणहानिका द्रव्य	० ० ०
द्वितीय गुणहानिका द्रव्य	स a अ / ७ ख १७ अ २ २ १
प्रथम गुणहानिका द्रव्य	स a अ / ७ ख १७ अ २ १ १

इहां अन्त गुणहानिके द्रव्यकौं दोयकरि गुणें उपांत गुणहानिका । दोयकरि भाजित अन्योन्याभ्यस्त करि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणें प्रथम गुणहानिका याकौं दोयका भाग दीएं द्वितीय गुणहानिका द्रव्य हो है ऐसा जानना। मध्य ग्रहण निमित्त विंदी जाननी। बहुरि एक घाटि गुणहानिमात्र गच्छ ऐसा। गु। ताका आधा ऐसा गु याकौं दो गुणहानि ऐसा। गु २। तामें एक घटाएं एक अधिक ड्योढ गुणहानिमात्र ऐसा गु ३/२ याकरि गुणहानि गुणें ऐसा गु गु ३/२ याका भाग अपने अपने द्रव्यकौं दीएं चयका प्रमाण ऐसा हो है—

अन्तगुणहानिका चय	स ∂ १ / ७ ख १७ अ गु गु ३/२
उपांत गुणहानिका चय	स ∂ २ / ७ ख १७ अ गु गु ३/२
मध्यगुणहानिका चय	० ० ०
द्वितीय गुणहानिका चय	स ∂ अ / ७ ख १७ २ २ अ गु गु ३/२
प्रथम गुणहानिका चय	स ∂ अ / ७ ख १७ २ १ अ गु गु ३/२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि एक घाटि गुणहानिकरि चयकौं गुणें तहां चयधन ऐसा—

अन्त गुणहानिका चयधन	१ — स a गु गु १ — १— ७ ख १७ अ गु गु ३ २
उपांत गुणहानिका चयधन	१ — स a गु गु १ — १— ७ ख १७ अ गु गु ३ २
मध्य गुणहानिका चयधन	० ० ०
द्वितीय गुणहानिका चयधन	१ — स a अ गु गु १ — १— ७ ख १७ अ गु गु ३ २२ २
प्रथम गुणहानिका चयधन	१ — स a अ गु गु १ — १— ७ ख १७ अ २१ गु गु ३ २

बहुरि अपना अपना गुणहानिके धनविषैं चय धन घटाइ अवशेषकौं गुणहानिका भाग दीएं अधिक संक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लन अपेक्षा आदि जो अन्तका निषेक सो हो है। यातैं प्रथमनिषेक पर्यंत एक एक चय अधिक जानना। सो
इहां प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा स ० अ याके अंश वा हार एक अधिक तिगुणा गुणहानिकरि गुणें ऐसा
१ –
७ ख । १७ अ २
१— १—
भया। स ०। अ गु ३ इहां अंशका गुणकार ऐसा गु ३ विषैं जो एक अधिक था ताका प्रमाण ऐसा स ० अ १
१ – १— १ – १—
७। ख १७ अ २ गु ३ ७ ख १७ अ २ गु ३
जातैं सो गुणकार इतने प्रमाण गुण्यका है। सो याकौं जुदा स्थापैं अवशेष ऐसा रह्या स ० अ गु ३ बहु-
१ – १—
७ ख १७ अ २ गु ३
१ –
रि घटावने योग्य चय धनरूप ऋणराशि ऐसा – स ० अ गु गु सो इहां अंश वा हारविषैं जो गुणहानि
१ – १—
७ ख १७ अ २२ गु गु ३/२
१ –
था ताका अपवर्तन कीएं ऐसा स ० अ गु बहुरि इहां भागहारका गुणकार दोयका अंक ताकौं भाग-
१ – १—
७ ख १७ अ २ २ गु ३/२
१ –
हारका भागहार दोयका अंक करि अपवर्तन कीएं ऐसा स ० अ गु बहुरि इहां गुणकार गुणहा-
१ – १—
७ ख १७ अ २ गु ३
निके ऊपरि एक घाटि था ताका प्रमाण ऐसा स ० अ १ सो यहु ऋणका ऋणराशिका धन होइ तातैं
१ – १—
७ ख १७ अ २ गु ३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा ही प्रमाण रूप धन एक पहिलैं जुदा स्थाप्या था सो वाकौं अर याकौं जोडैं ऐसा स a अ २ ब-
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
हुरि इहां दोयका गुणकार था ताकौं एक अधिक तिगुणा गुणहानिरूप भागहारका भागहार कीएं ऐसा
स a अ जातैं जैसैं भागहारका भागहार राशिका गुणकार हो है तैसैं ही राशिका गुणकार भागहार-
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
२
का भागहार हो है। बहुरि ऐसैं कीएं अवशेष चय धनरूप ऋणराशि ऐसा स a अ गु याकौं अवशेष
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
रह्या था मूलराशि ऐसा स a अ गु ३ तामैं घटावना सो इहां अन्य सर्व समान देखि मूलराशिका
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
गुणकार तीन गुणहानि था तामैं एक गुणहानि घटाएं तहां दोय गुणहानिका गुणकार कीएं ऐसा भया
स a अ गु २ बहुरि इहां जो दोयका गुणकार था ताकौं एक अधिक तिगुणा गुणहानिरूप भागहारका भागहार
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
कीएं ऐसा स a अ गु बहुरि जुदा स्थाप्या था धन ऐसा स a अ याके मिलावनेकौं अन्य स-
१ ⌒ १—   १ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३   ७ ख १७ अ २ गु ३
२   २
१—
मान देखि गुणकार गुणहानि ऊपरि एक अधिक कीएं ऐसा स a अ गु याकौं गुणहानिका भाग दीएं
१ ⌒ १—
७ ख १७ अ २ गु ३
२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिक संकलन अपेक्षा आदि निषेक ऐसा $\frac{\text{स a अ गु}^{१-}}{\text{७ ख १७ अ}^{१\frown}\ \text{२ गु}^{१-}\ \text{३ गु}/\text{२}}$ भया बहुरि इहां एक घाटि गुणहानि मात्र

चय ऐसे $\frac{\text{स a अ गु}^{१\frown}}{\text{७ ख १७ अ}^{१\frown}\ \text{२ गु}^{१-}\ \text{३ गु}/\text{२}}$ मिलावने सो इहां अन्य सर्व समान देखि गुणकार एक अधिक गुणहानिविषैं एक

घाटि गुणहानि मिलाइ दो गुणहानिका गुणकार कीएं अंतविषैं निषेक ऐसा $\frac{\text{स a अ गु २}}{\text{७ ख १७ अ}^{१\frown}\ \text{२ गु}^{१-}\ \text{३ गु}/\text{२}}$ हो है। ऐसैं

यहु अधिक अनुक्रम लीएं निषेकनिकी अपेक्षा वर्णन कीया। बहुरि हीन अनुक्रम लीएं ऐसैं जानना—

विवक्षित प्रकृतिका द्रव्य स्वकीय उत्कृष्ट समय प्रबद्धमात्र ऐसा स a याकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तका भाग दीएं अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा $\frac{\text{स a}}{\text{अ}^{१\frown}}$ याकौं आधा अन्योन्याभ्यस्तकरि गुणें प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा $\frac{\text{स a अ}}{\text{अ}^{१\frown}\ \text{२}}$ याकौं गुणहानिका भाग दीएं तहां मध्य धन ऐसा $\frac{\text{स a अ}}{\text{अ}^{१\frown}\ \text{२ गु}}$ याकौं एक घाटि गच्छका आधा ऐसा $\frac{\text{गु}^{१\frown}}{\text{२}}$

ताकरि हीन दोगुणहानि ऐसा $\frac{\text{गु}^{१-}\ \text{३}}{\text{२}}$ ताका भाग दीएं चयका प्रमाण ऐसा $\frac{\text{स a अ}}{\text{अ}^{१\frown}\ \text{२ गु गु}^{१-}\ \text{३}/\text{२}}$ हो है। याकौं दो गुणहा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकरि गुणें प्रथम निषेक ऐसा स a अ गु २ (१-^ १— / अ २ गु गु ३ / २) ऊपरि एक एक चय घाटि होइ एक अधिक गुणहानि गुणित चय प्रमाण, अन्त निषेक ऐसा स a अ गु (१- / १-^ १— / अ २ गु गु ३ / २) हो है। ऐसैं ही अन्य गुणहानिविषैं करने तिनकी रचना—

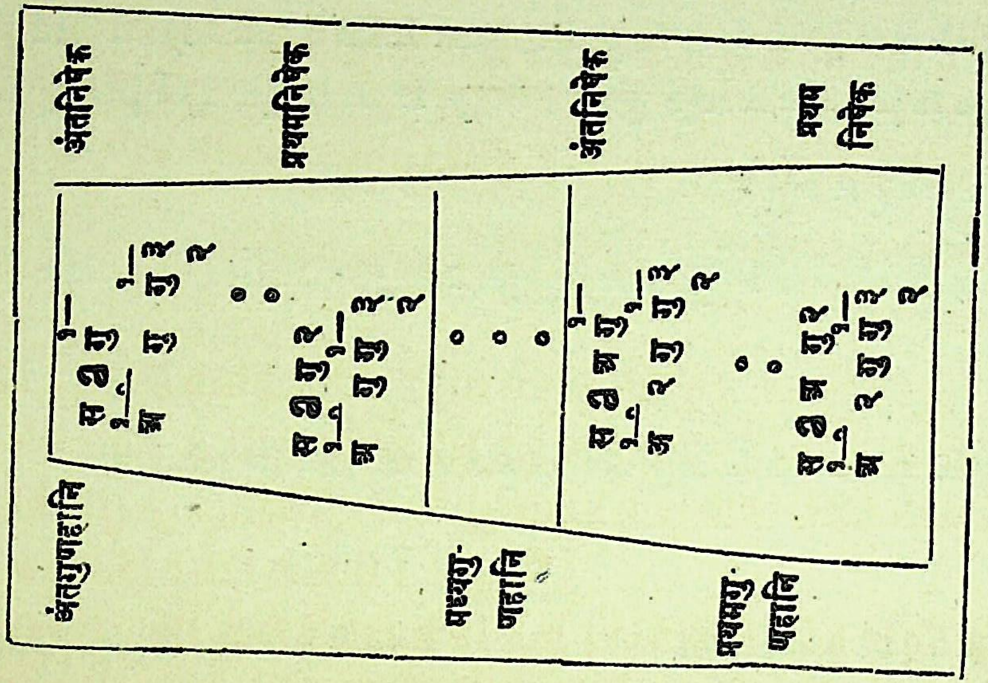

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां अंत गुणहानिविषैं भी अपने चयकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम निषेक एक अधिक गुणहानिकरि गुणें अंत निषेक हो है ऐसा जानना। अर मध्य गुणहानि वा मध्य निषेकनिका ग्रहण अर्थि बीचि बिंदीनिकी संदृष्टि जाननी। ऐसैं ही सातौ कर्मनिकी रचना जाननी।

बहुरि सर्व मूल उत्तर प्रकृतिनिकी दोगुणहानि गुणहानि समान नाहीं ताका विशेष जाननेकौं पल्यकी वर्गशलाका तैं लगाय पल्यका प्रथम मूल पर्यंत जे राशि तिनके दूणे दूणे अर्धच्छेद हैं ते स्थापि ऊपरितैं तीन तीन राशि जोडें आठ आठ गुणा घाटि हो है। तहां पल्यके प्रथम द्वितीय तृतीय मूलनिके अर्धच्छेद ऐसे छे इहां पल्यके अर्ध-

२
छे
२ २
छे
२ २ २

च्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी। छे। ताके भागहार जानने। इनके जोडनेकौं इहां अंतधन ऐसा छे गुणकार दोयकरि गुणें ऐसा छे २ अपवर्तन कीएं ऐसा। छे। यामैं आदि ऐसा छे घटाएं ऐसा छे ७ जोड हो है। ऐसैं ही चौथा पांचवां

(२ ... २ ... ८ ... ८)

छठा मूलके अर्धच्छेद ऐसे छे जोडैं ऐसे छे ७ सातवां आठवां नवां मूलके अर्धच्छेद ऐसे छे जोडैं ऐसे छे ७

८।२
छे
८।२।२
छे
८।२।२।२

८।८

८८२
छे
८८२२
छे
८८२२२

८ ८ ८

हो हैं। ऐसैं ही उतरिकरि नीचैं पल्यकी वर्गशलाकाके आठवां सातवां छठा वर्गके अर्धच्छेद ऐसे व छे ८ ८ ४

व छे ८ ८ २
व छे ८ ८ १

हैं। इहां वर्गशलाकाके अर्धच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी। व छे। ताके गुणकार जानने। इनिकौं जोडैं ऐसे व छे ८ ८ ७ ता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीका पांचवां चौथा तीसरा वर्गके अर्धच्छेद ऐसे व छे ८ ४ जोड़ैं ऐसैं व छे ८ ७ ताहीका दूसरा पहिला वर्गश-
व छे ८ २
व छे ८ १

लाकाके अर्धच्छेद ऐसे व छे ४ जोड़ैं ऐसे व छे ७ ऐसैं ए जोडे हुए राशि तिनकी सात पंक्ति आगैं ऐसैं जाननी
व छे २
व छे १

छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८	छे ७ ८
छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८	छे ७ ८ ८
छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८
:	:	:	:	:	:	:
व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८	व छे ७ । ८ । ८
व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८	व छे ७ । ८
व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७	व छे ७

बहुरि इहां सर्वत्र सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाणराशि कीएं अपना अपना जोड फलराशि कीएं क्रमतैं सातौ पंक्तिनिविषैं दश वीस तीस चालीस पचास साठि सत्तरि कोडाकोडी सागर इच्छाराशि कीएं लब्धराशिविषैं सर्वत्र जोडनेकौं सातका भागहार अर क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि पांच छह सातका गुणकार हो है सो सातका गुणकार था ताकरि सातका भागहारका अपवर्तन कीएं ऐसी रचना हो है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छे १ ८	छे २ ८	छे ३ ८	छे ४ ८	छे ५ ८	छे ६ ८	छे ७ ८
छे १ ८ ८	छे २ ८ ८	छे ३ ८ ८	छे ४ ८ ८	छे ५ ८ ८	छे ६ ८ ८	छे ७ ८ ८
छे १ ८ ८ ८	छे २ ८ ८ ८	छे ३ ८ ८ ८	छे ४ ८ ८ ८	छे ५ ८ ८ ८	छे ६ ८ ८ ८	छे ७ ८ ८ ८
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
व छे ८ ८ १	व छे ८ ८ २	व छे ८ ८ ३	व छे ८ ८ ४	व छे ८ ८ ५	व छे ८ ८ ६	व छे ८ ८ ७
व छे ८ १	व छे ८ २	व छे ८ ३	व छे ८ ४	व छे ८ ५	व छे ८ ६	व छे ८ ७
व छे १	व छे २	व छे ३	व छे ४	व छे ५	व छे ६	व छे ७
१० को २	२० को २	३० को २	४० को २	५० को २	६० को २	७० को २

इहां प्रथम पंक्तिके जोड देनेकौं अंतधन औसा छे १ गुणकार आठ करि गुणें औसा छे ८ अपवर्तन कीएं औसा। छे। यामैं आदि औसा व छे घटाएं औसा छे व छे याकौं एक घाटि गुणकार सातका भाग दीएं दश कोडाकोडी सागरस्थितिविषैं नाना गुणहानि औसा छे व छे १ हो है। बहुरि इहां ऋण औसा व छे ताकौं जुदा स्थापैं औसा छे ८ इहां गुणकारमैं एक घटाइए सो औसा छे। १ याकौं जुदा स्थापैं अवशेष औसा छे ७ अपवर्तन कीएं औसा छे इनिके दूवानिकौं परस्पर गुणें पल्यका तृतीय मूल हुवा सो औसा। मू ३। जुदा स्थाप्या। धनमैंस्यों ऋण घटावनेकौं किंचिदून कीएं औसा छे १ ‒ इतने दूवानिकौं परस्पर गुणें असंख्यात गुणित पल्य पंचम मूल मू ५ a प्रमाण असंख्यात औसा a ताका गुणकार कीएं दश कोडाकोडी सागर स्थितिविषैं अन्योन्याभ्यस्त राशि औसा मू ३ a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भया । बहुरि द्वितीय पंक्ति अंतधन छे २ कौं गुणकार आठ ८ करि गुणैं अपवर्तन कीएं असा । छे २ । या विषैं आदि असा व छे $_{८}$ २ घटावनेकौं किंचिदूनकी असी – संदृष्टि कीएं असा हो है छे – २ याकौं एक घटि गच्छ ७ का भाग दीएं वीस कोडाकोडी सागर स्थितिविषैं नाना गुणहानि असा छे – २ हो है । इहां ऊपरि नीचे आठ करि गुणि छे $_{७}$ – २ । ८ इहां एक जुदा छे – २ । १ राखि अवशेष अपवर्तन कीएं असा छे – इतने दूवानिकौं पर-स्पर गुणैं $_{७}$ किंचिदून $_{८}$ द्वितीय मूल असा मू $_{७}$ – २ $_{८}$ जुदा राख्या था तितने दूवानिकौं परस्पर गुणैं $_{४}$ असंख्यात भया ताका गुणकार कीएं वीस कोडाकोडी स्थितिविषैं अन्योन्याभ्यस्त असा मू – २ ૩ बहुरि असैं ही तीस चालीस पचास साठि सत्तरि कोडाकोडी सागर स्थिति विषैं पूर्वोक्त प्रकार तृतीयादि पंक्तिका जोड दीएं क्रमतैं तीन च्यारि पांच छह सात गुणा किंचिदून पल्य अर्धच्छेदनिका सातवां भागमात्र नानागुणहानि हो है । पूर्वोक्त वि-धानतैं इतने दूवानिकौं परस्पर गुणैं तृतीय मूल अर असंख्यातकरि गुणित द्वितीयमूल प्रमाण बहुरि असंख्यात गुणित प्रथम मूल प्रमाण बहुरि तृतीय मूल अर असंख्यात करि गुणित प्रथम मूल प्रमाण बहुरि द्वितीय मूल अर असंख्यात गुणित प्रथम मूल प्रमाण बहुरि वर्गशलाकाकरि भाजित पल्य प्रमाण क्रमतैं तिनका अन्योन्याभ्यस्त राशि हो है तिनकी संदृष्टि असी—

नाम	सा १० को २	सा २० को २	सा ३० को २	सा ४० को २	सा ५० को २	सा ६० को २	सा ७० को २
अन्योन्याभ्यस्त	मू ३ ૩	मू २ ૩	मू ३ मू २ ૩	मू १ ૩	मू १ मू ३ ૩	मू १ मू २ ૩	प / व
नानागुणहानि	छे व छे / ७	छे—२ / ७	छे—३ / ७	छे—४ / ७	छे—५ / ७	छे—६ / ७	छे व छे ७ / ७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि कर्मस्थिति रचनाविषैं द्रव्यादिकका वा निषेकनिका इत्यादि अंक संदृष्टि करि टीका विषैं कथन कीया है वा त्रिकोण यंत्र लिख्या है सो सर्व टीकातैं जानना। बहुरि त्रिकोण यंत्रके जोडका विधान जैसैं हीन हीन संकलन विवक्षा करि जीवकांडका योगमार्गणा अधिकार विषैं किया है तैसैं इहां भी जानना किछु विशेष है नाही तातैं इहां नाही लिख्या है। बहुरि कर्मनिकी स्थिति जघन्य संख्यात पल्यमात्र ऐसी प ७ उत्कृष्ट तातैं संख्यात गुणी ऐसी प ७ ७ उत्कृष्टमैं जघन्य घटावने अन्य समान देखि आगिला संख्यातका गुणकारविषैं एक घटाएं

१–
१–   १–

ऐसा प ७ ७ यामैं एक जोडें सर्व स्थितिके भेद ऐसे जानने प ७ ७ एतौ निरंतर स्थितिके भेद हैं। बहुरि सम्यक्त्वादिककौं सन्मुख भए जीवकैं सांतर स्थिति भेद संख्यात हजार हैं १००० ७। बहुरि स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान आयुकर्मके असंख्यात लोकमात्र हैं। यातैं नाम गोत्रके पल्यके असंख्यातवें भाग गुणे हैं। यातैं ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय अंतरायके पल्यका असंख्यातवां भाग गुणें है। यातैं मोहके पल्यके असंख्यातवां भाग गुणें है तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	आयु	नाम गोत्र	ज्ञा द वे अं	मोह
प्रमाण	≡ a	≡ a। प / a	≡ a। प प / a a	≡ a प प प / a a a

बहुरि मोहनीय कर्मके स्थितिबंधाध्यवसायनिकी रचनाविषैं द्रव्य तौ अपना स्थितिबंधाध्यवसायका प्रमाणमात्र जानना। स्थिति अपने स्थिति भेदनिका प्रमाण मात्र ऐसा प ७ ७ जाननी। चय अधिक अधिक संकलन अपेक्षा अपनी अपनी गुणहानिका अंत निषेककौं दो गुणहानिका भाग दीएं वा प्रथम निषेककौं एक अधिक गुणहानिका भाग दीएं हो है। जैसैं अंक संदृष्टि करि ऐसे—

१––
१–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२
८।२	८।२	८।२	८।२	८।२	८।२
९	१८	३६	७२	१४४	२८८
१–	१–	१–	१–	१–	१—
८	८	८	८	८	८
१	२	४	८	१६	३२

इहां अधिक अधिक संकलन अपेक्षा प्रथम गुणहानिका अंत निषेक सोलह ताकौं दूणा गुणहानि जो आठ ताका भाग दीएं एक पाया। अथवा प्रथम निषेक नव ताकौं एक अधिक गुणहानिका भाग दीएं एक पाया सोई प्रथम गुणहानिविषैं चयका प्रमाण एक जानना। आगैं गुणहानि गुणहानि प्रति दूणा दूणा जानना अर्थ संदृष्टि करि आगें कहेंगे।

बहुरि इहां नाना गुणहानिका प्रमाण स्थिति रचनाविषैं जो नाना गुणहानिका प्रमाण ऐसा छे व छे कह्या था ताके असंख्यातवै भागमात्र ऐसा छे व छे जानना। याका भाग स्थितिकौं दीएं गुणहानि आयामका प्रमाण ऐसा प ११ जानना याकौं दोयकरि गुणें दो गुणहानिका प्रमाण ऐसा प ११ २ जानना सो अन्य कर्मनिकी रचना आगें कहेंगे। आयुविषैं विशेष है सो कहिए है—

आयु कर्मका सर्व जघन्य स्थितिबंधकौं कारण स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान असंख्यात लोक प्रमाण है ≡ a तातैं द्वितीयादि स्थितिबंधकौं कारण आवलीका असंख्यातवां भाग २/a करि गुणा कूमतैं जानना। तहां अंक सं- २८९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृष्टिकरि स्थिति भेद सोलह १६ असंख्यात लोकका प्रमाण वाईस, आवलीका असंख्यातवां भागकी प्रमाण च्यारि अनुकृष्टिका गच्छ भी च्यारि ४ सो पहिले वाईस स्थापि ऊपरि क्रमतैं एक दोय तीन आदि एक एक अधिक वार च्यारिकरि गुणें जघन्यादि सोलह स्थिति भेदनिविषैं स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान हो है। बहुरि इनि जघन्यादि स्थितिभेदनिके अध्यवसायनिविषैं अनुकृष्टि रचना हो है—

२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।४।
२२।४।४।४।४।
२२।४।४।४।
२२।४।४।
२२।४।
२२।

सो एक एक स्थानविषैं अनुकृष्टिके च्यारि च्यारि खंड जानने। तहां प्रथम स्थानविषैं सर्व द्रव्य वाईस ताके प्रथमादि खंडनिविषैं च्यारि पांच छह सात प्रमाण जानना। बहुरि दूसरे स्थानविषैं द्रव्य एकवार च्यारि गुणा २२।४ याकौं च्यारिका भाग देइ एक भाग जुदा करनेकौं गुणकार च्यारिविषैं एक घटाइ अवशेष ऐसा २२।४−१ अंत खंडविषैं देना। एक भागके रहे वाईस तिनमें च्यारि तौ इस अंत खंडविषै अधिक करने । पांच छह सात प्रथमादि खंडनिविषैं देना। बहुरि तीसरा स्थानविषैं द्रव्य दोयवार चौगुणा वाईस २२।४।४ ताका भाग ग्रहणकौं अंतका च्यारि गुणकार विषैं एक घटाइ अवशेष ऐसा २२।४।४−१ अंत खंडविषै देना। बहुरि एक भागका प्रमाण ऐसा २२।४ याका गुणकार गुणकविषैं एक घटाइ अवशेष ऐसा २२।४−१ उपांत खंडविषैं देना बहुरि एक भागके रहे वाईस तिनमैं च्यारि तौ याहीविषैं पांच यातैं आगिला अंत खंडविषैं छह सात प्रथम द्वितीय खंडविषैं देना। ऐसैं ही क्रमतैं जो अपना सर्व द्रव्य होइ ताकौं च्यारिका भाग देइ एक भाग घटावनेकौं अ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तविषैं जो च्यारिका गुणकार तामें एक घटाइ अवशेष अंतखंडविषैं देना। तहां सर्व द्रव्यविषैं जेतीवार बाईसकौं च्यारिका गुणकार था तेतीवार तहां भी वाईसकौं च्यारिका गुणकार जानना। तहां अंतका च्यारि गुणकारविषैं घटावनेकौं आगें ऐसी — १ संदृष्टि जाननी। बहुरि पीछे एक एक भागका तिसतैं एक एक वार घाटि च्यारि गुणा वाईस रहता जाय तिस तिस एक एक भाग ग्रहणेकौं अंतका च्यारिका गुणकारविषैं एक घाटि करनेकी आगें ऐसा — १ संदृष्टि करि उपांत खंडादिविषैं देना। ऐसैं विधान प्रथम खंड पर्यंत कीएं भी जो अवशेष रहे तौ बहुरि अंत खंडादिकविषैं तैसैं ही क्रमतैं अधिक करने। ऐसैं विधान करतैं जहां एकवार च्यारिका गुणकार रहि जाय तहां ताका गुणकारविषैं एक घटाया ताका प्रमाण वाईस तिनमैं च्यारि तौ याहीके उपरि अधिक करनें अर याके आगें खंड होंइ तिनविषैं पांच छह सात देने आगें खंड न होइ तौ प्रथमादि पहिले खंडनिविषैं देने। सो इस विधानतैं अंत खंड विषैं सर्व द्रव्य पंद्रह वार च्यारि गुणा वाईस ऐसा २२। ४। १५ ताका अंतका गुणकारविषैं एक घटाएं अवशेष ऐसा २२। ४। १५ — १ अंत खंडविषैं देना। बहुरि एक एक भागविषैं एक एक भाग घटाइ तीसरा दूसरा पहिला खंडनिविषैं देना २२। ४। १४ — १। २२ ४। १३—१। २२। ४। १२—१ बहुरि इस पहिला खंडविषैं दीया हुवा द्रव्यका एक एक भागविषैं एक एक भाग घटाइ बहुरि अंतादि खंडनिविषैं अधिक करने २२। ४। ११ — १। २२। ४। १० — १। २२। ४। ९ — १। २२। ४। ८ — १ बहुरि इस प्रथम खंडविषैं दीया हुआ द्रव्यका एक एक भाग विषैं एक एक भाग घटाइ बहुरि अंतादि खंडनिविषैं अधिक करने। २२। ४। ७ — १। २२। ४। ६ — १। २२। ४। ५ — १। २२। ४। ४ — १ बहुरि इस प्रथम खंडविषैं दीया हूवा द्रव्यका एक एक भाग विषैं एक एक भाग घटाइ बहुरि अंत आदि खंडविषैं अधिक करने २२। ४। ३ — १। २२। ४। २ — १। २२। ४ — १ इहां द्वितीय खंडविषैं दीया द्रव्यका एक भाग वाईस रह्या तिनविषैं च्यारि तौ याके ऊपरि देना पांच छह यातैं आगिला तीसरा चौथा खंड तिनविषैं अधिक करने अवशेष सात यातैं पहिला प्रथम खंड तहां देना। ऐसैं आयुविषैं अनुकृष्टि खंड जानने तिनकी रचना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	सर्वद्रव्य प्रमाण	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड
अंतस्थान	२२ । ४ । १५	७ २२ । ४ । ४-१ २२ । ४ । ८-१ २२ । ४ । १२-१	४ २२ । ४-१ २२ । ४ । ५-१ २२ । ४ । ९-१ २२ । ४ । १३-१	५ २२ । ४ । २-१ २२ । ४ । ६-१ २२ । ४ । १०-१ २२ । ४ । १४-१	६ २२ । ४ । ३-१ २२ । ४ । ७-१ २२ । ४ । ११-१ २२ । ४ । १५-१
उपांत स्थान	२२ । ४ । १४	६ २२ । ४ । ३-१ २२ । ४ । ७-१ २२ । ४ । ११-१	७ २२ । ४ । ४-१ २२ । ४ । ८-१ २२ । ४ । १२-१	४ २२ । ४-१ २२ । ४ । ५-१ २२ । ४ । ९-१ २२ । ४ । १३-१	५ २२ । ४ । २-१ २२ । ४ । ६-१ २२ । ४ । १०-१ २२ । ४ । १४-१
मध्य स्थान	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
आठवां स्थान	२२ । ४ । ७	७ २२ । ४ । ४-१	४ २२ । ४-१ २२ । ४ । ५-१	५ २२ । ४ । २-१ २२ । ४ । ६-१	६ २२ । ४ । ३-१ २२ । ४ । ७-१
सातवां स्थान	२२ । ४ । ६	६ २२ । ४ । ३-१	७ २२ । ४ । ४-१	४ २२ । ४-१ २२ । ४ । ५-१	५ २२ । ४ । २-१ २२ । ४ । ६-१
छठा स्थान	२२ । ४ । ५	५ २२ । ४ । २-१	६ २२ । ४ । ३-१	७ २२ । ४ । ४-१	४ २२ । ४-१ २२ । ४ । ५-१
पांचवां स्थान	२२ । ४ । ४	४ २२ । ४-१	५ २२ । ४ । २-१	६ २२ । ४ । ३-१	७ २२ । ४ । ४-१
चौथा स्थान	२२ । ४ । ३	७	४ २२ । ४-१	५ २२ । ४ । २-१	६ २२ । ४ । ३-१
तीसरा स्थान	२२ । ४ । २	६	७	४ २२ । ४-१	५ २२ । ४ । २-१
दूसरा स्थान	२२ । ४ । १	५	६	७	४ २२ । ४-१
पहिला स्थान	२२	४	५	६	७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहां पहिलैं तौ सर्व द्रव्य लिख्या तहां जेतीबार बाईसकौं च्यारिका गुणकार है तितनेका अंक च्यारिके आगैं लिख्या जानना। बहुरि तिनके आगें अपने अपने अनुकृष्टि खंड लिखे हैं। तहां पहिला स्थानविषैं खंडनिका प्रमाण ऐसा ४। ५। ६। ७। बहुरि यातैं ऊपरि जो अपने नीचेके द्वितीय तृतीय अंत खंडका प्रमाण सोई ऊपरिके प्रथम द्वितीय तृतीय खंडनिका प्रमाण जानना। बहुरि अंत खंडका प्रमाण दूसरा स्थानविषैं एकबार तीसरा विषैं दोयबार चौथा विषैं तीनबार पांचवांविषैं च्यारिबार छठाविषैं पांचबार अर एकबार सातवां विषैं छहबार अर दोयबार आठवांविषैं सातबार अर तीनबार च्यारि गुणा बाईस प्रमाण जानना। तिन सबनिविषैं अंतका च्यारिका गुणकार एक एक घाटि जानना। बहुरि तिन अन्त खंडनिविषैं क्रमतैं च्यारि पांच छह सात च्यारि पांच छहकी अधिकता जाननी। ऐसैं ही नवमा आदि स्थान होइ उपांत पंद्रहवां स्थानका प्रथम खंडविषैं ग्यारह सात तीनबार दूसरा खंडविषैं बारह आठ च्यारि बार, तीसरा खंडविषैं तेरह नव पांच एकबार अंत खंडविषैं चौदह दश छह दोयबार च्यारि गुणा बाईस प्रमाण जानना। तिन सबनिविषैं अंतका च्यारिका गुणकारविषै एक एक घाटि जानना। अर तिन प्रथमादि खंडनिविषैं छह सात च्यारि पांचकी अधिकता जाननी। बहुरि अंतस्थानविषैं पहिला दूसरा तीसरा खंड तो उपांत स्थानका दूसरा तीसरा चौथा खंडके समान जानने। अंत खंड पंद्रह ग्यारह सात तीनबार च्यारि गुणा बाईस प्रमाण, तहां अंतका च्यारिका गुणकार एक एक घाटि इनिकौं जोडि तिनमैं छह अधिक करैं हो है। सो इहां जेतीबार च्यारिका गुणकार होइ तितनेका अंक च्यारिके आगे जानना। अथवा तितनी ही बार च्यारि लिखना जानना। अर अंतका च्यारि विषैं एक घटावनेकी सर्वत्र ऐसी — १ संदृष्टि जाननी। अर अधिकका ऊपरि लिखना जानना ऐसैं आयुके स्थितिबंधाध्यवसाय स्थाननिका विधान कह्या। अब मोहका कहिए है। तहां मोहकी स्थिति रचना ऐसी—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

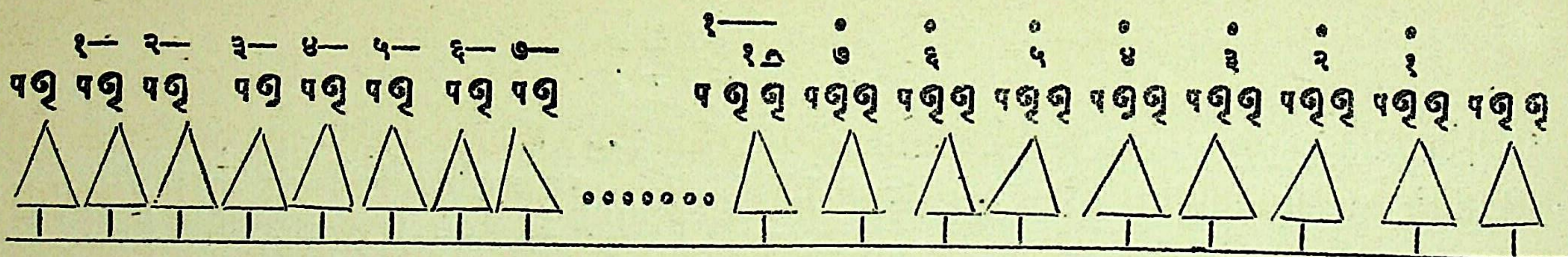

इहां स्थितिकी ऐसी △ संदृष्टिकरि तहां प्रथम जघन्य स्थिति संख्यात पल्यमात्र आगें यातैं एक दोय तीन च्यारि पांच छह सात आदि एक एक समय अधिक होइ अंतविषैं सात छह पांच च्यारि तीन दोय एक समय घाटि उत्कृष्ट स्थितिमात्र अर दोयबार संख्यात गुणित पल्यप्रमाण उत्कृष्ट स्थिति जाननी। बीचिमैं सर्व स्थिति भेदनिका प्रमाण लिख्या हूवा जानना। सो इहां सर्वस्थिति भेदनिका प्रमाण सो स्थिति अर याकौं कर्म स्थिति की नाना गुणहानिका असंख्यातवां भागमात्र जो नाना गुणहानि ताका भाग दीएं गुणहानि आयाम अर यातैं दूणा दो गुणहानि अर पल्यका असंख्यातवां भागमात्र अन्योन्याभ्यस्त अर मोहके स्थितिबंधाध्यवसाय प्रमाण द्रव्य जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

द्रव्य	स्थिति	गुणहानि	दोगुणहानि	नाना गुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त
≡ ‌a प प प a a a	१——— १ – प ७ ७	१— १ – प ७ ७ छे व छे a	१— १ – प ७ ७ २ छे व छे a	छे व छे a	प a

इहां आदि अक्षररूप लघु संदृष्टि अन्योन्याभ्यस्तकी ऐसी। अ। गुणहानिकी ऐसी। गु। जाननी। तहां द्रव्यकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तका भाग दीएं अधिक अधिक संकलन अपेक्षा प्रथम गुणहानिका द्रव्य ऐसा—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

≡ ३ प प प हीन संकलन विवक्षाकरि जाकौं अंत गुणहानि संज्ञा थी ताकौं इहां प्रथम गुणहानि कही। बहुरि
१ –
अ ३ ३ ३

यातैं द्वितीयादि गुणहानिविषैं दूणा दूणा होइ ताकौं आधा अन्योन्याभ्यस्तकरि गुणें अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा
≡ ३ प प प अ। बहुरि प्रथम गुणहानिके द्रव्यकौं गुणहानिमात्र गच्छका भाग दीएं ताका मध्यधन ऐसा ≡ ३ प प प
१ –
अ ३ ३ ३ २

१ –
अ ३ ३ ३ गु

याकौं एक घाटि गच्छका आधा ऐसा गु ताकरि हीन दो गुणहानि ऐसा गु ३ इहां एक अधिक ड्योढ गुणहा-
१ –
२

१ –
२

नि जानना। याका भाग दीएं चय ऐसा ≡ ३ प प प याकौं अधिक संकलन बिवाक्षाकरि एक अधिक गुणहा-
३ ३ ३
१ – १ –
अ गु गु ३
२

१ –
निकरि गुणें प्रथम निषेक ऐसा ≡ ३ प प प गु हीनसंकलन विवक्षा करि जाकौं अंत निषेक संज्ञा थी ताकौं
३ ३ ३
१ – १ –
अ गु गु ३
२

इहां प्रथम निषेक कह्या है। बहुरि द्वितीयादि निषेक दूणे दूणे होइ एक घाटि गुणहानिमात्र चय बधें दो गुण-
हानि गुणित चयमात्र अन्त निषेक ऐसा ≡ ३ प प प गु २ हो है। ऐसैं ही गुणहानि गुणहानिप्रति दूणा दूणा
३ ३ ३
१ – १ –
अ गु गु ३
२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

द्रव्य चय होइ । अन्त गुणहानिविषैं द्रव्यकौं गुणहानिका भाग दीएं मध्यधन ऐसा ≡ a प प प अ याकौं एक
a a a २
१ –
: अ गु

घाटि गच्छका आधा करि हीन दो गुणहानिका भाग दीएं चय ऐसा ≡ a प प प अ याकौं एक अधिक गुण-
a a a २
१ – १—
अ गु गु २
२

१—
हानिकरि गुणें प्रथम निषेक ऐसा ≡ a प प प अ गु द्वितीयादि निषेक एक एक चय अधिक होइ. एक घाटि गुण-
a a a २
१ – १—
अ गु गु २
२

हानिमात्र चय बधें अंत निषेक ऐसा हो है ≡ a प प प अ गु २ । इनकी रचना—
a a a २
१ – १—
अ गु गु २

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमगुणहानि			मध्यगुणहानि	अंतगुणहानि		
ज △ प ७ृ	० ० ०	△	० ० ०	△	० ० ०	उ △ प ७ृ ७
प्रथमनिषेक	मध्यनिषेक	अंतनिषेक	० ० ०	प्रथमनिषेक	मध्यनिषेक	अंतनिषेक
१— ≡ a प प प गु a a a १‸ १— अ गु गु ३ २	० ० ०	≡ a प प प गु २ a a a १— १— अ गु गु ३ २	० ० ०	१— ≡ a प प प अ गु a a a २ १‸ १— अ गु गु ३ २	० ० ०	≡ a प प प अ गु २ a a a २ १‸ १— अ गु गु ३ २

इहां ऊपरि स्थितिनिकी संदृष्टि लिखि आदि अंतविषैं जघन्य उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण लिख्या। बहुरि नीचैं तिनिस्थितिनिके कारणभूत स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान तिनकी प्रथम अंत गुणहानिके आदि अंत निषेक लिखे मध्य ग्रहण निमित्त विंदीनिकी संदृष्टि जाननी। तहां जघन्य स्थितिकौं कारण प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक जानना। उत्कृष्ट स्थितिकौं कारण अंत गुणहानिका अंत निषेक जानना तातैं तिनकौं जघन्य उत्कृष्ट स्थितिके नीचैं लिखे अवशेष मध्यस्थितिका कारण हैं तातैं बीचि लिखे। इस कथनका अंक संदृष्टि करि टीकाविषैं कथन कीया है। सो तहां जानना। बहुरि इहां अनुकृष्टि विधान कहिए है—

स्थिति बंधाध्यवसायस्थाननिका गुणहानि आयाम ऐसा प ७ृ ७ृ (१— १‸ ; छे व छे ; a) याकौं संख्यातका भाग दीएं ऐसा (१—— १‸) प ७ृ ७ याका अपवर्तन कीएं पल्यका असंख्यातवां भागमात्र अनुकृष्टि गच्छ ऐसा प (a) जानना। तहां जघन्य
छेछे ७ृ
a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोम्मट सार २१७

१—
स्थिति बंधकौं कारण कषाय परिणाम ऐसे हैं ≡ a प प प गु सो प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेककी अनुकृष्टि अर्थसं०
a a a
१ — १—
अ गु गु ३
२

रचनाविषैं द्रव्य जानना। बहुरि प्रथम गुणहानिका चय ऐसा ≡ a प प प याकौं अनुकृष्टि गच्छका भाग दीएं
a a a
१ — १—
अ गु गु ३
२

१ — १ —
अनुकृष्टि चय ऐसा ≡ a प प प बहुरि एक घाटि गच्छ ऐसा प ताका आधा ऐसा प याकरि चयकौं गुणें ऐसा
a a a a a २
१ — १—
अ गु गु ३ प
२ a

१ — १ —
≡ a प प प प याकौं अनुकृष्टि गच्छकरि गुणें चय धनका प्रमाण ऐसा ≡ a प प प प प इहां पल्यका अ-
a a a a २ a a a a २ a
१ — १— १ — १—
अ गु गु ३ प अ गु गु ३ प
२ a २ a

२१७

४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातवां भागमात्र भाज्य भागहारका अपवर्तन कीएं ऐसा $\dfrac{\equiv a\,प\,प\,प\,\overset{१}{प}}{a\,a\,a\,a\,२}$ / $\overset{१}{अ}\;\overset{१}{गु}\,गु\,\frac{३}{२}$ याकौं प्रथम निषेकका द्रव्यमैं घटावना सो याकैं अर वाकैं अन्य समानता देखि एक अधिक गुणहानि मात्र ऐसा हो है । $\overset{१}{गु}$ । गुणकारविषैं एक घाटि अनुकृष्टि गच्छका आधा ऐसा $\dfrac{\overset{१}{प}}{a\,२}$ घटाएं ऐसा $\overset{१}{गु} - \dfrac{\overset{१}{प}}{a\,२}$ गुणकार हो है। इहां राशिके आगें ऐसी । – । संदृष्टि करि आगै ऋण राशि लिख्या था सो ऐसें कीएं चयधन रहित सर्व घन ऐसा $\dfrac{\equiv a\,प\,प\,प\,\overset{१}{गु} - \dfrac{\overset{१}{प}}{a\,२}}{a\,a\,a}$ / $\overset{१}{अ}\,गु\;\overset{१}{गु}\,\frac{३}{२}$ भया।

याकौं अनुकृष्टि गच्छका भाग दीएं ताका प्रथम खंड ऐसा हो है $\dfrac{\equiv a\,प\,प\,प\,\overset{१}{गु} - \dfrac{\overset{१}{प}}{a\,२}}{a\,a\,a}$ / $\overset{१}{अ}\,गु\;\overset{१}{गु}\,\frac{३\,प}{२\,a}$ यातैं एक एक चय अधिकता लीएं द्वितीयादि खंड होइ एक घाटि अनुकृष्टि गच्छमात्र चय इनमैं मिलैं अंत खंड होइ सो चयकैं अर प्रथम खंडकैं अन्य समानता देखि गुणकार एक अधिक गुणहानि ऊपरि एक घाटि अनुकृष्टि गच्छ ऐसा हो है। $\dfrac{\overset{१}{प}}{a}$ ताकी अधिकता लीएं पल्यका असंख्यातवां भागकरि अधिक गुणहानिमात्र गुणकार भया यामैं ऋण आगैं २१९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

१— १ ‿ १ ‿
लिखना औसें अंत खंड औसा ≡ a प प प गु—प प हो है। बहुरि इहां गच्छकरि गुणित प्रथम निषेक प्रमाण
a a a a a२
१ ‿ १—
अ गु गु २ प
२ a

१— १ ‿
आदिधन औसा ≡ a प प प गु—प प एक घाटि गच्छका आधा चय अर गच्छकरि गुणें उत्तर धन औसा
a a a a २ a
१ ‿ १—
अ गु गु २ प
१ ‿ २ a १ ‿
≡ a प प प प प इहां इनकौं जोडना सो अन्य समान देखि आदि धनका गुणकार विषैं औसा प घाटि था उ-
a a a a २ a a २
१ ‿ १—
अ गु गु २ प
२ a

त्तर धनविषैं औसा ही गुणकार था तातैं इस घाटिका अभाव करना। पल्यका असंख्यातवां भाग भाज्य भागहा-
१—
रविषैं समान देखि अपवर्तन करना। औसैं कीएं मूल प्रथम निषेकमात्र सर्व धन औसा हो है ≡ a प प प गु
a a a
१ ‿ १—
अ गु गु २
२

बहुरि औसैं ही निषेक निषेक प्रति अनुकृष्टि खंडनिकी रचना जाननी। तहां अंत निषेकविषैं द्रव्य औसा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

≡ a प प प गु २ यामैं पूर्वोक्त प्रकार अपवर्तन कीया हूवा चय ऐसा ≡ a प प प प घटाएं ऐसा
a a a .... a a a a २
१ ⌒ १—
अ गु गु ३
२

≡ a प प प गु २ – प याकौं अनुकृष्टि गच्छका भाग दीएं प्रथम खंड ऐसा ≡ a प प प गु २ – प हो है।
a a a .... a २ .... a a a .... a
१ ⌒ १—
अ गु गु ३ प
२ a

बहुरि एक एक चय अधिक भएं द्वितीयादि खंड होइ एक घाटि अनुकृष्टि गच्छप्रमाण चय अधिक भएं पूर्वोक्त प्रकार अंत खंड ऐसा हो है ≡ a प प प गु ३ – प प इहां प्रथम खंड रूप मुखकौं गच्छकरि गुणें आदि धन ऐसा
a a a .... a a २
१ ⌒ १—
अ गु गु ३ प
२ a

≡ a प प प गु २ प – प बहुरि उत्तर धन ल्यावनेकौं मुहभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रकरि द्वितीय खंडविषैं एक
a a a .... a २ a
१ ⌒ १—
अ गु गु ३ प
२ a

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चय प्रमाण मुख ऐसा ≡ a प प प अंत खंड विषैं एक घाटि गच्छमात्र चय प्रमाण भूमि ऐसी ≡ a प प प प प
a a a   a a a a
१ - १—   १ - १—
अ गु गु २ प   अ गु गु २ प
२ a   २ a

इनि दोऊनिकौं जोडैं ऐसा ≡ a प प प प प याकौं आधाकरि ताकौं गच्छकरि गुणें चयधन ऐसा भया ≡ a प प प प प प
a a a a   a a a a २ a
१ - १—   १ - १—
अ गु गु २ प   अ गु गु २ प
२ a   २ a

बहुरि आदि धन उत्तर धनकौं पूर्वोक्तवत् जोडैं चरम निषेकमात्र मूलधन ऐसा ≡ a प प प गु २ हो है। ऐसैं ही
a a a
१ - १—
अ गु गु २
२

अन्य गुणहानिविषैं जानना। इनकी रचना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस रचनाविषैं नीचैं प्रथम गुणहानिके प्रथम खंडनिका प्रमाण लिख्या तहां सर्व द्रव्य अर प्रथम खंड अर अंत खंडके प्रमाणका स्वरूप तौ इहां लिख्या ही है। बहुरि द्वितीयादि खंडनिविषैं एक एक अनुकृष्टि चय क्रमतैं मिलावनेकौं चयकैं अर प्रथम खंडकैं अन्य समानता देखि जहां गुणहानिके ऊपरि एककी अधिकता थी तहां दोय तीन च्यारिकी अधिकता कीएं द्वितीय तृतीय चतुर्थ खंड हो है। गुणकारविषैं ऋण राशि है सो है ही। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय निषेकका द्रव्य वा खंड लिखे सो तहां प्रथम निषेकके द्रव्यविषैं एक ऊर्ध्व चय मिलावनेकौं ऊर्ध्वचय अर प्रथम निषेक द्रव्यकैं अन्य समानता देखि गुणकार ऊपरि जहां अधिककी अधिकता थी तहां दोयकी अधिकता कीएं द्वितीय निषेकका द्रव्य हो है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार करि याके प्रथमादि खंड प्रथम निषेकके प्रथमादि खंडनितैं एक एक चय अधिक हैं तातैं अन्य समान देखि गुणहानि गुणकारके ऊपरि जो प्रथम निषेकके खंडनिविषैं अधिकता थी तातैं एक एक अधिककी अधिकता कीएं याके खंड हो हैं। बहुरि ऊपरि ही ऊपरि अंत निषेकके सर्व द्रव्य वा खंड लिखे तहां सर्व द्रव्यका प्रमाण तौ पूर्वैं किया था सो जानना। यामैं पूर्वोक्त प्रकार उत्तर धन घटाइ अनुकृष्टि गच्छका भाग दीएं प्रथम खंड ऐसा ≡ ३ प प प गु १— २—प १_ ३ ३ ३ ३ २ १_ १___ अ। गु गु २ प २ ३ यातैं एक एक चय मिलावनेकौं दो गुणहानि गुणकारके ऊपरि एक दोय तीनकी अधिकता कीएं द्वितीय तृतीय चतुर्थ खंड हो है। एक घाटि अनुकृष्टि गच्छकी अधिकता कीएं अंत खंड हो है। बहुरि याके नीचैं उपांत निषेकका द्रव्य वा निषेकानिकी रचना है। तहां अंत निषेकके सर्व द्रव्यमैं एक ऊर्ध्व चय घटावनेकौं अन्य समानता देखि दोगुणहानि गुणकार विषैं एक घाटि कीएं याका द्रव्य हो है। इहां पूर्वोक्त विधान कीएं अंत निषेकके प्रथमादि खंडनितैं याके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमादि खंड एक एक अनुकृष्टि चय करि हीन हैं तातैं इहां प्रथम खंडविषैं दोगुणहानि गुणकार ऊपरि एक घाटिकी द्वितीय खंडविषैं कीछू नाहीं तृतीय चतुर्थ अंत खंडविषैं क्रमतैं एक अर दोय घाटि अनुकृष्टि गच्छ अधिककी संदृष्टि जाननी । इहां गुणहानि दोगुणहानिके आगैं गुणकार है तातै तामैं अधिक हीन कीएं तिस गुणहानि मात्र हीन अधिक होते, सो तो है नाहीं आगैं ऋण राशि है सो है ही तातैं गुणहानि वा दो गुणहानि ही विषैं हीन अधिक कीए हैं । बहुरि इन प्रथमादि निषेकनिकी प्रथम खंडके आगैं अनुकृष्टि गच्छका गुणकार कीएं इनके आदिधन जानने अर उत्तर धन जो प्रथम निषेकके अनुकृष्टि विधान विषैं कह्या है सोई सर्वत्र जानना । बहुरि मध्य निषेक वा मध्य खंडनिके ग्रहण निमित्त वीचि विंदीनिकी संदृष्टि जाननी । ऐसैं प्रथम गुणहानिके निषेकानिकी रचना कही । अब याकौं अंक संदृष्टि करि दिखाइए है—

प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक नव अर अनुकृष्टि गच्छ च्यारि अर ऊर्ध्व चय एककौं अनुकृष्टि गच्छका भाग दीएं अनुकृष्टि चय एकका चौथा भाग तहां एक घाटि गच्छका आधा ऐसा ३/२ याकौं चय अर गच्छ करि गुणें ऐसा ३/२ । १/४ अपवर्तन कीएं चय धन ऐसा ३/२ याकौं प्रथम निषेकका द्रव्य विषैं घटाएं ऐसा ९ − ३/२ याकौं च्यारिका भाग दीएं प्रथम खंड ऐसा ९/४ − ३/२ यामैं एक एक चय मिलावनेकौं नीचैं च्यारिका भाग जानि ड्योढ घाटि नवविषैं एक दोय तीनकी अधिकता कीएं द्वितीय तृतीय चतुर्थ खंड हो है । ऐसैं ही द्वितीय निषेक दशके खंडनिविषैं ड्योढ घाटि नवविषैं एक दोय तीन च्यारिकी अर तृतीय निषेक ग्यारहके खंडानिविषै दोय तीन च्यारि पांचकी अर अंत निषेक सोलहके खंडनिविषैं सात एक अधिक सात दोय अधिक सात तीन अधिक सातकी अधिकता कीएं अर सर्वत्र च्यारिका भाग दीएं खंड हो है । तिनकी रचना—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम	सर्व द्रव्य	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	अंत खंड
अंत निषेक	१६	७ ६–३ ४ २	१– ७ ६–३ ४ २	२– ७ ६–३ ४ २	३– ७ ९–३ ४ २
मध्य निषेक	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
तृतीय निषेक	११	२ ९–३ ४ २	३ ९–३ ४ २	४ ९–३ ४ २	५ ९–३ ४ २
द्वितीय निषेक	१०	१ ९-३ ४ २	२ ९–३ ४ २	३ ९–३ ४ २	४ ९–३ ४ २
प्रथम निषेक	६	६–३ ४ २	१ ९–३ ४ २	२ ९–३ ४ २	२ ९–३ ४ २

इहां चौथाई आधा कह्या है सो दृष्टांत दिखावनेकौं कह्या है। दार्ष्टांतविषैं महत्प्रमाण है तहां आधा चौथाई है नाही। बहुरि जो स्वेच्छा अंक संदृष्टिकरि रचना करिए तौ निषेकनिके प्रमाण वा खंडनिकी रचना जैसैं टीका विषैं गुणस्थानाधिकारविषैं अधःकरण रचना करी है तैसैं इहां भी जानना। बहुरि जैसैं इहां प्रथम गुणहानि की रचना करी है तैसैं दूणा दूणा प्रमाण लीएं द्वितीयादि गुणहानिकी रचना जाननी। बहुरि जैसैं मोहकी रचना कही तैसैं ही अपना अपना द्रव्यादिकके अनुसारि अवशेष छह कर्मनिकी रचना जाननी। बहुरि अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थान असंख्यात लोक गुणे असंख्यात लोकमात्र हैं ते ऐसे ≡ a ≡ a तहां भी जघन्य स्थिति बंधकौं कारण जे स्थिति बंधाध्यवसायनिके प्रथम निषेक प्रमाण परिणाम तिन संबंधी जे अनुभागाध्यवसाय स्थान ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबतैं थोरे हैं तेऊ तिन प्रथम निषेकमात्र स्थिति बंधाध्यवसाय स्थान अंक संदृष्टि अपेक्षा ऐसे १ तिनतैं असंख्यात लोक गुणे ऐसे १ ≡ a हैं। इहां गुणहानि निषेकादि रचना केई आचार्यनिके अभिप्रायकरि पाइए है सो कहिए है—

जघन्य स्थिति बंधकौं कारण प्रथम निषेकमात्र स्थिति अनुभागाध्यवसाय स्थान संबंधी जे अनुभागाध्यवसाय स्थान असंख्यात लोक गुणे असंख्यात लोक प्रमाण सो तौ द्रव्य अर प्रथम निषेकमात्र स्थितिबंधाध्यवसाय स्थान सो स्थिति अर दोयवार असंख्यातकरि भाजित आवली प्रमाण नानागुणहानि अर याका भाग स्थिति कौं दीएं गुणहानि आयाम अर यातैं दूणा दो गुणहानि अर एकवार असंख्यातकरि भाजित आवलीमात्र अन्योन्याभ्यस्तराशि जाननी तिनकी संदृष्टि—

द्रव्य	स्थिति	गुणहानि	दोगुणहानि	नानागुणहानि	अन्योन्याभ्यस्त
≡ a ≡ a	१	६ २ aa	६ २ २ aa	२ aa	२ a

वहुरि लघु संदृष्टि गुणहानिकी ऐसी। गु। अन्योन्याभ्यस्तराशिकी ऐसी। अ। जाननी। तहां द्रव्यकौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्तका भाग दीएं प्रथम गुणहानिका ऐसा ≡ a ≡ a (१ — / अ) यातैं गुणहानि गुणहानि प्रति दूणा दूणा होइ प्रथम गुणहानिके द्रव्यकौं आधा अन्योन्याभ्यस्तकरि गुणैं अंत गुणहानिका द्रव्य ऐसा ≡ a ≡ a अ (१ — / अ, २)। इन गुणहानिनिके द्रव्यकी रचना ऐसी—

अंतगुणहानि	≡ a ≡ a अ १ — २ अ
मध्यगुणहानि	० ० ०
नानागुणहानि	≡ a ≡ a १ — अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि तहां गुणहानिका द्रव्यकौं गुणहानिका भाग दीएं ताका मध्य धन ऐसा ≡ a (१२ अ) ≡ a (गु) याकौं एक घाटि गुणहानिका आधा। (१२) गु। करि ऊन दोगुणहानि ऐसा गु (१–) २/२ ताका भाग दीएं तहां चयका प्रमाण ऐसा ≡ a (१२ अ) ≡ a (गु) (१–) गु ३/२ याकौं एक अधिक गुणहानिका अंत पर्यंत जानना। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति यातैं आदि निषेक वा चयका प्रमाण दूणा दूणा जानना। इस रचनाविषैं नीचैं प्रथमगुणहानिके चयकौं एक अधिक गुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक दोय अधिक गुणहानि करि गुणैं द्वितीय निषेक दोगुणहानिकरि गुणे अंत निषेक हो है ते लिखे बहुरि ऊपरि ऊपरि इनकौं दोयकरि गुणैं द्वितीय गुणहानिके दोयवार दोयकरि गुणैं तृतीय गुणहानिके दोयवार दोयकरि भाजित अन्योन्याभ्यस्तकरि गुणें उपांत गुणहानिके एकवार दोयकरि भाजित अन्योन्याभ्यस्त करि गुणैं अंत गुणहानिके निषेक लिखे हैं। बहुरि मध्यगुणहानि वा मध्यनिषेकनिका ग्रहण अर्थि वीचि विंदीनिकी संदृष्टि जाननी। बहुरि जैसैं जघन्यस्थिति बंधकौं कारण स्थिति बंधाध्यवसाय स्थानननिका प्रथम निषेकविषैं अनुभागाध्यवसाय स्थाननिकी यह रचना कही है तैसैं ही यथासंभव द्वितीयादि उत्कृष्ट पर्यंत स्थितिकौं कारण ताका द्वितीयादि अंत पर्यंत निषेकनिविषैं रचना जाननी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुरि केई आचार्यनिका अभिप्रायकरि अनुभाग बंधाध्यवसायनिविषैं गुणहानिरूप रचना कही है। यथा योग्य स्थिति बंधाध्यवसाय स्थानानिके निषेकनिविषैं जघन्य मध्य उत्कृष्ट अनुभागाध्यवसाय पाइए है तिनकी रचना ऐसी—

प ७ृ				प७७ृ		
△ ज ९०००		△ उ १६	०००	△ ज २८८००		△ ५१२
≡ a ≡ a		≡ a ≡ a		≡ a ≡ a		≡ a ≡ a
ज	०	ज	०	ज	०	ज
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०
०	०	०		०	०	०
उ	०	उ		उ	०	उ

इहां जघन्य स्थिति ऐसी प ७ ताकौं कारण स्थिति बंधाध्यवसाय स्थानानिका प्रथम गुणहानिका जघन्य निषेक अंक संदृष्टि अपेक्षा ऐसा ९ अर यथायोग्य मध्यस्थितिकौं कारण ताका उत्कृष्ट निषेक ऐसा १६ बहुरि अंत गुणहानिका यथायोग्य मध्यस्थितिकौं कारण जघन्य निषेक ऐसा २८८ अर उत्कृष्ट स्थिति ऐसी प ७ृ ७ृ ताकौं कारण ताका उत्कृष्ट निषेक ऐसा ५१२ इनि विषैं सामान्यताकरि अनुभागाध्यवसायस्थान ऐसे ≡ a ≡ a पाइए है। ते जघन्य मध्य उत्कृष्ट यथासम्भव जानने। इहां स्थितिकी संदृष्टि ऐसी △ जघन्यकी ऐसी। ज। उत्कृष्ट-की ऐसी। उ। अर मध्य निषेक वा मध्य गुणहानि वा मध्य अनुभागाध्यवसायानिके ग्रहण निमित्त बीचि बिंदीनि की संदृष्टि जाननी।

इति संदृष्टिस्वरूपं समाप्तं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार इहां संदृष्टिनिका अर्थ वा अर्थनिकी संदृष्टिका व्याख्यान कीया है। तहां प्रथम तौ सामान्य व्याख्यान कीया है ताकौं जानहु। पीछे श्री गोम्मटसार ग्रंथविषैं जे अर्थ कहे तिनकी संदृष्टि वा संदृष्टिनिके अर्थ कहे है तिनिका स्वरूप व्याख्यान कीया है ताकौं जानहु। इहां मैं मेरी बुद्धिविषैं ग्रंथनितैं सम्भवता स्वरूप जानि व्याख्यान कीया है अर मेरी बुद्धि मंद है तातैं मैं जानो हौं। इहां कहीं कहीं भूल भई होसी ताका उपाय जानि विशेष सम्यग्ज्ञानी जननिप्रति बीनती करौं हौं कि जहां अशुद्धता होइ तहां सवारिकरि शुद्ध करियो। बहुरि इहां स्तोक ज्ञानी जीवनि प्रति ऐसा आशीर्वाद वा प्रेरणा करौं हौं कि इन अर्थ संदृष्टिनिके स्वरूपकौं जानि यथार्थ पदार्थनिका श्रद्धानपूर्वक सम्यग्ज्ञानकौं पाइ ज्ञानस्वरूप आत्माविषैं अचल अनुभव दशाकौं प्राप्त होहू।

इदं संदृष्टिव्याख्यानमस्तु संदृष्टिज्ञप्तये।
कृतं टोडरमल्लेन संशोध्यं च बहुश्रुतैः ॥ १ ॥
संदृष्ट्यर्थप्रमातारः स्वद्रव्यक्षेत्रकालकैः।
भावैश्च मंगलं कुर्युराप्तागममुनीश्वराः ॥ २ ॥

इति संदृष्टिचूलिका संपूर्णा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोम्मटसार।

(समाप्त)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi